Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माधवानन्दनाथविरचितः

सौभाग्यकल्पद्रुमः

(SAUBHAGYAKALPADRUMAH)

श्रीगुरोरनुग्रहः

सम्पादकः

डॉ० शीतलाप्रसाद उपाध्यायः

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्रन्थ सन्दर्भ

परमानन्दतन्त्र की परम्परा में माधवानन्दनाथ विरचित सौभाग्यकल्पद्रुम श्रीविद्योपासना का श्रेष्ठ पद्धति-ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ अष्ट स्कन्धों में विभक्त एवं पूर्ण है। इस ग्रन्थ के आद्य स्कन्ध में प्रातःस्मरण, स्नानविधि, त्रैकालिक सन्ध्याविधि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, प्राणसंस्थापन विधि, प्राणायाम आदि का वर्णन है। द्वितीय स्कन्ध में नित्य-नैमित्तिक-काम्य भेद से पूजा के त्रैविध्य विधानों का वर्णन किया गया है। साथ में अशक्त एवं अत्यशक्त साधकों के लिए संक्षिप्त पूजा की विधि भी बतलायी गयी है। तृतीय स्कन्ध में नैमित्तिक पूजा विधि का विशद वर्णन है जिसमें श्रीचक्र की रचना तथा उसकी प्रतिष्ठा विधि का निरूपण है। चतुर्थ स्कन्ध में दीक्षाविधि, दीक्षा के प्रकार, होमविधि, गुरु और उपासकों के धर्म, मन्त्र-ग्रहण के प्रकार आदि का निर्देश है। पञ्चम स्कन्ध में पुरश्चरण की विधि, आसन एवं माला के भेद, होमद्रव्यों एवं भोज्य पदार्थों के सेवन का विधान, सिद्धिसूचक स्वप्न एवं मन्त्रशोधन-संस्कार आदि वर्णित है। षष्ठ स्कन्ध में अजपाजप एवं पारायण विधि निरूपित है। सप्तम स्कन्ध में विविध प्रकार के न्यासों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। अष्टम स्कन्ध में शेषविधि निरूपण में प्रायश्चित्त विधि, भोजन विधि, मिथुन पूजा, अभीष्टप्रद महायागविधि, कौलश्राद्धविधि, मुद्राओं का विवरण और विविध प्रकार के मन्त्रों का उद्धार बतलाया गया है।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि साधकों एवं उपासकों के लिए परम उपादेय यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रथम बार प्रकाशित हो रहा है।

- प्रकाशक

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माधवानन्दनाथविरचितः

सौभाग्यकल्पद्रुमः

(SAUBHAGYAKALPADRUMAH)

सम्पादकः
डॉ. शीतलाप्रसाद उपाध्यायः
अध्यक्षः
सांख्ययोगतन्त्रागमविभागः
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः
वाराणसी-२२१००२

प्रकाशक
शारदा संस्कृत संस्थान
वाराणसी-२२१००२

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकाशक :
शारदा संस्कृत संस्थान
सी. २७/५९, जगतगंज, वाराणसी-२२१००२
दूरभाष - (०५४२) २२०४१६८
e-mail : sharadabhawan@yahoo.co.in
ISBN: 978-81-910069-5-7

सन् २०१०

मूल्य - ५००/-

अन्य प्राप्तिस्थान
शारदाभवन
डी. ३६/४४, अगस्त्यकुण्ड, वाराणसी
दूरभाष - (०५४२) २४५२०३७

मुद्रक -
गौरी शंकर प्रेस,
वाराणसी।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Foreword

Shri Vidya Gurumandala Parishad (SVGP) is indeed very happy to present this great text of **"Sri Saubhagy Kalpadhruma"** for the first time in print for the benefit of Sri Vidya Upasakas.

Narayanpet is a town situated between Raichur and Gulbarga on the central railway route, wherein the family descendents of Sri Bhaskararaya still live. SVGP performed Sri Lalitha Ashtashtaka Mahayaga in 2006 in the spacious ancestral house of present generation of Sri Bhaskararaya, adjoining Sri Dheeranandnatha's Sajeeva samadhi. There we got a copy of Saubhagya kalpadruma hand written by BHASKAR DEV VAMAN DEV JAHAGIRDAR (Diksha Name : Sri Chakranandnath), the grandson and disciple of Sri DHEERANANDNATHA. With reverence and thanks, we took up the copy for publication. Subsequently with the grace of Sri Matha, we also got a copy from Ahmedabad & Chennai. We then requested for the copy of text available with Saraswathi Bhavan library at Varanasi. On going through these defferent copies, we were pleasantly surprised at the similarity of texts. We then requested Prof. Shitala Prasad Upadhyay, to collate these different texts into a book that will greatly benefit all upasakas in the world of Sri Vidya.

We sincerely thank family descendents of Bhaskararaya at Narayanpet, Upasakas from Ahmedabad and Chennai, and Saraswathi Bhavan Library for the original text.

We sincerely thank Prof. Shitala Prasad Upadhyay for the honoray job of excellent compilation and editing of the text. But for his own inherent interest and deep knowledge of tantra shastras, it would not have been possible for him to compile this text.

We sincerely thank Sri Ananthanarayanan M.A. and upasakas from Sri Godbole Maharaj, an upsaka lineage form Sri Bhaskararaya, for proof-reading of drafts. Finally we thank upasakas from Sri Hamsa Charanalya and members of SVGP who played a very leading role by visiting various places and coordinated the efforts in bringing out this book.

This is an ancient text and we intend to distribute copies of the book free to senior and practicing Sri Vidya Upasakas and spiritual libraries across India. We have published this book in partial fulfillment of our objective to enlighten the world of Sri Vidya Upasakas with original texts which have not so far been printed. We offer this book at the lotus feet of Sri Matha seeking her abundant grace and blessings for the entire upasaka world.

With Viswa Prem,
B. Jayaraman
SHRI VIDYA GURUMANDALA PARISHAD (MUMBAI, INDIA)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्तावना

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति जन्तवः।
न हि पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः।।

इस संसार में हमें अच्छे फलों की प्राप्ति होती रहे, ऐसी कामना हर किसी की होती है, किन्तु इसकी प्राप्ति किस तरह से होगी इस पर हमारा कोई भी उद्यम नहीं होता। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप पुरुषार्थ-चतुष्टय से हम सभी परिचित हैं, परन्तु धर्म और अर्थ से नियन्त्रित कामसाधन से मोक्ष तक पहुँचने का मार्ग हम छोड़ चुके हैं। आत्मा प्रकाश की इकाई है। इसमें और शिव में वास्तविक भेद नहीं है। आत्मा का संवाहक हमारा देह होता है और नाना प्रकार की योनियों का आश्रय लेकर संसार में अवतरित होता है। यद्यपि शास्त्रों में इसे निर्गुण और निर्विकार कहा गया है तथापि सारे संस्कारों का वाहक भी उसी को माना गया है। शिवता आत्मा का स्वभाव है। जीवमात्र मायाशक्ति से उत्पन्न अपने अशुद्ध विकल्पों के प्रभाव से स्वत: भासमान शिवता का स्वेच्छया विमर्श नहीं करते जिसके कारण वह सांसारिक बनकर नाना प्रकार की योनियों में भटकते रहते हैं। जीवन-मरण की शृङ्खला में ही सारे दु:ख संमाहित होते हैं और जब तक इस शृङ्खला का अस्तित्व है तब तक दु:खों का अन्त कहाँ? यह शृङ्खला अज्ञान से निर्मित होती है और उसी से पुष्ट भी होती है। अज्ञान का लय ज्ञान में होता है और ज्ञान अनुभवगम्य होता है जिसकी प्राप्ति के नानाविध साधनों की चर्चा हमारे शास्त्रों में की गई है, उनमें से एक प्रमुख साधन श्रीविद्योपासना है। इस उपासना में प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग दोनों ही काल-क्रम से पुष्ट होते हैं। इसमें भगवती के यन्त्रात्मक कुण्डल्यात्मक आध्यात्मिक पूजन से लययोग की प्राप्ति होती है जिससे उपासक साधकों का देह देवालय और उनकी आत्मा देवता बन जाता है तथा उनका अन्त:करण चिदग्नि से उल्लसित हो जाता है।

श्रीविद्या की उपासना शाक्त-साधना के अन्तर्गत आती है। इसका लक्ष्य है--महाशक्ति जगन्माता की मातृरूप में उपासना। दश महाविद्याओं में परिगणित 'षोडशी' नाम श्रीविद्या अथवा त्रिपुरसुन्दरी का ही वाचक है। त्रिपुरा, ललिता, सुन्दरी आदि इसके नामान्तर हैं। अति प्राचीन काल से ही इनकी उपासना विभिन्न कोटि के साधकों में प्रचलित रही है। अन्यान्य उपासकों के वर्णनों के साथ-साथ इनका विपुल साहित्य भी उपलब्ध होता है। अनेक देवता, सिद्ध, ऋषि, मुनि आदि इनके उपासक रहे हैं। मानव कोटि में भी यह उपासना चिरकाल से प्रचलित रही है।

आगमों की भाषा में शुद्धविद्या का अधिष्ठाता होकर दु:ख-पंक में निमग्न जगत् को ज्ञान-दान करने तथा जीव और जगत् को शुद्ध अध्वा में आकर्षित करने वालों को 'विश्वेश्वर' कहा जाता है। इस महाविद्या के प्रवर्तकों में बारह विद्येश्वरों की सूचना मिलती है। वे हैं--

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मन्मथ, लोपामुद्रा, मनु, चन्द्र, कुबेर, अगस्त्य, अग्नि, इन्द्र, सूर्य, स्कन्द, शिव और क्रोधभट्टारक अथवा दुर्वासा। इनके अतिरिक्त अन्यान्य बीज और मन्त्रों की भी उपासना-पद्धति प्रचलित रही है। इन विद्या-प्रवर्तकों में अधिकांशों का सम्प्रदाय लुप्त हो गया है, यद्यपि इनकी विद्याओं के कभी प्रचलित रहने की सूचना यत्र-तत्र आज भी उपलब्ध होती है। वर्तमान में केवल मन्मथ अथवा कामराज का और किञ्चिदंश में लोपामुद्रा का ही सम्प्रदाय प्रकाश में है। कामराज विद्या कादि पंचदश वर्णात्मक और लोपामुद्रा हादि पंचदश वर्णात्मक है।

श्रीविद्या ही शक्तिचक्र की सम्राज्ञी है और ब्रह्मविद्यास्वरूपा आत्मशक्ति भी। यह केवल तन्त्रसिद्ध ही नहीं है, वेदानुमोदित भी है। ऋग्वेद के शांखायन-आरण्यक में इसका विवरण प्राप्त होता है। शांकरमठों में अद्यतन हो रही श्रीविद्या की उपासना और श्रीचक्र का पूजन इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं।

श्रीविद्या के तीन भेद कहे गये हैं। वे हैं--कादि, हादि और कहादि अथवा सादि। कादिविद्या गायत्री का अतिगुप्त रूप है और यह तत्त्व चारों वेदों में प्रतिपादित है--ऐसा आचार्य श्रीभास्करराय ने 'वरिवस्यारहस्य' में कहा है। इसके उपासक कामदेव (मन्मथ) थे। हादि विद्या की उपासिका अगत्स्य-पत्नी लोपामुद्रा थीं। कहादि भेद में तारिणी (तारा) की उपासना की जाती है। तारा साधक कादि और हादि दोनों मतों के अधिष्ठाता हंसतारा के अनुगत होते हैं। हंसतारा महाविद्या महायोगेश्वर तथा कादियों की 'काली' है, हादियों की 'सुन्दरी' है और कहादियों के लिए 'हंस' है। त्रिपुरा की उपासना में कादिमत के प्रथम भेद का नामान्तर 'मधुमतीमत' है, इसका रहस्योद्बोधन श्रीविद्यार्णव से होता है। द्वितीय मत है--मालिनी मत, जिसका नामान्तर कालीमत है। मधुमतीमत में देवी का स्वरूप जगच्चैतन्यरूपिणी है तथा कालीमत में देवी का स्वरूप विश्वविग्रहा है। गौड़ सम्प्रदाय में कादिमत का श्रेष्ठत्व है परन्तु कश्मीर और केरलमत में त्रिपुरा और तारा श्रेष्ठ मत है। कादियों की देवी काली है, हादियों की देवी त्रिपुरसुन्दरी हैं और कहादियों की देवी तारा अथवा नील सरस्वती हैं।

प्राचीन काल से ही शाक्तोपासना में समयाचार और कौलाचार का भेद विद्यमान रहा है। समयाचार वैदिक मार्ग का समकालीन है और उससे संश्लिष्ट भी। गौड़पाद, शंकरभगवत्पाद समयाचार के उपासक थे। कौलों में भी दो अवान्तर विभाग थे-पूर्व कौल और उत्तर कौल। पूर्व कौलों के मत में शिव और शक्ति आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी नाम से परिचित हैं। इस मत में शिव और शक्ति में शेष-शेषि भाव स्वीकृत है। किन्तु उत्तर कौलों का कहना है कि यत: शक्ति की ही सदा प्रधानता होती है, इसलिए शक्ति कभी शेष नहीं होती। शिव तत्त्वरूप में बदलते रहते हैं पर शक्ति सदैव तत्त्वातीत रहती है। शक्ति जब सभी कार्यात्मक प्रपंचों को अपने में कर्षित कर लेती है तो उसका नाम 'करण' होता है। इसी का पारिभाषिक नाम है--आधारकुण्डलिनी। इस कौलमत में मानव का चरमोत्कर्ष दिखलायी पड़ता है। ये लोग कहते हैं कि तपस्या, मन्त्र, साधना आदि के द्वारा चित्त की शुद्धि होने पर ही कौलज्ञान

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धारण करने की योग्यता आती है। आचार्य प्रवर श्रीभास्करराय ने सेतुबन्ध टीका में कहा है-

"पुराकृततपोज्ञानयज्ञतीर्थजपव्रतैः।
शुद्धचित्तस्य शान्तस्य धर्मिणो गुरुसेविनः।
अतिगुप्तस्य भक्तस्य कौलज्ञानं प्रकाशते।।"

एक स्थल पर कुलाचार का परिचय देते हुए आचार्य जी कहते हैं कि परशुरामकल्पसूत्र के सर्वसाधारण क्रम में "व्यवहारदेशस्वात्म्यम्" (सूत्र ५६) आदि से "परे शास्त्रानुशिष्टाः" (सूत्र ८१) तक जो आचार वर्णित है, वही कुलाचार है।

इस सुन्दरी की उपासना चन्द्ररूप में होती है। चन्द्र की सोलह नित्यकलाएँ होती हैं। इनमें पहली पन्द्रह कलाएँ उदय-अस्त के व्यापार से संपृक्त होती हैं किन्तु 'अमृता' नाम की सोलहवीं कला ह्रास-वृद्धि से मुक्त रहती है। वैयाकरणों की पश्यन्ती वाणी का यही स्वरूप है। दार्शनिकगण अपनी परिभाषा में इसे आत्मा कहते हैं। मन्त्र-शास्त्र में इसी को मन्त्र अथवा देवता का स्वरूप कहा जाता है। वह नित्योदित, अमृतस्वरूप और अखण्डरूप है। वही महात्रिपुरसुन्दरी ललिता है, सौन्दर्य और आनन्द का परमधाम है और वही पराकला चिदेकरसा 'श्रीविद्या' है। पहली पन्द्रह कला कालचक्र के अधीन होती हैं जो सूर्य और चन्द्र के संयोग और व्यवधान के परिणामस्वरूप प्रतिपदा आदि तिथिरूप हैं। नित्य होने पर भी इनका आविर्भाव और तिरोभाव होता रहता है किन्तु, षोडशी कला नित्य ज्योत्स्नामय सहस्रदलकमलस्थ नित्यकलायुक्त श्रीचक्रात्मक चन्द्रबिम्ब है। इसीलिए 'सुभगोदय' में षोडशी कला को सच्चिदानन्दरूपिणी कहा गया है।

साधक गण अपने रुचि-वैचित्र्य के अनुसार परमतत्त्व की पुरुष अथवा रमणीभाव में उपासना करते हैं किन्तु यह परमतत्त्व न तो पुरुष है और न ही प्रकृति, अपितु इन दोनों का अभेदात्मक सामरस्य है। जगत् का जो भी सौन्दर्य है, वह सब उस पूर्ण सौन्दर्य के कण मात्र का ही विलास है। वह एक पूर्ण सौन्दर्य ही मानों अकेला न रह सकने के कारण काल के ऊपर महाकाल के ऊर्ध्व देश में प्रस्फुटित हो रहा है तथा वही जगद् रूप में अखण्ड सौन्दर्यमय होकर विलसित हो रहा है अर्थात् मानों वह परमतत्त्व अपने में ही अपने स्वरूप के प्रतिबिम्ब को अपने आप ही देख रहा हो। यह प्रतिबिम्ब ही विश्व है। नटनानन्दनाथ 'कामकलाविलास' की टीका 'चिद्वल्ली' में कहते हैं कि जिस प्रकार कोई अति सुन्दर राजा अपने सामने रखे दर्पण में अपने ही प्रतिबिम्ब से मुग्ध होकर 'मैं' समझता है, उसी प्रकार वह परम तत्त्व परमेश्वर भी अपने ही अधीन आत्मशक्ति को देखकर 'मैं पूर्ण हूँ' इस प्रकार जानता है। यही पूर्णाहन्ता है। काम अथवा प्रेम इसी का प्रकाश है। यही आदि रस अथवा शृङ्गार रस है। विश्वसृष्टि के मूल में यही रसतत्त्व प्रतिष्ठित है। त्रिपुरासिद्धान्त में यही कामेश्वर और कामेश्वरी तत्त्व है। यही चरमतत्त्व 'सुन्दरी' अथवा 'त्रिपुरसुन्दरी' है। शङ्कराचार्य की सौन्दर्यलहरी (श्लोक १२) में इसी के

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वरूप का वर्णन है। उन्होंने कहा है कि पूर्ण सौन्दर्य अनन्त है, अतुलनीय है, उसके वर्णन में कवि असहाय हैं, अप्सराओं का सौन्दर्य भी उसके सामने फीका है, देवांगनाएँ उसके दर्शन के लिए लालायित रहती हैं, यही नहीं समग्र जगत् उसके लिए आकुल हैं। इसी सौन्दर्य के कणमात्र को प्राप्त कर विष्णु ने मोहिनी मूर्ति से साक्षात् शंकर को रिझाया। इसी की कृपा से कामदेव मुनिजनों को मोहित करते हैं। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ के पंचम श्लोक और 'नित्याषोडशिकार्णव' भी यही भाव ध्वनित करते हैं।

शाक्तमत में समग्र जगत् के मूल में एक अखण्ड सत्ता है जो विश्व का उपादान और निमित्त दोनों ही है। वह अनादि, अनन्त, स्वयंप्रकाश और चिदानन्दरूप है। यह शिव और शक्ति की अद्वैतावस्था है। वह अखण्ड सत्ता शिव के रूप में उदासीन, निष्क्रिय और निरपेक्ष द्रष्टा है तथा शक्ति रूप में वहीं विश्व का उपादान है। शिव और शक्ति के अभिन्न होने पर भी शिव तटस्थ रहते हैं और शक्ति संकोचप्रसारशालिनी होती है-ऐसी आगमों की मान्यता है। संसार में मूलत: शक्ति के इन्हीं दो रूपों की क्रीडा होती रहती है। इनमें कभी साम्य रहता है तो कभी इनमें आकर्षण-विकर्षण की क्रिया होती रहती है। साम्यावस्था में ये समरस एवं अद्वयभाव में अविभक्त होती हैं किन्तु वैषम्य में परस्पर में क्रियाशील रहती हैं। इन दोनों शक्तियों में एक 'अग्नि' है और दूसरा 'सोम'। अग्नि काल का रूप है और अविभक्त वस्तु को विभक्त कर प्रकट करता है किन्तु सोम अमृतरूप है और विभक्त वस्तु को अविभक्त रूप में संहृत करता रहता है। आगमों की भाषा में अग्नि प्रकाशरूप है और सोम विमर्शरूप है।

संहार अग्नि की क्रिया है और सृष्टि सोम की क्रिया है। अग्नि और सोम की साम्यावस्था में सृष्टि तथा संहार की कोई भी क्रिया नहीं होती। यह नित्य स्थिति की अवस्था है और इसका नाम है--रवि, सूर्य, सविता, काम आदि। यह कामतत्त्व अद्वैत भावापन्न है। अग्नि और सोम इसकी दो कलाएँ है। कामकला तत्त्व के वर्णन प्रसंग में बिन्दुत्रय से इनका संकेत किया जाता है।

अग्नि के संसर्ग से सोम विगलित होकर निरन्तर क्षरित होता रहता है। इस क्रिया में जब तक सोम की प्रधानता रहती है, सृष्टि होती रहती है। तन्त्रमत में निष्कल चित् से हार्द्धकला नामक चित्कला के उदय का यही तात्पर्य है। दूसरी तरफ जब इस संसर्ग में अग्नि की प्रधानता रहती है तब सोमकला अव्यक्त हो जाती है जो संहार का द्योतक है। इस प्रकार से कामकला का जो साम्यभाव अर्थात् रवि या सूर्य है वह नित्य साम्यावस्था में रहता है किन्तु कामकला के वैषम्य भाव अर्थात् अग्निकला और सोमकला से निरन्तर सृष्टि और संहारचक्र का आवर्तन चलता रहता है। अग्नि और सोम की साम्यावस्था का वाचक रवि या सूर्य वास्तव में शिव और शक्ति का सामरस्य स्वरूप है। शिव और शक्ति वस्तुत: प्रकाश और विमर्श के नामान्तर हैं जहाँ प्रकाश अग्निरूप है और विमर्श उस घृत का स्वरूप है जो अग्नि के संसर्ग से विगलन दशा को प्राप्त होता हुआ स्रवित होता है। स्थिति की अवस्था में प्रकाश और

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विमर्श समरस होते हैं, अत एव उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं होता किन्तु विमर्श का स्राव अबाधितरूप में चलता रहता है।

आद्या शक्ति सर्वतत्त्वातीत होते हुए भी सर्वतत्त्वमयी और प्रपञ्चरूपा है। वह नित्यपरमानन्दरूपा और चराचर की बीजस्वरूपा है। 'अहं' शिव का स्वरूप ज्ञान है एवं उसका विमर्श अथवा अहमाकार-ज्ञान शक्ति का स्वरूप है। शिव के स्वरूप ज्ञान की प्रकाशिका आद्या शक्ति है जिसकी उपमा निर्मल दर्पण के रूप में दी जाती है। इन दोनों का सम्बन्ध होने से ही सारे तत्त्वों का उदय होता है। यद्यपि वास्तविक रूप में शिव और शक्ति एक ही हैं तथापि चक्र के अवतरण में शक्ति का ही प्राधान्य स्वीकृत है। 'योगिनीहृदय' के अनुसार जब वह पराशक्ति स्वेच्छापूर्वक विश्व की सृष्टि करती है, तब चक्र उत्पन्न होता है। अत एव पराशक्ति के मूल स्वरूप को और उसकी स्फुरता को बोधगम्य बनाने के लिए दो अलग-अलग प्रकार की स्थितियाँ कल्पित की गयी हैं। आद्याशक्ति की स्फुरता का दर्शन, सर्वतत्त्वमय विश्व की सृष्टि तथा विश्वमय परदेवता के चक्र का आविर्भाव एक ही तथ्य का द्योतन करते हैं। निराकार, शून्यरूप, तत्त्वातीत प्रकाश या शिव 'अ'कार रूप होता है, यह प्रथम अवस्था है। पुनः शिव-शक्ति का सामरस्य, काम अथवा रवि, अग्निषोमात्मक बिन्दु द्वितीय अवस्था है। इस अवस्था में शिव का वाचक 'अ'कार एवं 'उ'कार तथा शक्ति का वाचक 'ह'कार हो जाता है। यहाँ दोनों का सामरस्य बिन्दुरूप में कल्पित है। तदनन्तर बिन्दु का स्पन्दन अथवा संसरण होता है जिसका नामकरण शुक्ल बिन्दु और रक्त बिन्दु के रूप में किया गया है। इस संसरण से जो अभिव्यक्त होता है उसका नाम 'संवित्' है। यह चिन्मयी और अग्निषोमात्मिका है। संवित् का नामान्तर 'चित्कला' अथवा हार्द्धकला है। तदनन्तर इस हार्द्धकला युक्त प्रकाश से बैन्दवचक्र का प्रसार होता है। उस प्रकाश को कामकलाक्षर भी कहा जाता है। यह बैन्दव चक्र ही मध्य त्रिकोण अर्थात् विश्व जननी का निवास-स्थान है जिससे समग्र विश्व क्रमशः आविर्भूत होता है। जिस बिन्दु से बैन्दव चक्र उत्पन्न होता है, उसे ही महाबिन्दु अथवा सदाशिव अथवा परमात्मा कहा गया है। यह महाबिन्दु पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी इन मातृकाओं की समष्टि अथवा तुरीय बिन्दु ही है। इसी को केन्द्र बनाकर मूल त्रिकोण प्रसृत होता है। इसीलिए इस त्रिकोण को त्रिमातृकामय और त्रिमातृका-रचित कहा जाता है। ये त्रिमातृकाएँ उस महाबिन्दु में एक बिन्दु के रूप में मिलती हैं। इनके अनन्तर वे बैन्दव चक्र में प्रसृत होकर परस्पर पृथक् भाव ग्रहण करती हुई तीन रेखाओं का भाव प्राप्त कर त्रिकोण के रूप में परिणत होती है। यही विश्वयोनि है। षट्त्रिंशत्तत्त्व इसके लहरी स्वरूप है। इस प्रकार बैन्दव चक्र से ही सभी तत्त्वों का अथवा समग्र विश्व का उद्भव होता है। यतः बैन्दव चक्र कामकलाक्षर द्वारा गठित होता है अतः सभी तत्त्व और चक्र मूलरूप में कामकलामय होते हैं।

कामकला शक्ति अथवा विमर्श का आदिरूप है। सृष्टि के प्रतीकस्वरूप श्रीचक्र का आविर्भाव इसी कामकला के प्रतीक-स्वरूप बिन्दु अथवा महाबिन्दु से होता है। महाबिन्दु के स्पन्दन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से ही इसमें विलीन तीनों बिन्दु अलग-अलग रूपों में परिणत होकर महात्रिकोण का आकार धारण करते हैं जिसमें समस्त विश्व का भान होता है। इस तरह से चक्रमयी सृष्टि का आविर्भाव होता है। यह चक्र महाबिन्दु के आश्रय से ही स्थिति लाभ भी प्राप्त करता है। इस प्रकार चिच्छक्ति अपनी ही भित्ति पर, अपने में ही निहित अव्यक्त विश्व को परिस्फुट करके उसे इदंरूप में ग्रहण करती है। जो विश्व पहले पूर्ण अहं के मध्य में अहंरूप में विद्यमान था, अब वह आभास रूप में इदंप्रतीति का गोचर बनकर चित्र-विचित्र रूप में उन्मीलित होता है।

वामकेश्वर तन्त्र में प्रकाश और उससे अविनाभाव सम्बन्ध रखने वाले विमर्श के चार-चार अंश कल्पित हैं। प्रकाशांश शक्तियों में अम्बिका,वामा, ज्येष्ठा, रौद्री तथा विमर्शांश शक्तियों में शान्ता, इच्छा, ज्ञान और क्रिया हैं। अम्बिका तथा शान्ता की सामरस्यावस्था में शान्तभावापन्न पराशक्ति 'परावाक्' नाम से जानी जाती है। यह आत्मस्फुरण की अवस्था है। इस अवस्था में अस्फुट रूप में समग्र विश्व बीजरूप में आत्मा की सत्ता में विद्यमान रहता है। इसके अनन्तर शान्ता से इच्छा का उदय होता है और यह अव्यक्त-विश्व शक्ति के गर्भ से बाहर निकलता है, उस समय इच्छाशक्ति वामाशक्ति से संयोगलाभ कर 'पश्यन्तीवाक्' नाम से परिचित होती है। तदनन्तर ज्ञानशक्ति का आविर्भाव होता है। उस समय ज्ञानशक्ति ज्येष्ठाशक्ति से अभिन्न होकर 'मध्यमावाक्' नाम से प्रसिद्ध होती है। इसके पश्चात् क्रियाशक्ति और रौद्रीशक्ति के सामरस्य लाभ से प्रपञ्चात्मक वाग्वैचित्र्यमय 'वैखरीवाक्' का प्रादुर्भाव होता है।

उपर्युक्त ये चारों वाक् परस्पर मिलकर मूल त्रिकोण के रूप में परिणत होते हैं। इस महायोनिरूप मूल त्रिकोण का केन्द्र-बिन्दु अम्बिका और शान्ता का सामरस्यभूत नित्यस्पन्दमय परावाक् होता है। यही अभिन्न-विग्रह शिव (कामेश्वर) और शक्ति (कामेश्वरी) का आसन है। मध्य त्रिकोण बिन्दु-विसर्गमय होता है। इसकी प्रत्येक रेखा पंच स्वरमय होती है। इस प्रकार से पंचदश स्वरात्मक इस त्रिकोण-मंडल का बिन्दुस्थान विसर्ग अर्थात् 'अः' की कलाओं से आक्रान्त रहता है जो चित्कला से प्रभावित रहता है। पश्यन्ती इसकी वाम रेखा, मध्यमा आधार रेखा और वैखरी दक्षिण रेखा है। इस त्रिकोण के बहिर्भाग में क्रम विन्यस्त रूप से शान्त्यतीत, शान्ति, विद्या, प्रतिष्ठा और निवृत्ति आदि पंचकलाओं का आभामय स्तर विद्यमान रहता है। इन स्तरों की समष्टि ही जगत् का स्वरूप है। अत एव श्रीचक्र में प्रदर्शित महाबिन्दु से भूपुर पर्यन्त समस्त विश्वचक्र उस महाशक्ति का विलास मात्र है।

इस त्रिकोण के स्पन्दनों से अष्टकोण कल्पित होते हैं। यह रौद्री शक्ति और शान्त्यतीत कला से व्याप्त रहता है। इसका प्रत्येक स्तर प्रकाश-विमर्शमय अर्थात् शब्द-अर्थमय होता है। उनके वाचक वर्ण और उनके वाच्य तत्त्वों का तादात्म्य तत्तत् चक्रांशों में प्रयुक्त होता है। समस्त चक्र में 'अ'कार से 'क्ष'कार पर्यन्त वर्णमाला तथा शिव से पृथ्वी पर्यन्त तत्त्वसमूह अभिव्यक्त रहते हैं। श्रीयन्त्र में सर्वबाह्य जो चतुष्कोण अंकित रहता है उसका पारिभाषिक नाम 'भूपुर' है। पूर्व आदि किसी भी मार्ग से प्रविष्ट होकर क्रमशः भीतर की ओर अग्रसर होते

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हुए महाबिन्दु तक पहुँचना ही 'श्रीयन्त्र की साधना' है।

योगमार्ग से चक्रवेध के क्रम में सर्वप्रथम अकुल अथवा विषुवत् का नाम आता है। इसके अनन्तर अष्टदल और उसके पश्चात् षड्दलविशिष्ट कुलपद्म का स्थान है। इसके ऊपर मूलाधार है और उसके ऊपर हृल्लेखा अथवा शक्ति का स्थान है। यह स्थान अनंगादि देवताओं से परिवेष्टित होकर मूलाधार से ढाई अंगुल ऊपर नीलवर्ण की कर्णिका के अन्दर प्रतिष्ठित रहता है। हृल्लेखा से दो अंगुल ऊपर स्वाधिष्ठानचक्र स्थित है। इसके पश्चात् क्रमशः मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि और अन्त में आज्ञाचक्र है। मूलाधार में अग्निबिम्ब, अनाहत में सूर्यबिम्ब और विशुद्धि में चन्द्रबिम्ब का दर्शन होता है। आज्ञाचक्र के ऊपर बिन्दु, अर्धचन्द्र, निरोधिका, नाद, नादान्त, शक्ति, व्यापिका या व्यापिनी, समना और उन्मना नामक भूमियाँ स्थित होती हैं। उन्मना तक काल की कलाएँ, तत्त्व, देवता और मन सर्वथा निरुद्ध हो जाते हैं जिसे तन्त्रशास्त्र में निर्वाणात्मक 'रुद्रवक्त्र' के नाम से जाना जाता है। यह अन्तिम भूमि सर्वथा निराकार, उच्चारहीन, शून्यमय एवं विश्वातीत होता है। इसके अनन्तर महाबिन्दु का स्थान है। इसका अपर नाम सादाख्य अथवा सदाशिवरूपी आसन है जिस पर तत्त्वातीत कामेश्वर और कामेश्वरी की क्रीड़ा होती है। कुलमार्ग के क्रम में पूर्वोक्त षड्दलविशिष्ट कुलपद्म के आगे का सारा मार्ग ही ग्राह्य होता है। अकुल से महाबिन्दु पर्यन्त जितने भी अवान्तर चक्र वर्णित हैं, उनकी समष्टि ही विश्व है। इसमें अकुल से आज्ञाचक्र पर्यन्त अंश को सकल मार्ग, आज्ञाचक्र के ऊपर स्थित बिन्दु से उन्मना पर्यन्त अंश को सकल-निष्कल मार्ग और उन्मना के ऊपरी भाग में स्थित महाबिन्दु को निष्कल संज्ञा दी गयी है।

उपासना के क्रम में भी इनके तीन विभाग दिखलाई पड़ते हैं। श्रीचक्र में चतुष्कोण से त्रिकोण तक को सकलमार्ग, त्रिकोणस्थ बिन्दु से उन्मना तक को सकल-निष्कलमार्ग एवं महाबिन्दु को निष्कलमार्ग कहा गया है। श्रीचक्रस्थ भूपुर, षोडशदल, अष्टदल, चतुर्दशकोण, बाह्य दशकोण, आन्तर दशकोण, अष्टकोण और त्रिकोण सुषुम्णामार्ग में स्थित निम्नतम भूमि अकुल से आज्ञाचक्र-पर्यन्त अवस्थित रहते हैं। इसके अनन्तर बिन्दु में प्रविष्ट होकर महाबिन्दु तक की यात्रा करनी पड़ती है।

चक्र साधना में विशेषरूप से अनुसन्धेय चार विषय होते हैं। ये हैं--पीठ, लिंग, वर्ण और अवस्था। प्रकाश और विमर्श के अंशभूत अम्बिकादि और शान्तादि नामों से परिज्ञात पूर्वोक्त चारों शक्तियाँ सर्व प्रथम त्रिकोण का रूप धारण करती है। इसके पश्चात् उक्त त्रिकोण में पीठादि का आविर्भाव होता है। शिवतत्त्व से आरम्भ कर पृथ्वीतत्त्व तक नामरूपात्मक छत्तीसों तत्त्व स्वरूप में बीजरूप में और बाहर सृष्टिरूप में भासमान रहते हैं। ये चारों शक्तियाँ क्रमशः सामरस्य प्राप्त करते हुए कामरूप, पूर्णगिरि, जालन्धर और ओड्याण नामक पीठों में प्रकट होती हैं। इन चारों शक्तियों की सामरस्य अवस्था 'पीठ' नाम से प्रसिद्ध है। मानव देह के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भी इनकी स्थिति शास्त्रों में वर्णित है। कामरूप पीठ का स्थान

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुषुम्ना के मूल में स्थित कन्दभूमि में है। कन्दस्थित पिण्ड ज्ञान-क्रियारूप, साक्षात्परमेश्वरी स्वरूपा, मातृकारूपिणी कुण्डलिनी शक्ति में लक्षित होता है। कन्द के पश्चात् 'पद' नामक द्वितीय पीठ 'पूर्णगिरि' है। इसका नामान्तर 'हंस' है। तृतीय जालन्धराख्य पीठ का नाम 'रूप' अथवा 'बिन्दु' और चतुर्थ ओड्याण नामक पीठ 'रूपातीत' है, जो चिन्मय सत्ता का ही स्वरूप है और निरंजन तत्त्व का वाचक भी। पिण्ड का स्थान मूलाधार, पद का स्थान हृदय, रूप का स्थान भ्रूमध्य और रूपातीत का स्थान ब्रह्मरन्ध्र है। इनके आकार-प्रकार, लिंग, वर्ण आदि का वर्णन तान्त्रिक ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

अनादिकाल से इस मायिक जगत् में भेदज्ञानाधीन जीव कर्म संस्कार से सम्पन्न होकर और कर्तृत्वाभिमान से पुष्ट होकर यत्नपूर्वक कर्म करता हुआ तथा साथ ही साथ उन स्वकृत कर्मों के फलों का भोक्ता बनता चला रहा है। अनेक और नाना प्रकार के जन्म-जन्मान्तरों से संसार की यह धारा प्रवहमान होती चली आ रही है। जब तक भेदज्ञान और कर्तृत्वाभिमान विलुप्त नहीं होते तब तक इस सांसारिक लीला का भी समापन नहीं होता और न तो जन्म-मरण एवं कालचक्र के आवर्तन से निवृत्ति ही होती है। यद्यपि जीव स्वरूपतः चिदात्मक है तथापि वह मायिक आवरण से आबद्ध होकर जड़सत्ता को ही चित्सत्ता मानता चला आ रहा है। जीव के इस अज्ञान के अपसरण में जो अहैतुकी अनुग्रह करके उसे विमुक्त करते हैं अथवा मुक्त होने में साहाय्य प्रदान करते हैं वही 'गुरु' कहलाते हैं। तान्त्रिक सम्प्रदायों में इनका विशेष महत्त्व स्वीकृत है। समूचे तन्त्र शास्त्र का ही अवतरण अवनीतल पर गुरु-शिष्य परम्परा से हुआ है, ऐसा निर्देश शास्त्रों में है।

काशीस्थ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के योगतन्त्र-ग्रन्थमालान्तर्गत 'परमानन्दतन्त्र' का प्रकाशन महेश्वरानन्दकृत 'सौभाग्यसन्दोह' नामक व्याख्या के साथ सन् १९८५ ई. में हुआ है। व्याख्या के आरम्भ और उसकी समाप्ति के अवसर पर परमानन्दतन्त्र की गुरुपरम्परा का उल्लेख मिलता है। आरम्भ में आद्यगुरु के रूप में भगवान् भैरव एवं आदि श्रोत्री के रूप में उनकी शक्ति महेश्वरी की स्तुति की गयी है। पुनश्च 'सौभाग्यप्रपञ्चोद्योत' पद्धति के कर्ता और 'मातृकाचक्रविवेक' के व्याख्याता शिवानन्द तथा 'सौभाग्यकल्पद्रुम' के रचयिता माधवानन्दनाथ का विशेष रूप से स्मरण किया गया है। व्याख्या के अन्त में परमानन्द सम्प्रदाय के गुरुओं के क्रम में बालगोपालेन्द्र यति, ईश्वरानन्दनाथ, लोकनाथाश्रम, यादवानन्दनाथ, माधवानन्दनाथ (अपर नाम लक्ष्मण), क्षेमानन्दनाथ, श्रीनिवास बुध, विश्वनाथ सूरि, अमृतानन्दनाथ, कोंकणस्थ भास्कर यज्वा आदि का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया गया है। महेश्वरानन्द के उक्त व्याख्या-ग्रन्थ की रचना ४९२९ कल्यब्द (सन् १८२८ ई.) के व्यतीत होने पर भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी रविवार को पूर्ण हुई थी।

'सौभाग्यकल्पद्रुम' की समाप्ति (पृ.३२६-२७) में ग्रन्थकर्ता द्वारा अपनी कृति के सन्दर्भ में निर्देश किया गया है कि कुलज्ञानार्णव से उद्‌भूत, परमानन्दमूलक, सौभाग्यरत्न

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का अनुजात (पश्चाद्भावी), दक्षिणामूर्ति से सेवित, गुरुवाणी रूप काण्डों वाला, सौभाग्यप्रपञ्चोद्योत से पल्लवित, अभीष्टप्रद यह सौभाग्यकल्पद्रुम श्रीयादवानन्दनाथ के पद्मपाद के अनुजीवी रामेश्वरनिवासी माधवानन्दनाथ के द्वारा ४९२३ कल्यब्द (सन् १८२२ ई.) के व्यतीत होने पर माधव (वैशाख) शुक्ल पञ्चमी को काशी में उद्भावित हुआ। यहाँ ध्यातव्य है कि 'कुलज्ञानार्णव' सौभाग्यसन्दोह व्याख्या (पृ.७०२) में उद्धृत है। परमानन्दतन्त्र प्रकाशित है। दक्षिणामूर्ति से संहिता अथवा सम्प्रदाय का निर्देश ग्रहण किया जा सकता है। शिवानन्दकृत सौभाग्यप्रपञ्चोद्योत पद्धति की चर्चा पूर्व में की जा चुकी है। श्रीयादवानन्दनाथ का गुरुरूप में स्मरण सौभाग्यकल्पद्रुम के मंगलाचरण (पृ.१) में भी ग्रन्थकर्ता द्वारा किया गया है।

इस प्रकार से प्रमाणित होता है कि सौभाग्यकल्पद्रुम परमानन्दतन्त्रानुमोदित एक पद्धति-ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में गृहीत प्राय: सभी कारिकाएँ परमानन्दतन्त्र में उपलब्ध होती हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से परमानन्द तन्त्र की यह परम्परा यद्यपि बहुत प्राचीन प्रतीत नहीं होती तथापि इस सम्प्रदाय की एक सशक्त परम्परा अद्यतन जीवन्त है। इनके आचार्यों की कृतियाँ प्रकाशित एवं अप्रकाशित मातृकाओं के रूप में देश और विदेश के अनेक ग्रन्थागारों में संकलित हैं। प्रकाशन के क्रम में स्वतन्त्रानन्दनाथकृत मातृकाचक्रविवेक की शिवानन्दरचित टीका, श्रीनिवासबुधकृत त्रिपुरारहस्य के ज्ञानखण्ड की तात्पर्यदीपिका व्याख्या सरस्वती भवन ग्रन्थमालान्तर्गत प्रकाशित हो चुकी हैं। क्षेमानन्दकृत सौभाग्यकल्पद्रुमटीका, सौभाग्यकल्पलता, सौभाग्यकल्पलतिका तथा अमृतानन्दकृत अष्टाङ्गनिर्णयामृतचषक की अनेक मातृकाएँ विभिन्न पुस्तकालयों में संगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त इस सम्प्रदाय के अन्य आचार्यों की भी कृतियाँ अन्वेषणीय हैं। अब सौभाग्यकल्पद्रुम भी प्रकाशित होकर आप सुधीजनों के सम्मुख उपस्थित होने जा रहा है।

सौभाग्यकल्पद्रुम के प्रकाशन का पूरा श्रेय श्रीविद्या गुरुमण्डल परिषद् मुम्बई के श्री बी.जयरमन जी को दिया जाना ही समीचीन है। इन महानुभाव की ही प्रेरणा से हम इस ग्रन्थ के सम्पादन-कार्य में प्रवृत्त हो सके हैं। इस संस्करण में सरस्वती भवन पुस्तकालय में संगृहीत सभी मातृकाओं की तथा श्रीजयरमन जी द्वारा उपलब्ध कराये गये दो मातृकाओं की सहायता ली गयी है, यद्यपि उनके पाठ-भेदों को ग्रन्थ में स्थान नहीं दिया गया है। इस ग्रन्थ की शुद्धतम प्रति तैयार करने में अपने विश्वविद्यालय के मीमांसा शास्त्र के श्रेष्ठ आचार्य डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी जी का विशिष्ट योगदान अविस्मरणीय रहेगा। अन्त में हम शारदा संस्कृत संस्थान के सर्वस्व और महान् श्रीविद्योपासक डॉ. विनोद राव पाठक जी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपना वक्तव्य यहीं समाप्त करते हैं।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय
अध्यक्ष,
सांख्ययोगतन्त्रागम विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००२

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विषयानुक्रमणिका

प्रथमः स्कन्धः

मङ्गलाचरणम् १
प्रात:स्मृति: ,,
स्नानम् २
भस्मधारणम् ,,
प्रात:सन्ध्या ३
मध्याह्नसन्ध्या ६
सायंसन्ध्या १०
भूशुद्धि: १३
भूतशुद्धि: ,,
मातृकान्यास: १४
अन्तर्मातृकान्यास: १५
बहिर्मातृकान्यास: १६
अन्तश्चक्रन्यास: १७
बहिश्चक्रन्यास: १८
वाग्देवतान्यास: ,,
मूलविद्यान्यास: १९
तत्त्वन्यास: २०
कामेश्वर्यादिन्यास: ,,
करशुद्धिन्यास: ,,

द्वितीयः स्कन्धः

पूजायास्त्रैविध्यम् २२
नित्यपूजा ,,
द्वारपूजाविधि: ,,
सामान्यकलशपूजा २४
अग्निकलापूजनम् २५
सूर्यकलापूजनम् ,,
चन्द्रकलापूजनम् २९
पञ्चब्रह्मकलामन्त्रा: ३३
सुधादेवीप्राणप्रतिष्ठा ३६
पीठपूजा ३८
आत्मपूजा ४२
चतुष्षष्ट्युपचारा: ४९
ओघत्रयसन्तर्पणम् ५८
आवरणपूजा ६०
- षडङ्गदेवतापूजनम् ,,
- प्रथमावरणपूजनम् ६१
- द्वितीयावरणपूजनम् ६४
- तृतीयावरणपूजनम् ६६
- चतुर्थावरणपूजनम् ६७
- पञ्चमावरणपूजनम् ६९
- षष्ठावरणपूजनम् ७१
- सप्तमावरणपूजनम् ७२
- अष्टमावरणपूजनम् ७४
- नवमावरणपूजनम् ७५
अखण्डार्चनम् ७६
पञ्चपञ्चिकापूजा ७७
चतु:समयपूजा ८०
आम्नायपूजा ८१
होमविधि: ८२
बलिपूजनम् ८३
आरार्तिकम् ८५
सुवासिनीपूजा ८६
शान्तिस्तवम् ९०
पूजाऽशक्ते व्यवस्था ९२
अनुकल्पपूजाविधि: ९३
स्वात्मीकारविधि: ९५
पूजायां वैकल्य्यप्रायश्चित्तम् ९६

तृतीयः स्कन्धः

नैमित्तिकपूजा ९८
काम्यपूजा १०१
पीठपूजानिर्णय: १०२
श्रीचक्ररचनाप्रकार: १०३
चक्रप्रतिष्ठाविधि: १०४
पुष्पपत्रादिनिर्णय: १०७

चतुर्थः स्कन्धः

दीक्षाविधि: १०९
पूर्णदीक्षाविधि: १११
सर्वतोभद्ररचना ,,
पुण्याहवाचनम् ११४
नान्दीश्राद्धविधि: ११६
प्रपूर्वदिनविधि: ११६

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परदिनकृत्यम्	११७	- षडाधारन्यासः	२००
दीक्षाभेदाः	१२५	- षडध्वन्यासः	२०१
मन्त्रदीक्षा	१२६	- षड्दर्शनन्यासः	,,
मन्त्रग्रहणविधिः	१२८	- षड्योगिनीन्यासः	२०२
उपासकधर्माः	१३०	- चरणन्यासः	,,
समयाचारः	१३१	- शाम्भवविद्यान्यासः	२०३
मण्डलाचारः	१३३	- शाम्भवचरणन्यासः	२०४
पञ्चमः स्कन्धः		- कामकलान्यासः	,,
पुरश्चरणविधिः	१३७	- अष्टात्रिंशत्कलान्यासः	२०६
देशनिर्णयः	,,	- पूर्णमण्डलन्यासः	२०७
भूमिपरिग्रहः	,,	लघुषोढान्यासः	२०८
कूर्मचक्रलेखनम्	१३८	- गणेशन्यासः	,,
पुरश्चरणनियमाः	१३९	- ग्रहन्यासः	२११
जपविधिः	१४०	- नक्षत्रन्यासः	,,
आसननिर्णयः	,,	- योगिनीन्यासः	२१२
मालानिर्णयः	१४१	- राशिन्यासः	२१३
होमनिर्णयः	१४४	- पीठन्यासः	२१४
भोज्यवस्तुनिर्णयः	१४५	महाषोढान्यासः	२१६
स्वप्ननिर्णयः	१४६	- प्रपञ्चन्यासः	२१७
मन्त्रशोधनसंस्काराः	१४८	- भुवनन्यासः	२१९
ग्रहणपुरश्चरणम्	१५५	- मूर्तिन्यासः	२२०
षष्ठः स्कन्धः		- मन्त्रन्यासः	२२२
अजपाजपः	१५७	- दैवतन्यासः	२२४
अङ्गपारायणम्	१५८	- मातृभैरवन्यासः	२२६
नाथपारायणम्	१६०	- श्रीचक्रन्यासः	२२८
घटिकापारायणम्	१६१	- नित्यान्यासः	,,
तत्त्वपारायणम्	१६३	- ओघत्रयन्यासः	२२९
नित्यापारायणम्	१६७	- षडङ्गयुवतीन्यासः	२३०
नामपारायणम्	१६९	- अणिमादिन्यासः	२३१
अष्टाङ्गनिर्णयः	१७२	- कामाकर्षिण्यादिन्यासः	२३२
मन्त्रपारायणम्	१७५	- अनङ्गकुसुमादिन्यासः	२३३
श्रीचक्रपारायणम्	१७८	- सर्वसंक्षोभिण्यादिन्यासः	२३४
कालचक्रपारायणम्	१९०	- सर्वसिद्धिप्रदादिन्यासः	२३५
सप्तमः स्कन्धः		- सर्वज्ञादिन्यासः	,,
विशेषन्यासाः	१९८	- वशिन्यादिन्यासः	२३६
- पञ्चाम्बान्यासः	,,	- कामेश्वर्यादिन्यासः	२३७
- नवनाथन्यासः	,,	- महात्रिपुरसुन्दरीन्यासः	२३८
- षोडशमूलविद्यान्यासः	१९९	महाशक्तिन्यासः	,,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सौभाग्यवर्द्धनन्यासः	२५१
सम्मोहनन्यासः	२५२
अष्टमः स्कन्धः	
प्रायश्चित्तविधिः	२५३
महासान्तपनम्	,,
चान्द्रायणम्	,,
कृच्छ्रम्	२५४
सहस्रभोजनविधिः	,,
त्रिशतभोजनविधिः	२५५
मिथुनाष्टकभोजनविधिः	,,
मिथुननवकभोजनविधिः	,,
एकाशीत्युत्तरशतमिथुनभोजनविधिः	,,
सम्मेलनमिथुनपूजनविधिः	,,
महायागविधिः	२५८
कौलश्राद्धविधिः	२६२
अन्त्येष्टिविधिः	२६५
मुद्रानिरूपणम्	२६८
- संघट्टमुद्रा	,,
- स्तम्भनमुद्रा	,,
- चतुरस्रमुद्रा	,,
- मत्स्यमुद्रा	,,
- कूर्ममुद्रा	,,
- महायोनिमुद्रा	,,
- अङ्कुशमुद्रा	,,
- धेनुमुद्रा	२६९
- कुम्भमुद्रा	,,
- तार्क्ष्यमुद्रा	,,
- अवगुण्ठनीमुद्रा	,,
- शङ्खमुद्रा	,,
- आवाहनीमुद्रा	,,
- सन्निधापनीमुद्रा	,,
- संन्निरोधिनीमुद्रा	,,
- सम्मुखीमुद्रा	,,
- त्रिखण्डामुद्रा	,,
- संक्षोभिणीमुद्रा	,,
- विद्राविणीमुद्रा	२७०
- आकर्षिणीमुद्रा	,,
- वशङ्करीमुद्रा	,,
- उन्मादिनीमुद्रा	,,
- खेचरीमुद्रा	,,
- बीजमुद्रा	,,
- योनिमुद्रा	,,
- पाशमुद्रा	,,
- धनुर्मुद्रा	२७१
- बाणमुद्रा	,,
- चक्रमुद्रा	,,
- गदामुद्रा	,,
- खड्गमुद्रा	,,
- पद्ममुद्रा	,,
- त्रिशूलमुद्रा	,,
- डमरुमुद्रा	,,
- शार्ङ्गमुद्रा	२७२
- नाराचमुद्रा	,,
- कौस्तुभमुद्रा	,,
- श्रीवत्समुद्रा	,,
- मुसलमुद्रा	,,
- संहारमुद्रा	,,
प्रथमस्कन्धमन्त्राणामुद्धारः	
मन्त्रोद्धारः	२७२
षड्बीजोद्धारः(पादुकोद्धारः)	२७३
कामेश्वरमन्त्रः	२७४
अमृतमालिनीमन्त्रः	,,
पाशुपतास्त्रमन्त्रः	,,
मूलगायत्री	२७५
सूर्यमन्त्रः	,,
वाग्भवगायत्री	,,
कामराजगायत्री	,,
शक्तिगायत्री	,,
नित्यामन्त्राः	,,
आसनमन्त्रः	२७९
प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः	,,
चक्रेश्वरीमन्त्राः	,,
वाग्देवतामन्त्राः	२८०
कामेश्वर्यादिन्यासमन्त्रः	,,
द्वितीयस्कन्धमन्त्राणामुद्धारः	
महागणपतिमन्त्रः	२८१

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तिरस्करिणीमन्त्रः	,,
सौभाग्यविद्या	,,
गङ्गामन्त्रः	२८२
अस्त्रमन्त्राः	,,
वासुदेवमन्त्रः	,,
पथिकदेवतामन्त्राः	२८३
शुक्रशापमोचनमन्त्रः	,,
पशुगायत्री	,,
पञ्चरत्नमन्त्राः	२८४
आनन्दभैरवमन्त्राः	,,
प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः	,,
अमृतेश्वरीमन्त्रः	२८५
दीपिनीमन्त्रः	,,
गोपालमन्त्रः	२८६
बटुकमन्त्रः	,,
अन्नपूर्णामन्त्रः	,,
गुरुत्रयमन्त्रः	,,
आत्मपादुका	२८७
सञ्जीवनीमन्त्रः	,,
मुद्रामन्त्राः	,,
धूपमन्त्रः	,,
कामधेनुमन्त्रः	२८८
योगिनीसमष्टिविद्या	,,
अखण्डमन्त्रः	,,
पूर्तिविद्या	,,
पञ्चपञ्चिकामन्त्राः	२८९
वज्रेश्वरीमन्त्रः	२९३
त्रिपुरसुन्दरीसमयविद्या	,,
आम्नायसमयदेवताविद्या	,,
बलिमन्त्राः	२९५
नवरत्नमन्त्रः	२९६
समर्पणमन्त्रः	,,
उच्छिष्टश्यामलामन्त्रः	२९७
उच्छिष्टभैरवमन्त्रः	,,
तृतीयस्कन्धमन्त्राणामुद्धारः	
निम्बपुष्पमन्त्रः	,,
दमनप्रोक्षणमन्त्रः	,,
अग्न्युत्तारणमन्त्रः	२९८
यन्त्रगायत्री	,,
चतुर्थस्कन्धमन्त्राणामुद्धारः	
आम्नायमन्त्राः	,,
पराप्रसादौघमन्त्रः	३०६
परौघमन्त्रः	३०७
कामराजौघमन्त्रः	,,
लोपामुद्रौघमन्त्रः	,,
चरणवासनामन्त्राः	३०८
शाम्भवचरणविद्या	३११
शाम्भवचरणवासना	३१२
कामकलाविद्या(परापादुका)	,,
हादिकादिविद्ययोःपादुकाक्रमः	३१४
सप्तविंशतिरहस्यानि	,,
पञ्चाम्बामन्त्राः	३१५
नवनाथमन्त्राः	३१६
षोडशमूलविद्यामन्त्राः	,,
षडाधारविद्याः	३१९
षडध्वविद्या	३२०
षड्दर्शनविद्या	,,
षड्योगिनीविद्या	,,
वह्निचैतन्यमन्त्रः	३२१
अग्निज्वालनमन्त्रः	,,
अग्निमन्त्रः	,,
सप्तजिह्वाबीजानि	,,
पञ्चमस्कन्धमन्त्राणामुद्धारः	
इन्द्रादिबलिदानमन्त्राः	३२२
मालापूजनमन्त्रः	,,
मालाग्रहणमन्त्रः	,,
रुद्रमन्त्रः	,,
नृसिंहबीजम्	,,
षष्ठस्कन्धमन्त्राणामुद्धारः	
पारायणमन्त्रः	,,
हैमवतीमन्त्रः	३२३
अनुक्रमणिका	,,
ग्रन्थकृत्प्रशस्तिः	३२६

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रथमः स्कन्धः

सौभाग्यकल्पद्रुमः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यत्रेदमखिलं भाति कार्यं बीजाङ्कुरोपमम्।
विमृशामि पराहन्तां स्वात्ममूर्त्तिमनुत्तराम्॥ १ ॥
नत्वा श्रीयादवानन्दपादपद्मं हृदि स्थितम्।
उद्भावयामि सौभाग्यकल्पद्रुममभीष्टदम्॥ २ ॥
प्रातःस्मृतिस्नानसन्ध्याजपन्यासादिभिः सह।
उपास्या या साधकेन्द्रैस्तामम्बां हृदि भावये॥ ३ ॥

अथ श्रीसाधकेन्द्र उषसि ह्युत्थितः स्वात्मदेवतां सञ्चिन्तयन्, स्थिरपद्मासन एकाग्रचित्तः स्वमूर्ध्न्यधोमुखविशदसहस्रदलकमलकर्णिका-मध्यगतोर्ध्वमुखद्वादशान्तकमलकर्णिकास्थितपूर्णचन्द्रमध्यगतप्रागग्रवर्ण-त्रिकोणगतं चन्द्रबिम्बनिभं श्रीनाथं ध्यात्वा, मूलाधारे ऊर्ध्वमुखरक्त-सहस्रदलकमलकर्णिकामध्यस्थितकुलकुण्डान्तः सुप्तसर्पाभां सार्धत्रि-वलयाकारां विसतन्तुसूक्ष्मां तडित्कोटिप्रभां कुण्डलिनीं ध्यात्वा, कुम्भकश्वासप्रबुद्धां तां सुषुम्णामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रस्थितचन्द्रमण्डलप्रविष्टां तेन प्राप्तैकरस्यां भावयन्, ततश्चन्द्रमण्डलगलदमृतधाराभिराप्लुतमात्मानं ध्यायन्, सङ्घट्टमुद्रां न्यासपूर्वकं पादुकामनुचिन्त्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं पृथिव्यात्मने श्रीगुरवे गन्धं कल्पयामि नमः॥ १ ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं आकाशात्मने श्रीगुरवे पुष्पं कल्पयामि नमः॥ २ ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं वाय्वात्मने श्रीगुरवे धूपं कल्पयामि नमः॥ ३ ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं तैजसात्मने श्रीगुरवे दीपं कल्पयामि नमः॥ ४ ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं अमृतात्मने श्रीगुरवे नैवेद्यं कल्पयामि नमः॥ ५ ॥

इति मानसैः पञ्चोपचारैः कनिष्ठाद्यनामान्तं वक्ष्यमाणकरन्यासमुद्रया सम्पूज्य, पञ्चमुद्राप्रदर्शनपूर्वकं ब्रह्मरन्ध्रेत्यादि स्तुत्वा, ततः चन्द्रमण्डल-निर्गतामाद्यां शक्तिमनाहतकमले ध्यानोक्तरूपां ध्यात्वा, यथाशक्ति

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

मानसोपचारैः समर्च्य, विद्यां मनसा जपन्, मूलाधारे पूर्ववद् ध्यात्वा, पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, देवतां स्तुतिभिः स्तुत्वा आवश्यकं निर्वर्तयेत्। सर्वत्र कर्मणि चतुस्ताररहितमन्त्रादौ चतुस्तारयोगः कर्त्तव्यः॥

अथवा तीर्थादौ यथोचितमवगाह्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आत्मतत्त्वाय स्वाहा॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः शिवतत्त्वाय स्वाहा॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सर्वतत्त्वाय स्वाहा॥

ओष्ठौ परिमृज्य, हस्तौ प्रक्षालयेदित्याचमनम्॥

अनामाकनिष्ठाङ्गुष्ठैर्वामनासया श्वासमापूर्य, मूलं त्रिर्मनसा प्रजप्येतरया विसृजेदिति **प्राणायामः**। एतद्द्वयं सर्वकर्मादौ ज्ञेयम्। देशकालादष्टाङ्गस्थितिं चोल्लिख्य, "परदेवताप्रीत्यर्थं स्नानमहं करिष्ये" इति संकल्प्य, भूशुद्ध्याद्यखिलकर्मसु तत्तदुल्लेखेन कुर्यात्। ततस्त्रिरवगाह्य जले पुरतः स्वाभिमुखाग्रं त्रिकोणं अग्रादिवामतो बालाबीजम्, मध्ये मायामेवमनामया कृत्वा,

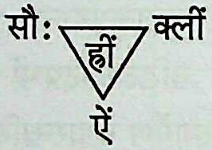

मध्ये देवतां हृदयादावाह्य, लं पृथिव्येत्याद्यभ्यर्च्य,

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों इति सूर्यमण्डलादङ्कुशमुद्रया तीर्थान्याकृष्य, तत्रावाह्य, अङ्गुष्ठानामायोगेन ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं जपन् देवतां तीर्थमयीं ध्यात्वोत्थाय, त्रिर्निमग्नो वाससी परिधायासने आसीनः, आचम्य, वामकरे भस्म दक्षेणाच्छाद्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय
नमः॥ १॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ५॥

कामेश्वरमन्त्रं च पठित्वा, एवमभिमन्त्र्य मस्तकभालहृत्करपादयोः सर्वाङ्गेषु ईशादिपञ्चमन्त्रैः प्रणवेन चोद्धूलनं कृत्वा, त्रिपुण्ड्रं मस्तकादिषु कुर्यात्। तत आचम्य, प्राणानायम्य, पूर्ववत्प्रातःसन्ध्यामुपासिष्य इति संकल्प्य, मूलविद्यात्रृष्यादिध्यानान्तं कृत्वा, स्वपुरतो जले श्रीयन्त्रं ध्यात्वा, तत्र हृदयाद्ध्यानोक्तरूपं देवतामावाह्य, तत्तोयं दक्षहस्तस्थित-मितरेणाच्छादितं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं वं रं यं हं इति भूतबीजपञ्चकेन, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सप्तावृत्त्या, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतमालिनी स्वाहेत्यमृतमालिनीविद्या सप्तावृत्या, चाभिमन्त्रितमितरकरगृहीतं तदङ्गुलिसन्धिनिःसृतं दक्षाङ्गुष्ठानामायोगेन मूर्ध्नि हृदि च, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन सप्तधाभ्युक्ष्य, शेषतोयं तेजोरूपं विमृश्याकुलामृतेन संयोज्य, दक्षनासयान्तःप्रविष्टमन्तःसकलकलुषक्षालन-पूर्वकं इतरनासया हस्ते निर्गतं विभाव्य, दक्षकरे गृहीत्वा, स्ववामे कल्पितवज्रशिलायां ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्लीं पशु हुं फट् इति पाशुपतास्त्रेणास्फाल्य प्रक्षालितहस्तं आचम्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ऐं वागीश्वरी विद्महे क्लीं कामेश्वरी धीमहि।
सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of America. HHFA(USA)

त्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहेति त्रिरर्घ्यं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं त्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां तर्पयामीति त्रिः सन्तर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं हंसः प्रकाशशक्तिसहितमार्ताण्डभैरवाय एषोर्घ्यः स्वाहेति त्रिरर्घ्यं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं हंसः प्रकाशशक्तिसहितमार्ताण्डभैरवश्रीपादुकां तर्पयामीति त्रिः सन्तर्प्य, मूलाधारे ऐं बीजं तटित्कोटिसमाभासं ध्यात्वा, तत्तेज आवाहनक्रमेण बहिराकाशेऽग्निमण्डले आवाह्य, तदुद्भूतां वागीश्वरीं ध्यायेत्। यथा—

पीतां पीताम्बरालेपस्त्रग्विभूषानुभूषिताम्।
तटित्कोटिसमाभासां बालामक्षस्त्रगुज्ज्वलाम्॥ १॥
पुस्तकाढ्यकराम्भोजां वह्निपीठे निषेदुषीम्।
वाग्भवीं वाग्भवोद्भूतां त्रीक्षणां सुस्मितां स्मरेत्॥ २॥

इति ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ऐं त्रिपुरादेवी विद्महे वागीश्वरी धीमहि।
तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्॥

वागीश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि स्वाहेति त्रिरर्घ्यं दत्वा, ऐं वागीश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि। त्रिः सन्तर्प्य, आचम्य, तोयाद्देवतामुद्वास्य, ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा, मूलगायत्रीं मूलं वाग्भवगायत्रीं वाग्भवबीजं च प्रत्येकं दशधा प्रजप्य,

"गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमे व्योमन्"

इत्युपस्थायाचम्य, "अनया प्रातःसन्ध्यया परदेवता प्रीयताम्" इति समर्पयेत्। आपदि न्यासान्तं कृत्वा, मूलदेव्यर्घ्यं तर्पणं च कृत्वा, मूलगायत्रीं दशधा जपेत् इति। आशौचेप्येतावदेव किं तु मन्त्रोच्चारो मानस इति। इति प्रातःसन्ध्यामुपास्य तत्तद्दिननाथविद्यां घटिकाविद्यां च त्रिः प्रजपेत्। यथा मूलस्य ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा वाग्भवगायत्रीं किञ्चित्प्रजप्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं हं प्रकाशात्मकोन्मन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः सं विमर्शात्मकसमनाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं कं खं गं घं ङं क्षं आनन्दात्मकव्यापकाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं चं छं जं झं ञं मं ज्ञानात्मकशक्त्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं टं ठं डं ढं णं लं सत्यात्मकध्वन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं तं थं दं धं नं वं पूर्णात्मकध्वनिमात्राकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं पं फं बं भं मं रं स्वभावात्मकानाहताकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यं रं लं वं शं यं प्रतिभात्मकेन्द्वाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं षं सं हं ळं क्षं ऊं सुभगात्मकबिन्द्वाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ९॥

अथ घटिकाविद्या

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं अकारादिलॄकारान्ताघटिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं एकारादिङकारान्ताघटिकाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं चकारादिणकारान्ताघटिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं तकारादिमकारान्ताघटिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं यकारादिक्षकारान्ताघटिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

अत्र घटिकाविद्यासु विसर्गरहितपञ्चाशद्वर्णयोगो ज्ञेयः। इति तत्तद्दिनविद्यां ज्ञात्वा त्रिधा जपः कर्त्तव्यः। नवभिः पञ्चभिश्च दिनैरनयोः समाप्तिः, दशमे षष्ठे चारम्भः। एवं तत्तन्नाथविद्याजपोत्तरं घटिकाविद्याजपोत्तरं च क्रमेण नववारं षष्टिवारं मूलमावर्त्तयेत्। नाथघटिकापारायणे अयं कर्तव्य इति। तच्च पारायणस्कन्धे निरूप्यते।

अथ मध्याह्नसन्ध्या

आचमनादिमार्ताण्डभैरवतर्पणान्तं समानम्। संकल्पे प्रातःपदस्थाने मध्याह्नपदं ज्ञेयम्। तद्वदनाहते क्लीं बीजं रक्तवर्णं ध्यात्वा, पूर्ववदाकाशे सूर्यमण्डले आवाह्य, तदुद्भूतां कामेश्वरीं ध्यायेत्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

रक्तां सुरक्ताम्बरभूषणाढ्यां
पाशाङ्कुशाभीतिवरान् दधानाम्।
शुचिस्मितामुद्भटयौवनाढ्यां
कामेश्वरीं संस्मरत त्रिनेत्राम्॥ १॥

इति ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

क्लीं त्रिपुरादेवी विद्महे कामेश्वरी धीमहि।
तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्॥

कामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। त्रिरर्घ्यं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कामेश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, आचमनाद्यवशिष्टं समानम्। वाग्भवगायत्रीबीजजपस्थले कामगायत्रीबीजजपो विशेषः। सन्ध्यां पूर्ववत्समर्पयेदिति मध्याह्नसन्ध्या॥

उपास्यतत्तद्दिनतत्त्वविद्यां प्रजपेत्। यथा—मूलेन ऋष्यादिपूजान्तं कामबीजगायत्रीजपं च कृत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अं शिवतत्त्वानन्दनाथरूपिणीकामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं कं शक्तितत्त्वानन्दनाथरूपिणीवज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं खं सदाशिवतत्त्वानन्दनाथरूपिणीभगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं गं ईश्वरतत्त्वानन्दनाथरूपिणीशुद्धविद्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं घं शुद्धविद्यातत्त्वानन्दनाथरूपिणीबालाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ङं मायातत्त्वानन्दनाथरूपिणीद्वादशार्धाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं चं कलातत्त्वानन्दनाथरूपिणीराजमातङ्गीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ७॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं छं विद्यातत्त्वानन्दनाथरूपिणीशुकश्यामलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं जं रागतत्त्वानन्दनाथरूपिणीशारिकाश्यामलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं झं कालतत्त्वानन्दनाथरूपिणीसङ्गीतश्यामलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ञं नियतितत्त्वानन्दनाथरूपिणीसाहित्यश्यामलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं टं पुरुषतत्त्वानन्दनाथरूपिणीहसन्तीश्यामलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ठं प्रकृतितत्त्वानन्दनाथरूपिणीलघुश्यामलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं डं अहङ्कारतत्त्वानन्दनाथरूपिणीसौभाग्यविद्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ढं बुद्धितत्त्वानन्दनाथरूपिणीबगलामुखिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं णं मनस्तत्त्वानन्दनाथरूपिणीवाराहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं तं श्रोत्रतत्त्वानन्दनाथरूपिणीबटुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं थं त्वक्तत्त्वानन्दनाथरूपिणीतिरस्करणिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं दं चक्षुतत्त्वानन्दनाथरूपिणीलोपामुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं धं जिह्वातत्त्वानन्दनाथरूपिणीभुवनेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नं घ्राणतत्त्वानन्दनाथरूपिणीअन्नपूर्णाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २१॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं पं वाकृतत्त्वानन्दनाथरूपिणीकामकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं फं पाणितत्त्वानन्दनाथरूपिणीतुरीयाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं बं पादतत्त्वानन्दनाथरूपिणीमहार्द्धाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं भं पायुतत्त्वानन्दनाथरूपिणीअश्वारूढाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं मं उपस्थतत्त्वानन्दनाथरूपिणीमिश्राम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यं शब्दतत्त्वानन्दनाथरूपिणीवाग्वादिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं रं स्पर्शतत्त्वानन्दनाथरूपिणीप्रासादपराश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं लं रूपतत्त्वानन्दनाथरूपिणीपराप्रासादश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं वं रसतत्त्वानन्दनाथरूपिणीपराश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं शं गन्धतत्त्वानन्दनाथरूपिणीपराशाम्भवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं षं गगनतत्त्वानन्दनाथरूपिणीऊर्ध्वाम्नायसमयासुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सं वायुतत्त्वानन्दनाथरूपिणीउत्तराम्नायकालिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं हं तेजस्तत्त्वानन्दनाथरूपिणीपश्चिमाम्नायकुब्जिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ळं अप्तत्त्वानन्दनाथरूपिणीदक्षिणाम्नायभोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं क्षं पृथिवीतत्त्वानन्दनाथरूपिणीपूर्वाम्नायमोदनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३६॥

एवं तत्तद्दिनविद्यां त्रिधा जप्त्वा, मूलं षट्त्रिंशद्वारमावर्तयेत्। अत्र कामेश्वर्यादिनामादौ तत्तन्मन्त्रपाठो मुख्यः। अत्राप्येतस्य कर्तव्यत्वं तत्त्व-पारायणाकरणे इति ज्ञेयम्॥

अथ सायंसन्ध्या

तत्रापि सङ्कल्पे सायंपदोहः। भैरवतर्पणान्तं विधाय, आज्ञाचक्रे सौः बीजं शुक्लवर्णं विभाव्य, पूर्ववदाकाशे चन्द्रमण्डले आवाह्य, तदुद्भूताम-मृतेश्वरीं ध्यायेत्। यथा—

शुक्लां शुक्लाम्बरालेपस्रग्विभूषानुभूषिताम्।
जटाजूटधरां नेत्रत्रयोद्भासिमुखाम्बुजाम्॥ १॥
ईषत्स्फुटितदंष्ट्रां च भैरवीरूपमास्थिताम्।
जरापलितसङ्कीर्णां लम्बपीनपयोधराम्॥ २॥
पाशाङ्कुशौ पुस्तकं च स्फटिकाक्षस्रजं करैः।
दधानां शक्तिबीजोत्थां पूर्णेन्दोर्मण्डले स्थिताम्॥ ३॥
ध्यायेदाद्यां परां शक्तिं शक्तिमद्भिर्निषेविताम्।
भोगमोक्षप्रदां शान्तामनन्साममृतेश्वरीम्॥ ४॥

पञ्चपूजां कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

सौः त्रिपुरादेवी विद्महे शक्तीश्वरी धीमहि।
तन्नोऽमृता प्रचोदयात्॥

अमृतेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नम इति त्रिरर्घ्यं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः अमृतेश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि नम इति त्रिः सन्तर्प्य, वाग्भवगायत्रीबीजस्थाने शक्तिगायत्रीं शक्तिबीजं च जपन्नवशिष्टं समापयेत्। एवं सायंसन्ध्यां समर्प्य, तत्तद्दिननित्यां प्रजपेत्। मूलस्य ऋष्यादिपूजान्तं शक्तिगायत्रीजपं च कृत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्ववशङ्करि

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं (४६) कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगाङ्गे भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं में ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ह्र्ब्लें ह्रीं (१४५) भगमालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं इं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा (११) नित्यक्लिन्नानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं च्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा (१०) भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं उं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः (८) वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ऊं ॐ ह्रीं फ्रें सः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा (१४) महाविद्येश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः (७) शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हूं क्षें ह्रीं फट् (१२) त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं लृं ऐं क्लीं सौः (३) कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ९॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं लॄं ऐं क्लीं सौः ह् स् क् ल् र् डैं ह् स् क् ल् र् डीं ह् स् क् ल् र् डौं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं (१४) नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं एं ॐ ह्रीं फ्रें स्रूं आं ह्रीं क्रों नित्यमदद्रवे हुं क्रों (१५) नीलपताकानित्या-श्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ऐं झ् म् र् यौं (१) विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॐ स्वौं सर्वमङ्गलायै नमः (९) सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि देवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं हुं रं रं रं हुं फट् स्वाहा (५३) ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अं च्क्रौं चित्रायै नमः (६) चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अंः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरीमहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अः ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं सप्तदशीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १७॥

अत्रोपान्त्यान्त्ययोस्तत्तद्दिननित्याजपोत्तरं प्रत्यहं जपस्त्रिंशन्नित्या-सम्प्रदाये। षोडशनित्यासम्प्रदाये तु चरमस्यैवेति बोध्यम्। एवं तत्तद्दिन-नित्याजपोत्तरं त्रिंशद्वारं षोडशवारं वा मूलमावर्तयेत्। एतच्च नित्या-पारायणाकरणे ज्ञेयम्।

अत्रेयमवधेयम्—सन्ध्यायां मूलदेव्यर्घ्यतर्पणजपोनामङ्गित्वम्। अवशिष्टस्याङ्गत्वम्। विस्मरणेनाङ्गलोपे पुनः करणं नास्ति अपितु

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

तत्प्रायश्चित्तं दशधा मूलजपः। अङ्गिलोपे तु द्वितीयसन्ध्याकालाद् वाक्स्मरणे पुनः सन्ध्याकरणम्, अनन्तरं स्मरणे अष्टोत्तरशतं मूलजपः। सम्पूर्णासन्ध्यालोपेऽप्येवम्। तत्र च मुख्यकालात्यये मध्यकालात्यये गौणकालात्यये च क्रमान्मूलगायत्रीदशकं तत्कालगायत्रीशतकं मूलशतकं च जपेत्। सनक्षत्रः समसूर्यः, अर्धसूर्यश्च मुख्यकालः। प्रातर्मध्याह्न-सन्ध्याकालो मध्यः। द्वितीयकालान्तो गौणः। प्रातःसन्ध्यायां प्राङ्मुख इतरयोरुदङ्मुखः। अर्घ्यप्रदानजपयोः सूर्याभिमुख इति।

एवं कृतसन्ध्यादिक्रियः, जपस्थानादौ पुरश्चरणस्कन्धे वक्ष्यमाणासु नान्यतमेऽन्यतमे वाऽऽसने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वासीनो भूशुद्ध्यादिकं कुर्यात्। यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इति भूतान्युत्सार्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

भूमि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इति भूमिं प्रार्थ्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूं भूम्यै नमः। ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः" इति भूमिमासनं च क्रमेण सम्पूज्य, तदुपर्युपविश्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुरुभ्यो नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परदेवतायै नमः" इति दक्षवामस्कन्धयोर्हृदि च क्रमेण नत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति आसनाधो वामपार्ष्णिघातत्रयेण, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट् इत्यस्त्रेण, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धनेन च पातालभूम्यन्तरिक्षविघ्नान् दूरीकृत्य स्वपरितो वह्निप्राकारं विभावयेदिति भूशुद्धिः॥

अथ भूतशुद्धिः

यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंस इति कुम्भकं कुर्वन् मूलाधारस्थां कुण्डलिनीं देहस्थाखिलदेवताजीवात्मसहितां ब्रह्मरन्ध्रोपरिस्थितशिवेन संयोज्य जडात्मकं स्थूलदेहं तद्वामकुक्षिगतं पापपुरुषं कृष्णवर्णं रक्तश्मश्रुशिरोरुहं क्रूरमधोमुखं खड्गचर्मधरं पातकोपपातकमयाङ्गं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विभाव्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं" इति जपन्, पूरककुम्भकरेचकं कुर्वन्, वायुवह्निसलिलैः शोषण-दाहनाप्लावनानि विधाय, तदनु पुनः "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सोहं" इति जपन् पूरकादि कुर्वन् आप्लावितभस्मनः शरीरात्मतया घनीभावं तत्र चैतन्यं हृदि जीवात्मनः आनयनं च विमृश्य, आत्मनः पञ्चभूतदेवताद्युत्पत्तिं विभाव्य, स्वस्वस्थानस्थितकुण्डल्यादि देवतासहितं शरीरं भावयेदिति भूतशुद्धिः॥

हृदयं करतलेन स्पृशन् "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं सोहं" इति त्रिर्जपेत्। अथवा द्वितीयस्कन्धे वक्ष्यमाणमन्त्रं वा त्रिर्जपेदिति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं" पूरककुम्भकरे-चकैस्त्रिधा प्राणायामं कृत्वा, **न्यासान्** कुर्यात्॥

अथ मातृकान्यासः

अस्य श्रीमातृकान्यासस्य "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे ऋषये नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गायत्रीछन्दसे नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातृकादेवतायै नमः" इति मस्तकमुखहृदयेषु विन्यस्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हलो बीजानि, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वराः शक्तयः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अव्यक्तकीलकम्" इति गुह्यपादद्वयनाभिषु विन्यस्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरीन्यासे विनियोगः"॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं नं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं फं बं भं मं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६ ॥

एवं हृदयादिन्यासः। इति तत्तदङ्गुष्ठे तत्तत्तर्जन्या, तर्जन्यादीषु तत्तदङ्गुष्ठेन, करतलपृष्ठयो इतरेतरकरतलभ्यां करन्यासं विधाय, तर्जनीमध्यमानामाभिः॥ १ ॥ मध्यमानामाभ्यां॥ २ ॥ मुष्टिनिर्गताङ्गुष्ठेन॥ ३ ॥ व्यत्यस्तहस्तपञ्चाङ्गुलिभिर्भुजयोः॥ ४ ॥ मुष्टिनिर्गततर्जन्यनामामध्यमाभि-र्नेत्रेषु॥ ५ ॥ मुष्टिनिर्गततर्जनीमध्यमाभ्यां त्रिर्वामकरतलसन्ताडनेन॥ ६ ॥ परितश्छोटिकया दिग्बन्धः। इति न्यासमुद्राः॥

अथ अन्तर्मातृकान्यासः

अथ ध्यानम्—

व्योमेन्द्वौरसनार्णकर्णिकमचां द्वन्द्वैः स्फुरत्केसरं
पत्रान्तर्गतपञ्चवर्गयशळार्णादित्रिवर्गं क्रमात्।
आशास्वस्त्रिषु लान्तलाङ्गलियुजा क्षौणीपुरेणावृतं
वर्णाब्जं शिरसि स्थितं विषगदप्रध्वंसि मृत्युञ्जयम्॥ १ ॥

इति ब्रह्मरन्ध्रे ध्यात्वा, गुरूपदेशानुरोधत आधारध्वनिं श्रुत्वा, कुम्भकश्वाससम्पर्कप्रबुद्धां कुण्डलिनीं ज्वलज्ज्वलनाकारां सुषुम्णामार्गेण तज्ज्वालास्पृष्टबिलस्थविधुबिम्बं विगलदमृतबिन्दुजातान् सबिन्दून् मातृकावर्णान् ध्यात्वा न्यसेत्। कण्ठदेशे विशुद्धिकमलं षोडशदलं विभाव्य, तद्दलेष्वग्रादि प्रादक्षिण्येन, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नम इत्यादि ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः नम इत्यन्तं स्वरषोडशकं विन्यसेत्। एवमग्रेऽपि—हृदि द्वादशदल-मनाहतसंज्ञं तत्र कादिठान्तद्वादशकम्। नाभौ दशदलं मणिपूरसंज्ञं तत्र डादिफान्तदशकम्। उपस्थे षट्दलं स्वाधिष्ठानसंज्ञं तत्र बादिलान्तषट्कम्। पायौ चतुर्दलं आधारसंज्ञं तत्र वादिसान्तचतुष्कम्॥ भ्रूमध्ये द्विदलमाज्ञासंज्ञं तत्र हक्षद्वयं चेत्यन्तर्मातृकान्यासः॥ १ ॥

अत्र शरीरान्तस्थाने अशुचिस्थाने च मनसान्यत्र दक्षाङ्गुष्ठ-

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

मध्यमानाभिः, दक्षबाह्वौ वामकरेण, अन्यत्र दक्षकरे मन्त्रदेवता-स्थानानामैक्यं भावयन्न्यसेदिति॥

अथ बहिर्मातृकान्यासः

तत्र ध्यानम्—

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो-
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम्।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणां पद्मसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि॥ १॥

दक्षाधःकराद्वामाधःकरान्तमायुधानि।

मूर्ध्नि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः॥ १॥
मुखवृत्ते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः॥ २॥
दक्षनेत्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं नमः॥ ३॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं नमः॥ ४॥
दक्षकर्णे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं नमः॥ ५॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं नमः॥ ६॥
दक्षघ्राणे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं नमः॥ ७॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं नमः॥ ८॥
दक्षगण्डे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं नमः॥ ९॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं नमः॥ १०॥
ऊर्ध्वोष्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं नमः॥ ११॥
अधरोष्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः॥ १२॥
ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमः॥ १३॥
अधरदन्तपङ्क्तौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं नमः॥ १४॥
जिह्वायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः॥ १५॥
ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः नमः॥ १६॥

दक्षहस्तमूल (१) मध्य (२) मणिबन्ध (३) अङ्गुलिमूल (४) तदग्रेषु (५) कवर्गम्॥ एवं वामहस्ते चवर्गम्॥ दक्षोरूमूल (१) जानु (२)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुल्फ (३) अङ्गुलिमूल (४) तदग्रेषु (५) टवर्गम्॥ एवं वामपदे तवर्गम्॥ दक्ष (१) वामपार्श्वयोः (२) पृष्ठे (३) नाभौ (४) उदरे (५) पवर्गम्॥ हृदये (१) दक्ष (२)-वामस्कन्धयोः (३) गलपृष्ठे (४) हृदयादिदक्षिण-कराङ्गुल्यन्तं (५), एवं वामकराङ्गुल्यन्तं (६), एवं दक्ष (७)-वामपादाङ्गुल्यन्तयोः (८), एवं नाभ्यन्तं (९) मूर्धान्तञ्च (१०) यादिक्षान्तान् विन्यस्य।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्सौः नम इति त्रिर्व्यापकत्वेन करतलाभ्यां मूर्धादिपादान्तं न्यसेदिति बहिर्मातृकान्यासः॥ २॥

अथान्तश्चक्रन्यासः

अधःसहस्रारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्य-मोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः॥ १॥

तदुपरि विषुसंज्ञे षड्दले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडश-शक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः॥ २॥

आधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मक-सर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः॥ ३॥

स्वाधिष्ठाने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्व-सौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहित-सम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः॥ ४॥

मणिपूरे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः दशारात्मकसर्वार्थ-साधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनी-रूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः॥ ५॥

अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें दशारात्मकसर्वरक्षा-

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

करचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः॥ ६॥

विशुद्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः॥ ७॥

लम्बिकाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः॥ ८॥

आज्ञायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापररहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः॥ ९॥

आज्ञाचक्रोपरि—एकैकाङ्गुलदेशे बिन्दौ (१) अर्धचन्द्रे (२) रोधिन्यां (३) नादे (४) नादान्ते (५) शक्तौ (६) व्यापिकायां (७) समनायां (८) उन्मनायां (९) क्रमेण अं आं सौः नम इत्यादि चक्रेश्वरीमन्त्रान् न्यसेत्।

ब्रह्मरन्ध्रे—महाबिन्दौ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीं नम इति न्यसेदिति अन्तश्चक्रन्यासः॥ ३॥

अथ बहिश्चक्रन्यासः

आदावुक्तान् पादयोः (१) जान्वोः (२) ऊरुमूलयोः (३) नाभौ (४) हृदि (५) कण्ठे (६) मुखे (७) नेत्रयोः (८) मूर्ध्नि (९) क्रमेण न्यसेदेति बहिश्चक्रन्यासः॥ ४॥

अथ वाग्देवतान्यासः

शिरसि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूँ वशिनीवाग्देवतायै नमः॥ १॥

ललाटे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः॥ २॥

भ्रूमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः॥ ४॥

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः॥ ५॥

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः॥ ६॥

मूलाधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः॥ ७॥

पादादिमूर्धान्तम्— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः॥ ८॥ इति वाग्देवतान्यासः॥ ५॥

अथ मूलविद्यान्यासः

मस्तके—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः॥ १॥

ललाटे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं नमः॥ २॥

दक्षनेत्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं नमः॥ ३॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः॥ ४॥

मुखे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः॥ ५॥

कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं नमः॥ ६॥

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं नमः॥ ७॥

दक्षपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः॥ ८॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं नमः॥ ९॥

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः॥ १०॥

लिङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः॥ ११॥

मूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं नमः॥ १२॥

दक्षोरौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः॥ १३॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः॥ १४॥

पादयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः॥ १५॥

पुनः पादादिमस्तकान्तं न्यसेदिति मूलविद्यान्यासः॥ ६॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ तत्त्वन्यासः

दक्षपादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आत्मतत्त्वाय नमः॥ १॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रियाशक्त्यै नमः॥ २॥
दक्षपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यातत्त्वाय नमः॥ ३॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः॥ ४॥
दक्षकपोले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवतत्त्वाय नमः॥ ५॥
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इच्छाशक्त्यै नमः॥ ६॥
मूर्ध्नि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वतत्त्वाय नमः॥ ७॥
तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तुर्यशक्त्यै नमः॥ ८॥ इति तत्त्वन्यासः॥ ७॥

अथ कामेश्वर्यादिन्यासः

मूलाधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रीशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मकरुद्रात्मशक्तिश्रीमहा-कामेश्वर्यै नमः॥ १॥

अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायके ज्ञानशक्त्यात्मक-विष्ण्वात्मशक्तिश्रीमहावज्रेश्वर्यै नमः॥ २॥

आज्ञायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे ओड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मशक्ति-श्रीमहाभगमालिन्यै नमः॥ ३॥

ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं परब्रह्मचक्रे महौड्याणपीठे चर्यानाथात्मके तुरीयदशाधिष्ठायके शान्ताशक्त्यात्मकपरब्रह्मात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः॥ ४॥ इति कामेश्वर्यादिन्यासः॥ ८॥

अथ करशुद्धिन्यासः

अङ्गुष्ठयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः॥ १॥
तर्जन्योः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः॥ २॥
मध्यमयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनामयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः॥४॥

कनिष्ठयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः॥५॥

करतलकरपृष्ठयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः॥६॥ इति करशुद्धिन्यासः॥९॥

ततः षडङ्गन्यासः॥१०॥ इति दशधान्यासः॥

इत्येवं न्यस्तदेह आम्नायादिमन्त्राननुस्मृत्य, मुख्यविद्यां जप्त्वा, सपर्यामारभेत्। अत्राशक्तौ द्विविधमातृकावशिन्यादिमूलविद्याकरशुद्धि षडङ्गमिति न्यासषट्कं कुर्यात्। आपदि तु मातृकामूलविद्याषडङ्गन्यासेन चारितार्थ्यम्। मृताशौचे तु मातृकादिकमापद्युक्तं मानसिकं कार्यम्। पूर्णाभिषिक्तः समर्थस्तु पञ्चाम्बादिन्यासाष्टकमपि न्यसेत्। तच्च न्यासस्कन्धे लिख्यते इति शम्॥

श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूर्वके।
कल्पद्रुमे ह्यभूत्स्कन्ध आद्यः सन्ध्यादिसत्फलः॥

॥ इति सौभाग्यकल्पद्रुमे प्रथमः स्कन्धः॥ १॥

✤ ✤ ✤

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

द्वितीयः स्कन्धः

अथ नित्यपूजाविधिः

नित्यपूजाविधानेन पूजिता या प्रयच्छति।
वाञ्छितार्थान् पूजकेभ्यस्तामम्बां प्रणमाम्यहम्॥

अथैवं कृतसन्ध्यादिक्रियः सपर्यामारभेत्। सा च त्रिधा— नित्यनैमित्तिककाम्यभेदात्। तत्र नित्यां निर्वर्त्य नैमित्तिकादिसपर्यां कुर्यात्॥ अत आदौ नित्यसपर्याविधिर्लिख्यते—

शुचिः प्रक्षालितपाणिपादौ वस्त्राभरणाद्यलङ्कृतनिजकलेवरः पञ्चतिक्तवासितमुखः सपर्यामन्दिरपूर्वद्वारादिचतुर्द्वारेषु अथवा परिकल्पित-द्वारे सपर्यास्थानात्पश्चिमदिशि विभावितद्वारे वा द्वारपूजां कुर्यात्। यथा— आचम्य, देहलीपुरतो गन्धोदकेन वृत्तचतुरस्रमण्डलं मत्स्यमुद्रया विधाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

अखण्डमण्डलाकारं विश्वं व्याप्य व्यवस्थितम्।
त्रैलोक्यं मण्डितं येन मण्डलं तत्सदाशिवम्॥

इति मण्डलेशमावाह्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं मण्डलेशाय नमः" इति गन्धपुष्पाक्षतैर्मण्डले सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति क्षालितसाधारं ताम्रपात्रं तदुपरि संस्थाप्य, तत्पात्रे "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां हृदयाय नमः" इति तोयमापूर्य, ब्रह्माण्डोदरेति वक्ष्यमाणमन्त्रेण वक्ष्यमाणविधिना तोये तीर्थमावाह्य, तीर्थं गन्धादिना सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं त्रिरभिमन्त्र्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं इति धेनुं प्रदर्श्यामृतीकृत्य, तार्क्ष्येण निर्विषीकृत्यास्त्रेण संरक्ष्य, कवचेनावगुण्ठ्य, अनामाङ्गुष्ठयोगाख्यतर्पणमुद्राधृतकुसुमोद्धृततोयेन द्वारं "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट्" इति द्वादशधा प्रोक्ष्य, अथ तर्जन्यङ्गुष्ठयोगात्मकपूजनमुद्रा-सादिताक्षतपुष्पक्षेपणं दक्षहस्तेन इतरेण पूर्ववत्तर्पणं युगपत्कुर्यादिति।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

यथा—

द्वारोर्ध्वे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अविघ्नाय नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महालक्ष्म्यै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सरस्वत्यै नमः॥ ३॥
दक्षभागे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः॥ ४॥
वामे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षें क्षेत्रपालाय नमः॥ ५॥
दक्षे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गङ्गायै नमः॥ ६॥
वामे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं यमुनायै नमः॥ ७॥
दक्षे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धां धात्र्यै नमः॥ ८॥
वामे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विधात्र्यै नमः॥ ९॥
दक्षे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं शङ्खनिधये नमः॥ १०॥
वामे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पद्मनिधये नमः॥ ११॥
अधोदेहल्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रः अस्त्राय फट् अस्त्रदैव्यै नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ब्राह्म्यै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं माहेश्वर्यै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं कौमार्यै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं वैष्णव्यै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं वाराह्यै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं माहेन्द्र्यै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं चामुण्डायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः महालक्ष्म्यै नमः॥ ८॥

इत्यत्र द्वारचतुष्टयपूजापक्षे अस्त्रदेवतान्तं प्रतिद्वारे पूजनीयम्। ब्राह्म्यादिषु द्वयं द्वयं प्राग्द्वारादि। इति द्वारपूजां विधाय, अपसर्पन्त्विति पठन्, अन्तःश्वासानुसारेण वामाङ्गसङ्कोचतः प्रविश्यासने उपविशेत्। अथ तत्र भूशुद्ध्यादिन्यासान्तं कुर्यात्। कृते भूशुद्ध्यादिके तु संकल्पमेवमेव कुर्यात्। प्रदेशान्तरे कृते तु भूशुद्धिमात्रं कुर्यात्। तत अष्टाङ्गादिस्थितिं चोल्लिख्य,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

"कामेश्वरीप्रीत्यर्थं यथासम्भवैर्द्रव्यैर्यथाशक्त्या तन्त्रोक्तविधानेन पूजनमहं करिष्ये।"

ततो नैमित्तिकपूजास्कन्धे वक्ष्यमाणश्रीयन्त्राद्यन्यतमं पूजापीठं स्वपुरतो हस्तमितां भूमिं मध्ये विहाय, यथासम्भवे पीठादौ स्वलङ्कृते स्थापयेत्। अत्र दिग्व्यवस्था पूज्यपृष्ठभागस्य पूर्वत्वेन ज्ञेया। तेन पूज्यपुरोभागस्य पश्चिमत्वमिति। पीठदक्षभागे दीपम्, स्वदक्षिणपृष्ठकोणे नातिदूरतः प्रक्षालनपात्रम्, स्वदक्षसमीपतः पुष्पाद्युपकरणं च स्थापयेत्। ततो महागणपतिं न्यासपूर्वकं किञ्चिज्जपित्वा समर्प्य,

विघ्नेश्वर नमस्तेस्तु भक्ताभीष्टफलप्रद।
मया सम्प्रार्थितो विघ्नान् पूजायां विनिवारय॥

इति प्रार्थ्य, तिरस्कृतिं गणेशवज्जपित्वा द्वारदेशे ध्यात्वा, पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, यथाशक्ति मूलविद्यां च तथैव प्रजप्य, ताम्रपात्रे गन्धाक्षतपुष्पतोयं गृहीत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं हंसः मार्ताण्डभैरवाय एषोर्घ्यः स्वाहेति दत्वा, ततो दक्षभागे पीठाग्रे समीपतः सामान्यकलशम्, तस्योत्तरोत्तरतः बलिपात्रं गुरुपात्रं श्रीपात्रं शङ्खं हेतुपात्रं द्वितीयतृतीयमुद्रापात्राणि च स्वपुरत आत्मपात्रं चेति दश पात्राणि स्थापयित्वा, ततः सामान्यकलशाधो वृत्तचतुरस्रमण्डलं मत्स्यमुद्रया कृत्वा, शङ्खमुद्रया दक्षाङ्गुष्ठेन मण्डलं स्पृष्ट्वा, वृत्ते—"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सामान्यकलशमण्डलाय नमः" इति सम्पूज्य, चतुरस्राग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये चतुर्दिक्षु च षडङ्गं पुष्पाक्षतैः पूजयेत्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हृदयाय नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः शिखायै वषट्॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कवचाय हुम्॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः अस्त्राय फट्॥ ६॥ इति।

तत्र सुगन्धितोयपूरितं पात्रं साधारं संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्तीर्थान्याकृष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इति कलशे आवाह्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति अशेषतीर्थालवाले शिवजटाधिरूढे गङ्गे गङ्गाम्बिके स्वाहा" इत्यभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रया वमित्यमृतीकृत्य, तार्क्ष्यमुद्रया निर्विषीकृत्य, "ॐ नमः सुदर्शनायाऽस्त्राय फट्" इत्यस्त्रमुद्रया संरक्ष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हुमिति कवचेनावगुण्ठन-मुद्रयावगुण्ठ्य, गन्धपुष्पाक्षतैः सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलाष्टकेनाभि-मन्त्रयेदिति **कलशपूजाविधिः**॥

अथ हेतुपात्राधः पूर्ववन्मण्डलाद्यङ्गपूजान्तं कृत्वा, तदुपरि-स्थापितमाधारं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने हेतुपात्राधाराय नम इति सम्पूज्य, तस्मिन् प्रागादिवृत्तक्रमेणाग्निकलाः पूजयेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्माकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिनीकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिनीकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रीकलायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपाकलायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलाकलायै नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं हव्यवहाकलायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवहाकलायै नमः॥ १०॥

इति सम्पूज्य अग्निकलात्मकमाधारं विभाव्य, आधारोपरि स्थापितं सुवासितं सुधूपितं हेतुकलशं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डलायार्थ-प्रदद्वादशकलात्मने हेतुपात्राय नम इति सम्पूज्य, तस्मिन् प्रागादिपूर्वक्रमेण सूर्यकलाः पूजयेत्। यथा—

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनीकलायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिनीकलायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीचिकलायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुचिकलायै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्णाकलायै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदाकलायै नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वाकलायै नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिनीकलायै नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिणीकलायै नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमाकलायै नमः॥ १२॥

इति सम्पूज्य पात्रं सूर्यकलात्मकं ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीहेतुपात्राय नम इति गन्धपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य प्रणमेत्। अथ सुवासिततीर्थकलशहस्तां सुवासिनीं,

रक्तां रक्ताम्बरां रत्नभूषाभिः समलङ्कृताम्।
सुधापात्रधरां देवीं मदघूर्णितलोचनाम्॥

इति योगिनीबुद्ध्या ध्यात्वा, गन्धादिभिरभ्यर्च्य, कलशं स्पृशन्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् नम इति सप्तधाभिमन्त्र्य, ततः स्वपुरत आधारोपरि निधाय कुसुमोद्धृततीर्थलेशैः पथिकदेवतां द्वारदेशाभिमुखतस्तर्पयेत्॥ यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें पथिकदेवताभ्यो हुं फट् स्वाहा॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ग्रामचण्डालिनी हुं फट् स्वाहा॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं तपिनीचण्डालिनी हुं फट् स्वाहा॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं निन्दाचण्डालिनी हुं फट् स्वाहा॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं सर्वपशुजनदृष्टिदोषाय हुं फट् स्वाहा॥ ५॥

इति कलशं गन्धादिभिः सम्पूज्य तं स्पृशन् जपेत्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया।
इन्द्राय पातवे सुतः॥ १॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम्॥
द्रुणा सधस्थमभ्यासदत्॥ २॥
वरिबोधा तमो भव मं हिष्ठो वृत्रहन्तमः॥
पर्षि राधो मघोनाम्॥ ३॥
अभ्यर्थं महानां देवानां वीतिमन्धसा।
अभिवाजमुतः श्रवः॥ ४॥
त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवे दिवे।
इन्द्रो त्वे न आशसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ ६॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजा॥ ७॥
हिरण्यमयी अरणी यन्निर्मन्थतो अश्विना।
तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिभिष्ट्वं देव सवितुर्वर्षिष्ठैः सोमधामभिः।
अग्ने! दक्षैः पुनीहि नः॥ ९॥
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया।
विश्वेदेवाः पुनीत मां जातवेदः पुनीहि माम्॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रप्यायस्व प्रस्पन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः।
देवेभ्य उत्तमं हविः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं स च ता परुष्ण्या।
असिक्रिया मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या-सुषोमया॥ १२॥
सितासिते सरिते यत्र सङ्गते तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।
ये वै तन्वां विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्त्वं भजन्ते॥ १३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ता मन्दसाना मनुषो दुरोणे आधत्तं रयिं दशवीरं वचस्यवे।
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथेष्ठामप-दुर्मतिं हतम्॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रोणामेक उदकं गामवाजति मां समेकः पिंशति सूनया भृतम्।
आनिम्रुचः शकृदेको अपाभरत्किंस्वित्पुत्रेभ्यः पिता उपावतु॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिरण्यपात्रमधोः पूर्णं ददाति मधव्योऽसानीति।
एकधा ब्रह्मणे उपहरति एकधैव यजमान आयुस्तेजो दधाति॥ १६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घृणिः सूर्य आदित्यो न प्रभावात्यक्षरं मधु क्षरन्ति तद्रसम्।
सत्यं वै तद्रसमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥ १७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एकमेव परंब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
उमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति वारुणीजलमूर्तये ग्रामेश्वरि पथिकदेवते गृह्ण गृह्ण सर्वदोषान् मोचय मोचय श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्रशापविमोचिकायै स्वाहा। इति।

ततस्तत्तीर्थलेशार्द्रीकृतकरावाघ्राय, तत्तीर्थोदकं नासिकामार्गेणान्तः-प्रविष्टं ब्रह्मरन्ध्रस्थचिच्चन्द्रमण्डलामृतसामरस्येनामृतमयं ध्यात्वा, क्षणं निरालम्बस्थितस्ततो ब्रह्मरन्ध्रान्नेत्रमार्गेण निर्गत्य, कलशस्थितं ततः अशेषतीर्थोदकं चिदमृतमयं विमृश्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः (३)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ नमो भगवति तिरस्करणिके त्रैलोक्यमोहिनि महामाये पशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं'' इति पुनरभिमन्त्र्य सामान्यकलशदक्षभागे स्थापयेत्।

ततः द्वितीयपात्राधो मण्डलाद्यङ्गपूजान्तं कृत्वा, तत्राधारपात्रयो अग्निसूर्यकलाः पूर्ववत्पूजयेत्।

इयान् विशेषः—हेतुपात्रपदस्थाने द्वितीयपात्रेत्यूहः। एवमेवाग्रे तत्तत्स्थाने तत्तत्पात्रपदप्रयोगो ज्ञेयः।

ततस्तस्मिन् स्थलपुष्पखण्डान् निक्षिप्तान् तीर्थेनाभ्युक्ष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि।
तन्नश्छागः प्रचोदयात्॥
शिवोत्कृतमिदं पिण्डमतस्त्वं शिवतां व्रज।
उद्बुध्यस्व पशो त्वं हि न पशुस्त्वं शिवो ह्यसि॥

इति त्रिस्त्रिरभिमन्त्र्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ १॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ २॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ ३॥
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ४॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-
र्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ५॥

इति चाभिमन्त्र्य, ''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने द्वितीयाय नमः'' इति सम्पूज्य, पुष्पखण्डेषु प्रागादि सोमकलाः पूजयेत्॥ यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताकलायै नमः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदाकलायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषाकलायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टिकलायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टिकलायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रतिकलायै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृतिकलायै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनीकलायै नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं चन्द्रिकाकलायै नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्तिकलायै नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नाकलायै नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीकलायै नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीतिकलायै नमः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदाकलायै नमः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णाकलायै नमः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृताकलायै नमः॥ १६॥

इति सम्पूज्य, शुद्धिं सोमकलात्मकं ध्यायेत्। एवमेव तृतीय-पात्रविधिः॥

अयं विशेषः—पशुपाशायेत्यादिमन्त्रस्थाने त्र्यम्बकमिति मन्त्रः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ १८॥

मुद्रापात्रस्थाने मण्डलाद्यङ्गपूजान्तं कृत्वा, तत्र मुद्रां पात्रे निधाय तीर्थेनाभ्युक्ष्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत्परमं पदम्॥

इति प्रजपेदिति।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः शुद्ध्यादिकममृतमयं ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीमिति द्वितीयादिलेशं हेतुपात्रे निःक्षिप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम्।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह॥

इति हेतुपात्रे तीर्थमापूर्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने हेतुपात्रामृताय नमः" इति तीर्थं सम्पूज्य, तस्मिन् सोमकलाः सम्पूज्य, हेतुपात्रतीर्थं सोमकलात्मकं ध्यात्वा, तीर्थे प्रागादिनिर्ऋतिपर्यन्तं अकारादिविसर्गान्तान्, तदादिवायुपर्यन्तं कादितान्तान्, तदादिप्रागन्तं थादिसान्तान्, कोणेषु हळक्षान्, दक्षवामपार्श्वयोर्हक्षौ, तत्त्रिकोणमध्ये हंस इति। वर्णत्रिकोणं तद्बहिःक्रमेण चतुरस्रवृत्तत्रिकोण-षट्कोणवृत्ताष्टदलानि च विभाव्य वर्णत्रिकोणमध्ये पूजयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लूं गगनरत्नाय नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्लूं पातालरत्नाय नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं न्लूं नागरत्नाय नमः॥ ५॥

अथ हेतुतीर्थं दर्व्यामादाय दक्षहस्तपूजामुद्रागृहीतपुष्पाक्षतैः इतरहस्ततर्पणमुद्राधृतपुष्पखण्डोद्धृतदर्वीतीर्थबिन्दुभिर्युगपत् चतुरस्र-दक्षवामयोः क्रमेण तर्पयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं आनन्दभैरवाय वौषट्। आनन्दभैरव-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्ह्क्ष्म्ल्व्र्यीं सुधादेव्यै वौषट्। आनन्दभैरवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

दर्वीगतशेषतीर्थं पात्रान्तरे संस्थाप्यावरणशेषेण सहैव सुवासिनीपूजान्ते स्वीकुर्यात्।

अथ त्रिकोणे अग्रादिवामावर्तेन कोणत्रये मध्ये च पूजयेत्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रीशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मकरुद्रात्मशक्ति-श्रीमहाकामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायके ज्ञानशक्त्यात्मकविष्ण्वात्मशक्ति-श्रीमहावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे ओड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मशक्ति-श्रीमहाभगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं परब्रह्मचक्रे महौड्याणपीठे चर्यानाथात्मके तुरीयदशाधिष्ठायके शान्ताशक्त्यात्मकपरब्रह्मात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

अथ षट्कोणे प्रागादि ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हृदयाय नमः हृदयदेवीश्रीत्यादि अस्त्रदेवीश्रीत्यन्तं षडङ्गपूजां कृत्वा, अष्टदले प्रागादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं ब्राह्मीसहितासिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं ईं माहेश्वरीसहितरुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं ऊं कौमारीसहितचण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ॠं वैष्णवीसहितक्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं लॄं वाराहीसहित-उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ऐं माहेन्द्रीसहितकपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं औं चामुण्डासहितभीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अः महालक्ष्मीसहितसंहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ तत्पात्रमाच्छाद्य स्पृशन्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निकलायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यकलायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोमकलायै नम इत्याद्याः पूर्वोक्ताग्निसूर्यसोमकलाः प्रजप्य, पञ्चब्रह्मकलामन्त्राश्च प्रजपेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं ब्रह्मकलायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं सृष्टिकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं ऋद्धिकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं स्मृतिकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं मेधाकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं कान्तिकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं लक्ष्मीकलायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं द्युतिकलायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं स्थिराकलायै नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं स्थितिकलायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं सिद्धिकलायै नमः॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं विष्णुकलायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं जराकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं पालिनीकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं शान्तिकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं ईश्वरीकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं रतिकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं कामिकाकलायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं वरदाकलायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं आह्लादिनीकलायै नमः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं प्रीतिकलायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं दीर्घाकलायै नमः॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
प्र तद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षयन्ति भुवनानि विश्वा॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं रुद्रकलायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं तीक्ष्णाकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं रौद्रीकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं भयाकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं निद्राकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं तन्द्राकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं क्षुधाकलायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं क्रोधिनीकलायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं क्रियाकलायै नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं उद्गारीकलायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं मृत्युकलायै नमः॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं बिन्द्वीश्वरकलायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं पीताकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं श्वेताकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं अरुणाकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं असिताकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं अनन्ताकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ ४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं नादसदाशिवकलायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं निवृत्तिकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं प्रतिष्ठाकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं विद्याकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शान्तिकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं इन्धिकाकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं दीपिकाकलायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रेचिकाकलायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं मोचिकाकलायै नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं पराकलायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं सूक्ष्माकलायै नमः॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं सूक्ष्मामृताकलायै नमः॥ ११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ज्ञानामृताकलायै नमः॥ १२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं आप्यायिनीकलायै नमः॥ १३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं व्यापिनीकलायै नमः॥ १४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं व्योमरूपाकलायै नमः॥ १५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः अनन्ताकलायै नमः॥ १६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा॥ ५॥
मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमान् अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति तीर्थं मधुरूपं ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

हिरण्यपात्रमधोपूर्णं ददाति मधव्योऽसानीति।

एकधा ब्रह्मणे उपहरति एकधैव यजमान आयुस्तेजो दधाति॥ ७॥

इति पूर्णं ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

घृणिः सूर्य आदित्यो न प्रभावात्यक्षरं मधु क्षरन्ति तद्रसम्।

सत्यं वै तद्रसमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥ ८॥

इति तेजोरूपं ब्रह्ममयं ध्यात्वा। अथ तत्पात्रे—

बालसूर्यारुणां देवीं स्वर्णवस्त्रां त्रिलोचनाम्।

सृणिपाशवराभीतिकरां पद्मस्थितां स्मरेत्॥

इति ध्यात्वा, सकलकलासहितां सुधादेवीमावाह्य—

अस्य श्रीसुधादेवीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुसामानि छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता, आं ह्रीं क्रों बीजादि। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इति कराङ्गन्यासः।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः

पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमलिगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्॥

बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या

देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥

वामदक्षोर्ध्वाधः क्रमेणायुधानि। पञ्चपूजा। तत्पात्रं स्पृशन्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ओं क्षं सं हंसः ह्रीं ओं समस्तकलासहितसुधादेवि प्राणा इह प्राणाः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ओं क्षं सं हंसः ह्रीं ओं समस्तकलासहितसुधादेवि जीव इह स्थितः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ओं क्षं सं हंसः ह्रीं ओं समस्तकलासहितसुधादेवि सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ओं क्षं सं हंसः ह्रीं ओं समस्तकलासहितसुधादेवि वाङ्मनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणपादप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा क्षं सं हंसः ह्रीं ओं। इति त्रिरावृत्या प्राणप्रतिष्ठा द्विधा॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौंः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्सौंः इति त्रिधा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं

अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेह्यकुलरूपिणि॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं

अकुलस्थामृताकारे सिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं

तद्रूपैकैकरस्यत्वं कृत्वार्घ्ये चित्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारे मयि चित्स्फुरणं कुरु॥ ३॥

इति चतुर्धा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्लूं झ्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। इति पञ्चधा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः॥ इत्यष्टधा दीपिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं इति नवधा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा। इति सकृत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं धेनुमुद्रया पात्रं स्पृष्ट्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं महायोन्या आच्छाद्य, धेनुयोनीं प्रदर्श्य, सुधादेवीं पञ्चोपचारैः सम्पूजयेत्।

अथ सामान्यार्घ्यनामकशङ्खाधः पूर्ववन्मण्डलाद्यङ्गपूजान्तं कृत्वा, तत्राधारे अग्निकलाः, सामान्यार्घ्ये सूर्यकलाः, सामान्यकलशं तोयेनापूर्य, हेतुबिन्दुं निक्षिप्य, तत्र सोमकलापूजनम् अमृतीकरणादिचतुष्टयं च कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अष्टाभिमन्त्र्य दर्व्या तत्तोयेन समस्तोपकरणाभ्युक्षणमिति। ततः श्रीगुरुर्बलि आत्मपात्राणां मण्डलम्, आधारेऽग्निकलाः, पात्रे सूर्यकलाः, हेतुतीर्थेनापूरणं तत्र सोमकलापूजनम्, मूलाष्टकबालाभ्यां पादुकया बटुकेनात्माष्टाक्षरमनुनाभिमन्त्रणं शिवरूपविभावनमिति पात्रासादनम्।

अथ पीठपूजा

स्वपुरतः स्थापिते पीठे पुष्पाक्षतैः पूजयेत्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं मण्डूकाय नमः॥ १॥

इत उत्तरं बीजाभावस्थले सर्वत्राद्यक्षरं सबिन्दुकमादौ योजनीयम्।

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालाग्निरुद्राय नमः॥ २॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलप्रकृत्यै नमः॥ ३॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आधारशक्त्यै नमः॥ ४॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कूर्माय नमः॥ ५॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनन्ताय नमः॥ ६॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वराहाय नमः॥ ७॥

तद्दंष्ट्राग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पृथिव्यै नमः॥ ८॥

तच्चतुर्दिक्षु पश्चिमादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इक्षुसमुद्राय नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मदिरासमुद्राय नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घृतसमुद्राय नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुग्धसमुद्राय नमः॥ ४॥ १२॥

मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं नवखण्डविराजितरत्नद्वीपाय नमः॥ १॥

तत्पूर्वाद्यष्टदिक्खण्डे मध्ये च वामवर्तेन—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं पुष्परागरत्नाय नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः नीलरत्नाय नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं वैडूर्यरत्नाय नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं विद्रुमरत्नाय नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं मौक्तिकरत्नाय नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं गोमेदरत्नाय नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं पद्मरागरत्नाय नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं शं वज्ररत्नाय नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सं हं ळं क्षं मरकतरत्नाय नमः॥ ९॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णपर्वताय नमः॥ १॥

तत्र ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नन्दनोद्यानाय नमः॥ २॥

तन्मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्पवृक्षवनवाटिकायै नमः॥ ३॥

तदन्तः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वसन्तादिषड्ऋतुभ्यो नमः॥ ४॥

तत्पश्चिमे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्रियाश्वेभ्यो नमः॥ ५॥

तत्पूर्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्रियार्थगजेभ्यो नमः॥ ६॥

तत्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विचित्ररत्नभूमिकायै नमः॥ ७॥ २९॥

तत्र पूर्वादिमध्यान्तं वामेन—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालचक्रेश्वर्यै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुद्राचक्रेश्वर्यै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातृचक्रेश्वर्यै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देशचक्रेश्वर्यै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नचक्रेश्वर्यै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुचक्रेश्वर्यै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्त्वचक्रेश्वर्यै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रेश्वर्यै नमः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूर्तिचक्रेश्वर्यै नमः॥ ९ ॥ ३८ ॥

तदन्तः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं करुणातोयपरिखाय नमः॥ १ ॥

तदन्तः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णप्राकाराय नमः॥ २ ॥

तन्मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिमयमण्डपाय नमः॥ ३ ॥ ४१ ॥

तत्रैर्ऋत्यादिकोणचतुष्टये मध्ये च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालरूपिणीशक्त्यै नमः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देशरूपिणीशक्त्यै नमः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आकाररूपिणीशक्त्यै नमः॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शब्दरूपिणीशक्त्यै नमः॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सङ्गीतयोगिन्यै नमः॥ ५ ॥ ४६ ॥

मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिमयवेदिकायै नमः॥ १ ॥

तत्पृष्ठतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्वेतछत्राय नमः॥ २ ॥

बिन्दुचक्रोपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नसिंहासनाय नमः॥ ३ ॥ ४९ ॥

वायव्यादिपादचतुष्टये—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे नमः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णवे नमः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुद्राय नमः॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईश्वराय नमः॥ ४ ॥

तदुपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिवमहाप्रेतफलकाय नमः॥ ५ ॥ ५४ ॥

तत्र वायव्यादिकोणचतुष्टये—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धर्माय नमः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानाय नमः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैराग्याय नमः॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐश्वर्याय नमः॥ ४ ॥

पश्चिमादिचतुर्दिक्षु—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अधर्माय नमः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अज्ञानाय नमः॥ २ ॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अवैराग्याय नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनैश्वर्याय नमः॥ ४॥ ६२॥

मध्ये उपर्युपरि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मायायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चदशफणायुतानन्ताय नमः॥ ३॥

मध्यफणे द्वादशदलपद्मं विभाव्य, तत्र—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्माय नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आनन्दकन्दाय नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संविन्नालाय नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विकारमयकेसरेभ्यो नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातृकातत्त्वविलसत्कर्णिकायै नमः॥ ९॥

तस्याम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अर्कमण्डलाय नमः॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं सोममण्डलाय नमः॥ ११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं वह्निमण्डलाय नमः॥ १२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं बोधजाय सत्त्वाय नमः॥ १३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं प्रकृतिजाय रजसे नमः॥ १४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं मोहजाय तमसे नमः॥ १५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आत्मने नमः॥ १६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्तरात्मने नमः॥ १७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमात्मने नमः॥ १८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः॥ १९॥ ८१॥

तच्चतुर्दिक्षु मध्ये च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानतत्त्वात्मने नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मायातत्त्वात्मने नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलातत्त्वात्मने नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यातत्त्वात्मने नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परतत्त्वात्मने नमः॥ ५॥ ८६॥

अष्टदलेषु मध्ये च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मोहिन्यै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षोभिण्यै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वशिन्यै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तम्भिन्यै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आकर्षिण्यै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्राविण्यै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आह्लादिन्यै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लिन्नायै नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लेदिन्यै नमः॥ ९॥

पीठे समष्टया—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः॥ १०॥ ९६॥

इति सम्पूज्य पीठमलङ्कृत्य, अथ **आत्मपूजां** कुर्यात्। यथा—आत्मानं गन्धाद्यैरलङ्कृत्य, शिरसि—

करााभ्यां चिन्मुद्रासमधुनृकपालं च दधतीं
द्रुतस्वर्णप्रख्यामरुणकुसुमालेपवसनाम्।
कृपापूर्णापाङ्गीमरुणनयनां बर्बरकचा-
मुपेतां तिस्रौघैर्यजतु गुरुपङ्क्तिं कृतमतिः॥ १॥

इति ध्यात्वा, पुष्पाक्षतैरात्मपात्रतीर्थलेशैः पुष्पखण्डोद्धृतैः शिरसि गुरून्, हृदि देवताम्, मूले आत्मानमर्चयेत्।

तत्र शिरसि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति सम्पूज्य—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आदिनाथानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आदिनाथशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिवशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईश्वरशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुद्रानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुद्रशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्ण्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १० ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ११ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १२ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धौघेभ्यः परापराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति सम्पूज्य—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनन्दनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनातनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनत्कुमारानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनत्सुजातानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋभुक्षतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दत्तात्रेयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रैवतकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्यासानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मानवौघेभ्योऽपराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति सम्पूज्य—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नृसिंहानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भास्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेन्द्रानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्ण्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

इति गुरुत्रयं तत्तन्मन्त्रेण महापादुकां च तर्पयित्वा, अथ हृदि बिन्दुकण्ठ-दक्षवामस्तनस्थिताग्रं त्रिकोणं विभाव्य, तत्र हेतुपात्रत्रिकोणवत्सन्तर्प्य, तन्मध्ये-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहाराज्ञीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहागुप्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहाज्ञप्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहानन्दाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहास्पन्दाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महामहाशयाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

मूलाधारे आत्मपादुकां ध्यात्वा, अमुकानन्दनाथात्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति नाभेरधः सन्तर्प्य, तत्पात्रस्थतीर्थमितरपात्रे किञ्चिदादाय, वामकरे गृहीतम्, इतरेणाच्छाद्य, मूलाधारादिब्रह्मरन्ध्रान्तं तडित्कोटिसमाभासां मातृकामूलत्रिमूर्तिमयीं कुण्डलिनीं स्वात्मशक्तिरूपां ध्यायन्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्द-स्पर्शरूपरसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलभूम्यात्मनात्मतत्त्वेनाणवमलं स्थूलदेहं संशोध्य, ऐं क ए ई ल ह्रीं

अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेह्यकुलरूपिणि॥

ऐंकारात्मकाय धर्मप्रददशकलात्मनेऽग्निमण्डलरूपाय सत्त्वात्मकब्रह्म-ग्रन्थिविदलनप्रवीणाय विश्ववैश्वानरविराट्स्थूलशरीररूपाय वाणी-वल्लभसहितात्मने विश्वपुरुषात्मने प्रथमखण्डनिवासाय कुण्डलिनी-मूलरूपाय ब्रह्मणे स्वाहा। ब्रह्मण इदं न मम॥

स्वात्ममूलत्रिकोणस्थे कोटिसूर्यसमप्रभे।
कुण्डल्याकृतिचिद्वह्नौ हुने द्रव्यं समन्त्रकम्॥ १॥

पुनस्तीर्थमादानम्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना विद्यातत्त्वेन कार्ममलं सूक्ष्मदेहं संशोध्य, क्लीं ह स क ह ल ह्रीं

अकुलस्थामृताकारे सिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥

क्लींकारात्मकायार्थप्रदद्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलरूपाय राजसात्मक-विष्णुग्रन्थिविदलनप्रवीणाय चतुर्दशेन्द्रियसाम्यसाक्षिसूक्ष्मशरीररूपाय लक्ष्मीनारायणसहितात्मने तैजसपुरुषात्मने द्वितीयखण्डनिवासाय कुण्डलिनीमध्यरूपाय मुकुन्दाय स्वाहा। मुकुन्दायेदं न मम॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इदन्तापात्रभरितमहन्तापरमामृतम् ।
पराहन्तामये वह्नौ जुहोमि शिवतासये॥ २॥

तीर्थादानम्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना शिवतत्त्वेन मायीयमलं कारणदेहं संशोध्य, सौः स क ल ह्रीं

तद्रूपैकैकरस्यत्वं कृत्वाऽर्घ्ये चित्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारे मयि चित्स्फुरणं कुरु॥

सौःकारात्मकाय कामप्रदषोडशकलात्मने सोममण्डलरूपाय तामसात्मकरुद्रग्रन्थिविदलनप्रवीणायाव्याजसव्याकृतकारणशरीररूपाय विद्याशङ्करसहितात्मने प्राज्ञपुरुषात्मने तृतीयखण्डनिवासाय कुण्डलिनीशिखान्तर्द्योतमानभद्रमूर्तये पशुपतये स्वाहा। पशुपतय इदं न मम॥

प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम्।
धर्माधर्मकलास्नेहं पूर्णवह्नौ जुहोम्यहम्॥ ३॥

प्रक्षालिते पात्रे तीर्थादानम्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलभूमिमायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मनात्मविद्याशिवतत्त्वेनाणवकार्ममायीयमलं स्थूलसूक्ष्मकारणदेहं संशोध्य,

ऐं क ए ई ल ह्रीं

अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेह्यकुलरूपिणि॥

क्लीं ह स क ह ल ह्रीं

अकुलस्थामृताकारे सिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्त्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सौः स क ल ह्रीं

तद्रूपैकैकरस्यत्वं कृत्वाऽर्घ्ये चित्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारे मयि चित्स्फुरणं कुरु॥

ऐंक्लींसौःकारात्मकाय धर्मार्थकामप्रदाष्टात्रिंशत्कलात्मनेऽग्निसूर्यसोम-मण्डलरूपाय सत्त्वराजसतामसात्मकब्रह्मविष्णुरुद्रग्रन्थिविदलनप्रवीणाय विश्ववैश्वानरविराटचतुर्दशेन्द्रियसाम्यसाक्ष्यव्याजसव्याकृतस्थूलसूक्ष्म-कारणशरीररूपाय वाणीवल्लभलक्ष्मीनारायणविद्याशङ्करसहितात्मने विश्वतैजसप्राज्ञपुरुषात्मने खण्डत्रयनिवासाय कुण्डलिनीमूलमध्या-वसानरूपा सदाशिवाय स्वाहा। सदाशिवायेदं न मम॥

अन्तर्निरन्तरमनिन्धन एधमाने
मोहान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्मिंश्चिदद्भुतमरीचिविकाशमाने
विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्॥

धर्माधर्महविर्दीप्तावात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्णावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्॥

प्रक्षालितपात्रे आत्मपात्रसम्पूर्णतीर्थदानम्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं जुहोमि मां स्वाहा।

हिरण्यपात्रमधोः पूर्णं ददाति मधव्योऽसानीति।
एकधा ब्रह्मणे उपहरति एकधैव यजमान आयुस्तेजो दधाति॥

इति पूर्णपात्रं स्वात्मीकृत्य,

अलिपिशितपुरन्ध्रीभोगपूजापरोऽहं
बहुविधकुलमार्गारम्भसम्भावितोऽहम्।
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीमाश्रितोऽहं
गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम्॥ ५॥

इति पूर्णमात्मानं ध्यात्वा, पात्रं प्रक्षाल्य, पुष्पादियुतं संस्थाप्य, नत्वा, सपर्यामारभेत्। यथा—शिरसि त्रिखण्डमुद्रां बध्वा, महापादुकामामृश्य,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ब्रह्मरन्ध्रस्थश्रीगुरुनाथात्मकपरशिवाभिन्नमात्मानं ध्यायन्निरालम्बमुद्रां क्षणं बध्वा, पञ्चपूजां कृत्वा, गुरुमुद्राः प्रदर्श्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे॥

इत्यनुज्ञां प्राथ्य, मूलऋष्यादिध्यानान्तम्। मूलेन पाददिबिलान्तं व्यापकं विन्यस्य, विश्वाभिन्नमातृकामयमूलविद्यारूपमात्मानं विभावयन्, क्षणं विश्रम्य, स्वसम्प्रदायानुरोधेनान्तःपूजां विधाय, अञ्जलिना पुष्पाण्यादाय,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः॥

इति श्रीचक्रे बिन्दुस्थाने पञ्चब्रह्ममयमञ्चासीनसमानाकारकामेश्वराङ्के मूर्तिं ध्यात्वा, मूलाधाराद् ब्रह्मरन्ध्रे सदाशिवाख्यचन्द्रमण्डले षट्चक्रभेदक्रमेणानुप्रविष्टां कुण्डलिनीं तदेकीभूतां चिरं विभाव्य, तदुभयं परप्रकाशैकरूपं ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि—

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥
एह्येहि देवदेवेशि त्रिपुरे देवपूजिते।
परामृतप्रिये शीघ्रं सान्निध्यं कुरु सिद्धिदे॥
देवेशि भक्तिसुलभे सर्वावरणसंवृत्ते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव॥

इति नासाध्वना करस्थपुष्पसंयुक्तं तेजो ध्यात्वा, तत्पुष्पाणि कल्पितश्रीचक्रमध्यस्थमूर्तिमूर्ध्नि निःक्षिप्य, अन्तःपूजितां देवीं तेजोमयीं बहिःकल्पितमूर्तिप्रविष्टां पूर्वोक्तकामेश्वराङ्कनिलयां सावयवां ध्यायन्,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि इहावाहिता भव॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि इह तिष्ठ तिष्ठ॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि इह सन्निधेहि॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि इह सन्निरुद्धस्व॥ ४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि इह सम्मुखी भव ॥ ५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि इहावगुण्ठिता भव ॥ ६ ॥

इति तत्तन्मुद्रां प्रदर्श्य, बालाबीजत्रयेण देवताङ्गेषु षडङ्गन्यासेन तां सकलीकृत्य, अमृतीकृत्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं दीपिनी ह्सौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्सौः इति शङ्खतोयेन देवीं त्रिः प्रोक्ष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं हं गणपकालिके सौः स क ल ह्रीं क्लीं ब्लीं ह्रीं श्रीं इति सञ्जीवनीविद्यया देवता हृदि स्पृशन् जीवं निवेश्य, पूर्वोक्तमनुना प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् ॥

अयं चात्रोहः। कलासहितसुधादेवीपदस्थाने आवृत्तिसहिता-महात्रिपुरसुन्दरीति।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ६ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ७ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सर्वबीजामुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ८ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं पाशमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ १० ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों क्रों अङ्कुशमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ११ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं थं धनुर्मुद्रां प्रदर्शयामि ॥ १२ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः यां रां लां वां सां बाणमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ १३ ॥

इति त्रयोदशमुद्राः प्रदर्श्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नम इति त्रिः पुष्पाञ्जलिं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति त्रिवारान्यूनं देवतां पूर्ववत् पुष्पाक्षतैः श्रीपात्रतीर्थलेशैश्च सन्तर्प्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नवरत्नखचितसिंहासनाद्यासनं कल्पयामि नमः॥ १॥ इति सर्वत्रोपचारेषु तत्तद्रव्यैरलाभे पुष्पाक्षतैर्भावयन् पूजयेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वागतं कल्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै गन्धपुष्पाक्षतयवरत्नदूर्वायुततोयैर्हस्तयोः अर्घ्यं कल्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै गन्धतोयैः पादयोः पाद्यं कल्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै रालोशीरकर्पूरयुततोयैर्मुखे आचमनं कल्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै घृतमधुदधिफलैर्मुखे मधुपर्कं कल्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै पुनराचमनं कल्पयामि नमः॥ ७॥

पादुके परिधायाम्ब त्रिपुरे देवनिर्मिते।
स्नानमण्डपमायाहि स्नानार्थं शक्रदिग्गतम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै स्नानमण्डपप्रवेशं कल्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै स्नानवस्त्रं कल्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै रत्नासनं कल्पयामि नमः॥ १०॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै कर्पूरशकलैर्दन्तधावनं कल्पयामि नमः॥ ११ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै सुगन्धिजलैर्गण्डूषणं कल्पयामि नमः॥ १२ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै शुद्धजलेन मुखप्रक्षालनं कल्पयामि नमः॥ १३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै आचमनं कल्पयामि नमः॥ १४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै मुखप्रोच्छनं कल्पयामि नमः॥ १५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै सुगन्धितैलामलकाद्यभ्यङ्गद्रव्याणि कल्पयामि नमः॥ १६ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै महोपचाराभ्यङ्गं कल्पयामि नमः॥ १७ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै सुगन्धिद्रव्यैः केशशोधनं कल्पयामि नमः॥ १८ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै अङ्गोद्वर्तनं कल्पयामि नमः॥ १९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै उष्णोदकस्नानं कल्पयामि नमः॥ २० ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै पञ्चामृतफलादिस्नानं कल्पयामि नमः॥ २१ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै वैदिकतान्त्रिकमन्त्रमन्त्रितेक्षुरसनारिकेलजलपनसाम्रादि-विविधफलरसकर्पूरादिसुवासितदेवाङ्गनाहृतनानातीर्थजलभृतसुवर्णकलशैः स्नानं कल्पयामि नमः॥ २२ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै आचमनं कल्पयामि नमः॥ २३ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वच्छवस्त्रेण केशाङ्गमार्जनं कल्पयामि नमः॥ २४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नवरत्नशोभिबृहस्पतिदैवतं दुकूलं कल्पयामि नमः॥ २५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै उत्तरीयं कल्पयामि नमः॥ २६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै आचमनं कल्पयामि नमः॥ २७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै सुवर्णरचितविष्णुदैवतं यज्ञोपवीतं कल्पयामि नमः॥ २८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै अलङ्कारमण्डपप्रवेशं कल्पयामि नमः॥ २९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै रत्नासनं कल्पयामि नमः॥ ३०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै मुकुट-ललाटाभरण-कर्णपूर-हार-ग्रैवेयक-आङ्गुलीयक-प्रालम्बिका-रत्नसूत्र-अक्षरावली-कर्णोत्तंस-पार्श्वभूषण-नखद्योत-अङ्गुलीछद-कूटलम्बार्धहार-मृदुभार-ललन्तिका-अङ्गद-केयूर-वलय-बाहुवेष्टक-सीमान्तिक-गण्डभूषण-भ्रूभूषण-नाभिभूषण-रत्नमाला-मणिमेखला-शृङ्खला-दन्तरत्न-कर्णक-नीवरत्न-जानुभूषण-पादाङ्गुलीयक-नूपुर-तुच्छक-पादकटक-हंसक-क्षुद्रघण्टिका-मुखपत्रक-चूडारत्न-ताटङ्क-नानाविधभूषणैरलङ्करणं कल्पयामि नमः॥ ३१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै

पादुकायुग्मारुह्य पञ्चवाद्यपुरःसरम्।
यागमण्डपमायाहि परिवारजनैः सह॥

यागमण्डपप्रवेशं कल्पयामि नमः॥ ३२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै कामेश्वराङ्कोपवेशनं कल्पयामि नमः॥ ३३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै कर्पूरागरुचन्दनकस्तूरीकुङ्कुमगोरोचनाद्यष्टगन्धैर्विष्णुदैवतं गन्धं कल्पयामि नमः॥ ३४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै अक्षतं कल्पयामि नमः॥ ३५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै पुष्पाणि कल्पयामि नमः॥ ३६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै क्लीं सुरभितेजसे स्वाहा,

वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

गन्धर्वदैवतं धूपं कल्पयामि नमः॥ ३७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै

सुप्रकाशो महाद्वीपः सर्वत्र तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीपं कल्पयामि नमः॥ ३८॥

देव्यग्रे पात्रस्वासनयोर्मध्ये पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा, तत्राधारे नैवेद्यपात्रं विविधभक्ष्यभोज्ययुतं संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं इति वीक्ष्य॥ १॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् इति प्रोक्ष्य॥ २॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति पुष्पेण सन्ताड्य॥ ३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हुं इति प्रोक्ष्य॥ ४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जूं सः वौषट् इति शङ्खतोयेन प्रोक्ष्य, चक्रं प्रदर्श्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं जपन्नैवेद्यगतदोषस्य शोषणदाहने नैवेद्यस्य चामृतीकरणं विभाव्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीतीर्थेन प्रोक्ष्य, अमृतीकरणनिर्विषीकरणे कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुदैवताय नैवेद्याय नम इति नैवेद्योपरि पुष्पं निधाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क ल ह्रीं श्रीकामदुघे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर स्फुर श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ह्रीं ॐ ह स क ह ल ह्रीं इति कामधेनुविद्ययाभिमन्त्र्य, पाद्यं कल्पयामि नमः॥ ३९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै आचमनं कल्पयामि नमः॥ ४०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै साङ्गायुधपरिवारायै सर्वात्मिकायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः॥ ४१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा इति देवी दक्षे उदकं समर्प्य, वामकरेण ग्रासमुद्रां प्रदर्शयन्, दक्षकराङ्गुष्ठेऽनामाकनिष्ठ-योस्तर्जनीमध्यमयोर्मध्यमानामयोर्मध्यानामाकनिष्ठानां तर्जन्यादिचतुर्णां योग इति प्राणादिमुद्रापञ्चकं प्रदर्शयन्निवेदयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ प्राणाय स्वाहा॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ अपानाय स्वाहा॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ॐ व्यानाय स्वाहा॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ उदानाय स्वाहा॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ समानाय स्वाहा॥ ५॥

कृताञ्जलिः,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आत्मतत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं विद्यातत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः शिवतत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सर्वतत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

चित्पात्रे सद्धविः सौख्यं विविधानेकभक्षणम्।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत्॥

प्रार्थनम्॥ ४२॥

देवतां भुञ्जानां क्षणं ध्यात्वा, ध्यानम्॥ ४३॥

मूलं शक्त्या प्रजप्य समर्प्य,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मातः स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितम्।
जलं सुशीतलं स्वच्छं गृहाण परमेश्वरि॥

मध्ये पानीयं कल्पयामि नमः॥ ४४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतापिधानमसि स्वाहेत्युत्तरापोशनं देवीहस्ते। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्तप्रक्षालनं कल्पयामि नमः॥ ४५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुगन्धिद्रव्यैः करोद्वर्त्तनं कल्पयामि नमः॥ ४६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गण्डूषणं कल्यामि नमः॥ ४७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पादप्रक्षालनं कल्पयामि नमः॥ ४८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आचमनं कल्पयामि नमः॥ ४९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फलं कल्पयामि नमः॥ ५०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ताम्बूलदलकर्पूरपूगभागतरङ्गितम्।
संशोधितं सुगन्धाढ्यं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूलं कल्पयामि नमः॥ ५१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इति योन्या नमस्कारः।

कृताञ्जलिः,

संविन्मये परे देवि परामृतचरुप्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे॥

इत्यनुज्ञां प्रार्थ्य, श्रीपात्रात् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति बिन्दुचक्रे त्रिःसन्तर्प्य, सर्वा आवरणदेवताः स्वात्मदेवताभिन्ना मूलदेव्यभिमुखा ध्यायन् तर्पयेत्। सर्वत्र बिन्दौ मूलदेवतातर्पणं श्रीपात्रादिति ज्ञेयम्।

ततः प्रतिपदादिपर्वान्तं पञ्चदशतिथिषु पञ्चदशनित्याः। शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादिचित्रान्ताः। कृष्णपक्षे चित्रादिकामेश्वर्यन्ताः। क्षयतिथौ नित्याद्वयं वृद्धौ एकां नित्यां दिनद्वये उदयव्यापितिथिं ज्ञात्वा, तत्ततिथिनित्यां अष्टाङ्गक्रमात्प्राप्तां दिननित्यामपि मूलदेव्यां पूजयेत्। ततो

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नित्यामण्डलं त्रिकोणवामरेखाग्रमारभ्य दक्षरेखाग्रान्तकोणाग्राणि परित्यज्य स्थिताः। एकैकरेखायां पञ्चकं पञ्चकं पूर्वोक्तक्रमेण पात्रान्तरगृहीत-श्रीपात्रतीर्थेन तर्पयेत्। मूलदेवीं समानाकाराभरणायुधवसनां ध्यात्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं (४६) कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगाङ्गे भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय सर्वसत्त्वान्भगेश्वरि अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं में ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ह्र्ब्लें ह्रीं (१४५) भगमालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा (११) नित्यक्लिन्नानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं च्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा (१०) भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः (८) वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं ॐ ह्रीं फ्रें सः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा (१४) महाविद्येश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः (७) शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हूं क्षें ह्रीं फट् (१२) त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं ऐं क्लीं सौः (३) कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं ऐं क्लीं सौः ह् स् क् ल् र् डैं ह् स् क् ल् र् डीं ह् स् क् ल् र् डौः द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं (१४) नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ॐ ह्रीं फ्रें स्त्रूं आं ह्रीं क्रों नित्यमदद्रवे हुं क्रों (१५) नीलपताकानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं झ्म्र्यौं (१) विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं स्वों सर्वमङ्गलायै नमः (९) सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि देवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं हुं रं रं रं हुं फट् स्वाहा (५३) ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां नमः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं च्क्रौं चित्रायै नमः (६) चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १५॥

बिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अंः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं (१५) त्रिपुरसुन्दरीमहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अंः ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं (१३) सप्तदशीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १७॥ इति।

नित्यामण्डलं सन्तर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं त्रिः। त्रिकोणाष्टकोणयोः पूर्वान्तराले तिर्यग्रेखात्रयं विभाव्य, तत्र गुरुपात्राद्गुरुमण्डलं तर्पयेत्।

त्रिकोणसमीपरेखायाम्—"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं दिव्यौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः" इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा दक्षाद्युत्तरान्तं पङ्क्त्याकारेण पद्मासनासीनान् श्वेतवर्णान् त्रिनेत्रान् चित्पुस्तकाभयवरकरान् ध्यायेत्। दक्षोर्ध्वाद्यधःपर्यन्तमायुधध्यानम्। एवमग्रेपि।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं पराशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कौलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं शुक्लादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कुलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

द्वितीयरेखायाम् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सिद्धौघेभ्यः परापराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, पूर्ववद् ध्यात्वा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भोगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लिन्नानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं समयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

अन्त्यरेखायाम् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं मानवौघेभ्योऽपराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा पूर्ववद् ध्यात्वा—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं गगनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं विश्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं विमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं मदनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भुवनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं लीलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्रियानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

तत्रैव तृतीयरेखायां शिवादिस्वगुरुपर्यन्तम्, अथवा नवमगुरुमारभ्य स्वगुरुपर्यन्तम्, अथवा परमेष्ठ्यादिगुरुत्रयं तत्तन्मन्त्रेण सन्तर्प्य, रेखात्रयं समष्टिरूपं तेजो ध्यात्वा, तत्र महापादुकां श्रीगुरुनामयुतां सन्तर्पयेदिति **गुरुमण्डलपूजा**॥

अथ आवरणपूजा

अथ पुनः पात्रान्तरगृहीतश्रीतीर्थेन **षडङ्गादिनवावरणाद्याम्नायान्तपूजा।** त्रिकोणाद्बहिरग्नीशनिर्ऋतिवायुकोणेषु पुरतो दिक्षु च षडङ्गं मूलदेवीं समानाकारां ध्यात्वा **षडङ्गदेवताः** पूजयेत्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वज्ञाहृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नित्यतृप्ताशिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः अनादिबोधाशिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं स्वतन्त्राकवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नित्यमलुप्तानेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः अनन्ता-अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ६॥

बिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं त्रिःसन्तर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापर-रहस्ययोगिनीश्रीचक्रपादुकाभ्यो नम इति योगिनीसमष्टिविद्यया पुष्पाञ्जलिं दत्वा,

पुनः चतुरस्त्रयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्राद्यरेखायै नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, शुक्लात्मकाद्यरेखायाम् अङ्कुशपाशपद्मद्वयकरा रक्तवर्ण-वस्त्राभरणाः शशिशेखरा ध्यात्वा, पश्चिमादिचतुर्दिक्षु द्वारेषु दक्षे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अणिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लघिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

वायव्यादिकोणचतुष्टये—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुं भुक्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं इच्छासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

पश्चिमनिर्ऋतियोर्मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां प्राप्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वकामसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रमध्यरेखायै नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, रक्ताकारमध्यरेखायां पूर्ववदष्टदिक्षु रक्तोत्पलयुग्मं कपालयुग्मं च दधाना नीलवर्णवस्त्राभरणा ध्यात्वा, द्वारेषु वामे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं माहेन्द्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अंः महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्तश्चतुरस्रेरेखायै नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा पीताकारतृतीयरेखायां पूर्ववद्दिक्षु अङ्कुशपाशौ अधोहस्तविरचितस्व-स्वमुद्रारक्तवस्त्रादिका ध्यात्वा, द्वारेषु मध्ये—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्लू सर्ववशङ्करीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सर्वबीजामुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

अणिमासिद्ध्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चक्रेश्वरीवामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षिणे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रं प्रकटयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्शयामीति प्रदर्श्य, गन्धाद्यन्वितसामान्यार्घ्योदकं गृहीत्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः प्रकटयोगिन्यस्त्रैलोक्यमोहनचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तु इति चक्रेश्वरीवामहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रकटयोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **प्रथमावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नम इति षोडशदले पुष्पाञ्जलिं दत्वा, पश्चिमदलमारभ्य वामावर्तेन चन्द्रनिभे षोडशदले अङ्कुशपाशामृतपूर्णस्फटिककलशवराङ्कितकराः शुक्लवर्णादिका ध्यात्वा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं बुद्ध्याकर्षिणी नित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं अहङ्काराकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं रसाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं धैर्याकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं बीजाकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं आत्माकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः शरीराकर्षिणीनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १६॥

कामाकर्षिण्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लघिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुप्तयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीवामहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुप्तयोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **द्वितीयावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नम इत्यष्टदले पुष्पाञ्जलिं दत्वा, जपाकुसुमप्रभेऽष्टदले अङ्कुशपाशनीलरत्नकलश-नीलोत्पलकरा रक्तवर्णादिका ध्यात्वा, पूर्वादिचतुर्दलेषु—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

आग्नेयादिदलचतुष्टये—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं अनङ्गरेखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं अनङ्गाकुशाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं अनङ्गमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

अनङ्गकुसुमाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुप्ततरयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीवामहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुप्ततरयोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **तृतीयावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नम इति मनुकोणे पुष्पाञ्जलिं दत्वा, देव्यग्रमारभ्य वामावर्तेन दाडिमकुसुमप्रभे चतुर्दशारे अङ्कुशपाशदर्पणामृतभरितनवरत्नपात्रकरा रक्तवर्णादिका ध्यात्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं सर्वसंक्षोभिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं सर्वविद्राविणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं सर्वाकर्षिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं सर्वाह्लादिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं सर्वसम्मोहिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं सर्वस्तम्भिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं सर्वजृम्भिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं सर्ववशङ्करीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं सर्वरञ्जिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं सर्वोन्मादिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं सर्वार्थसाधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं सर्वमन्त्रमयीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वसंक्षोभिण्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनी-चक्रेश्वरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सम्प्रदाययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरी हस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सम्प्रदाययोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **चतुर्थावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैंः ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नम इति बाह्यदशकोणे पुष्पाञ्जलिं दत्वा, देव्यग्रमारभ्य वामावर्तेन, सिन्दूराभे दशारे अङ्कुशपाशोर्ध्वहस्ता भूषापेटीविलसदधोहस्ताः शुभ्रवर्णादिका ध्यात्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं सर्वसिद्धिप्रदादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं सर्वसम्पत्प्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं सर्वप्रियङ्करीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं सर्वमङ्गलकारिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं सर्वकामप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं सर्वविघ्नविनाशिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

सर्वसिद्धिप्रदाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुरा-श्रीचक्रेश्वरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुं कुलोत्तीर्णयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुं कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **पञ्चमावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नम इत्यन्तर्दशकोणे पुष्पाञ्जलिं दत्वा, देव्यग्रमारभ्य वामावर्तेन जपाकुसुमनिभे दशारे टङ्कपाशज्ञानवरकरा बालार्कवर्णादिका ध्यात्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं सर्वज्ञादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं सर्वशक्तिदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं सर्वज्ञानमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं सर्वाधारस्वरूपादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सर्वपापहरादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वानन्दमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं सर्वेप्सितप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १०॥

सर्वज्ञादेव्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी-चक्रेश्वरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निं निगर्भयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एता निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निं निगर्भयोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **षष्ठमावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नम इत्यष्टकोणे पुष्पाञ्जलिं दत्वा, देव्यग्रमारभ्य वामावर्तेन पद्मरागप्रभेऽष्टारे पञ्चबाणधनुःपुस्तकवरकरा रक्तवर्णादिका ध्यात्वा,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूँ वशिनीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं क्लह्रीं कामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ८॥

वशिन्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा-चक्रेश्वरीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुं भुक्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रहस्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एता रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रहस्ययोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **सप्तमावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नम इति त्रिकोणे पुष्पाञ्जलिं दत्वा, त्रिकोणाद्बहिर्वायव्यादीशान्तकोणचतुष्टये वराभयकरा ऊर्ध्वकरद्वयधृतस्वायुधभूषितमस्तकारक्तवर्णादिका ध्यात्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः यां रां लां वां सां सर्वजम्भन-कामेश्वरकामेश्वरीबाणदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं थं सर्वमोहनकामेश्वरकामेश्वरीचापदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं सर्ववशीकरकामेश्वरकामेश्वरीपाशदेवता-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों क्रों सर्वस्तम्भनकामेश्वरकामेश्वर्यङ्कुशदेवता-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

त्रिकोणाग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन बन्धूककुसुमप्रभे त्रिकोणे देवी समानायुधाः पीतशुक्लरक्तवर्णादिका ध्यात्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अग्निचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सूर्यचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं सोमचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कामेश्वर्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सर्वबीजामुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं इच्छासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अतिरहस्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सर्वबीजामुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एता अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **अष्टमावरणम्**॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, रक्तकुङ्कुममिश्रवर्णे परब्रह्मात्मकबिन्दुचक्रे पञ्चब्रह्माकारमञ्चस्थस्वसमानाकारकामेश्व-राङ्कोपविष्टां प्रमुदितां श्रीललितामरुणाम्बरालेपाभरणस्रगाढ्या-मङ्कुशपाशधनुर्बाणैरलङ्कृतभुजां मन्दस्मितां ध्यात्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं परब्रह्मचक्रे महौड्याणपीठे चर्यानाथात्मके तुरीयदशाधिष्ठायके

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शान्ताशक्त्यात्मकपरब्रह्मात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

देव्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं महायोनिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां प्राप्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुरतः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परापररहस्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं योनिमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः परापररहस्ययोगिन्यः सर्वानन्दमयचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्त्विति चक्रेश्वरीहस्ते समर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। त्रिःसन्तर्प्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरि—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

इति मूलदेवीचरणयोर्दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परापररहस्योगिनीमयूखायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति योनिमुद्रया प्रणमेदिति **नवमावरणम्**॥

चतुरस्त्रादिबिन्द्वन्तं नवचक्रमेकरूपं ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं महौड्याणपीठे चर्यानाथात्मके तुरीयातीतदशाधिष्ठायके शान्त्यतीताशक्त्यात्मकपरब्रह्मात्मकप्रकाशविमर्श-सामरस्यात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति द्वादशवारं श्रीतीर्थेन सन्तर्प्य, गन्धाद्युदकं गृहीत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं सर्वानन्दमयबैन्दवचक्रे परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगीश्वरी

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्ववीरेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वविद्येश्वरी सकलजगदुत्यपत्तिमातृका सचक्राः सदेवताः सासनाः समुद्राः ससिद्धिः सायुधाः सवाहनाः सालङ्काराः सचक्रेशिकाः परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताऽस्तु (१४९) इति मूलदेव्या वामहस्ते समर्प्य, मूलदेवीवामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैः ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्रा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वकामसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्रां प्रदर्श्य योन्या प्रणमेदित्य**खण्डार्चनम्**॥

अथ बिन्दौ मध्ये मूलदेव्यां तद्वायव्यादिकोणेषु च **पञ्चपञ्चिकाः** पूजयेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुर-सुन्दरीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

श्वेताम्भोजशोभितचतुर्हस्ताः कनकप्रभाः श्वेतवस्त्राभरणाद्या ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं (१) महालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः (२८) महालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं (३) महालक्ष्मीश्वरी-वृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी त्रिशक्तिलक्ष्मीलक्ष्म्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं स ह क ल ह्रीं श्रीं (७) महालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी साम्राज्य-लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

पुनर्मध्यादि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरीकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

अङ्कुशपाशाभयवरकरास्त्रिनेत्रा रक्तवर्णवस्त्रादिका ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा (८) महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी परंज्योतिःकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ (१) महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी परानिष्कलशाम्भवीकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः (२) महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्सौः (५३) महाकोशेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

पुनर्मध्यादि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

अङ्कुशपाशपुस्तकाक्षमालांकरा रक्तवर्णवस्त्रादिका ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं (५) महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी पञ्चकामेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ह्स्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः (११) महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी पारि-जातेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः (३) महाकल्पलतेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी कुमारीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः (५) महाकल्पलतेश्वरी वृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी पञ्चबाणेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

पुनर्मध्यादि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥

शुक्लवर्णवस्त्रादिका अङ्कुशपाशाभयवरकरा ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हंसः सञ्जीवनि जूं जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु सः स्वाहा (२३) महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी अमृत-पीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि ह्स्त्रैं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु कुरु ह्स्क्ल्रीं ॐ मोक्षं कुरु कुरु ह्स्त्रौं (३१) महाकामदुघेश्वरी-वृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी सुधासूः कामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्लूं झ्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा (३५) महाकामदुघेश्वरी-वृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी अमृतेश्वरी कामदुघाम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा (३१) महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डिता-सनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥

पुनर्मध्यादि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

क ल ह्रीं महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १ ॥

रक्तवर्णवस्त्रादिका अङ्कुशपाशाभयकरा ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्यूम्रीं महाचण्डतेजः सङ्कर्षणकालिमन्थाने हः (१७) महारत्नेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति राजमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरञ्जिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशंकरि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सर्वदुष्टमृगवशंकरि सर्वसत्त्ववशंकरि सर्वलोक-वशंकरि सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं (१०१) महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी मातङ्गीरत्नाम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं (३) महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डिता-सनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ऐं ग्लौं सौः क्लीं ॐ नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अन्धे अन्धिन्यै नमः रुन्धे रुन्धिन्यै नमो जम्भे जम्भिन्यै नमः स्तम्भे स्तम्भिन्यै नमः मोहे मोहिन्यै नमः ऐं ग्लौं सौः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां वाक्चित्तचक्षुर्मुख-गतिमतिक्रोधजिह्वास्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा (१२६) महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी वाराहीरत्नाम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अथ चतुःसमयपूजा

मूलदेव्यग्रवामदक्षेषु देव्यां च त्रिकोणवद्ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं (४६) कामेश्वरीसमयदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सर्वकार्यार्थसाधिनि वज्रेश्वरि वज्रपदे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वज्रपञ्जरमध्यगे ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं वज्रनित्यायै नमः (४७) वज्रेश्वरीसमयदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगाङ्गे भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय सर्वसत्वान् भगेश्वरि अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं में ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ह्र्ब्लें ह्रीं (१४५) भगमालिनीसमय-देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भगवति ब्लूं कामेश्वरि ह्रीं सर्वसत्त्ववशङ्करि सः त्रिपुरभैरवि ऐं विच्चे क्लीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः (४०) महात्रिपुरसुन्दरीसमयदेवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति सप्तवारम्।

अथाम्नाय पूजा

सृष्टयात्मकत्रैलोक्यमोहनादिचक्रत्रयमेकरूपं विभाव्य तत्र मूलदेवीबुद्ध्या ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्त्रीं ह्स्त्रौः (३) पूर्वाम्नायसमया मोदिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

स्थित्यात्मकसर्वसौभाग्यदायकादिचक्रत्रयमेकरूपं विभाव्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले सौः (१७) दक्षिणाम्नायसमया भोगिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

संहारात्मकसर्वरोगहरादिचक्रत्रयमेकरूपं विभाव्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौः ह्स्त्रौः ह्स्त्रौः ह्स्ख्फ्रें सौः भगवत्यम्बे ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं स्ह्क्ष्म्ल्व्र्यीं अघोरे अघोरे अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं स्ह्क्ष्म्ल्व्र्यीं श्रीं ह्स्त्रौं स्ह्रौं (४२) पश्चिमाम्नायसमया कुब्जिकादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

समस्तचक्रमेकरूपं विभाव्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं फ्रें महाचण्डयोगीश्वरी (१४) उत्तराम्नायसमया कालिकादेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं म ख भ र ए महाचाण ड य ओ ग ए श वरु (१७) ऊर्ध्वाम्नायसमया सुन्दरीदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

पुनर्बिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिं सौं अः अं अहं ह्सौः अं सौः अं अहं (१२) अनुत्तराम्नायसमयासुन्दरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं त्रिःसन्तर्प्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं योगिनीसमष्ट्या पुष्पाञ्जलिं दत्वा, सावरणां देवीं ध्यात्वा, गन्धपुष्पधूप-दीपैरुपचर्य, पूर्वोक्तवन्नैवेद्यं विधाय, सानुगायै जुषाण तत् इत्यन्तम्॥

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समेतां
सिञ्जद्बालव्यजननिकरैर्वीज्यमाना सखीभिः।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरा पङ्क्तिभोक्तॄन् हसन्ती
भुङ्क्ते पात्रे कनटघटिते षड्रसान् चिद्विलासा॥

इति ध्यात्वा स्वात्मानं कामकलारूपं ध्यायन्, मूलं शक्त्या प्रजप्य समर्प्य, ईशान्यभागे शुद्धे भूतले पूर्वाभिमुखो गन्धपुष्पाक्षतान् सामान्यकलशजलं च पात्रान्तरे गृहीत्वा, आसन उपविश्य, स्थण्डिले लोहभिन्ने पात्रे वाऽग्निं स्थापयेत्। यथा कुशेन काष्ठशकलादिना वा स्वपुरतो नैर्ऋतादाग्नेयान्तं पश्चिमात्पूर्वान्तं वायव्यादीशानान्तं नैर्ऋताद्वायव्यान्तं दक्षिणादुत्तरान्तं आग्नेयादीशानान्तमुल्लिखय्, तत्र शकलं निधाय मूलेन प्रोक्ष्य शकलं निरस्य, तत्र मूलेनाग्निं संस्थाप्य, जलप्रोक्षितशकलमग्नौ निक्षिप्य प्रज्वाल्य, प्राणायामं कृत्वा, महात्रिपुरसुन्दरीनित्यपूजाङ्गहोमं करिष्य इति संकल्प्य, मूलस्य ऋष्यादिध्यानान्तं कृत्वा, मूलकूटत्रयैः समष्ट्या चाग्निं परिषिच्य, अग्निं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, चक्रगतां देवीमग्नौ ध्यात्वा, तां पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, पायसौदनलवणरहितापूपादितण्डुलतिलफलसुगन्धिपुष्पान्यतमे-नाज्याभिर्घृतेनाज्येन वा होमं कुर्यात्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्नये स्वाहा। अग्नय इदं न मम॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं स्वाहा। महात्रिपुरसुन्दर्यै इदं न मम। इति त्रिः।

तत्तत्तिथिनित्या-षोडशीनित्या-परमेष्ठ्यादिगुरुत्रयमन्त्रैः, ऐं हृदयाय

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नम इत्याद्यङ्गमन्त्रैः, ऐं क ई ल ह्रीं अग्निचक्रे इत्यादि कामेश्वर्यादिमन्त्रत्रयेण, मूलेन योगिनीसमष्टिमन्त्रेण च स्वाहान्तेन प्रत्येकं हुत्वा तत्तन्नाम्ना त्यजेत्। एवं विंशत्याहुतिर्हुत्वा पुनः सम्पूज्य, देवतां चक्रगतां ध्यात्वा, पूर्ववत्परिषिच्य, अनेन होमेन परदेवता प्रीयतामिति समर्प्य, मूलन्यासान्तं कृत्वा, पूजासन उपविश्य, **बलिपूजनं** कुर्यात्।

यथा—गन्धमिश्रितोदकेन देवताया ईशाग्निनिर्ऋतिवायूत्तरतदुत्तरेषु मत्स्यमुद्रया चतुरस्रवृत्तदेवताभिमुखत्रिकोणमण्डलं कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं व्यापकमण्डलाय नम इति मण्डलषट्कं प्रत्येकं सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं बटुकभैरवाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यों योगिनीभ्यो नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षें क्षेत्रपालाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वभूतेभ्यः नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रां राजराजेश्वराय नम इति मन्त्रेण क्रमेण तत्तन्मण्डले बटुकादीनभ्यर्च्य, तान् पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, सर्वा बलिदेवता मूलदेव्यभिमुखा ध्यात्वा, तत्तदग्रे क्षुद्रामलकमितान्नव्यञ्जनसंयुक्तं बलिपात्रं निधाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्रज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा (५५) इति वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां धृतपुष्पखण्डयुक्तबलिपात्रतीर्थधारादानेन बलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥

इति प्रार्थ्य, योन्या प्रणमेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यों योगिनीभ्यः स्वाहा। सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा (१७)। वामाङ्गुष्ठानामिकामध्यमाभिर्बलिं दत्वा,

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा।
खेचरी भूचरी व्योमचरी प्रीतास्तु मे सदा॥

इति प्रार्थ्य, योन्या प्रणमेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थानक्षेत्रपाल धूपदीपसहितं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

बलिं गृह्ण गृह्ण सर्वकामान् पूरय स्वाहा (३५)। वामाङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां बलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥

इति प्रार्थ्य, योन्या प्रणमेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गां गीं गूं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा (३१)। वामाङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां बलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयन् मम।
शान्तिं करोतु मे नित्यं विघ्नराजः सशक्तिकः॥

इति प्रार्थ्य, योन्या प्रणमेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं स्वाहा। सर्वभूतेभ्य एष बलिर्न मम (२८)। वामाङ्गुलीभिर्बलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

भूता ये विविधाकारा दिव्या भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालतलसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः॥
क्रूराद्याः शतसंख्याकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसन्धाश्चापीन्द्राद्याशाव्यवस्थिताः।
तृप्यन्तु प्रीतमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्॥

इति प्रार्थ्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं (अमुक) क्षेत्रपाल राजराजेश्वर इमां पूजां बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा (२२)। वामाङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां दत्वा,

अनेन बलिदानेन बटुवर्गसमन्वितः।
राजराजेश्वरो देवः सर्वदा मे प्रसीदतु॥

इति प्रार्थ्य, योन्या प्रणमेत्॥

सर्वाभ्यो बलिदेवताभ्यो नम इति सर्वत्र सम्पूज्य, तालत्रयं दत्वा, नाराचमुद्रां बध्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बलिदानेन सन्तुष्टाः क्षमध्वं बलिदेवताः।
विहरन्तु यथासौख्यं यथेष्टासु दिशासु च॥
बटुकाद्याः सुराः सर्वे सर्वसिद्धिविधायिनः।
मे शान्तिपुष्टितुष्ट्यश्च सन्तु तत्तत्प्रसादतः॥

इति प्रार्थ्य, तान् विसृजेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तोयेन स्वात्मानं त्रिः प्रोक्ष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मातः स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितम्।
जलं सुशीतलं स्वच्छं गृहाण परमेश्वरि॥

मध्ये पानीयं कल्पयामि नमः। उत्तरापोशनादिताम्बूलान्तं पूर्ववत्कृत्वा, दक्षिणां कल्पयामि नमः॥ ५२॥

ततः लोहभिन्ने धातुमयपात्रे कुङ्कुमादिना सकर्णिकमष्टदलं कृत्वा, तत्र घृतपाचितगोधूमादिपिष्टमयडमर्वाकारनवपात्रणि सप्त पञ्च त्रीणि वा एकमेवैतत्संख्याकवर्त्तिकं वा वर्त्तिघृतपूरितं स्वपुरतः संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं इति प्रज्वाल्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं इति नवरत्नमन्त्रेणाभिमन्त्र्य, चक्रमुद्रां प्रदर्श्य, नवरत्नमन्त्रेण सम्पूज्य, तत्पात्रं मूर्धान्तमुद्धृत्य, स्वयमुत्थितः,

समस्तचक्रचक्रेशियुते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण मम सिद्धये॥

इति घण्टावादनपूर्वकं देव्याः पादादिमस्तकान्तं त्रिः परिभ्राम्य, पात्रं संस्थाप्य नमस्कुर्यात्। आरार्तिकं कल्पयामि नमः॥ ५३॥

ततः श्रीगुरुं तत्समं वा आसन उपविश्य, भक्त्योत्थाय सम्पूज्य, मूलदेवतारूपं ध्यात्वा, गुरुपात्रतीर्थं पात्रान्तरे कृत्वा, समर्प्य, प्रणमेत्। तदभावे ब्रह्मरन्ध्रस्थितगुरवे समर्पितं ध्यात्वा, तच्छेषबुद्ध्या स्वात्मनि समर्पयेत्। ततः कुमारीं बटुकं च बालाबटुकरूपं ध्यात्वा, तत्तन्मन्त्रेण

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

सम्पूज्य श्रीपात्राद्वलिपात्रात्क्रमेण समर्प्य प्रणमेत्। तदभावे आत्मनि तत्तद्रूपं ध्यात्वा समर्पयेत्। ततः सुवासिनीं पीठे समुपविश्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

आयाहि वरदे देवि मण्डलोपरि सर्वदा।
पूजां गृहाण देवेशि शत्रूणां क्षयकारिणि॥

इत्यावाह्य आसनादिभिः सम्पूज्य, ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः इति मुखस्तनद्वयनाभि-ऊरुद्वयेषु ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नम इत्यादि क्रमेणाक्षताक्षेपैर्मनसा विन्यस्य द्रामित्यादि पञ्चबीजैः पादयोर्विन्यस्य, सुवासिन्या सह पुष्पाञ्जलिमादायोत्थाय, समस्तेत्यादि सम्पूज्योपविश्य, सुवासिनी देवतारूपां ध्यायन् संक्षोभणादित्रयोदशमुद्राः प्रदर्श्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
स्वीकृत्य सुभगे देवि श्रियं देहि रिपून् दह॥

इति श्रीपात्रतः समर्प्य प्रणमेत्॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

कामेश्वरमनोऽभीष्टकामाचारविनोदिनि।
गृहाण पात्रमपरं सद्वितीयं कुलाङ्गने॥

इति द्वितीय पात्रं दद्यात्॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

पात्रं तृतीयकं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
गृहाण परमप्रीत्या मह्यं देहि वरं सदा॥

इति तृतीयपात्रम्॥ तुरीयपात्रं दत्वा—

आनन्देन विना देवि न च तृप्यन्ति मातरः।
तस्मादानन्दपात्रं मे देहि दिव्यं वरानने॥

इति प्रार्थयेत्। ततः सुवासिनी तत्पात्रं सावशेषं स्वीकृत्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

पीतशेषं प्रदास्यामि वत्स तुभ्यं सुधारसम्।
तव शत्रून् हनिष्यामि दास्यामि परमां श्रियम्॥

इत्याचार्याय समर्पयेत्॥ ततः साधकः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

आदाय च स्वयं साक्षादादिशक्तेर्मुखाम्बुजात्।
गलितं परमानन्दरससारं पिबाम्यहम्॥

इति तत्पात्रं स्वीकृत्य, प्रक्षाल्य, सम्पूज्य, सुवासिनी देवताबुद्ध्या प्रणमेत्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः सामयिकान् हेतुपात्रतीर्थादिभिः पूजयेत्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं पुष्पाञ्जलिं दत्वा, मूलेन प्राणायामं कृत्वा, ऋष्यादिपूजान्तं विधाय, पूर्ववत्कामकलां ध्यात्वा, यथाशक्तिमूलं जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवीवामहस्ते समर्प्य, यथेच्छं स्तोत्रादिभिर्बहुधा-वैदिकैस्तान्त्रिकैः स्तुत्वा,

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं तु यद् भवेत्।
तत्सर्वं कृपया देवि क्षमस्व परमेश्वरि॥
यन्मया क्रियते कर्म जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु।
यन्मयोक्तमिहाज्ञानात् तन्महत्स्वल्पमेव वा॥
तत्सर्वं तावकी पूजा भूयाद् भूत्यै नमः शिवे।
अतः सर्वं जगद्धात्रि क्षन्तव्यमयमञ्जलिः॥

इति विज्ञाप्य, पुष्पाञ्जलिं कल्पयामि नमः॥ ५४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

इति प्रदक्षिणं कल्पयामि नमः॥ ५५॥

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते त्रिपुराम्बिके।
राजराजेशवामाङ्कसंस्थितायै नमो नमः॥

इति प्रणामं कल्पयामि नमः॥ ५६॥

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जाताऽपराधानां त्वमेव शरणं शिवे॥
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनीं विना॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥

इति नमस्कारपूर्वकं क्षमापनं कल्पयामि नमः॥ ५७॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

छत्रं कल्पयामि नमः॥ ५८॥

चामरं कल्पयामि नमः॥ ५९॥

व्यजनं कल्पयामि नमः ॥ ६०॥

गीतं कल्पयामि नमः॥ ६१॥

वाद्यं कल्पयामि नमः॥ ६२॥

नृत्यं कल्पयामि नमः॥ ६३॥

सामान्यार्घ्योदकं चुलुकेनादाय, इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीगुरुदेवतासमर्पितमस्तु स्वाहा। मां मदीयं च सकलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै समर्पये। ॐ तत्सत्॥ इति देव्याश्चरणयोर्दत्वा समर्पणं कल्पयामि नमः॥ ६४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
क्षन्तुमर्हसि देवेशि कस्य न स्खलितं मनः॥
क्षमस्व देवदेवेशि त्रिपुरे परमेश्वरि।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥

इति प्रार्थ्य, शङ्खमुधृत्य देव्युपरि त्रिःपरिभ्राम्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम॥

इति देवीदक्षहस्ते शङ्खजलं किञ्चिद्दत्वा, किञ्चिज्जलेन देवीं प्रोक्ष्य, किञ्चिज्जलं वामहस्ते गृहीत्वा, शङ्खं संस्थाप्य, गन्धेनालोड्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं प्रजप्यात्मानं प्रोक्ष्य, अवशिष्टशङ्खजलेन सामयिकान् प्रोक्षयेत्। पुष्पाञ्जलिमादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

रश्मिरूपा महादेव्योऽप्यत्र पूजितदेवताः।
श्रीसुन्दर्यङ्गलीनास्ताः सन्तु सर्वाः शुभावहाः।

इति सम्पूज्य, अखिलावरणदेवता मूलदेव्यां विलीना ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें खेचरीमुद्रां प्रदर्श्य, देवतां तेजोरूपां ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति चक्रस्थं पुष्पं तेजसा सहितं संहारमुद्रया गृहीत्वा, आघ्राय, तत्तेजः ब्रह्मरन्ध्रं प्राप्य, क्षणं निष्कलं ध्यात्वा, हृद्यानीय, सावयवां ध्यानोक्तरूपां ध्यात्वा, मानसैः पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य, ततस्तेजोरूपां तां कुण्डलिनीरूपेणाधारादिब्रह्मरन्ध्रान्तं व्याप्तां ध्यायन् मूलाधारे स्थापयेत्। ततश्चक्रस्येशान्ये बलिमण्डलं कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं व्यापकमण्डलाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उच्छिष्टश्यामलायै नम इति सम्पूज्य,

मातङ्गीं नवयावकार्द्रचरणां प्रोल्लासिकृष्णांशुकां
वीणोद्भासिकरां समुन्नतकुचां मुक्ताप्रवालावलीम्।
हृद्याङ्गीं सितशङ्खकुण्डलधरां बिम्बाधरां सुस्मिता-
माकीर्णालकवेणिमब्जनयनां ध्यायेच्छुकश्यामलाम्॥

इति ध्यात्वा निर्माल्येन पञ्चधा सम्पूज्य, निवेदितान्नव्यञ्जनसंयुक्तं बलिपात्रं तदग्रे निधाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डाली मातङ्गी सर्वजनवशंकरी स्वाहा (२२)। शेषिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम इति पूर्ववद्वामपञ्चाङ्गुलीभिः श्रीपात्रतीर्थबिन्दुशेषेण बलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

लेह्यचोष्यान्नपानादि ताम्बूलं स्रग्विलेपनम्।
निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा प्रणम्य विसृजेत्।

ततः पूर्वदत्तबलिषट्कद्रव्याणि एकस्मिन् पात्रे संगृह्य उदकपात्रं गन्धादिकं च गृहीत्वा, पूजागृहाद्बहिः शुचौ देशे पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा, तत्र ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं व्यापकमण्डलाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उच्छिष्टभैरवाय नम इति सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं उं उच्छिष्टभैरव एह्येहि बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा (२२) इति मण्डले बलिं निक्षिप्य, पात्रं हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य, तत्पात्रं जलपूरितं गृहीत्वा, उदयोस्त्विति ब्रुवन्नन्तःप्रविश्यासन उपविश्य, तज्जले श्रीपात्रतीर्थबिन्दुं निक्षिप्यात्मानं सामयिकांश्चाभिषिञ्चन् शान्तिस्तवं पठेत्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

जयन्तु देव्यो हरपादपङ्कजं
प्रसन्नधामामृतमोक्षदायकम्।
अनन्तसिद्धान्तमतिप्रबोधनं
नमामि चाष्टाष्टकयोगिनीगणम्॥ १॥

योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृमण्डलवेष्टितम्।
नमामि शिरसा नाथं भैरवं भैरवीप्रियम्॥ २॥

आपदो दुरितं रोगाः समयाचारलङ्घनात्।
ये ते सर्वे व्यपोहन्तु दिव्यचक्रस्य मेलनात्॥ ३॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिर्लाभो जयः सुखम्।
कान्तिर्मनोरथश्चास्तु पान्तु सर्वाश्च देवताः॥ ४॥

सम्पूजकानां परिपालकानां
यतीन्द्रयोगीन्द्रतपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञः
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥ ५॥

नन्दन्तु षड्विधकुलान्वयदर्शना ये
सिंहासनाध्युषितशाक्तमहान्वया ये।
नन्दन्तु सर्वकुलकौलरताः परा ये
चान्ये विशेषपदसाधकशाम्भवा ये॥ ६॥

नन्दन्तु सिद्धगुरवस्तदनु क्रमौघा
ज्येष्ठानुगाः समयिनो बटुकाः कुमार्यः।
षड्योगिनीप्रवरवीरकुले प्रसूता
नन्दन्तु भूमिपतयो द्विजसाधुलोकाः॥ ७॥

नन्दन्तु नीतिनिपुणा निरवद्यनिष्ठा
निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च।
नित्यं निरञ्जनरता गुरवो निरीहाः
शान्ताश्च शान्तमनसो हतशोकशङ्काः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दन्तु योगनिरताः कुलयोगनिष्ठा
आचार्यसामयिकसाधकपुत्रकाश्च।
गावो द्विजा युवतयो बटुकाः कुमार्यो
धर्मे चरन्तु सततं गुरुभक्तियुक्ताः॥ ९॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्रुहि योगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु कापि ममाप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्॥ १०॥
याश्चक्रक्रमभूमिकावसतयो नाडीषु याः संस्थिताः
या कायोद्गतरोमकूपनिलया याः संस्थिता धातुषु।
उच्छ्वासोर्मिमरुत्तरङ्गनिलया निश्वासवाताश्रया-
स्ता देव्यो रिपुपक्षभक्षणपरास्तृप्यन्तु कौलार्चिताः॥ ११॥
या देव्यः कुलसम्भवाः क्षितिगता या देवतास्तोयगा
या नित्यप्रथितप्रभाः शिखिगता या मातरिश्वाश्रयाः।
या व्योमाहितमण्डलाऽमृतगता याः सर्वगाः सर्वदा
ताः सर्वाः कुलमार्गपालनपराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे॥ १२॥
ब्रह्मश्रीशेशदुर्गागुहबटुकगणा भैरवक्षेत्रदिक्पा
वेतालादित्यरुद्रग्रहमनुवसुसिद्धाप्सरो गुह्यकाद्याः।
भूता गन्धर्वविद्याधरपितृमुनियक्षासुराः किन्नराश्च
योगीशाश्चारणाः किंपुरुषनरवराश्चक्रगाः पान्तु सर्वे॥ १३॥
देहस्थाखिलदेवता गजमुखाः क्षेत्राधिपा भैरवा
योगिन्यो बटुकाश्च सिद्धपितरो भूताः पिशाचा ग्रहाः।
अन्ये भूचरदिक्चराश्च खचरा वेतालकाश्चेटका-
स्तृप्ताः स्युः कुलपुत्रकस्य पिबतः पानं सदीपं चरुम्॥ १४॥
सत्यं चेद्गुरुवाक्यमेव सततं वैशेषविद्योगिनी
प्रीतिश्चेत्परदेवता यदि भवेद् वेदाः प्रमाणं हि चेत्।
कौलोऽयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञाप्यमोघास्ति चेत्
सत्यं चाखिलकौलधर्मनिवहः स्यान्मे जयः सर्वदा॥ १५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दन्तु कुलयोगिन्यो नन्दन्तु कुलपुत्रकाः।
नन्दन्तु च कुलाचार्या नन्दन्तु कुलदीक्षिताः॥ १६॥
नन्दन्तु साधकाः सर्वे नश्यन्तु कुलदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा॥ १७॥
तृप्यन्तु मातरः सर्वाः समुद्राः सगणाधिपाः।
योगिन्यः क्षेत्रपालाश्च मम देहे व्यवस्थिताः॥ १८॥
यासामाज्ञाप्रभावेण सुस्थितं भुवनत्रयम्।
नमस्ताभ्यो योगिनीभ्यः समस्ताभ्यो निरन्तरम्॥ १९॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद् यज्ञेन तृप्यतु॥ २०॥
शान्तिस्तवं पठित्वैवं पूजान्ते साधकोत्तमः।
पूजाफलमवाप्नोति प्रसन्ना तस्य देवता॥ २१॥
देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्रायस्व मां कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु॥ २२॥

इति गुरुं नत्वा, ततः श्रीपात्रमुद्धृत्य, शिरसि स्थितगुरवे समर्पणबुद्ध्या गुरुत्रयेण सन्तर्प्य, मूलं पादुकाविद्यान्ते स्वाहेति मूलाधारस्थ-कुण्डलिन्यात्मकपरदेवतामुखे हवनबुद्ध्या स्वीकुर्यात्। शेषं किञ्चित्प्रियशिष्याय दीक्षिताय दद्यात्। ताम्रपात्रे गन्धपुष्पाक्षतोदकं गृहीत्वा, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं हंसः सूर्याय एषोऽर्घ्य स्वाहा" इत्यर्घ्यं दत्वा, कृताञ्जलिः

यज्ञच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः॥

इति प्रार्थ्य, ततः प्राणानायम्य, न्यासं विधाय ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इति निर्माल्यं शिरसि निधाय, सामयिकैः सह भुक्त्वा, स्वात्मानं कामकलारूपं चिन्तयन् यथासुखं विहरेदिति **नित्यपूजाविधिः**॥

एतावत्कर्तुमशक्तश्चेत्सामान्यकलशं हेतुकलशं सामान्यार्घ्यं विशेषार्घ्यं चेति पात्रसप्तकं संस्थाप्य, महापादुकां बटुकं च विशेषार्घ्यं प्रजप्य, हेतुतीर्थात्पात्रान्तरे स्वपुरतः संस्थाप्य, आत्मपूजां कृत्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पादार्घ्याचमनस्नानवसनाभरणगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलनीराजनपुष्पाञ्जलिप्रदक्षिणानमस्काराख्यषोडशोपचारैः सम्पूज्य, नित्यामण्डलगुरुमण्डलं अखण्डपूजां तामावृतिं पञ्चपञ्चिकाद्यामूलदेवतापञ्चकमवशिष्टं च सम्पूज्य, नैवेद्यं विधाय, मूलविद्यां षडङ्गमन्त्रान् स्वाहान्तान् पठन् मनसा होमं विभाव्य एकं सर्वभूतबलिं दत्वा, शेषिकाबलिमुच्छिष्टभैरवबलिं च दत्वा, शिवाद्यवनिपर्यन्तमिति श्लोकैकं पठित्वाऽवशिष्टं समापयेदिति। अत्र बिन्दौ मूलदेवीतर्पणं विशेषार्घ्यपात्रादेव नित्यागुरुनवावरणादिपूजा प्रत्येकं दर्व्यामादाय कर्तव्या। गुर्वादिपूजा विशेषार्घ्यात्, अन्येषां हेतुकलशादिति। इयं **पूजाऽशक्तविषया**।

अत्यशक्ते तु—त्रैलोक्यमोहनचक्रदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। एवं चक्रत्रयं षट्कं वा समष्ट्या सम्पूज्यावशिष्टं समापयेदिति। आपद्यप्येवम्। परमापदि तु दिननित्यान्तं सम्पूज्य, नित्यामण्डलादिसप्तमावरणान्तं समष्ट्या सम्पूज्य, त्रिकोणादिपूजां यथावत्समापयेत्। अथ पूजायां महाविघ्ने उपस्थिते संकल्पोत्तरं देवतावाहनात्पूर्वं चेत् पात्रादिकं विसृज्य, मानसीं पूजां यथाशक्ति कृत्वा, निवृत्ते विघ्ने प्रायश्चित्तार्थमष्टोत्तरशतं प्रजप्य पश्चात्पूजयेत्। अनवकाशे तस्मिन् दिने उपवासं कृत्वा, परेद्युः पूजयेत्। आवाहनानन्तरं तु देवतां तथैव संस्थाप्य, पात्रादिकमुद्वास्य, पूजां मानसीं विधाय, निवृत्तविघ्नः संकल्पेन विना पात्रस्थापनादिकं कृत्वा, पीठपूजावाहनादिकमकृत्वा आवृत्तिं समाप्य, नैवेद्यान्तं कृत्वा, नित्यहोमं विधाय, पूजाविघ्नशान्त्यर्थं होमं करिष्य इति संकल्प्य, तत्रातीतदिनसंख्यया त्रिस्त्रिर्देवतायै हुत्वा, मूलेनाष्टोत्तरशतं हुत्वा, देवतां प्रणमेदिति। बलिदानोत्तरं विघ्ने शीघ्रं देवतामुद्वास्य अन्यद्विसृजेत्। अतीतविघ्नः सहस्रं प्रजपेदिति। रोगाद्युपद्रवात्स्थातुं यदा न शक्यते तदाऽन्येनाधिकारिणा अमुकशर्मणा कृतपूजाशेषकर्म करिष्य इति संकल्प्य समापयेत्। उपद्रवशान्त्युत्तरं पूजाविघ्नशान्त्यर्थं सहस्रं जपेत्। एवमन्यत्रापि ज्ञेयमिति।

अत्र प्रसङ्गादनुकल्पपूजोच्यते। तत्रानुकल्पाः—मत्रयाष्टगन्धसमघुटिकोदकम्॥ १॥ कांस्ये नारिकेलजलम्॥ २॥ ताम्रे क्षीरम्॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुडतक्रं गुडोदकं वा॥४॥ गन्धोदकम्॥५॥ इत्याद्यस्यानुकल्पः। द्विविधपातालपुष्पम्॥१॥ आर्द्रम्॥२॥ पुष्पं वा॥३॥ इति द्वितीयानुकल्पः। ज्ञानयुक्ततदाकारचणपक्वानि॥१॥ मूलं वा॥२॥ इति तृतीयानुकल्पः। तत्र घुटिकायामार्द्रमूलके एव। नारिकेलजलादौ तु पुष्पमेवेति व्यवस्था। घुटिकायां हेतुसामान्यविशेषार्घ्याणीति पात्रत्रयमेव। द्वितीयतृतीययोरेकं पात्रम्। नारिकेलजलादौ तु सामान्यविशेषार्घ्य-पात्रद्वयमेव। आत्मपूजादौ मन्त्रपाठपूर्वकं भावनम्।

अथैतत्प्रयोगः संक्षेपेण लिख्यते। द्वारपूजां "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वारदेवतायै नमः" इति पुष्पाक्षतैः कृत्वा, सामान्यकलशपूजान्ते सामान्यार्घ्यमण्डलं सम्पूज्य, आधारं संस्थाप्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं धूम्रार्च्याद्यग्निकलाभ्यो नमः" इति सम्पूज्य, एवं शङ्खे—"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं खं बं गं फं घं पं ङं नं चं धं छं दं जं थं झं तं ञं णं टं ढं ठं डं तपिन्यादिसूर्यकलाभ्यो नमः" इति सम्पूज्य, तोये—"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ॠं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः अमृतादिसोमकलाभ्यो नमः" इति शेषं समापनम्। एवं विशेषार्घ्येऽपि तत्र तीर्थेनापूर्य स्वादिष्ठयादिमन्त्रान् पठित्वा, हेतुपात्रोक्तपञ्चरत्नपूजादिसुधादेवीपञ्चपूजान्तं कृत्वा, उक्त-प्रकारान्यतमेन यथाशक्ति संतर्प्य पूजां समापयेदिति। समर्थश्चेत्कला-पूजनादिकं यथोक्तं कुर्यात्। गन्धोदकपूजायां तु तीर्थापूरणोत्तरं मूलाष्टाभिमन्त्रणामृतीकरणं निर्विषीकरैश्चारितार्थ्यम्। अथवा सामान्यकलशं शङ्खं च संस्थाप्य, मण्डूकादिपरतत्त्वात्मान्तपीठदेवताभ्यो नम इति सम्पूज्य मोहिन्यादिदशकं सम्पूज्य, ब्रह्मरन्ध्रे ततस्त्रिखण्डमुद्रया पादुकाध्यानादि आवाहनान्तं पुष्पाञ्जलिं च कृत्वा, ताम्बूलान्तं यथाशक्त्युपचारैः संपूज्य पुष्पाक्षतैः मूलेन त्रिःसम्पूज्य तिथिनित्या-दिननित्या-षोडशी-सप्तदशी-गुरुत्रयपादुका-षडङ्ग-त्रिकोण-बिन्दुखण्ड-देवताश्चेत्येकोनविंशति-मुख्यदेवताः तत्तन्मन्त्रेण सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नम इत्यादि मालामन्त्रोक्तदेवताः सम्पूज्य, योगिनीसमष्टिविद्यया पुष्पाञ्जलिं दत्वा, अवशिष्टपूजां यथाशक्ति समापयेत्। इयमतिगौणपूजा एतावदावश्यं कर्तव्या। अशौचे तु मानसिकमेव कर्तव्यमिति।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अत्र प्रसङ्गात्सामयिकस्वात्मीकारविधिरालिख्यते। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य पवित्रवस्त्रः धृतपुण्ड्रः आचम्य, भक्तिभावयुतः पूजागृहाद्बहिः दण्डवत्प्रणम्य, अन्तःप्रविश्य मण्डलं नत्वा, सामान्यकलशजलेन हस्तौ प्रक्षाल्य, चन्दनलेपनेन सुगन्धीकृत्य पुष्पादिकं गृहीत्वा देवताभिमुख उत्थाय,

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान् द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

इति पठित्वा, पञ्चदश्याद्युपासकास्तु समस्तेत्यादियोगिनीसमष्टिविद्यां च पठित्वा, स्वस्वध्यानोक्तरूपां देवतां ध्यायन् सम्पूज्य, सामयिकांश्च देवतारूपान् सम्पूज्य प्रणम्य, स्वासनपुरतः मण्डलाद्यङ्गपूजान्तं कृत्वा। मण्डलपूजायां तु स्वात्मीकारपात्रमण्डलाय नम इत्यूहः। आचार्यतीर्थं पुष्पखण्डं च सव्यदक्षकराभ्यां समाच्छादितं गृहीत्वा स्वासने उपविशेदिति सर्वसाधारणम्।

अभिषिक्तस्यात्मपूजोक्तः प्रकारः। पञ्चदश्युपासकस्य गुरुत्रयमारभ्य समष्टिपात्रान्तम्। तत्र गुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरुक्रमेण नामरहितमन्त्रेण महापादुकामात्मपादुकां च परित्यज्यान्यत्सर्वं समानम्। अन्यस्तु दक्षहस्ते पात्रं संस्थाप्येतरकरतर्पणमुद्राधृतपुष्पखण्डोद्धृत-तीर्थबिन्दुभिः तर्पयेद्यथा—

मूर्ध्नि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुश्रीपादुकां तर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमगुरुश्रीपादुकां तर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां तर्पयामि नमः।
हृदि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वमूलमुच्चार्य अमुकश्रीपादुकां तर्पयामि नम इति त्रिः।

ततो वामकरे पात्रं दक्षे पुष्पखण्डं गृहीत्वा, उत्थाय, पराशक्त्यै समर्प्य, तत आचार्याय पुष्पखण्डं समर्प्य, तदुभयप्रसादमादाय वामकरस्थं पात्रं धृतपुष्पखण्डेतरहस्तेनाच्छाद्य, जुहोष्यामीत्याज्ञां प्रार्थ्य, जुषस्वेत्याचार्येणाज्ञप्तः। आधाराद्ब्रह्मरन्ध्रान्तं ज्वलितानलसन्निभं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वदेवताऽभिन्नं कुण्डल्यग्निं ध्यात्वा, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आत्मतत्त्वं आणवमलं स्थूलदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा। ब्रह्मण इदं न मम॥" पुनस्तीर्थमादाय, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यातत्त्वं कार्मिकमलं सूक्ष्मदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा। मुकुन्दायेदं न मम॥" पुनस्तीर्थमादाय, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवतत्त्वं मायिकमलं कारणदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा। पशुपतय इदं न मम॥" इति। गुरुसन्मुखे तदभिषिक्त उत्थाय पात्राणि हुत्वा, पात्रं प्रक्षाल्य, तस्मिन् स्वर्णपुष्पादिकं निक्षिप्य दक्षकराच्छादितं वामकरस्थमुत्थायाचार्याय समर्पयेत्। सुवासिन्या सावशेषं पात्रं देयम्।

ततः प्रणम्य स्वेष्टविद्यां यथाशक्ति जपित्वा, समर्प्य, यथामति स्तोत्राणि पठेत्। अनूपासितस्य तूष्णीं पूजा—आत्मतत्त्वाय स्वाहा, विद्यातत्त्वाय स्वाहा, शिवतत्त्वाय स्वाहा इति। अभिषिक्तो गुर्वादिसान्निध्ये तत्तन्मन्त्रेण तत्तच्चरणे तर्पणं कुर्यात्। शेषग्रहणं तु सर्वैः कर्तव्यम्। शक्त्याचार्यप्रसादग्रहणमाज्ञाप्रार्थनं च सर्वेषां समानम्। अत्र प्रासबालामन्त्रस्तु तत्त्वत्रयं मन्त्रादौ बीजत्रयं संयोजयेत्। स्वज्येष्ठादाचार्यादुत्थाय तीर्थादानं तस्मै पात्रसमर्पणं च कार्यम्। गुरुतत्समेष्वाचार्येणाप्येवं तीर्थदानं पात्रादानं च कार्यम्। गृहीतपात्रमप्रक्षाल्यान्यस्मै न देयमिति।

अथानुपासितसुवासिनीसंस्कारः। मूलेन शङ्खोदकेनाभ्युक्ष्य, तस्या मूर्ध्नि श्रीबीजं विन्यस्य, मुखहृदयनाभौ तत्त्वत्रयं विन्यस्य, दक्षिणकर्णे श्रीबीजं जपेदिति शक्तिपूजार्थमुपासितसुवासिन्यलाभे संस्कारं कुर्यात्।

अथ पूजायां वैकल्प्यप्रायश्चित्तं लिख्यते। तत्र नित्यागुरु-आवरणसमयाम्नायपूजात्रयजपानां प्राधान्यम्। पात्रस्थापन-पीठपूजा-बलिहोमार्पण-भूतशुद्धीनां मुख्याङ्गत्वम्। अन्येषां गौणाङ्गत्वम्। गौणमुख्यप्रधानलोपे तत्प्रसङ्गातिक्रमे अष्टधा मूलतर्पणं, अष्टोत्तरशततर्पणं, शततर्पणं सहस्रजपश्च। प्रसङ्गानतिक्रमे पुनः करणं अष्टधा तर्पणं चेति। प्रसङ्गस्तु नित्यादितर्पणानां नैवेद्यान्तम्, पूजात्रयपीठपूजापात्रस्थापन-भूतशुद्ध्यादीनां देवतावाहनान्तम्, बलिहोमार्पणानां उद्वासान्तम्, अन्येषां यथासम्भवमूहनीयम्। एवं आवृत्ति नित्यागुरुमूलदेवतानां यथोत्तरं मुख्यत्वम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्र गौणपात्रान्मुख्यदेवतातर्पणे मूलेन शङ्खजलेनाभ्युक्ष्य, पुष्पाञ्जलिं दत्वा, मूलमष्टधा प्रजप्य, पुनस्तर्पयेत्। एवं मुख्यपात्राद्गौणतर्पणे अष्टधा जपः। अथ देवताहेतुकलशश्रीपात्राणामुपघाते पुनर्यथोक्तं संस्थाप्य, पूजां समाप्य, त्रिदिनमनश्नन्नयुतं जपेत्। देवतोपघाते अन्ने देवतां क्षीरेण संस्नाप्य, अष्टोत्तरशतं हुत्वा, देवतां गुरुं च पूजयेत्। देवताचक्रादिभङ्गे तु महासान्तपनाख्यं वक्ष्यमाणव्रतं चरेत्। इतरपात्राणामुपघाते पुनः संस्थाप्याष्टोत्तरसहस्रं जपः। दीपोपघाते पुनः पूजा। सामयिकादिपात्रोपघाते यद्धस्तादुपघातः तेनाष्टोत्तरशतंजपः कार्यः। उद्वासितचक्राद्युपघाते सहस्रं जपः। शक्तिस्वज्येष्ठेतरोच्छिष्टभक्षणे सहस्रं जपः। दातुरपि कनिष्ठस्यैवम्। न्यूनवर्णाश्रमीणां भक्षणे त्रिरात्रमुपवासो जपश्चेति। गुरुतत्समपत्नीतर-विधवोच्छिष्टभक्षणेऽप्येवं सहस्रजपः। अप्रक्षालितसमष्टिपूर्णपात्रयोर्ह-वनेऽप्येवम्। शिष्यातिरिक्तसुवासिन्यै स्वशेषं दत्वाऽप्येवम्। अत्रानुक्तानां दोषाणां त्रिधा पादुकामूलमन्त्रान्यतरस्मरणमिति शिवम्।

श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूर्वके।
कल्पद्रुमे ह्यभूत्स्कन्धो नित्यपूजाफलानतः॥

॥ इति श्रीसौभाग्यकल्पद्रुमे द्वितीयः स्कन्धः॥

✤ ✤ ✤

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तृतीयः स्कन्धः

कृतनित्यसपर्याणां विना नैमित्तिकार्चनम्।
साधकानां यत्प्रसादो दुर्लभस्तां भजेऽम्बिकाम्॥ १॥

अथ क्रमप्राप्तनैमित्तिकपूजा लिख्यते। तत्र तद्दिनानि—

गुर्वात्मनोर्जन्मदिनं तद्वद्दीक्षादिनं गुरोः।
क्षयाहश्च तथा कृष्णाष्टमी चैव चतुर्दशी॥
पूर्णिमामा च संक्रान्तिर्युगादिदिनमेव च।
मासोदयश्च षट्पर्व सोमसूर्योपरागकः॥
गुर्वाद्यागमनं तीर्थागमं व्रतदिनानि च।
बह्वक्षरस्य सम्पातो नित्यामेलनमेव च॥

अत्र बह्वक्षरादिकं पारायणस्कन्धे द्रष्टव्यम्। अन्यानि चैत्रादिमासे वक्ष्यमाणानि चेति। तेषु दिनेषु प्रदोषव्याप्तेषु समव्याप्तेषु परेषु नित्यपूजां दिवा कृत्वा, रात्रौ संकल्पे निमित्तोल्लेखपुरःसरं यथाशक्ति पूजां कुर्यात्। गुर्वादिक्षयदिने दीक्षितान् ब्राह्मणान् नवसंख्याकान् द्वौ वा निमन्त्र्य सुवासिनीपूजान्तं कृत्वा, मानवौघोक्तनामाष्टकेन गुर्वादिनाम्ना च ब्राह्मणान् सम्पूज्य, ब्राह्मणद्वयपक्षे मानवौघेति समष्टिनाम्ना गुरुनाम्ना च सम्पूज्य गुरुपात्रेण समर्चयेदिति। संक्रान्तिग्रहणादिषु तु न रात्रिपूजानियमः पर्वनिमित्तकत्वात्। अनेकनिमित्तसंपातेऽखिलनिमित्तोल्लेखेन समुच्चय-पूजासंकल्पादि देवतातर्पणान्ते उपचारावरणहोमावृत्तिरन्ते शङ्खोद्वासनादि सकृद्बलिपूजादिपर्यायै गुर्वादिपूजान्ते इति। एतच्च नैमित्तिके विशेषाङ्गसत्वे अन्यथा नोपचाराद्यावर्तनमिति।

अथ चैत्रे शुक्लप्रतिपदि कृतनित्यक्रियः निम्बपुष्पं शङ्खोदकेनाभ्युक्ष्यामृतीकृत्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ फट् निम्बनिवासिनि निम्बप्रिये सर्वामयहारिणि परदेवताप्रियकारिणि हुं फट् स्वाहा" इति सप्तधाभिमन्त्र्य, नैवेद्यान्तं कृत्वा, निम्बपुष्पैरभ्यर्च्य, आवरणपूजान्ते गुडसंस्कृतं तन्निवेद्य, सामयिकान् सम्पूज्य भोजयेत् स्वयं च भुञ्ज्यादिति। एवं यस्मिन् पर्वणि यन्मुख्यं द्रव्यं तेन देवतामग्निं सामयिकांश्चार्चयेदिति॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथैतत्पूर्णिमायां दमनपूजा। तत्रादौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ॐ शिवप्रसादसम्भूत अत्र सन्निहितो भव।
शिवकार्ये समुच्छिद्य नेतव्योऽसि शिवाज्ञया॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रतिकामदेवाभ्यां नम इति दमनं सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् इति समूलं गुच्छं वाहरेत्। ततः क्वचित्पात्रे संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अघोरे ऐं घोरे ह्रीं सर्वतः सर्वशर्वेभ्यो घोरतरे श्रीं नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ह्रीं श्रीं (३३) इति प्रोक्ष्य, तत्पात्रमध्येऽष्टदिक्षु च नवधा विभज्य, हं सं क्षं मं लं वं यं रं यं ऊं इत्येकैकाक्षरेण नमोन्तेन मध्यादीशान्तं सम्पूज्य, अमृतीकृत्य, निर्विषीकृत्य, संरक्ष्यावगुण्ठ्य, नूतनवस्त्रेणाच्छादयेत्। ततः सिन्दूरेण नवयोनिचक्रं वृत्तद्वयाष्टदलभूपुरयुतं कृत्वा, तत्र यवपुञ्जोपर्येकं कलशं तण्डुलपूरितं त्रितन्तुवेष्टितं सापिधानं सवस्त्राच्छादितं पादप्रस्थाः न्यूनमानं संस्थाप्य, तद्दक्षिणे अष्टदलं सिन्दूरेण कृत्वा, तत्कर्णिकायां पञ्चवर्णरजोभिरशोकवृक्षमारच्य, तस्याधः सिन्दूरैस्त्रिकोणं पश्चिमाग्रमारच्य, त्रिकोणमण्डले ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रतिप्रीतिसहिताय कामाय नम इति मन्त्रेण मन्मथं सर्वोपचारैः सम्पूज्य, कलशे देवतामभ्यर्च्य, तत्पश्चिमतः श्रीचक्रमावरणान्तमभ्यर्च्य, दमनैः सर्वान् सम्पूज्य, पञ्चपूजाद्यवशिष्टं समाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इति निर्माल्यदमनं शिरसि धृत्वा, तत्कलशं सवस्त्रं सदक्षिणां दमनयुतं सुवासिन्यै ब्राह्मणाय वा दद्यादिति।

इयं दमनपूजा चैत्रपूर्णिमायां मुख्या। गौणकालस्तु चैत्रवैशाखज्येष्ठेषु अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-पौर्णिमारूप इति। चैत्रे पौर्णिमाद्यन्यतमे दिने चैत्रोद्भूतपुष्पविशेषैः सामान्यप्रकारेण वसन्तपूजा कर्तव्या। अथ वैशाखे उक्तान्यतमदिने तदुद्भूतपुष्पविशेषैः सामान्यप्रकारेण वसन्तपूजा कर्तव्या।

अथ वैशाखे उक्तान्यतमदिने तद्भूतपुष्पैः फलैर्हिम-जलैरुशीरादिनिर्मितव्यजनैः शर्करोदकैः चन्दनादिशीतलद्रव्यैः पूजयेत्। अथ ज्येष्ठमासि कदलीपनसाम्रफलैः पुष्पादिभिः पूजां कुर्यात्। आषाढे एलाकङ्कोलजातीफलकेसरान्वितैश्चन्दनैः पूजयेत्। श्रावणे पवित्रारोपणम्। तत्र सुवर्णरूप्यताम्रपट्टसूत्रपद्मसूत्रदर्भमुञ्जाशणसूत्रकार्पाससूत्रेषु अन्यतमेन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पवित्रं कुर्यात्। कार्पाससूत्रं चेन्नवगुणितं अन्यत्र यथेष्टम्। षण्णवतिगुणितं तावद्ग्रन्थियुतमेकं, षोडशगुणितं तावद्ग्रन्थियुतं द्वयं, एकग्रन्थ्येकगुणितमेकमिति। ब्रह्मनागग्रन्थ्यन्यतरयुतमखण्डसूत्रकृतं नवरत्न-शोभितं मालाकारं वितस्तित्रयमितं तदर्धं वा, चरमसूत्रकृतसमप्रदेशग्रन्थिं प्रान्तद्वयेन कृतचरमग्रन्थिमिति सूत्रचतुष्टयमष्टगन्धेनालिप्य, पात्रे संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् इति प्रोक्ष्य, पूर्ववदमृतीकरणादिचतुष्टयं कृत्वा, पूर्ववत्कलशे देवतां सम्पूज्य, श्रीचक्रमभ्यर्च्य, षण्णवतिगुणितं कलशे षोडशगुणितं एकं चक्रे एकं सुवासिन्यां एकगुणितमग्नौ पूजयेत्। ततः तत्कलशं सपवित्रं पूर्ववत् ब्राह्मणाय वा दद्यादिति। अस्य गौणकालः— मिथुनसंक्रान्तिमारभ्य तुलासंक्रान्तिपर्यन्तः। अथ भाद्रपदपूर्णिमायां केतकीपुष्पैः पूजनं पूर्ववत् कार्यम्। अथाश्विने शुक्लप्रतिपदमारभ्य पौर्णिमापर्यन्तं नित्यापूजनं कर्तव्यम्। यथा—प्रतिपदि चक्रे आवरणान्तमभ्यर्च्य नैवेद्यमध्ये जपान्ते शतसंख्यं मूलं जप्त्वा, होमान्ते मूलेन शतं हुत्वा, सुवासिनीपूजान्ते एकां सुवासिनीं कन्यां वा सम्पूज्य, द्वितीयादिषु द्विशतं जपः होमश्चेत्येवम्। पौर्णिमायां पञ्चदशशतसंख्याकौ जपहोमौ कृत्वा, पुनः शतं जप्त्वा हुत्वा सुवासिनीद्वयं पूजयेदिति।

पञ्चदशनित्यानामभिः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वरीरूपायै त्रिपुरसुन्दर्यै नम इत्यादि सुवासिनीपूजनमन्त्रः। नवनीतं (१), सितोपला (२), दुग्धं (३), अपूपं (४), कदलीफलं (५), शर्करौदनं (६), द्राक्षा (७), नारिकेलं (८), खर्जूरं (९), तिलौदनं (१०), दधि (११), पृथुकाः (१२), चणकाः (१३), मुद्गाः (१४), पायसं (१५) इत्येकैकं प्रतिपदादिषु निवेद्य, सुवासिनीं भोजयेदिति।

अथात्रैव प्रतिपदादिनवमीपर्यन्तं नवरात्रिपूजनं कार्यम्। तत्राप्येवमेव जपहोमौ नवम्यामेकशतजपहोमयोरेकसुवासिन्याश्चाधिक्यम्। अशक्तौ तृतीयादिपञ्चम्यादिसप्तम्यादिदिनसप्तकं पञ्चकं त्रयं वा कार्यमिति। सुवासिनीपूजायां नामानि—दुर्गा (१), उमा (२), गौरी (३), पद्मा (४), रमा (५), लक्ष्मी (६), भारती (७), मेधा (८), सरस्वती (९)। नैवेद्यविशेषाः—मुद्गौदनं (१), तिलौदनं (२), माषौदनं (३), कृसरौदनं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(४), शर्करौदनं (५), दध्योदनं (६), घृतौदनं (७), दुग्धौदनं (८), पायसौदनञ्चेति (९)। अत्रालाभे पूजाङ्गसुवासिनीमेव तन्नामभिः पूजयेत्। मुहूर्तान्यूनप्रतिपदि मध्याह्नात्पूर्वं सम्भवे प्रतिपदाद्यपादं चित्रां वैधृतिं च परित्यज्यारभेत्। समापनं तु लेशमात्रयुतायामपि नवम्याम्। अभ्यङ्गो गणेशपूजनं चादौ।

अथात्र पौर्णिमायां नारिकेलजलैर्निवेदनम्। अथ कार्तिकपूर्णिमायां कुङ्कुमेनाष्टदलं कृत्वा, कर्णिकायां श्रीचक्रं संस्थाप्य आवरणान्तं सम्पूज्य, डमर्वाकारघृतपाचितपिष्टमयेषु कर्पूरगर्भितवर्तिघृतयुक्तेषु दीपं प्रज्वाल्या-वरणदेवतासमानसंख्यान् दीपानष्टदलस्य परित उपचारमन्त्रेण तत्तन्नाम्ना संस्थापयेत्। तथैव दीपैर्होमं कुर्यादिति। मार्गशीर्षपूर्णिमायां नारिकेलजलैर्माषवटकैः पूजां कुर्यात्। पौषपूर्णिमायां तन्मासोद्भूतपुष्पैर्फलैः पूजनम्। माघपौर्णिमायां तिलापूपादिभिः पूजयेत्। फाल्गुनपौर्णिमायां आम्रपुष्पैर्मधूकपुष्पैश्च पूजनमिति। अत्र नैमित्तिकपूजाशक्तौ अष्टोत्तरशतं जपः कर्तव्यः। इति नैमित्तिकपूजा॥

अथ संक्षेपतः काम्यपूजा लिख्यते। तत्र वश्यं द्वेषणमुच्चाटनं मारणं शान्तिः स्तम्भनमिति षट्कर्माणि। तत्र षष्टिघटिकात्मकाहोरात्रस्य षड्भागेन क्रमाद् वसन्तादिषु तत्तदाद्याः षड् ऋतवः। क्रमेण तेषु वश्यादिकं कुर्यात्। उदङ्मुखो रक्तवस्त्रासनपूजोपहारः(१), निर्ऋतिमुखो धूम्रवस्त्रादिः (२), वायव्याभिमुखः कृष्णवस्त्रादिः (३), अग्निमुखः कृष्णवस्त्रादिः (४), ईशानाभिमुखः श्वेतवस्त्रादिः (५), पूर्वाभिमुखः पीतवस्त्रादिः (६)। तत्र नित्यकृत्यं विधाय, प्रातः मम अमुकवशीकरणार्थमित्यादि संकल्प्य, उदङ्मुखोः रक्तमाल्याम्बरधरः रक्तासनस्थः रक्तचन्दनरक्तपुष्परक्त-वस्त्राभरणफलनैवेद्यादिभिः यथोक्तपूजां कृत्वा, वक्ष्यमाणप्रकारेण ध्यायन् सहस्रं प्रजप्य, सहस्रं हुत्वा, सहस्रनामादिकं पठेदिति। एवमेव विद्वेषणादौ ज्ञेयम्।

ध्यानप्रकारस्तु—देवीपाशबन्धं (१), देवीक्रूरदृष्ट्या पराङ्मुखं (२), देवीक्रूरदृष्ट्या पलायमानं (३), देव्यङ्कुशाहतिस्फुटितं हृदयं (४), देवीहस्तसंस्पृष्टमस्तकं (५), देवीपदाक्रान्तहृदयं (६) साध्यं क्रमाद् ध्यायेत्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होमद्रव्याणि तु—रक्तकरवीरपुष्पम् (१), राजिका (२), लवणम् (३), मरीचम् (४), घृताक्तबिल्वपत्रम् (५), कार्पासम् (६) इति। मारणं तु स्वस्य वा धर्मात्मनः पुरुषान्तरस्य वा बहूनां सज्जनानां वा अत्युपद्रवकारिणि योषिद्ब्राह्मणभिन्ने वा कुर्यादिति। एवं मारणं कृत्वा त्र्यहमनश्नन् मूलायुतं जपेत्। अत्र होमद्रव्यप्रमाणं पुरश्चरणस्कन्धे वक्ष्यमाणं ज्ञेयमिति। नैमित्तिककाम्यपूजयो विस्तरस्तु तन्त्रराज-परमानन्दतन्त्रादौ सौभाग्यप्रपञ्चोद्योतादौ च द्रष्टव्यः।

अथात्रैतत्पूजापीठनिर्णयो लिख्यते। तत्र श्रीचक्रं (१), कुण्डली (२), नार्मदं लिङ्गं (३), शिवनाभं (४), सालिग्रामः (५), प्रतिमा (६), पुस्तकं (७), आदर्शः (८) इत्युत्तरोत्तरमप्रकृष्टम्। नवरत्नस्फटिक-सालिग्रामशिलासुवर्णत्रिलोहरजतताम्रपाषाणभूर्जपत्रपट्टवस्त्रभूमिषु कृतं श्रीचक्रं यथोत्तरं गौणम्। तच्चक्रं त्रिविधम्- भूकूर्ममेरुप्रस्थभेदात्। पुनर्द्विविधम्- निम्नोच्चभेदात्। यथा—समाने आधारे भूपुरादिबिन्द्वन्तं समानरेखात्मकं भूप्रस्थम्। उच्चाधारे उन्मग्नरूपे समानरेखात्मकं कोणात्मकं वा कूर्मप्रस्थम्। भूपूरादिबिन्द्वन्तं क्रमादुत्तरोत्तरोच्चभूमिकारूपं मेरुप्रस्थम्। निमग्नरेखं निमग्नभूमिकं निम्नचक्रम्। उन्मग्नभूमिकं उच्चचक्रम्। निम्नं तावत्पूजादौ निषिद्धम्। भूप्रस्थादिलक्षणमिश्रे मिश्रचक्रमित्युच्चते। तत्र षोडशदलान्तं भूप्रस्थं, ततः कूर्मप्रस्थं वा मेरुप्रस्थं वेति। कूर्मप्रस्थस्य द्वैविध्यात्त्रयम्- भूपुरं भूप्रस्थम्, अवशिष्टं कूर्मप्रस्थं वा मेरूप्रस्थं वेति। एतदपि त्रयम्—त्रित्रिक्रमादुन्नतमिति मेरुप्रस्थमेकम्। शुद्धं त्रयमिति। तदमी भद्रचक्र-वृद्धिचक्र-महाचक्र-श्रीकरचक्र-शुभचक्र-कामिकचक्र-मोहनचक्र-वैजयन्तचक्र-जयन्तचक्र-नन्दनचक्रमिति नामकाश्चक्रभेदा दशमुख्यत्वेनोक्ताः। एवमुक्तादन्ये सर्वे स्वस्तिचक्रनामकाः ज्ञेयाः। सालिग्रामशिलादौ तु एकपलन्यूनं न कार्यम्। द्वाविंशतिपलपर्यन्तं हि जङ्गमम्। तदुत्तरं स्थावरम्। विस्तारे त्र्यङ्गुलान्यूनम्। स्थौल्ये यवोदरान्यूनः। अयं विस्तारदिनियमो नवरत्नस्फटिकातिरिक्ते। कुण्डली द्विविधा—दक्षिणावर्तवामावर्तभेदात्। नार्मदं स्निग्धमक्षतमचिपिटमित्यादि शास्त्रोक्तम्। तत्र योन्यादिचिह्नयुक्तमुत्तमम्। शिवनाभेऽपि गौरीशिवनाभं ह्युत्तमम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रतिमादि नवरत्नादिमयी ध्यानानुरूपा, समानसम्पूर्णावयवा। पुस्तकं तु रहस्यशास्त्रसम्बन्धि। आदर्शस्तु निर्मलो वक्रछायारहितः। त्रिलोहं तु सुवर्णताम्ररुप्यानां दिक्सूर्यनृपभागत इति। भूर्जपत्रे पट्टवस्त्रे चाष्टगन्धेन लिखितम्, भूमौ तु सिन्दूरेणेति।

अथ श्रीचक्ररचनाप्रकारः

समवृत्तं स्वेष्टमानं कृत्वा तद्विभजेत् सुधीः।
प्राक्प्रत्यक्वृत्तसंस्पृष्टरेखां सूत्राभिधां लिखेत्॥ १॥
भागो वृत्तस्याष्टमांशस्तस्य षष्ठांशकोङ्गुलम्।
सूत्रे चिह्नाष्टकं भागे भागे पञ्चाङ्गुले लिखेत्॥ २॥
अङ्गुलेः प्राक् पश्चिमतस्त्रिभागे त्र्यङ्गुले पृथक्।
तृतीयषष्ठयोस्तिर्यग्रेखायुग्मं च वृत्तयुक्॥ ३॥
ताभ्यां षट्कोणकं कुर्याद् वृत्तसूत्राग्रकोणकम्।
द्विसप्तरेखाप्रान्ताभ्यामन्त्यचिह्नाद्यचिह्नयोः॥ ४॥
मुखं त्रिषष्ठरेखास्थसन्धिविद्धं प्रकल्पयेत्।
द्विरेखायोगके सन्धिरेवं षट्कोणकं परम्॥ ५॥
अथान्त्यचिह्ने रेखां तत्प्रान्ताभ्यां च त्रिचिह्नयुक्।
षष्ठसप्तमरेखास्थसन्धिविद्धं त्रिकोणकम्॥ ६॥
ततश्चतुःपञ्चचिह्ने रेखायुग्मं प्रकल्पयेत्।
अन्तर्डमरुसंयुक्तं तत्प्रान्ताभ्यां षडस्त्रकम्॥ ७॥
द्विसप्तचिह्नस्थकोणं पञ्चरेखास्थसन्धिभित्।
अथान्त्यचिह्ने रेखां तत्प्रान्ताभ्यां पञ्चचिह्नयुक्॥ ८॥
द्वित्रितुर्यस्थसन्धीनां भेदकं तु त्रिकोणकम्।
ततोऽन्तराद्यचरमयोनिसन्ध्योर्विभेदतः॥ ९॥
अन्तर्डमरुसंयुक्तां रेखां तत्प्रान्तभागतः।
षष्ठचिह्नयुताग्रं तु त्रिकोणं विलिखेच्छुभम्॥ १०॥
अष्टादशसु मर्माणि चतुर्विंशतिसन्धयः।
भवन्ति समकोणानि मध्ये बिन्दुं प्रकल्पयेत्॥ ११॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वृत्ताद्बहिः क्रमात्सप्तत्रिषड्द्व्यङ्गुलमानतः।
कुर्याच्चतुष्कं वृत्तानामाद्येन सह पञ्चकम्॥ १२॥
अन्तरालचतुष्कं च तेष्वाद्येऽष्टदलं लिखेत्।
द्वितीये तु दलाग्राणि नृपपत्रमनन्तरे॥ १३॥
चतुर्थे तद्दलाग्राणि चैवं स्यात्पङ्कजद्वयम्।
बाह्यतो भ्रमणेनैव दलान्यन्तर्भ्रमेण तु॥ १४॥
दलाग्राणि लिखेद्युक्त्या समपत्राग्रकाणि च।
चतुरस्रत्रयं कुर्याद्बहिस्त्र्यङ्गुलमानतः॥ १५॥
ततस्त्र्यङ्गुलमानेन बहिर्द्वारचतुष्टयम्।
दशाङ्गुलेसु विस्तारं मध्ये द्वारस्य कल्पयेत्॥ १६॥
रेखामर्धाङ्गुलात्स्थूलां न कुर्यात्तु कदाचन।
सूत्रं दलान्तरालस्थवृत्तं चापि तु मार्जयेत्॥ १७॥
रेखा त्ववक्रा चाभिन्ना ब्रह्मसूत्रेण संयुतम्।
दलकोणाग्रकं बिन्दुः मर्माच्छिद्रं सुसंयुतम्॥ १८॥
रेखासंस्पृष्टकोणाख्यं भूपुरं समरेखकम्।
एवं सुशिल्पयुक्त्या तु श्रीचक्रं रचयेत् सुधीः॥ १९॥

एवंविधं श्रीचक्रं प्रतिष्ठाविधिना संस्कृत्य पूजयेत्।

अतस्तत्प्रतिष्ठाविधिर्निरूप्यते। तत्र वक्ष्यमाणदीक्षाप्रकरणोक्ते शुभे दिवसे गुरुज्येष्ठादिभिः प्रतिष्ठां कारयेत्। तदाज्ञया तदभावे वा स्वयं कुर्यात्। तत्रादौ कृताह्निकः साधकः पूर्वदिने प्राणानायम्य, चरश्रीचक्रप्रतिष्ठापनं करिष्य इति संकल्प्य श्रीगणपतिमाराध्य, पुण्याहवाचनं वैदिकं दीक्षाप्रकरणे वक्ष्यमाणप्रकारेण तान्त्रिकं वा कृत्वा, गुरुं गणपतिमिष्टदेवतां ब्राह्मणांश्च प्रणम्य, गुर्वादिद्वारा करणपक्षे आचार्यत्वेन तेन गुरुणा पञ्चगव्याभिषेचनादि कर्तव्यम्। दुग्धं दधि घृतं गोमयं गोमूत्रं इति पञ्चगव्यं प्रत्येकं मेलने श्रीचक्रनिमज्जनमितं पात्रेष्वानीय, श्रीचक्रनिमज्जनयोग्ये पात्रे गायत्र्या गोमूत्रं मध्ये—

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति गोमयं प्राच्याम्।

आप्यायस्व समे तु ते विश्वतः सोमवृष्णिम्।
भवा वाजस्य सङ्गथे।

इति दुग्धं दक्षिणस्याम्।

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिणो मुखाकरत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥

इति दधि प्रतीच्याम्।

शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोसि देवो वः सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥

इति घृतमुत्तरस्याम्।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णे हस्ताभ्यामाददे।

इति कुशोदकमीशान्यां संयोज्य, प्रणवेनालोड्य, प्रणवेन कुशेन निर्मर्थ्य, प्रणवेनोद्धृत्य, कुशोपरि प्रणवेन संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं - श्रीं हौमित्यष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य, तत्र प्रणवेन चक्रं निक्षिप्य, आपो हि ष्ठेति तिसृभिर्हिरण्यवर्णेति चतसृभिः। पवमानः सुवर्जन इत्यनुवाकेन दीक्षा-प्रकरणे वक्ष्यमाणेनाभिमन्त्र्य, तत उद्धृत्य, पात्रान्तरे निधाय, दुग्धदधि-घृतमधुशर्कराभिः प्रत्येकं मूलाष्टाभिमन्त्रितैः मध्ये मध्ये धूपयन् प्रत्येकं संस्नाप्य, पुनः शुद्धोदकेन सुवासितेन मूलाष्टाभिमन्त्रितेन संस्नाप्य, अष्टगन्धमिश्रिततोये मूलाष्टोत्तरशताभिमन्त्रिते ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं इति मन्त्रेण निक्षिप्याधिवासयेत्।

ततः परे हनि कृताह्निकः पवित्रपाणिः प्राणानायम्य, श्रीचक्र-स्थापनाङ्गं कलशस्थापनादिकं करिष्य इति संकल्प्य, सद्यः अधिवासपक्षे सद्यः संकल्प्य, ततः गोमयेनोपलिप्ते शुचौ देशे सिन्दूररजसा अष्टदलपद्मकर्णिकायां दीक्षायां वक्ष्यमाणरीत्या नवयोनिचक्रं निर्माय, तत्राष्टदलेषु मध्ये च शालितण्डुलं निक्षिप्य, तदुपरि वक्ष्यमाणान्यतम-कलशनवकं पञ्चपलान्यूनजलाश्रितं त्रिगुणतन्तुवेष्टितं अस्त्रक्षालितं सुधूपितं गन्धाद्यलङ्कृतं मूलेन संस्थाप्य, तत्राष्टगन्धसुवासितेन वक्ष्यमाण-वर्णौषधिक्वाथजलेन विलोममातृकयापूर्य, पञ्चपल्लव-दूर्वाभिर्मुखमाच्छाद्य,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

समानेन पिधानपात्रेण तण्डुलपूर्णेनाच्छाद्य वस्त्रवेष्टितं कुर्यात्। तत्र वशिन्याद्यष्टकं मूलदेवतां चावाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य, कुशाग्रेण स्पृशन् मूलमष्टोत्तरशतवारं प्रजप्य, अधिवासितं चक्रं पात्रान्तरे निधायाग्न्युत्तारणं कुर्यात्। यथा—

संस्कृतं पञ्चगव्यं मूलाष्टकेनाभिमन्त्र्य, अमृतीकरणनिर्विषीकरणे कृत्वा, तेन पञ्चगव्येन मूलं मातृकां च जपन्नभिषिच्य, ततः शुद्धजलेनाभिषिच्य, वस्त्रेण सम्मार्ज्य, पीठे निधाय, अस्य टङ्कादिसकल-दोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणमन्त्रैः संस्करिष्य इति संकल्प्य, श्रीचक्रोपरि पुष्पं निधाय, कुशाग्रेण स्पृशन् मन्त्रं जपेत्।

यथा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

शक्रायुधे निविष्टोऽसि वृत्तासुरजिघांसया।
तस्मात्सर्वायुधानि त्वं व्याप्य संस्थितवानसि॥

ह्रीं श्रीं अग्ने अमृतमयं कुरु स्वाहा जूं सः इति षोडशधा। पुनः अग्ने इति पदस्थाने यन्त्रममृतमयं कुरु इति षोडशधा जपेदिति॥

मूर्तिप्रतिष्ठायां तु मूर्तिममृतमित्याद्यूहः। प्रतिमादेस्तु पञ्चगव्येना-भिषिच्य, अग्निपदयुतं मन्त्रमेकवारं प्रतिमापदघटितमेकवारं जपेदित्यग्न्यु-त्तारणविधिः।

एवं कृताग्न्युत्तारणं यन्त्रं क्वचित्पात्रे संस्थाप्य, वशिन्यादि-नवकलशजलैः प्रत्येकं तत्तन्मन्त्रेणाभिषिच्य, पुनः शुद्धोदकेनाभिषिच्य नूतनवस्त्रेण संमार्ज्य, पीठे नूतनवस्त्राद्यासनोपरि संस्थाप्य, मूलमष्टवारं प्रजप्य, सामान्यकलशं सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचक्रराजाय नम इति चक्रराजं पूजयेत्। तत्रादौ आवाह्य चक्रराजप्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

यन्त्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि।
तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्॥

इति यन्त्रगायत्रीमष्टधा प्रजप्य, तत्र पाद्यादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य, दीक्षायां वक्ष्यमाणविधिना वीक्षणादि-आवरणोक्ततत्तन्मत्रेण हुत्वेत्यन्तं हुत्वा, अथवा नित्यहोमवदग्निस्थापनादिहोमान्तं कृत्वा, यन्त्रगायत्र्या अष्टधा हुत्वा, आहुतिशेषं पात्रान्तरे पातयेत्। ततः पायसेनाज्येन वा मूलमष्टोत्तरशतं हुत्वा,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्पाताज्यशेषं मूलेन श्रीचक्रे निक्षिपेत्। ततः स्विष्टकृतं प्रायश्चित्ताय व्याहृतीः वाराहीं च हुत्वा, पुनः परिषिच्योद्वास्य होमं देव्यै समर्प्य, ततः श्रीचक्रे यथोक्तां सपर्यां कृत्वा, ब्राह्मणान् यथाशक्ति भोजनादिभिः सन्तोष्य, गुरुं वस्त्रदक्षिणादिभिः सन्तोष्य, देवतां प्रणमेदिति। एवमेव चरमूर्ति-प्रतिष्ठाविधिः। मूर्तिप्राणप्रतिष्ठानन्तरं अष्टगन्धेन स्वर्णलेखन्या चित्रलेखनं कुर्यादिति विशेषः।

अथ स्थिरप्रतिष्ठाविधिः

तत्र चक्राभिषेकशेषकलशजलाभिषिक्तं पीठं वीक्षणादिभिः संस्कृत्य मूलाष्टकेनाभिमन्त्र्यामृतीकारादि कृत्वा गर्ते यथाशक्तिः पञ्चरत्नसुवर्णादिकं निक्षिप्य, अष्टबन्धनिबन्धनं च निक्षिप्य, कलशजलाभिषिक्तं नूतनवस्त्रेण संमार्जितं श्रीचक्रं मूलमातृकाभ्यां पश्चिममुखं पूर्वमुखं वा संस्थाप्य, मूलेनाष्टबन्धनेन बन्धयेत्। ततः अवशिष्टं कर्म मूलाष्टकजपादि समापयेत्। तत्र देवताप्राणप्रतिष्ठानन्तरं विविधभक्ष्यफलादिसहितं महानैवेद्यं कृत्वा, आदर्शं च प्रदर्श्य, उपचारपूजादिकं देवतोद्वासनरहितं समापयेदिति प्रतिष्ठाविधिः। वस्त्रभूर्जपृथिवीलिखितयन्त्रे मृण्मूर्तौ च न प्रतिष्ठाविधिः, किंतु केवलं प्राणस्थापनमात्रम्॥

अष्टबन्धनविधिस्तु—

मधूच्छिष्टं सर्जरसं कार्पासं गुडमेव च।
गुञ्जाकुरून्दचूर्णं च हरीतक्या रजस्तथा॥
चूर्णं चैषामक्षिनृपचन्द्रनेत्राश्विपक्षकाः।
नेत्रभूपालकौ भागा जलेन परिषेचयेत्।
तैलं दत्वा कुट्टयेच्च यावदेकत्वमाप्नुयात्॥

अथात्र पूजायां पुष्पविचारो लिख्यते—

अपर्युषितमच्छिद्रं पुष्पं पत्रं समर्पयेत्।
प्राप्ते च सप्तमे यामे पुष्पं पर्युषितं भवेत्॥ १ ॥
प्रोक्षितं शुद्धतोयेन जन्तुतद्गृहवर्जितम्।
शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः पुष्पैर्नित्येन पूजयेत्॥ २ ॥
भक्त्या समाहृतं पुष्पं येन केनापि पूजयेत्।
स्वयंशीर्णं च मलिनं गन्धशोभाविवर्जितम्॥ ३ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आघ्रातं चोग्रगन्धं च पात्रेऽशुद्धे च स्थापितम्।
वामहस्तेनापचितं जलेन क्षालितं तथा॥ ४॥
मस्तकेन धृतं पादस्पृष्टं चापि विवर्जयेत्।
बिल्वकल्हारमरुबविष्णुक्रान्ताकुशोद्भवैः॥ ५॥
धात्र्यपामार्गपनसचूताश्वत्थवटाङ्कुरैः ।
अन्यैः सुगन्धिपत्रैश्च यावन्न म्लानतां गताः।
न गन्धहीनास्तै पूजां कुर्याद्भक्त्या समाहितः॥ ६॥

इति शिवम्।

श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूर्वके।
कल्पद्रुमे ह्यभूत्स्कन्धो विशेषार्चाफलानतः॥

॥ इति श्रीसौभाग्यकल्पद्रुमे तृतीयःस्कन्धः॥

श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्थः स्कन्धः

गुरोः कटाक्षवीक्षाख्यां दीक्षां प्राप्य तु यत्कृपाम्।
साधकः शिवरूपः स्यात्तामम्बां संश्रये सदा॥

अथ पूर्वोक्तानुष्ठानयोग्यतासिद्धये **दीक्षाविधिर्निरूप्यते—**

शान्तो ह्यलुब्धः सदयः सुकृत्यागमतत्त्ववित्।
पूर्वाश्रमीपरो वर्णः शूद्रो नैव गुरुर्भवेत्॥ १॥
स्यान्नैष्ठिकब्रह्मचारी स्त्री चापि तु सभर्तृका।
गुरुरेवंविधः प्रोक्तस्तत्त्ववित् तत्र चोत्तमः॥ २॥
दृढभक्तियुतः शान्तः कृत्युत्साही ह्यलुब्धकः।
दीर्घसेवायुतः स्वच्छस्वान्तः शिष्यो भवेच्छुभः॥ ३॥
वैशाखे कार्तिके चान्त्ये माघे श्रावणके शुभा।
मार्गशीर्षे चाश्विने च चैत्रे मध्या प्रकीर्तिता॥ ४॥
आषाढज्येष्ठयोर्हीना पौषे भाद्रे मलेन हि।
द्वितीया च तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा॥ ५॥
पक्षद्वये प्रशस्ताः स्युर्दशम्यादित्रयं सिते।
चतुर्दश्यष्टमी कृष्णे रविसोममहीसुते॥ ६॥
सप्तम्यमाचतुर्दश्यः शुभाः पर्वशतैः समाः।
त्रयोदशी पूर्णमासी चाष्टमी च चतुर्दशी॥ ७॥
षष्ठी शुक्ले मध्यमाः स्युरन्या निन्द्या भवन्ति वै।
बुधादित्रितयं श्रेष्ठं शुक्ले सोमस्तथैव च॥ ८॥
मध्यमो भानुवारः स्यादन्ये सर्वे च निन्दिताः।
अश्विनी रोहिणी चार्द्रा पुष्पहस्तोत्तरात्रयम्॥ ९॥
स्वातीश्रवणरेवत्यः श्रेष्ठा मृगपुनर्वसू।
मघा चित्रा ह्यनूराधा मध्या ज्येष्ठा च मूलभम्॥ १०॥
विशाखा च धनिष्ठा चाप्यभिजिच्छततारका।
अधमान्या वर्जनीया दीक्षाकर्मविदा सदा॥ ११॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आयुष्मत् प्रीतिसौभाग्यसुकर्मशुभशोभनाः।
वरीयान् हर्षणः सिद्धिः धृतिवृद्धिध्रुवाः शिवः॥ १२॥
ब्रह्म ऐन्द्रस्तथा सिद्धः योगास्त्वेते शुभावहाः।
विष्टिं शकुन्यादिकं च त्यक्त्वा करणकं शुभम्॥ १३॥
मेषकर्कतुलाकन्याकुम्भालिमकरेषु सत्।
आमध्याह्नादुत्तमा स्यादासायाह्ना तु मध्यमा॥ १४॥
रजन्यां तु निषिद्धा स्याद् दुष्टयोगादिकं त्यजेत्।
त्रिषडेकादशे लग्नात् पापलग्ने चतुर्थके॥ १५॥
सप्त पञ्च नव स्थाने दशमे च शुभग्रहाः।
संशुद्धे चाष्टमे लग्ने चन्द्रताराबलान्विते॥ १६॥
त्रिषड्दशैकादशके लग्ने चन्द्रः शुभावहः।
नवपञ्चद्वितीयेषु सिते चन्द्रः प्रशस्यते॥ १७॥
द्विचतुःषडष्टनवतारकाश्च शुभावहाः।
वृद्धाऽस्तबालभावौ च गुरुशुक्रौ विनिन्दितौ॥ १८॥
मेषवृश्चिकसिंहस्थे गुरौ दीक्षापि निन्दिता।
क्षयवृद्धितिथौ वेदानध्यायोत्पातयुक् तिथौ॥ १९॥
सन्ध्यागर्जितनिर्घोषभूकम्पोल्कोपरागके ।
ग्रहणात्पूर्वपरयोर्विघ्नाः शौचागमे नहि॥ २०॥
पवित्रदमनारोपे युगादौ विषुवायने।
माघचैत्रसिते पञ्चनवतिथ्योश्च मार्गके॥ २१॥
पौर्णिमायां वासुदेवाष्टम्यां च नवरात्रके।
तिथ्यादि न विचार्यं स्याद् ग्रहणाधिकपर्वसु।
अक्षरत्रयसंपातादिषु चैवं प्रकीर्तितम्॥ २२॥

एवमुक्तप्रकारेण शुभदिनं विचार्य, चिरकालसंसेवितगुरोर्दीक्षां गृह्णीयात्। सा च द्विधा—आचारसंस्कारभेदात्। एतयोरेव नामान्तरं सबीजा निर्बीजा चेति। पुनराद्या द्विविधा—संक्रमणाऽसंक्रमणभेदात्। अनयोरप्याचार्यदीक्षासाधकदीक्षेति नामान्तरम्। पुनरियं श्रीविद्यायां चतुर्विधा—बालादीक्षा-पञ्चदशीदीक्षा-मन्त्रदीक्षा-पूर्णदीक्षाभेदात्। तत्रोपासकस्य

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथाशक्ति यावदनुष्ठानाचरणायाचाररूपा। मूढाशक्तादीनां संस्काररूपा। शिष्येषूपदेशनयोग्यतापादिका संक्रमा। स्वात्ममात्रोपयोगिनी त्वसंक्रमा। बालापञ्चदश्योर्दीक्षैककलशस्थापनपूर्वकं साङ्गं तत्तद्विद्योपदेशरूपा। मन्त्र-दीक्षायां तु कलशनवकस्थापनपुरःसरं साङ्गषोडश्युपदेशः। पूर्णदीक्षा तु गुर्वन्तरानाश्रयनिमित्तभूताखिलमन्त्रप्रापिका च।

तत्रादौ **पूर्णदीक्षाविधिरालिख्यते।** तत्र विविक्ते शुभे मण्डपादौ गृहाभ्यन्तरे वा अष्टचत्वारिंशदङ्गुलविस्तृतां षोडशाङ्गुलोच्छ्रितां चतुस्त्रिं-शदङ्गुलविस्तृतां द्वादशाङ्गुलोच्छ्रितां वा समत्रिमेखलामादर्शतलोपमां समप्रमाणां वेदिकां कृत्वा, तत्र नवयोनिगर्भितं सर्वतोभद्रमण्डलं कुर्यात्। यथा—

सममेकोनविंशत्या विभजेत् वेदिकां ततः।
अधरोर्ध्वं च तिर्यक् च ऋजुरेखाश्च तावती॥ १॥
कुर्यात् कोष्ठाष्टादशकं स्यादूर्ध्वं तिर्यगेव च।
कोणतत्पार्श्वकोष्ठं तु रेखामार्जनतस्त्रयम्॥ २॥
एकीकृत्य सितैः शालीचूर्णैरापूरयेत्ततः।
तत्पार्श्वे कोष्ठमेकं तु त्यक्त्वाथो कोष्ठपञ्चकम्॥ ३॥
तदूर्ध्वं त्रितयं तस्मादूर्ध्वमेकं तथाखिलम्।
कोष्ठानां नवकं चैवमेकीकृत्य च कुङ्कुमैः॥ ४॥
आपूरयेत् प्रतिदिशं द्वयं सम्भूय चाष्टकम्।
श्वेतवर्णात् कोणकोष्ठादन्तः सर्वत्र पञ्च वै॥ ५॥
कोष्ठानि कोणसूत्रस्थान्यापूर्य सितचूर्णकैः।
कोणस्य पार्श्वकोष्ठोर्ध्वं पञ्चकं कोणसूत्रगम्॥ ६॥
तत्पार्श्वत्यक्तकोष्ठेन षट्कोष्ठं कोणसूत्रगम्।
कोष्ठैकादशकं चैवमेकीकृत्य च सर्वतः॥ ७॥
हरिद्वर्णैर्बिल्वपत्रचूर्णैरापूरयेत् क्रमात्।
शोणकोष्ठान्तरालस्थकोष्ठयुग्मं तदूर्ध्वतः॥ ८॥
क्रमाच्चतुष्टयं षट्कं षट्कं कोष्ठचतुष्टयम्।
युग्मं सम्भूय कोष्ठानां चतुर्विंशतिसंख्यकम्॥ ९॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

एवं प्रतिदिशं चैकीकृतं तण्डुलचूर्णकैः।
श्वेतैरापूरयेत्पश्चात् षट्त्रिंशत्संख्यकोष्टयुक्॥ १०॥
चतुरस्रतया मध्ये क्षेत्रमुर्वरितं भवेत्।
परितस्तस्य कोष्ठानामेकीकृत्य तु विंशतिम्॥ ११॥
हरिद्राचूर्णपूर्णां तां वीथिकां परिकल्पयेत्।
एवं चान्तः षोडशकं कोष्ठानां परिशेषितम्॥ १२॥
तत्र सिन्दूररजसा सम्पूर्य च ततः परम्।
पार्श्वद्वये षष्ठभागं त्यक्त्वा मध्या तु कर्कटम्॥ १३॥
परिक्राम्य सुवृत्तं वै निष्पाद्य प्राग्दिशादितः।
चिह्नषट्कं वृत्तरेखामध्ये समविभागतः॥ १४॥
दक्षिणोत्तरयोरन्तरालयोस्त्र्यंशहीनतः ।
तिर्यग्रेखाद्वयं कृत्वा पूर्वरेखा द्विपार्श्वतः॥ १५॥
वृत्तसंस्पर्शयोगेन प्रत्यक् चिह्ने नियोजयेत्।
त्रिकोणं जायते चैवं प्रत्यग्रेखा द्विपार्श्वतः॥ १६॥
प्राक्चिह्नयोजनात् प्राचीमुखं त्र्यस्रं तथा परम्।
षडस्रं च द्विडमरुसन्धिषट्कसुशोभितम्॥ १७॥
प्रत्यग्रेखामध्यचिह्नात् प्राग्रेखासन्धियोगतः।
रेखायुग्मं वृत्तयुग्मं तिर्यग्रेखां तयोस्तथा॥ १८॥
भवेत्तेन त्रिकोणं वै पश्चिमाभिमुखं परम्।
बहिः पद्मं चाष्टदलं मध्ये योनौ च बिन्दुकम्॥ १९॥
सितरेखायुतं चैव नवयोनिं प्रकल्पयेत्।
पूरयेन्मेखलाबाह्यात् सितरक्तासितैः क्रमात्॥ २०॥
अन्तरालेषु सर्वत्र रेखां कुर्यात् सितेन तु।
सर्वतोभद्रकं चैव नवयोनियुतं भवेत्॥ २१॥

एवं सर्वतोभद्रमण्डलं कृत्वा, वितानकदलीस्तम्भतोरणफलपुष्प-रङ्गवल्यादिभिर्वेदिकां गृहं चालङ्कृत्य, वेदिकेशानभागे नातिदूरतः चतुरस्रादिकं कुण्डान्यतमं हस्तमात्रं मेखलायोन्यादिसहितमङ्गुलिद्वयोन्नतां समचतुरस्रां वेदिकां वा होमार्थं कुर्यात्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः दीक्षासामग्रीं सम्पाद्य सङ्कल्पं कुर्यात्। सामग्री तु नारिकेलं सजलं सप्त वा त्रयं वा (१), सुवर्णरौप्यताम्रमृण्मयान्यतमं सपिधानपात्रमच्छिद्रमस्फुटितं कलशपञ्चकं (२), प्रत्येकं कलशानां वस्त्रयुग्मम्। आचार्यब्रह्मसदस्यानां वरणाय प्रत्येकं प्रत्येकं वस्त्रयुग्मम्। आचार्यादिपूजनाय च सुवासिन्यै च (३), व्रीहियवगोधूममाषतिलात्मक-पञ्चधान्यं प्रत्येकं प्रस्थमितम् (४), पञ्चरत्नानि (५), त्रिकोणबिन्दुयुक्त-प्रतिमापञ्चकमेकं वा (६), श्वेतसूत्रम् (७), चन्दनागरुकर्पूरकचोर-गोरोचनाकेसरजटामांसीशिलारसाख्यशक्त्यष्टगन्धम् (८), रक्तपट्टवस्त्रम् (९), पञ्चामृतम् (१०), पञ्चगव्यम् (११), वटाम्राश्वत्थौदुम्बर-पनसात्मकपल्लवपञ्चकं सोमवल्ली दूर्वा (१२), त्वक्पञ्चकम् (१३), नदीसङ्गमराजद्वारवल्मीकगजस्थानादश्वस्थानात् मृत्पञ्चकम् (१४), संवित् (१५), त्रिगुणसूत्रद्वयं, स्रुक्स्रुवौ, षोडशगुणं रक्षासूत्रम् (१६), सिद्धार्थाः (१७), चन्दनं कर्पूरं जटामांसी अश्वत्थत्वक् रोचना भृङ्गराजं विष्णुक्रान्ता सहदेवी शमी लज्जालुरित्येषाम्।

दिग्भूतेन्द्वग्निवेदाब्धिरामपक्षशरेन्दवः ।
वर्णौषधीनां भागास्युर्माषान्न्यूनप्रमाणतः॥

अत्र यस्यालाभः तत्स्थाने चन्दनं दद्यादिति वर्णौषधदशकम् (१८)। दूर्वावटपत्रगूडूचिऔदुम्बरसमित्सोमलतेति प्रादेशमितम्। अष्टोत्तरशतं अष्टाविंशतिसंख्याकं वा समित्पञ्चकं प्रत्येकम् (१९), कुशाः (२०), पलाशपरिधित्रयं हस्तमितं पलाशसमित्पञ्चकम्, वेक्षणार्थमेकं क्षीरवृक्षोद्भवं दन्तकाष्ठं च (२१), सुगन्धिद्रव्याणि (२२), सुगन्धितैलम् (२३), पात्रपूरणाय सुवर्णभाण्डं पुष्पादिपूजासामग्री।

ततः सम्भृतसम्भारः साधकः दीक्षादिनात्पूर्वदिने पूर्वदिने वा कृतनित्यक्रियः, सुगन्धितैलाद्यभ्यञ्जनस्नानं विधाय, शुद्धवाससी परिधाय, भूषणाद्यलङ्कृतगात्रः, कृताचमनः, पवित्रपाणिः भक्तिभावयुतः प्रसन्नचित्तः गुरुं साष्टाङ्गं प्रणम्य, तच्चरणौ शिरसा संगृह्य,

भो स्वामिन् गुरुनाथार्य मामार्त्तं शरणागतम्।
संसारसागरात्तीर्णं कृपया कुरु मां गुरो॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति गुरुं परशिवबुद्ध्या प्रार्थयेत्। ततः पूर्वमुखः साधकः आसने उपविश्य, प्राणानायम्य, गुरुं गणपतिं इष्टदेवतां नत्वा, देशकालौ अष्टाङ्गस्थितिं चोल्लिखय, "अमुकगोत्रः अमुकवेदान्तर्गता अमुकशाखाध्यायी अमुकशर्माहं मम समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीकामेश्वरीप्रीत्यर्थं परदेवता-पूर्णोपासनयोग्यतासिद्ध्यर्थं परदेवतासन्मार्गप्रवर्तनार्थं च श्रीविद्यापूर्ण-दीक्षाग्रहणं करिष्ये" इति संकल्प्य, ततः निर्विघ्नपरिसमाप्तये गणेशपूजनं विधाय, ततः पुण्याहवाचनं नान्दीश्राद्धं च कुर्यात्। तच्च वैदिकं तान्त्रिकं वा कर्तव्यम्। वैदिकं तु स्वसूत्रादितो ज्ञेयं तान्त्रिकं यथा।

"एतत्कर्माङ्गं पुण्याहवाचनं करिष्ये" इति संकल्प्य, क्वचित्पात्रे प्रस्थमिततण्डुलोपरि स्वस्तिकं विधाय, तत्र पूर्वोक्तान्यतमं पात्रं त्रिगुणतन्तुवेष्टितं गन्धाद्यलङ्कृतं सुधूपितं प्रणवेन निधाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां हृदयाय नम इति शुद्धजलेनापूर्य, रत्नपञ्चकं पञ्चरत्नमन्त्रेण निक्षिप्य, पञ्चपल्लवैर्मुखमाच्छाद्य, तदुपरि सजातीयपात्रं तण्डुलपूरितं निधाय, तत्र वं वरुणाय नम इति वरुणमावाहनादिभिः सम्पूज्य,

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे॥ १ ॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह पुनः।
उशतीरिव मातरः॥ २ ॥
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः॥ ३ ॥

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्र।
अग्निं या गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपःश्य स्योना भवन्तु॥ १ ॥
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः श्य स्योना भवन्तु॥ २ ॥
यासां देवादिविकृण्वन्ति भक्षया अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
याः पृथिवीं पयसोदंति शुक्रास्ता न आपः श्य स्योना भवन्तु॥ ३ ॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तनुवोपस्पृशं तत्त्व च मे।
सर्वा अग्निरप्सूषदो वो हुवो मयि वचर्यो बलमोजो निधत्त॥ ४ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पवमानः सुवर्जनः॥ पवित्रेण विचर्षणिः॥ यः पोता स पुनातु मा॥ पुनन्तु मां देवजनाः॥ पुनन्तु वसवो धिया। पुनन्तु विश्व आपवः॥ जातवेदः पवित्रवत्। पवित्रेण पुनीहि मा॥ शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने कृत्वा कृतू रनु॥ १॥

यत्ते पवित्रमर्चिषि॥ अग्ने विततमन्तरा॥ ब्रह्म तेन पुनीमहे॥ उभाभ्यां देव संवितः। पवित्रेण सवेन च॥ इदं ब्रह्म पुनीमहे॥ वैश्वदेवी पुनन्ती देव्यागात्॥ यस्यै वह्वी सतु वो वीत पृष्ठाः। तयाभदलः सधमाद्येषु॥ वयं स्याम पतयो रयिणाम्॥ २॥

वैश्वानरो रश्मिभिर्पुनातु॥ वातः प्राणेनेषिरो मयोभूः॥ द्यावा पृथिवी पयसा पयोभिः॥ ऋता वरीय ज्ञिये मा पुनीताम्॥ बहुद्भिः सवितसृभिः॥ वर्षिषैर्देवमन्मभिः॥ अग्ने! दक्षैः पुनर्त ह मा॥ येन देवा अपुमता॥ येनापो दिव्यं कशः॥ तेन दिव्येन ब्रह्मणा॥ ३॥

इदं ब्रह्म पुनीमहे॥ यः पावमानरिध्येति॥ ऋषिभिः संभृतं रसम्॥ सर्व सपूतमश्नाति॥ खदितं मातरिश्वना॥ पावमानोर्यो अध्येति॥ ऋषिभिः संभृतं रसम्॥ तस्मै सरस्वति दुहे॥

यः क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्॥ पावमानी स्वस्त्ययनी॥ ४॥ सदुदा हि पयस्वती॥ ऋषिभिः संभृतो रसः॥

ब्राह्मणेष्वमृतं हि तम्॥ पावमानी दिशं तु नः॥ इमं लोमथोअमुं कामान्त्समर्थयन्तु नः। देवीर्देवैस्समाभृताः॥ पावमानी स्वस्त्ययनी॥ सुदुधा हि घृतश्च्युतः॥ ऋषिभिः संभृतो रसः॥ ५॥ ब्रह्मणेष्वभृतं हि तम्॥ येन देवा पवित्रेण॥ आत्मानं पुनते सदा॥ तेन सहस्रधारणे॥ पावमान्यः पुनन्तु मा॥ प्रजापत्यं पवित्रम्॥ शतोधाम हिरण्मयम्॥ तेन ब्रह्मविदो वयं पूतं ब्रह्म पुनीमहे॥ इन्द्र सुनीति सह मा पुनातु॥ सोम स्वस्त्या वरुण समीच्याः॥ यमो राजा प्रमृणाभिः पुनातु मा॥ जातवेदा भोर्जयन्त्या पुनातु॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्लूं झ्रौं जूं सः इत्यभिमन्त्र्य, अमृतीकरण–निर्विषीकरणे कृत्वा, दर्व्या तदुदकमादाय, अमृतेश्वरी प्रीयतामित्युत्सृज्य, चतुरो ब्राह्मणान् सम्पूज्य, अस्मिन् कर्मणि पुण्याहमस्त्विति प्रार्थ्यास्तु

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुण्याहमिति तैरुक्तः। वरुणं प्रणम्योद्वास्य, तदुदकेनात्मानं सम्भारान् दीक्षामन्दिरं प्रोक्ष्य, मूलगायत्रीमष्टवारं जपेदिति **पुण्याहवाचनविधिः**।

ततः नान्दीश्राद्धं करिष्य इति संकल्प्य, यथाशक्ति हिरण्यं ब्राह्मणत्रयभोजनपर्याप्तान्यूनं सोदकं हस्ते गृहीत्वा,

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

इदं हिरण्यं नान्दीमुखदेवताप्रीत्यर्थं दातुमुत्सृजेदिति ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्। ततः आचार्यमासनादिभिः सम्पूज्य, वस्त्रदक्षिणाभरणफलादिकमादाय, अमुक-गोत्रेत्यादि अमुकशर्माहम् अमुकगोत्रेत्यादि अमुकशर्माणं दीक्षाकर्म कर्त्तुं कारयितुं चाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे इति पादमूले निधाय प्रणमेत्। गुरुर्वृतोऽस्मि करिष्यामीति प्रतिवदेत्। ततः ब्रह्माणं सदस्यं च तथैव वृणुयात्। अशक्तः ब्राह्मणमेकं वा अथवा कूर्चे ब्रह्माणं पूजयेत्। तत्राचार्यपदस्थाने ब्रह्मादिपदस्योहः।

अथैवं वृतो गुरुः द्वारपूजां विधाय, अपसर्पन्त्वित्यन्तःप्रविश्य वायव्यनैर्ऋतदिक्द्वारेषु वास्तुपुरुषं क्षेत्रपालं तिरस्करिणीम् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वास्तुपुरुषाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षें क्षेत्रपालाय नम इति मन्त्राभ्यां तिरस्करिणीमन्त्रेण च नत्वा, पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, वेदिकाचतुर्दिक्षु दीपचतुष्टयं एकं वा संस्थाप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दीं दीपनाथाय नम इति सम्पूज्य, मण्डपान्तः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन वीक्ष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति प्रोक्ष्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति कुशैः सन्ताड्य, कुशोदकेनोत्तानहस्ततः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कवचाय हुमिति पुनः प्रोक्ष्य, सुधूपैर्धूपयित्वा, सिद्धार्थान् कुशानस्त्रेण सप्तवारमभिमन्त्रितान् मण्डपान्तर्विकीर्य, अस्त्रमन्त्रित-कुशमुष्टिना तान्सम्मार्ज्यैशानकोणे एकीकृत्य, वेदिकाया पश्चिमतः षट्त्रिंशदङ्गुलं स्थलं परित्यज्य, तत्र भूमौ चतुरस्त्रमालिख्य, पूर्वरेखामध्ये हल्लेखां, चतुरस्त्रमध्ये बालाद्वितीयं, कोणेषु जलबीजं, प्रागाद्यष्टदिक्षु अ क च ट त प य शाष्टवर्गानालिख्य, तत्र ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परकूर्माय नम इति सम्पूज्य, तत्र पूर्वोक्तक्रमेण भूप्रार्थनपूर्वकं प्राङ्मुख आसने उपविश्य, भूतशुद्ध्यादिषडङ्गन्यासान्तं कृत्वा, वक्ष्यमाणपञ्चाम्बादिन्यासाष्टकं च कृत्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

वेदिकापश्चिमतः वक्ष्यमाणरीत्या श्रीचक्रं संस्थाप्य, सामयिकपूजान्तां सपर्यां कृत्वा, उद्वासनवर्जितां पूजां समाप्य, तत्र देवतोत्तरतः सशिष्यः देवतां हृदि ध्यायन् कुशेषु शयनं कुर्यादिति प्रपूर्वदिनकृत्यम्॥

परदिने कृतनित्यक्रियः द्वारपूजादिन्यासान्तं कृत्वा, प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य, अमुकस्य दीक्षाकर्माङ्गं कलशस्थापनादिकं करिष्य इति संकल्प्य, दिनद्वयपक्षे न्यासाष्टककरणोत्तरं सद्यः संकल्प्य, पुष्पाञ्जलि-मादाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं चतुःषष्टियोगिनीसहितचतुःषष्टिनाथेभ्यो नम इति सर्वतोभद्रमण्डलं सम्पूज्य, पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य, ततः प्रागादिमध्यान्तं धान्यपञ्चकं क्रमादुपर्युपरि निक्षिप्य, सप्तविंशतिकुशमयं कूर्चं मध्यपुञ्जोपरि प्रागग्रं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निधाय, तत्र प्रगादिपुञ्जानेकरूपेण देवतापीठात्मकं ध्यात्वा, मण्डूकादिपीठं सम्पूज्य, तत्र प्रागादिक्रमेण कलशचतुष्टयं मध्ये महाकलशं अस्त्रक्षालितं त्रिगुणतन्तुवेष्टितं सुधूपितं गन्धाद्यलङ्कृतं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन संस्थाप्य, वेदिकां कुशैः परिस्तीर्य, वेदिकोत्तरतः प्रागग्रेषु कुशेषु प्रत्येकं पञ्चगव्यं पञ्चमृतिकाः संवित् रक्षां भस्म च स्थाप्य, पञ्चरत्नानि कलशेषु तत्तन्मन्त्रेण निक्षिप्य, पञ्चत्वक्वर्णौषधक्वथितजलैः सुवासितगङ्गादितीर्थोदकैश्च बिन्दुयुक्तविलोममातृकां मूलं चोच्चरन्, क्रमात्प्रत्येकमापूर्य, दूर्वापञ्चपल्लवसोमलताः कलशमुखेषु निक्षिप्य, तण्डुलपूर्णाच्छादनचषकान् कलशसमानजातीयान्नारिकेलादिफलयुतान् तदुपरि निधाय, कलशान् प्रत्येकं वस्त्रयुगलेन संवेष्ट्य कलशपीठयोरैक्यं ध्यात्वा, वेदिकोत्तरतः प्रागग्रेषु कलशेषु प्रत्येकं पञ्चगव्यं पञ्चमृत्तिकाः संविदं भस्मरक्षां च संस्थाप्य, चक्रप्रतिष्ठाकरणोक्तपञ्चगव्यमन्त्रैः पञ्चगव्यं संयोज्य, बालामातृकाभ्यां संविदं अमृतीकरणादि च त्र्यम्बकाष्टकेन रक्षां सद्योजातमूलाभ्यां भस्मं चाभिमन्त्र्य क्रमात्स्थापयेत्।

ततः वेदीपश्चिमतः द्वादशाङ्गुलमध्ये चक्रराजं पीठोपरि निधाय, पूजाप्रकरणोक्तरीत्या संकल्पादि उपचारपूजान्तं कृत्वा पूर्णकुम्भमध्ये शुद्धविद्याम्, तद्दक्षिणतः बालाम्, वामतः राजमातङ्गीम्, पुरतः तत्समयविद्यामावाहनादिषोडशोपचारैरभ्यर्च्य, एवं दक्षिणपश्चिमोत्तर-कलशेषु सौभाग्यविद्यां वाराहीं तिरस्करणीं लोपामुद्रां भुवनेशीं अन्नपूर्णां

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तुरीयां महार्धां अश्वारूढां तत्समयविद्यां चाभ्यर्च्य, मध्यकलशे पराप्रासादविद्यां परां पराशाम्भवीम्, पराप्रसादपुरतः षोडशीम्, तत्पुरत ऊर्ध्वाम्नायसमयदेवताम्, तत्पुरत अनुत्तराम्नायसमयदेवतां सम्पूज्य, पूर्वादिकलशं स्पृशन् पूर्वाम्नायादिमन्त्रान् प्रजप्य, मध्यकलशे ऊर्ध्वाम्नायानुत्तराम्नायमन्त्रान् नित्यापञ्चपञ्चिकासमयदेवताविद्यागायत्री-मन्त्रान् चक्रेश्वरीसञ्जीवनीदीपिनीमन्त्रांश्च प्रजप्य, श्रीचक्रकलशेषु परदेवतामेकरूपां सञ्चिन्त्य, तां यथाविभवतः महोपचारैः सम्पूज्य, श्रीचक्रे आवरणपूजां कृत्वा, तत्तत्कलशेषु पूजितदेवता-स्तत्तन्मन्त्रेण, मुख्यदेवतां त्रिवारं श्रीतीर्थेन, अन्यत्र दर्व्युद्धृतेन सकृत्सन्तर्प्य, समष्टिरूपां देवतां श्रीतीर्थेन अष्टोत्तरशतवारं सन्तर्प्य, नैवेद्यं कृत्वा, नित्यहोमं च कृत्वा, वेदिकाश्रीचक्रयोर्दिक्षु बलिदेवताः सम्पूज्य, आरत्यन्तं कृत्वा, दीक्षाहोमं कुर्यात्। यथा—

कुण्डादिपश्चिमतः आसनान्ते उपविश्य, सामान्यकलशोदकं पात्रान्तरस्थं पुष्पाक्षतादिपूजासामग्रीं च स्वसमीपे संस्थाप्य, दीक्षाङ्गहोमं करिष्ये। तत्रादावाग्निसिद्धिं करिष्य इति संकल्प्य, वीक्षणादिसंस्कार-चतुष्टयं वेद्यामादौ कृत्वा, तत्र ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नम इति दक्षिणमध्योत्तरेषु पश्चिमादिपूर्वान्ता ऋजुरेखाः पश्चिममध्यपूर्वेषु दक्षिणाद्युत्तरान्ताश्च कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कुशोदकेन प्रोक्ष्य, तासु रेखासु क्रमेण पूजयेत्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विष्णवे नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ईश्वराय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं इन्द्राय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रं ब्रह्मणे नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं यमाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सों सोमाय नमः॥

तत्र कुशेन चतुर्द्वारं चतुरस्त्रं मध्ये पश्चिमाग्रं त्रिकोणं विलिख्य, तत्र मण्डूकादिपीठं सम्पूज्य, तत्र पीठे कामेश्वरकामेश्वरीमूर्तिं ध्यायेत्। यथा—

जपाकुसुमसच्छायमङ्कुशं पाशमेव च।
पुण्ड्रं चापं पुष्पशरान् बिभ्राणं पाणिपङ्कजैः॥
बालेन्दुशेखरं नेत्रत्रयशोभिमुखाम्बुजम्।
स्वसमाकारकामेशीसंश्लिष्टं हृदि भावयेत्॥

इति ध्यात्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कामेश्वरकामेश्वरीमूर्तिभ्यां नम इति

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्पाञ्जलिं दत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इति प्राणायामत्रयं कृत्वा, मूलस्य ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा, स्थण्डिलस्थयन्त्रे देवतामावाहनादिक्रमेणावाह्य प्राणप्रतिष्ठान्तं कृत्वा, देवतां सकामां ध्यात्वा, उपचारैः सम्पूज्य अरणिसूर्यकान्तपाषाणाद्युद्भूतं श्रोत्रियागाराद्धृतं वाग्निं निर्धूमं ताम्रपात्रे मृत्पात्रे वा स्थितं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् इत्यादाय, तस्मादेकं अङ्गारं क्रव्यादांशं निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति परित्यज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हुं इति समानपात्रेणाच्छाद्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन पुरतः संस्थाप्य, वीक्षणादिसंस्कारचतुष्टयं कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इत्यभिमन्त्र्य, अमृतीकरणादि कृत्वा, जानुभ्यामवनिं गत्वा, तत्पात्रं स्थण्डिलोपरि त्रिर्भ्राम्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इति कामेश्वरीयोनौ कामेश्वरबीजरूपं ध्यायन्, स्वाभिमुखमग्निं निक्षिप्य, मूलेन कामेश्वरीकामेश्वरयोराचमनं दत्वा, स्वनाभौ जठराग्निं सञ्चित्य, बिलस्थशिवाग्निसंयोजनक्रमेण बाह्याग्नावावाह्य, मूलेन आं सोऽहं वह्निचैतन्याय नम इत्यादि मन्त्रेण वह्निचैतन्यं संयोज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वह्निमूर्त्तये नम इति प्रोक्षित-कुशकाष्ठशकलादिकं वह्नौ निक्षिप्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा इति वंशनलिकया फूत्कृत्य, प्रज्वाल्य, उत्थाय, कृताञ्जलिः —

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

ततः उपविश्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इत्यग्निमन्त्रेण प्राणानायम्य, ॐ अस्य श्रीअग्निमन्त्रस्य भृगुर्ऋषिर्गायत्री छन्दः अग्निर्देवता होमे विनियोगः। रां रीमित्यादिन्यासं कृत्वा,

अग्निं त्रिनेत्रमरुणं पद्मस्थं शुक्लवाससम्।
शक्तिपद्माऽभयवरहेमभूषायुतं स्मरेत्॥

दक्षोर्ध्वाद्यधःकरपर्यन्तमायुधानि मानसैः सम्पूज्य, वेदिकोत्तरतः प्रागग्रेषु कुशेषु स्रुक्स्रुवौ आज्यस्थालीं चरुस्थालीं प्रणीताप्रोक्षणीपात्रे परिधित्रयं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

समित्पञ्चकं मेक्षणं त्रिगुणसूत्रद्वयं घृतं पवित्रत्रयं दूर्वादिपञ्चकं तिलांश्च सादयित्वा, तत्र स्रुगादिषट् पात्राण्यधोमुखानि स्थापयेत्। ततः सामान्यतोयेनोत्तानानि पात्राणि प्रोक्ष्य, प्रणीतापात्रमादाय, प्रक्षाल्य, स्वपुरतः कुशेषु संस्थाप्य, उदकेनापूर्य गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य, तत्रोदगग्रं पवित्रं निधाय त्रिरुत्पूय पवित्रमध्येन तदुदकबिन्दुपात्रपूर्वतो निक्षिप्य, तत्र घृतबिन्दुं दत्वा, पाणिभ्यां तत्पात्रं नासिकासममुद्धृत्य, उत्तरतः कुशेषु संस्थाप्य, कुशैराच्छादयेत्। एवं प्रोक्षणीपात्रे उत्पवनान्तं कृत्वा, तस्मिन् प्रणीताजलं किञ्चिन्निक्षिप्य, होमोपकरणानि प्रोक्ष्य, तत्पात्रं त्रिभागोदकयुतं प्रणीता पूर्वभागे कुशेषु निधाय, मूलव्यष्टिसमष्टिभिः परिषिच्य, गर्भरहितकुशैः चतुष्टयान्यूनैर्मध्यमेखलोपरि प्राक्पश्चिमयोरुदगग्रं दक्षिणोत्तरयोः प्रागग्रं प्राक्पश्चिमपरिस्तरणाग्रमूलोपरि स्थिताग्रमूल-मुदग्दक्षिणपरिस्तरणस्य यथा भवति तथा परिस्तीर्य, पश्चिमदक्षिणोत्तरेषु उत्तरपूर्वाग्रक्रमेण परिस्तरणवत्स्थूलमध्यसूक्ष्मान्परिधी-न्निधाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रं ब्रह्मणे नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विष्णवे नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुं रुद्राय नम इति क्रमेण तेषु सम्पूज्य, कुण्डपक्षे पश्चिमपरिस्तरणादिकं योनिमध्यगतमध्यमेखलास्थितछिद्रप्रवेशगत्या कर्तव्यम्। ततः अग्नेर्दक्षिणतः कुशेषु दीक्षितं ब्राह्मणमुपवेश्य, दीक्षाहोमकर्मणि ब्रह्माणं त्वां वृणे इति वरणं कृत्वा, सम्पूज्य प्रणमेत्। ब्राह्मणालाभे कुशं बटुं वा सम्पूजयेत्।

अथाग्नावष्टदलं पद्मं ध्यात्वा, प्रागादिदले मध्ये च—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीं पीतायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्वें श्वेतायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अरुणायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कृं कृष्णायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धूं धूम्रायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तीं तीव्रायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं स्फुलिङ्गिन्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुं रुच्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्वां ज्वालिन्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं सर्वशक्तिकमलासनाय नम इति क्रमात्समष्ट्या सम्पूज्य, तत्पीठे उक्तध्यानेन वह्निं ध्यात्वा, आवाह्य, षण्मुद्राः प्रदर्श्य, वह्निं आसनाद्युपचारैः ताम्बूलान्तैः सम्पूज्य, अर्घ्याद्युदकेन पूजनं तु तत्तदङ्गबुद्ध्या कुण्डाद्बहिः पात्रान्तरे कुर्यात्। ततः आज्यस्थालीं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् इति प्रक्षाल्य, स्वपुरतः कुशेषु निधाय, तस्यां पवित्रान्तर्हितायामाज्यं निक्षिप्य,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वीक्षणादिचतुष्टयं कृत्वा, त्रिर्मूलेनाभिमन्त्र्य, अमृतीकारादि कृत्वा, उत्तरतः अङ्गारेषु—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नम इत्यधिश्रित्य, दर्भयुगलं प्रज्वाल्य, दग्धांशमाज्ये निक्षिप्यावशिष्टमग्नौ निक्षिप्य, पुनर्दर्भयुगलं प्रज्वाल्य, आज्योपरि हुमिति त्रिः परिभ्राम्याग्नौ निक्षिप्य, पुनर्दर्भान् प्रज्वाल्याज्ये ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नम इति प्रदर्श्य, सर्वदर्भशेषानग्नौ निक्षिप्य, आज्यमुद-गुद्वास्याङ्गारान् प्रत्यूह्य, उदकं संस्पृश्य, स्वपुरतो दर्भेषु निधाय, त्रिरुत्पूय, मूले ग्रन्थियुतकुशद्वयेनाज्यं त्रिधा विभज्य, कराभ्यां स्रुक्स्रुवादाय, अधोमुखौ प्रतप्य, कुशमूलमध्याग्रैः स्रुक्स्रुवयोर्मूलमध्याग्रं हुमिति सम्मार्ज्य, उभयं वामहस्ते गृहीत्वा प्रोक्ष्य, पुनः पूर्ववत्प्रतप्य, कुशानुदकस्पृष्टानग्नौ निक्षिप्य, वामहस्तस्थितमुभयं बालयाभिमन्त्र्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नम इति तयोः कण्ठे त्रिगुणसूत्रं त्रिर्वेष्ट्य बन्धयेत्। ततस्तयोः क्रमेण ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं नम इति विन्यस्य, गन्धादिभिः पञ्चधा सम्पूज्य, स्वदक्षिणतः कुशेषु संस्थापयेत्। ततः कुशद्वयेन त्रिधा विभक्तमाज्यं वामदक्षिणमध्येषु इडापिङ्गलासुषुम्णात्मकं विभाव्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भूर्भुवः सुवरिति दक्षभागात्स्रुवेणाज्यमादाय, अत्राग्नये स्वाहेत्यारभ्य अग्नये त्रिधेत्यन्तमेकादशानां हुतशेषं स्रुवलग्नं प्रोक्षिणीपात्रे क्षिपेत्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्नये स्वाहा। तया वामभागादादाय—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सोमाय स्वाहा। मध्यादादाय-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा इति अग्नेर्दक्षवामोर्ध्वनेत्रेषु हुत्वा, सर्वत्र अग्नय इदं न मम। सोमायेदं न ममेत्यादित्यागं वदेत्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति मुखे हुत्वा इति वह्नेर्नेत्रमुखोद्घाटनं विभाव्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूः स्वाहा अग्नय इदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुवः स्वाहा वायव इदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वः स्वाहा सूर्यायेदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इत्यग्नये त्रिधा।

ततः अग्ने गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा॥ १॥ एवं पुंसवनम्॥ २॥ सीमन्तोन्नयनम्॥ ३॥ जातकर्म॥ ४॥ नालच्छेदम्॥ ५॥ कामाग्निरिति नामकरणम्॥ ६॥ ततः पालाशसमित्पञ्चकं घृतप्लुतं कामेश्वरकामेश्वरीभ्यां

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

स्वाहेति हुत्वा, तयोर्विसर्जनं कुर्यात्। ततः पुनः उपनिष्क्रमणम्॥७॥ अन्नप्राशनम्॥८॥ चौलम्॥९॥ उपनयनम्॥१०॥ महाव्रतम्॥११॥ उपनिषद्व्रतम्॥१२॥ गोदानव्रतम्॥१३॥ समावर्त्तनम्॥१४॥ विवाहम्॥१५॥ इति प्रतिकर्म तत्तन्नाम्ना सम्पादयामि स्वाहा इति त्रिस्त्रिरग्ने हुत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्य्रूं हिरण्यायै स्वाहा॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ष्य्रूं कनकायै स्वाहा॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्य्रूं रक्तायै स्वाहा॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्य्रूं कृष्णायैः स्वाहा॥४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ल्य्रूं सुप्रभायै स्वाहा॥५॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रय्रूं अतिरक्तायै स्वाहा॥६॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं य्य्रूं बहुरूपायै स्वाहा॥७॥ इति सप्तजिह्वाहुतीर्हुत्वा, चतुर्धा स्रुचि स्रुवेण घृतमापूर्य स्रुवेणाधोमुखेनाच्छाद्योत्थाय, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा वौषडित्यग्नये हुत्वोपवेश्य, ततः स्रुवेण

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्वाहा॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं स्वाहा॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्री स्वाहा॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं क्लीं स्वाहा॥४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ क्लीं ग्लौं स्वाहा॥५॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ग्लौं गं स्वाहा॥६॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गं गणपतये स्वाहा॥७॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तये वरवरद स्वाहा॥८॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रद सर्वजनं मे स्वाहा॥९॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नं मे वशमानय स्वाहा॥१०॥ इति दशधा विभक्तेन महागणपतिमनुना हुत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नय स्वाहा इति पुनश्चतुर्धा इत्यग्निसिद्धं कृत्वा, ततः चरुस्थालीं फडिति प्रोक्ष्य, तत्र मूलाष्टाभिमन्त्रितं शालितण्डुलप्रस्थमितं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फडिति प्रक्ष्याल्य, निक्षिप्य, तत्र गोक्षीरमपि निक्षिप्य, अग्नावधिश्रित्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हुमिति पात्रान्तरेणाच्छाद्य मेक्षणेन मूलेन मध्ये मध्ये अवघट्टयेत्। सुखिनं नातिकठिनं नातिशिथिलं श्रपयित्वा, स्रुवेणाभिधार्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हुमिति उत्तरतः कुशेषूत्तार्य, प्राणानायम्य, ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा, वह्नौ श्रीचक्रं विभाव्य, मोहिन्यादिपीठशक्तिः सम्पूज्य, तत्र देवतामूर्तिं ध्यात्वा, आवाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य, तिथिनित्यां समस्तेत्यादिना देवतां च सम्पूज्य, दर्व्यानीतश्रीतीर्थेन मूलेन देवतां त्रिधा वह्नौ सन्तर्प्य, मूलेन स्रुवेण

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पञ्चविंशतिघृताहुत्या, देवतावह्न्योर्वक्त्रैक्यं विभाव्य, पुनर्नाडीसन्धानार्थं एकादशधा हुत्वा, ततः तिथिनित्यां षोडशीं सप्तदशीं गुरुत्रयं षडङ्गानि हुत्वा, भूपुरादिनवावरणदेवताः सप्तमाद्यावरणत्रयदेवता वा तत्तन्मन्त्रेण हुत्वा, ततश्चरुणा स्रुच्युपस्तरणद्विरवदानसकृदभिघारणक्रमेणाष्टधा मूलेन हुत्वा, पादुकया त्रिर्हुत्वा, ततः दूर्वादिपञ्चकं घृताक्तं प्रत्येकमेकैकशः मूलेन हुत्वा, दूर्वाहुतिसंख्ययाज्येन हुत्वा, ततः सुवासिनीपूजान्तं कृत्वा, तरुणोल्लासयुतः शिष्यः समाहूय, मूलाष्टकमन्त्रितपञ्चमृत्तिकालेपनपूर्वकं संस्नाप्य, तथाभिमन्त्रितभस्मनोद्धूलनपूर्वकं त्रिपुण्ड्रं कारयित्वा, रक्तपट्ट-वस्त्रेण दृष्टिबन्धं विभाव्य, तथामन्त्रितपञ्चगव्यं सद्योजातपञ्चकेन त्रिः प्राशयित्वा, दृष्टिबन्धं विसृज्य, त्र्यम्बकेति मन्त्रेण भस्मघर्षणेन रक्षां त्रिः संस्कृत्य, तां रक्तपुष्पेण सह वाराहीमन्त्रेण पुंसां दक्षे स्त्रीणां वामे मणिबन्धे त्रिर्वेष्ट्यं बध्वा, पुनर्दृष्टिबन्धं विधाय, मूलेन संविद्ग्रहणं कारयित्वा, दृष्टिबन्धं विसृज्य, कुण्डपश्चिमतः स्वयमुदङ्मुखः आसने उपविश्य, शिष्यं स्ववामे आसने प्राङ्मुखमुपवेश्य, प्रोक्षणीपात्रस्थसम्पाताज्येन मूलेन तन्नेत्रयोरञ्जनं विधाय, तच्छिरसि श्रीचक्रं विभाव्य, नेत्रमार्गाद्धृदि प्रविश्य तच्चैतन्यमाकृष्य, निर्गत्य, स्वात्मनि संयोजितं विभाव्य, षडध्वशोधनं कुर्यात्। यथा शिष्यस्य—

पादादिकटिपर्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं सौः कलाध्वश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ततो नाभिपर्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं श्रीं तत्त्वाध्वश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ततो हृदयान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं भुवनाध्वश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ततो ललाटान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं क्लीं वर्णाध्वश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥

ततो मूर्द्धान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं ऐं पदाध्वश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततो बिलान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं ह्रीं मन्त्राध्वश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ६ ॥

इति कूर्चेन विन्यस्य, ततः वामहस्तेन धृतकूर्चेन शिष्यं स्पृशन्, घृताक्तैस्तिलैर्दक्षमध्यमानामाङ्गुष्ठैः तत्तन्मन्त्रेण कलाध्वानं शोधयामि स्वाहेति क्रमेणैकैकमन्त्रेणाष्टधा हुनेत्। एवं अष्टचत्वारिंशदाहुतीर्हुत्वा, ततः मन्त्राध्वानं पदाध्वनि विलापितं, तं वर्णाध्वनि, ततः भुवनाध्वानं तत्त्वाध्वनि, तं कलाध्वनि, कलाध्वानं वर्णाध्वनि, तं विसर्गे, तमनुत्तरे, तमात्मनि विलाप्य, पुनस्तत्क्रमेणोत्पन्नमखिलाध्वमयं शिष्यदेहं विभावये-दित्यध्वशोधनम्।

ततः स्वात्मनि स्थितं शिष्यचैतन्यं स्वनेत्रद्वारा ब्रह्मरन्ध्रमार्गेण हृदि प्रविष्टं विभावयेत्। ततः स्रुवेण ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूः स्वाहा अग्नय इदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुवः स्वाहा वायव इदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतय इदं न मम। स्रुचि चतुर्गृहीतं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीगुरुदेवतां समर्पितमस्तु स्वाहा। सकृदवदानद्विरभिघारणमिति चतुर्गृहीतेन चरुणा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। ततः स्रुचं आज्यफलपुष्पैरापूर्य स्रुवेणाच्छाद्योत्थाय, स्रुग्मूलस्पृष्टनाभिः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं वौषडिति त्रिधा परदेवतायै पूर्णाहुतिं हुत्वा, उपविश्य, देवीमग्नौ पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, देवतामुद्वास्य, अग्निं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, तं स्वजठरे उद्वास्य, परिधिपरिस्तरणानि, मूलेनाग्नौ निक्षिप्य, अग्निं परिषिच्य, प्रणीतायां प्रतिजलमिश्रणं कृत्वा, सप्तवारममृतेश्याभिमन्त्र्य, तत्पात्रं चतुर्दिक्षु तज्जलं निक्षिप्य, पात्रपुरतश्च तज्जलं निक्षिप्य, पुरतो निक्षिप्तजलेनात्मानं शिष्यं च प्रोक्ष्य, ब्रह्माणं दक्षिणादिभिः सन्तोष्योद्वास्य, होमं देवतायै समर्पयेदिति **होमविधिः**॥

ततः सामयिकान् सम्पूज्य, शिष्यं स्वदक्षिणत उदङ्मुखमासने उपवेश्य, श्रीपात्रतीर्थेन ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आत्मपाशं छेदयामि स्वाहा। ॐ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं विद्यापाशं छेदयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः कर्मपाशं छेदयामि स्वाहेति पाशच्छेदं कृत्वा, पूजां देवताविसर्जनरहितां समाप्य, सामयिकैः सह भुक्त्वा, भुक्तहुतशेषस्य शिष्यस्य कृताचमनस्य हस्ते–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नम इत्यभिमन्त्रितदन्तकाष्ठं दद्यात्।

ततः शिष्यः तेन काष्ठेन दन्तान् संशोध्य, गण्डूषणानि कृत्वा, तत्काष्ठं प्रक्षाल्य, परित्यज्य, हस्तप्रक्षालनपूर्वकं आचमनं कुर्यात्। ततो गुरुस्तेन शिष्येण शिखामन्त्रबद्धशिखेन सह देवतोत्तरतः कुशेषु शयीतेति।

ततः परेद्युः प्रातरुत्थाय, कृतनित्यक्रियः तथाभूतं शिष्यमाहूय, पूजामन्दिरद्वारे गुरुर्वदेत्—

आगच्छ पुत्र तेऽभीष्टं किमस्ति कथयस्व नः।
रहस्यं कथयाम्यद्य न कस्यापि प्रकाशय॥

ततः शिष्यः कृताञ्जलिः—

भो स्वामिन् सर्वधर्मज्ञ तथा मां न विचारय।
चित्प्रकाशं तु यन्मार्गं तन्मे ब्रूहि गुरूत्तम॥

इत्युक्त्वा प्रणमेत्। ततः शिष्येण सहान्तःप्रविश्य, पूर्वमुखं शिष्यमासने उपवेश्य, स्वयमुदङ्मुख उपविश्य, न्यासस्कन्धे वक्ष्यमाणाष्टत्रिंशत्कला-न्यासं तद्देहे कृत्वा, ततः श्रीचक्रे आवाहनरहितां पूजां सुवासिनीपूजान्तां कृत्वा दीक्षां कुर्यात्।

तत्रादौ **वर्णदीक्षा**। गुरु मातृकान्यासोक्तप्रकारेण शिष्यदेहे मातृकोत्पत्तिं तत्तदन्तर्मातृकास्थानेषु तत्तद्वर्णान् विभाव्य मातृकाविद्या-मुपदिशेदिति वर्णदीक्षा॥

अथ **कलादीक्षा**। तत्र शिष्यस्य

पादादिजान्वन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निवृत्तिकलायै नमः॥ १॥
ततो नाभ्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रतिष्ठाकलायै नमः॥ २॥
ततः कण्ठान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्याकलायै नमः॥ ३॥
ततो ललाटान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्तिकलायै नमः॥ ४॥
ततो बिलान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्त्यतीताकलायै नमः॥ ५॥

इति तदभेदभावनपूर्वकं विन्यस्य, तत निवृत्तिं प्रतिष्ठायां विलापयामीति

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

क्रमेण शान्त्यतीतां परमात्मनि विलाप्य, पुनः परमात्मनः शान्त्यतीतामुत्पादयामीति क्रमेण निवृत्यन्तोत्पादनं भावयन् कूर्चेन तत्तदङ्गं स्पृशेदिति कलादीक्षा॥

अथ **स्पर्शदीक्षा**। तत्र गुरुः स्वदक्षकरतले परशिवरूपं स्वगुरुं ध्यायन् शिष्यमूर्ध्नि करतलं निधाय, मूलं षडङ्गं मातृकां च जपन्निक्षिपेदिति स्पर्शदीक्षा॥

अथ **वाग्दीक्षा**। तत्र गुरुः परशिवे चित्तं विधाय, तदुद्भूतान् समस्तमन्त्रान् ध्यायन् तन्मयः स्वयं मन्त्रानुपदिशामीति वदेदिति वाग्दीक्षा॥

अथ **दृग्दीक्षा**। तत्र गुरुः स्वनेत्रे निमील्य परमात्मरूपिणीं मन्त्राभिन्नां स्वात्मदेवतां ध्यात्वा, क्षणं निरालम्बमुद्रया स्थित्वा, प्रसन्नचित्तो दिव्यदृष्ट्या शिष्यमवलोकयेदिति दृग्दीक्षा॥

अथ **वेधदीक्षा**। तत्र गुरुः शिष्यस्य नेत्रमार्गादन्तःप्रविश्य, मूलाधारे चतुर्दलकमलमध्यगतत्रिकोणमध्यस्थां कुण्डलिनीं ध्यात्वा, चतुर्दलस्थवादिसान्तचतुर्वर्णशक्तिभिः सह कुण्डलिनीं तत्रस्थगणेशेन सह संयोज्य, सुषुम्णामार्गेण स्वाधिष्ठाने ब्रह्मणा बादिलान्तार्णशक्तिभिश्च युतं गणेशं संयोज्य, पुनस्तेनैव मार्गेण तं ब्रह्माणं मणिपूरे डादिफान्तार्णशक्तिभिश्च युतं विष्णुना संयोज्य, पुनस्तेनैव मार्गेण विष्णुमनाहते कादिठान्तार्णशक्तिभिर्युतं रुद्रेण संयोज्य, पुनस्तथा रुद्रं विशुद्धौ अकारादिविसर्गान्तशक्तियुतं जीवेन संयोज्य, पुनस्तथा जीवमाज्ञायां हक्षशक्तियुतं परमात्मना संयोज्य, पुनस्तथैव तं बिन्द्वर्धचन्द्ररोधिनीनादनादान्तशक्तिव्यापिकासमनोन्मनाख्येषु क्रमेण नीत्वा, तत्र तत्रस्थितानेकशक्तियुतं परमात्मानं परशिवे गुरौ ब्रह्मरन्ध्रस्थितसहस्रदलमध्यस्थचन्द्रमण्डलस्थे संयोज्य, तच्चन्द्रमण्डलगलदमृतधाराभिः शिष्यमाप्लाप्य, शिष्यस्य देहे पुनः परशिवादुत्पन्नादेवताः क्रमेण तत्र तत्र स्थापयेदिति भावनया कुर्यादिति वेधदीक्षा॥

अथ **मन्त्रदीक्षा**। पूर्वकलशे शुद्धविद्यया तत्समयविद्यया च पुष्पाञ्जलिद्वयं दत्वा, शुद्धविद्यातत्समयविद्याभ्यां तददुकेन शिष्यं प्रोक्ष्य, पूर्वाम्नायमन्त्रान् क्रमेणोपदिश्य, एवं दक्षिणपश्चिमोत्तरोर्ध्वाम्नायान्तमुपदिश्य, ततः क्वचिच्छुभे देशे रङ्गवल्यादिशोभिते पीठे शिष्यं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्राङ्मुखमुपवेश्य, क्रमेण कलशपञ्चकं पञ्चभिः सुवासिनीभिर्ब्राह्मणैर्वा आनीतं गुरुरेकैकं गृहीत्वा, तत्कलशमुखस्थितपल्लवान् शिष्यमूर्ध्नि निधाय, तत्तदाद्यविद्यासमयदेवताभ्यां तत्तत्कलशजलेनाभिषिच्य, पराप्रासादविद्योर्ध्वाम्नायसमयदेवताषोडश्यनुत्तराम्नायसमयदेवताभिर्महाकलश-जलेनाभिषिच्य, धृतशुद्धवस्त्रत्रिपुण्ड्रं कृताचमनं पूर्ववद्देवतासमीपे उपवेश्य, गुरुपारम्पर्यान्तमुपदिश्य, न्यासादिपञ्चमुद्राप्रदर्शनान्तं कारयित्वा, संघट्टमुद्रामुपदिश्य, दृष्टिबन्धं कृत्वा, सङ्घट्टमुद्राविन्यासपूर्वकं महापादुका-मुपदिश्य, दृष्टिबन्धं विसृज्य, अवशिष्टं महावाक्यान्तमुपदिश्य, गायत्रीं पञ्चपञ्चिकां समयदेवतां चक्रेश्वरीः शेषविद्याः नित्याः कामेश्वर्यादिसप्त-दश्यन्ता अन्तःपूजा उपदिश्य, सर्वसंक्षोभणादित्रयोदशशङ्खादिषोडश-मुद्राश्चोपदिश्य, दृष्टिबन्धं विधाय, महाषोडशीमुपलक्षयेत्। ततो दृष्टिबन्धं विसृज्य, गुरुज्येष्ठान् गुरुं स्वज्येष्ठांश्च क्रमेण नत्वा, कृतकृत्यमात्मानं ज्ञात्वा, यथाशक्ति गुरुं पूज्यचरणौ शिरसा संगृह्य भक्त्यादिभिस्तोषयेत्।

ततो **गुरुरुपासकधर्मानुपदिशेत्**। यथा—

देवतायां सदा भक्त्या वर्त्तितव्यं प्रयत्नतः।
देवतावद्गुरौ शास्त्रे श्रद्धा योषित्सु नाप्रियम्॥ १॥
आचारगोपनतृष्णाहीनतानुष्ठितिर्विधेः ।
देवतार्थं च सर्वस्वमेतद्धर्माष्टकं भवेत्॥ २॥

ततः ब्रह्माणं सदस्यं च दक्षिणादिभिः सन्तोष्य प्रणमेत्। ततः गुरुः सामयिकान् क्रमेण सम्पूज्य, शिष्याय तत्पात्रतीर्थेन मूर्ध्नि आदिनाथादिगुरुतर्पणान्तं हृदिदेवतातर्पणान्तं कारयित्वा, शिष्यस्य किमप्यङ्गं तेनैव स्पर्शयित्वा, तदङ्गमातृकाद्यक्षरं त्र्यक्षरं चतुरक्षरं वा पुंसामानन्दनाथान्तं स्त्रीणामम्बान्तं नाम्ना त्वममुकोऽसीति नाम कुर्यात्। ततस्तेन नाम्ना आत्मपादुकां तर्पयित्वा, तत्पात्रं दीक्षितायै शक्त्यै समर्प्य, वस्त्राभरणादिभिः तां सम्पूज्य, शेषं गृहीत्वा यथासम्प्रदायं गुरवे समर्प्य, पूर्णपात्रान्तं हुत्वा, पात्रं प्रक्षाल्य, सुवर्णादिभरितं पात्रं गुरवे समर्प्य, प्रणम्य, सामयिकान् यथाक्रमं वस्त्राभरणभोजनदक्षिणादिभिः सम्पूज्य नमस्कुर्या-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दिति। ततः गुरु पूजासमाप्त्यन्ते देवतायै कर्म समर्प्य इष्टदेवतां नत्वा, यथासुखं विहरेदिति शिवम्॥

अथ **मन्त्रदीक्षाप्रकारो** लिख्यते। पूर्ववत्सामग्रीं सम्पाद्य, वेदिकायां श्रीयन्त्रं सिन्दूररजसा निर्माय, तत्र मध्ये महाकलशं, पश्चिमाष्टदिक्षु कलशाद्यष्टकं पूर्ववत्संस्थाप्य तेषु वशिन्याद्यष्टकं, मध्ये षोडशीं, तत्पुरतः सौभाग्यविद्यां, तद्दक्षिणतो बालां, वामतो महागणपतिं षोडशीं, दक्षिणवामयोर्मन्त्रिणीं दण्डिनीं, पृष्ठतः तिरस्कृतिं, षोडशीपरितो वामावर्त्तेन त्रिकोणाकारेण नित्यामण्डलं च तत्तन्मन्त्रेण सम्पूज्य, कलशनवके तत्तन्मुख्यमन्त्रमष्टधा प्रजप्य, मध्यकलशे बालां महागणपतिं मन्त्रिणीं दण्डिनीं तिरस्कृतिं सौभाग्यविद्यां पञ्चदशनित्याः चक्रेश्वरीः चतुःसमयदेवताः पञ्चपञ्चिकाः नवमुद्राः गुरुत्रयं कुलकामधेनुं तुरीयां वज्रेश्वरीं तुरीयसमयदेवतां, अन्नपूर्णां, अमृतेश्वरीं, सञ्जीवनीं बटुकं पूर्त्तिविद्यां कामराजौघं दीपिनीं च सकृत्प्रजप्य, अध्वशोधनरहितं होमं समाप्य, नवभिः कलशैः वशिन्यादिमन्त्रान् षोडशीं च जपन्नभिषिच्य, उक्तमन्त्रानुपदिश्य, नामकरणरहितं शेषं समापयेत्। संकल्पे पूर्णपदाभावः श्रीचक्रमण्डलाय नम इति मण्डलपूजा। पञ्चपल्लवे सोमलताभावः पादुकाहोमाभावः। द्वितीयदिने शिष्यह्वानं प्रार्थना वर्णदीक्षाद्यभाव इति मन्त्रदीक्षा। पञ्चदशीर्बालयोर्दीक्षा तु मूलतन्त्रादितो ज्ञेया। ग्रन्थविस्तरभयान्न लिख्यते। इति दीक्षा।

अथ **मन्त्रग्रहणप्रकारः**। तत्रादौ शिष्यः वस्त्राभरणदक्षिणाफलादिकं गृहीत्वा, गुरुं प्रणम्य, प्रार्थयेत्। ततः गुरुः तद्यन्त्रे वा कलशे वा यस्य मन्त्रस्योपदेशः कर्तव्यस्तद्देवतां सम्पूज्य, उपदिशेत्। ततः शिष्यः यथाशक्ति गुरुं सम्पूज्य प्रणमेदिति। अत्राप्राप्तविद्यस्यादौ महागणपतिं बालां गुरुत्रयं चोपदिशेत्। समर्थेन तु बालादीक्षोक्तप्रकारेण दीक्षैव ग्राह्या। एवं प्राप्तबालाविद्योपदेशं बालादृढभक्त्युपासनाभिः परिशुद्धचित्तं ज्ञात्वा, पश्चात्पञ्चदशीं मन्त्रिणीं दण्डनाथां पञ्चदशनित्यां तिरस्कृतिं चोपदिशेत्। समर्थेन तु बालादीक्षां पञ्चदशीदीक्षां मन्त्रदीक्षां च गृहीत्वा पूर्णदीक्षा ग्राह्या। बालादीक्षाग्रहणे बालादिसाङ्गोपास्तिरवश्यं कर्त्तव्या। असमर्थेन तु

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पञ्चदश्यन्तं मन्त्रग्रहणविधिना गृहीत्वा पूर्णदीक्षाग्रहणं कार्यमिति। एवं यथोक्ता दीक्षैवाचार्यदीक्षा संक्रमणदीक्षेति चोच्यते। असंक्रमणा तु यथोक्तप्रकारेणैव कर्त्तव्या।

अयं तु विशेषः। संकल्पे परदेवतासन्मार्गप्रवर्त्तनार्थमित्युल्लेखो नास्ति। ततो यावज्जीवं स्वेनान्यत्र शिष्यादावनुग्रहो न कर्त्तव्य इति। इयमेव **साधकदीक्षे**त्युच्यते। अतिवैराग्यवता आचार्यलक्षणरहितेन वा सा ग्राह्येति। इयं द्विविधापि **आचारदीक्षा**। **संस्काराख्या** तु यावन्मन्त्रोपदेशरहिता। तत्र योग्यतातारतम्यं ज्ञात्वा महागणपतिं (१), गुरुत्रयं (४), बालां (५), राजश्यामलां (६), वार्त्तालीं (७), तिरस्कृतिं (८), सौभाग्यविद्यां (९), षोडशीं (१०), महापादुकां (११), महाषोडशीं (१२) चोपदिशेत्। अथवा गुरुत्रयं (३), बालां (४), सौभाग्यविद्यां (५), षोडशीद्वयं (७), महापादुकाम् (८)। अथवा गुरुनाम (१), महाषोडशीम् (२)। अथवा हृल्लेखां (१), षोडशीकलां (२) चेति। अतिमूढादेः संस्कारदीक्षावतो मूलेनैवाखिलानुष्ठानम्। इयं चालस्योपहते न कर्त्तव्या, अपितु मूढादावेव कर्त्तव्या।

अत्र दीक्षायां यदि महाविघ्न उत्पन्नस्तर्हि कलशे देवतावाहनात्पूर्वं चेत्सर्वमुद्वास्य, पुनः कालान्तरे कर्त्तव्या। आवाहनानन्तरं चेत् देवतामनुद्वास्य विघ्नपरिहारः कर्तव्यः। विघ्नपरिहारपर्यन्तं स्वेन वाऽन्येन वा प्रत्यहं पूजनं कर्तव्यम्। अतीते विघ्ने अव्यवहिते दिने एव प्रायश्चित्तानुष्ठानपूर्वकं कर्म समापनीयम्। गुरोरेव चिरविघ्ने उत्पन्ने गुरुज्येष्ठकनिष्ठादिभिः कर्म समापनीयम्। प्रायश्चित्तं तु यावद्दिनातिक्रमस्तावत्सहस्रं मूलजपस्तावच्छ-ताज्यहोमो वा स्वेन ब्राह्मणद्वारा वा कर्त्तव्यः। स्थापनोत्तरं कुम्भोपघाते दशसहस्रं जपः सहस्रं होमो वा कर्त्तव्यः। यस्योपघातः तस्य पुनः संस्थापनादिकं च कर्त्तव्यम्।

अथाशक्तयोषिदादिकर्त्तव्यदीक्षायामाचार्यवरणानन्तरं उपाचार्यवरणं कार्यनिर्वाहार्थं कर्तव्यम्। तत्र दीक्षणं तु गुरुणैव कर्त्तव्यम्। गुर्वन्वारम्भणपूर्वकमुपाचार्येणाध्वशोधनं कर्तव्यम्। क्षत्रियस्यैवमेव दीक्षा कर्त्तव्या। वैश्यस्य तु रहस्यविद्यान्तमेवोपदेशः। शुद्रस्य तु पादुकां

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाषोडशीं विहाय संस्कारदीक्षैव कर्त्तव्या। तत्रापि यत्र मन्त्रे प्रणवोऽस्ति, तत्स्थाने चतुर्दशस्वरं सबिन्दुकं दत्वा उपदिशेदिति। स्त्रीणां तु योग्यताक्रमेण संक्रमासंक्रमोभयविधाऽपि। विधवायास्तीव्रभक्तियुक्ताया एव साप्यसंक्रमाख्यैव नान्या। सुवासिन्यास्तु भर्त्रा सह दीक्षा अत्युत्तमा। तत्र पृथगभ्यङ्गस्नानादिसंकल्परक्षाबन्धनमृत्तिकास्नानादिसंविद्ग्रहणान्तं घृताञ्जनं प्रणीतोदकप्रोक्षणं पाशच्छेदो हुतशेषभोजनादिशिखाबन्धान्तं मन्त्रदीक्षा नामकरणं च। अन्यत् पत्नीसहितस्य भर्तुरेव। एवं बहूनां शिष्याणां युगपद्दीक्षाग्रहणेऽपि तत्र गणेशपूजनादिवरणान्तं, दूर्वादिहोमः अध्वशोधनं कलान्याससप्तविधदीक्षाश्च प्रत्येकं कर्त्तव्या इति **दीक्षाक्रमः**॥

अथ **उपासकधर्मा** लिख्यन्ते—

एकग्रामे क्रोशदूरे चार्द्धयोजनके स्थितः।
गुरोस्त्रिसन्ध्यैकसन्ध्यं पञ्चपर्वसु दर्शनम्॥ १॥
एकयोजनमारभ्य योजनद्वादशावधि।
तत्तद्योजनसंख्यातैर्मासैः स्याद्गुरुदर्शनम्॥ २॥
अतिदूरे नमेच्छिष्यस्तद्दिशाभिमुखो गुरुम्।
रिक्तहस्तो नैव चिरात् पश्येद्देवं गुरुं तथा॥ ३॥
नैव गच्छेत् मण्डले च फलाद्यादाय वै व्रजेत्।
गुरौ मनुष्यबुद्धिं च मन्त्रे चाक्षरबुद्धिताम्॥ ४॥
न कुर्याद्यन्त्रमूर्त्यादौ शिलाबुद्ध्यादिकं तथा।
गुरुं पश्येत्सदा भक्त्या साक्षाच्छिवमयं बुधः॥ ५॥
शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।
गुरौ तस्माद्धितं कुर्याद् वाङ्मनःकायकर्मभिः॥ ६॥
सर्वत्रादौ गुरुः पूज्यश्चान्यः पूज्यस्तदाज्ञया।
ऋणदानं तथा दानं तथैव क्रयविक्रयम्॥ ७॥
न कुयाद् गुरुभिः सार्द्धं तदाज्ञां नैव लङ्घयेत्।
गुरुदैवतमन्त्राणां समयाचारवर्त्मनः॥ ८॥
न निन्दां शृणुयात् क्वापि न तिष्ठेत्तत्र सर्वदा।
शिरसा न वहेद् भारं पादुकाभावनापरैः॥ ९॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

नाभिमानं गुरोः कार्ये लज्जां कुर्यात् कदाचन।
गुरुमित्रसुहृद्दासीदासाद्यान् नाऽवमानयेत्॥ १०॥
वाहनं पादुकां चैव चामरं व्यजनं यथा।
ताम्बूलभक्षणं सेव्यभावं गुर्वग्रतस्त्यजेत्॥ ११॥
पादप्रक्षालनं दन्तधावनं मलमूत्रयोः।
विसर्गं क्षौरमभ्यङ्गं शयनं स्त्रीनिषेवणम्॥ १२॥
दुर्वाक्यं रोदनं हास्यं प्रपदोद्घाटनं तथा।
दूषणं कलहं वादमधोवायुं दुराग्रहम्॥ १३॥
अङ्गभङ्गं न कुर्याद्वै पूज्यसम्मुखतः क्वचित्।
गुरोरासनं वस्त्राङ्गं छायां नोलङ्घयेत् क्वचित्॥ १४॥
अधस्थे तु गुरावूर्ध्वे न तिष्ठेन्नाग्रगो भवेत्।
न विशेदुत्थिते तस्मिन् स्वाङ्गच्छायां न पातयेत्।
गुरुनाम न गृह्णीयाज्जपाच्छ्राद्धादृते क्वचित्॥ १५॥
गुरुपत्नीसुतज्येष्ठान् गुरुवत्पूजयेत्सदा।
गुरोर्गुरौ समीपस्थे गुरोर्नत्यादिमानसम्॥ १६॥

इति गुरुभक्तिलक्षणम्॥

अथाचारः—

मन्त्रं मुद्रात्मनाम शिष्यादन्यत्र नो वदेत्।
मत्तेभं सहकारं चाप्यशोकं पुष्पितद्रुमम्॥ १॥
श्मशानं द्रव्यसौगन्ध्यमेकवृक्षं च कोकिलम्।
सुवासिनीकुमारीणां समूहं मदिराघटम्॥ २॥
आममांसं कौलशास्त्रपुस्तकं दर्शने नमेत्।
पशुहस्तगतं नैव कुर्याच्च कुलपुस्तकम्॥ ३॥
श्रद्धाभक्तिकराभ्यां तु कौलिको भवसागरम्।
तरत्येकेन हीनोऽपि गभीरे मज्जति ध्रुवम्॥ ४॥
गुरुशास्त्रप्रमाणोक्तं कुर्याच्छक्त्यनुरोधतः।
आलस्येन त्यजन् सद्यः पतत्येव न संशयः॥ ५॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

कुलशास्त्रं सर्वदैव चिन्तनीयं प्रयत्नतः।
पशुशास्त्राणि सर्वाणि दूरतः परिवर्जयेत्॥ ६॥
पशोस्तु रक्षणं यद्वत् धर्मस्यास्य तथा चरेत्।
गुह्यार्थं कर्मणां लोपे न पापं विन्दते क्वचित्॥ ७॥
मातृदोषो यथा गोप्यस्तथा धर्मस्त्वयं सदा।
योषितामप्रियं नैव कुर्यात्कार्यं प्रियं सदा॥ ८॥
अपराधसहस्रेऽपि स्वस्त्रियं वा परस्त्रियम्।
न क्लेशयेन्मण्डले तु सर्वेषां प्रियमाचरेत्॥ ९॥
काम्यकर्म न कर्त्तव्यं नित्यं नैमित्तिकं चरेत्।
भक्त्या शक्त्या कृतं कर्म देवतायै समर्पयेत्॥ १०॥
अन्यमन्त्रार्चने श्रद्धां न कुर्यात्तु कदाचन।
कुलशास्त्रं तथा मन्त्रं श्रोतव्यं गुरुवक्त्रतः॥ ११॥
तदाज्ञया वा संपश्येद् गुरुं ध्यायन् स्मरन् नमन्।
न नग्नां स्त्रियमीक्षेत कुरूपीं प्रकटस्तनीम्॥ १२॥
दृष्ट्वा तु विकृतां वाऽपि नोपहासं समाचरेत्।
मण्डले तु स्त्रियाऽत्युक्तस्ताडितोऽपि तु तां नमेत्॥ १३॥
न स्वपेत्कुलवृक्षाधः तत्पत्रे नैव भोजनम्।
वृथा छेदं न कुर्याच्च नमस्कुर्याच्च दर्शने॥ १४॥
श्लेष्मातककरञ्जाम्रनिम्बाश्वत्थकदम्बकाः।
बिल्वो वटौदुम्बरौ च कुलवृक्षा नव स्मृताः॥ १५॥
कुलशास्त्रं सदाचारं कदापि न विकल्पयेत्।
गुरुस्त्रिवारमाचारं शिष्याय कथयेत् स्फुटम्॥ १६॥
तन्न गृह्णाति शिष्यश्चेत्तदा पापं गुरोर्न हि।
बिभीतकार्ककारञ्जस्नुहिच्छायां न संश्रयेत्॥ १७॥
पुण्ड्रेक्षुभक्षणं तद्वच्छेदनं च परित्यजेत्।
गुरुं न गोपयेन्मन्त्रं सर्वथा न प्रकाशयेत्॥ १८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शपथं नैव कुर्वीत कार्ये क्वापि कदाचन।
परम्परागुरुं नैव त्यजेद् योग्यं कथञ्चन॥ १९॥
तदाज्ञामन्तरा तस्य चाग्रे नोपदिशेन्मनुम्।

इति **समयाचारः**॥

अथ **मण्डले कर्त्तव्यधर्माः**

क्षताङ्गो ज्वरितश्चापि मलिनाम्बरमूर्द्धजः।
अशौचाङ्गस्तथोष्णीषी कञ्चुकी कृतभोजनः॥ १॥
पूजिताङ्गस्तथोच्छिष्टमुखो मरणसूतकी।
अपस्मारी क्लेशयुक्तश्छर्द्यतीसाररोगवान्॥ २॥
प्रायश्चित्ती तथाऽस्नातो न विशेन्मण्डले क्वचित्।
सकृन्मोहात् प्रविष्टोऽपि देवताशापमाप्नुयात्॥ ३॥
यदि तेषां तु भक्तिः स्यादुत्कटा दर्शनादिषु।
पूजागृहद्वारदेशाद् बहिः पूजादिकं चरेत्॥ ४॥
नमेत् पूजागृहद्वारे दण्डवन्नतु मण्डले।
स्नातः शुचिर्धौतवस्त्रो धृतपुण्ड्रः शुभाशयः॥ ५॥
क्षालिताङ्घ्रिकरो रिक्तकरो भक्त्या प्रणम्य च।
आचार्याज्ञानुरूपेण मण्डलान्तर्विशेत्ततः॥ ६॥
भावयन् देवतारूपं मण्डलं प्रणमेद् बुधः।
पुष्पाञ्जलिं ततः कुर्याद् यथोक्तविधिना क्रमात्॥ ७॥
मण्डलाकारतो वाऽपि चतुरस्त्रतयाऽथवा।
आचार्यं मध्यतः कृत्वा विशेज्ज्येष्ठक्रमेण तु॥ ८॥
ज्येष्ठेषु सत्सु न विशेदाचार्यस्य समीपतः।
आचार्योऽपि तथा ज्येष्ठानुत्थाय प्रणिपत्य च॥ ९॥
तेषामाज्ञां गृहीत्वैव स्वासनेऽथ समाविशेत्।
आदौ सुवासिनीः पूज्य कुमारीर्बटुकांस्तथा॥ १०॥
तीर्थं प्रदद्य तत्पश्चाद् ब्राह्मणानर्च्च्य वै क्रमात्।
तेभ्योऽपि तीर्थं दद्याद्वै ज्येष्ठेभ्योत्थाय साधकः॥ ११॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीपात्राद्दीक्षितायै स्यादन्येभ्यो हेतुपात्रतः।
बटुकाय बलेः पात्राद् देवताभावतो नमेत्॥ १२॥
एवं पात्राणि संगृह्य तर्पयित्वा यथाविधि।
हुत्वा शिवाग्नौ क्रमतस्त्रिचतुःपञ्चपात्रकम्॥ १३॥
प्रक्षाल्य पात्रं पुष्पादियुतमाच्छाद्य हस्ततः।
आचार्याय ततो दत्वा नमस्कुर्याच्च भक्तितः॥ १४॥
पात्रस्य दानमादानं ज्येष्ठेभ्योत्थाय वै भवेत्।
स्वीकृत्य तत्प्रसादं वै जप्त्वा स्तोत्रादिकं पठेत्॥ १५॥
अर्घ्यस्थापनमारभ्य यावत्पात्रविसर्जनम्।
सर्वं शिवमयं पश्येदन्यथा पतनं भवेत्॥ १६॥
सर्वे वर्णा द्विजास्तत्र न भेदं चिन्तयेत् क्वचित्।
उद्वासानन्तरं नैक्यं कुर्याद् विद्वान् कदाचन॥ १७॥
स्वात्मीकारस्त्रिधा तत्र दिव्यवीरपशुक्रमात्।
उद्वासावधि दिव्यः स्यात् तत्पश्चाद् वीर उच्यते॥ १८॥
असंस्कृतः पशुः प्रोक्तो विप्राणामाद्य एव तु।
अपशुः क्षत्रियविशां शूद्राणां त्रितयं भवेत्॥ १९॥
तत्तन्मन्त्रेण पात्राणां संख्यातानां हुतिः स्मृता।
पश्चान्मूलं पादुकां वा स्वाहान्तं च पठन् हुनेत्॥ २०॥
तावदेव हुनेद् विद्वान् यावदानन्दसंप्लुतः।
मनो निश्चलतां याति चित्तं चापि प्रसादताम्॥ २१॥
यावत्सुषुप्तता न स्यादविकारित्वमेव च।
तावदेव हुनेद्देवि निष्फलं त्वन्यथा भवेत्॥ २२॥
आदौ शक्तेः प्रसादं वै तीर्थमादाय साधकः।
ज्येष्ठादाचार्यतः पश्चात् प्रसादं पुष्पखण्डकम्॥ २३॥
अनन्तरं तु भक्त्या वै शक्तीनां तु यथेच्छतः।
ज्येष्ठानामपि वीराणां प्रसादं पुष्पखण्डकम्॥ २४॥
तीर्थं वाप्यन्यदपि वा तत्कृपाप्राप्तमेव च।
हुनेत् कुण्डलिनीवह्नौ भक्तिभावेन चेतसा॥ २५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मातुश्च गुरुपत्न्याश्च विधवाया अपि स्वयम्।
प्रार्थ्य प्रसादं तु हुनेदन्यासां न कदाचन॥ २६॥
स्वज्येष्ठा विधवा जातु प्रसादं यदि चार्पयेत्।
प्रेमभावेन तदपि हुनेन्न तु निषेधयेत्॥ २७॥
आरम्भस्तरुणश्चैव यौवनः प्रौढ एव च।
प्रौढान्तश्चोन्मनस्तद्वदात्यन्तिक इति स्मृतः॥ २८॥
उल्लासः सप्तधा देवि तत्रारम्भः स्वसंख्यया।
ईषद्बोधस्तु तरुणो मध्यबोधस्तु यौवनः॥ २९॥
यत्नाद् मनोलयो यत्र चायत्नात्तु चलो लयः।
प्रौढ इत्युच्यते चेषच्चलनात्तु तदन्त्यतः॥ ३०॥
उन्मनश्चलनं यत्नादन्त्यस्यान्निःश्चलत्वतः।
अशक्ता बुधबालानामारम्भः परिकीर्तितः॥ ३१॥
तरुणो नूतनानां स्याद् भक्तिमात्रस्तु यौवनः।
प्रौढः स्यादारुरुक्षोर्वै मध्यारूढस्य तत्परः॥ ३२॥
पूर्णारूढस्योन्मनश्च तद्वदात्यन्तिकोऽपि वै।
शक्तीनां तु यथेच्छं स्यादन्येषां देशिकाज्ञया॥ ३३॥
उल्लासभेदमज्ञात्वा प्राप्य मूढत्वमम्बिके।
स योगिनीनां सततं पशुः स्यादन्यथा पिबन्॥ ३४॥
जिह्वालोलुपभावेन चेन्द्रियप्रीणनाय च।
यः पिबेत्तं तु तामिस्रे मातृकाः पातयन्ति वै॥ ३५॥
भावयेद्देवतारूपां तत्र शक्तिं विशेषतः।
अन्यथा भावयन् सद्यः क्रुद्ध्येत् तस्य तु देवता॥ ३६॥
भोगेच्छां तु स्वशक्तौ तु कुर्यादन्यत्र नैव हि।
तच्चापि नाचरेदग्रे पूज्यानां तु कदाचन॥ ३७॥
शक्तेरिच्छानुरोधेन कुर्यात् तेन न दोषभाक्।
गुरोराज्ञानुरोधेन देवताप्रीणनाय च॥ ३२॥
यत्करोति तु तत्सर्वं मोक्षायैव प्रकल्पते।
अन्यथा क्रियमाणं तु सर्वं दुःखाय वै भवेत्॥ ३९॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

संन्यासिनो वनस्थाश्च शान्तरूपा उपासकाः।
आदावेव तु पूज्याः स्युर्मण्डले शिवरूपिणः॥ ४०॥
शास्त्रगुर्वाज्ञया सर्वं सफलत्वाय कल्पयेत्।
अन्यथा विफलं सर्वं भस्मनीव यथा हुतम्॥ ४१॥
अयं हि परमो योगः कौलमार्गो महेश्वरि।
असिधाराव्रतसमः मनोनिग्रहहेतुकः॥ ४२॥
स्थिरचित्तस्य सुलभः सफलस्तूर्णसिद्धिदः।
अन्यस्य विफलो दुःखहेतुः स्यात्परमेश्वरि॥ ४३॥

एवमुपासकधर्मान् ज्ञात्वा उपासीतेति शिवम्।

श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूर्वके।
कल्पद्रुमे समभवत् स्कन्धो दीक्षाफलानतः॥

॥ इति सौभाग्यकल्पद्रुमे दीक्षाविधिर्नाम चतुर्थः स्कन्धः॥ ४॥

✤ ✤ ✤

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पञ्चमः स्कन्धः

प्रासदीक्षोऽपि पुरतो यन्त्र कृत्वा न साधकः।
पुरस्क्रियाख्येन तेन या तुष्टा तां भजेऽम्बिकाम्॥

अथैवं गुरुकृपाप्रासदीक्षणेनादौ कर्तव्यत्वात् पुरश्चरणस्य तद्विधिरालिख्यते। तच्च दीक्षास्कन्धोक्तशुभे दिने विष्ण्वसुप्ते गुर्वाज्ञया स्वेन कर्तव्यम्। अशक्तश्चेद् गुरुब्राह्मणादिद्वारा कर्तव्यम्। तत्र देशः—

निजे गृहे समुद्रस्य तीरे कुलतरोरधः।
अद्रिशृङ्गेऽथ गोष्ठे वाब्धिसंयुक्तसरित्तटे॥ १॥
पुण्यस्त्रोतस्तटे वापि स्वयंजातसुरालये।
पश्चिमाभिमुखे नन्दौ शून्ये त्वेव शिवालये॥ २॥
तथा नार्मदलिङ्गस्य चालये गुरुसंन्निधौ।
मनःकान्ते तथैकान्ते भयदुष्टविवर्जिते॥ ३॥

एवमुक्तान्यतमे देशे पुरश्चरणं कुर्यात्। तच्च पुरश्चरणं पञ्चाङ्गम्— "जपो होमस्तर्पणं च मार्जनं ब्रह्मभोजनम्" इति।

जपस्तु लक्षसंख्याकः कलौ स्यात्तु चतुर्गुणः।
चतुर्लक्षात्मकस्तेन मन्त्रसिद्धिप्रयोजकः॥ ४॥
लक्षमात्रजपेनैव प्रत्यवायाद् विमुच्यते।
पूर्वपूर्वदशांशेन चाङ्गं स्यादुत्तरोत्तरम्॥ ५॥

तत्रादौ भूमिपरिग्रहं कुर्यात्। यथा—पूर्वमेकस्मिन् शुभे दिने क्षौरं विधाय, अयुतसंख्याकां मूलगायत्रीं पुरश्चरणाधिकारसिद्ध्यर्थं प्रजप्य, ततः पुरश्चरणारम्भपूर्वदिने कृतनित्यकृत्यः जपस्थानं गत्वा, तिथ्याद्युल्लिख्य "श्रीविद्यापुरश्चरणार्थं भूपरिग्रहं करिष्ये" इति संकल्प्य, "अमुकमन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रो मे सिध्यताम्" इत्युक्त्वा प्रणमेत्। ग्रामे क्रोशमितं नगरे तद्द्विगुणम्, अन्यत्र यथेच्छं क्षेत्रपरिग्रहः। अथ तत्क्षेत्रदिक्षु क्षीरवृक्षभवान् वितस्तिमितान् दशकीलान् सम्पाद्य, प्रत्येकं मूलास्त्रेणाभिमन्त्र्य पूर्वादीशान्ताष्टदिक्षु इन्द्रेशानयोर्वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये च क्रमेण निखनेत्। तेषूक्तास्त्रेण गन्धपुष्पाक्षतैः सम्पूज्य, तत्रेन्द्रादिदश-

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दिक्पालान् पञ्चभिः षोडशभिर्वोपचारैः सम्पूज्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एहीन्द्रपूर्वदिग्भागे पूजितो वसकीलके मां रक्ष निर्विघ्नेन कार्यं साधय साधय भाषभक्तबलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा" इति दशदिक्षु माषभक्तबलिं दद्यात्। अत्र मन्त्रे तत्र तत्र इन्द्रपूर्वपदयोः स्थाने वह्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेर-रुद्रब्रह्मानन्तपदानां आग्नेयदक्षिणनैर्ऋतपश्चिमवायव्योत्तरैशानोर्ध्वाधःपदानां चोहः। एतत्क्षेत्रपरिग्रहादिकं सुरालयातिरिक्ते एव कर्तव्यम्। एवं क्षेत्रपरिग्रहं कृत्वा, तन्मध्ये गणेशं क्षेत्रपालं वास्तुपुरुषं च बलिदानान्तैः पूजयेत्।

ततस्तत्र कूर्मचक्रं लिखेत्। प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोत्तरं चतस्रश्चतस्रो रेखा विलिख्य, नवकोष्ठानि कृत्वा, तेषु पूर्वादीशान्तेषु क-च-ट-त-प-य-श-ळ-वर्गान् प्रत्येकमेकैकं विलिख्य, मध्यकोष्ठपूर्वाद्यष्टदिक्षु स्वराणां द्वयं द्वयं विलिख्य, कूर्मं सम्पूज्य, कोष्ठेषु पूर्वादिमध्यान्तेषु अमृत-वृषभ-शैलराज-वासुकि-अर्थकृत्-शक्ति-पद्मयोनि-महाशङ्ख-छायाछत्रगण इति नवक्षेत्र-पालान् प्रत्येकं समष्ट्या वा सम्पूज्य, यस्मिन् कोष्ठे देशस्य ग्रामस्य गृहस्य वा नामाद्यक्षरमस्ति तत्कूर्ममुखम्, मध्यं कूर्मपृष्ठम्, तस्याधः कोष्ठं पुच्छम्, तेषां पार्श्वद्वये हस्तकुक्षिपादद्वयात्मकं क्रमात्कोष्ठषट्कम्। तत्र मुखपृष्ठयोर्जपस्य मुख्यं फलम्, हस्तयोर्मध्यमं फलम्। अन्यत्र निषिद्धो जपः। एवं भूतं कूर्मचक्रं चतुर्धा—देशे विभावनं देशकूर्मम्, ग्रामे विभावनं ग्रामकूर्मम्, गृहे विभावनं गृहकूर्मम्, चतुर्थं चासनाधो लेखनीयम्। तच्च दीक्षास्कन्धे निरूपितम्। अत्र देशकूर्मं विभाव्य, तन्मुखदेशस्थितग्रामे कूर्मं विभाव्य, तन्मुखस्थगृहे पुनः कूर्मं विभाव्य, तन्मुख आधारकूर्मचक्रं विलिख्य, तत्रासने स्थित्वा, जपः कर्तव्य इति मुख्यः। एकं वा विचिन्तयेत्। देशग्रामयोर्नाम प्रसिद्धम्। गृहनाम तु वास्तुशास्त्राद्विज्ञेयम्।

कुरुक्षेत्रे प्रयागे च महाकाले च पर्वते।
पुण्यारण्ये समुद्रस्य तीरे काश्यां न चिन्तयेत्॥

कूर्ममुखरूपदीपस्थानचिन्तनं नास्ति। यदा तु अमृतवृषभादिदीप-स्थानपतीनां स्वस्य च नामाद्यक्षरं मन्त्राद्यक्षरं चेति त्रयमेकं स्यात्तर्हि अरिमन्त्रा असाध्यमन्त्रा अपि सिध्यन्ति। एवं स्थानसाधकनाम्नोररित्वं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चेत्तत्स्थानं परित्यजेत्। यथा—शिवेश्वरयोः, शिवदूतीकलयोः, कुलसुन्दरीवाक्तत्त्वयोः, सर्वमङ्गलाकाशयोः, सदाशिवकालयोः, रागपुरुषयोः, अहङ्कारश्रोत्रयोः, पाणिजिह्वयोः, पायुस्पर्शयोः, शब्दवाय्वोररित्वम्।

अत्र नित्यातत्त्वनामभिस्तत्तदक्षरमवगन्तव्यम्। अत्र कामेश्वरीत्यकारग्रहणे आकारोऽपि ग्राह्यः। एवं ऋलृओकारेषु स्वरेषु दीर्घो ग्राह्यः। एवं स्थानं सम्पाद्य, अत्राशक्तौ स्वगृहे कूर्मचक्रादि संशोध्य, पर्वतादौ चेच्छितातपसहां शुभां कुटीं निर्माय, तत्र हविष्यांशी तस्मिन् दिने अधिवसेत्। अत्र गायत्रीजपप्रभृतिनियमानां धारणं कर्तव्यम्।

नियमास्तु—

शुद्धं स्वच्छं तथा वासःस्थानमङ्गं च मूर्धजाः।
सुगन्धामलकैः केशशोधनं बन्धनं सदा॥ १॥
पञ्चतिक्तमुखो निद्राजृम्भालस्यादिवर्जनम्।
निष्ठीवनं भयं नीचस्पर्शभाषणमेव च॥ २॥
अकार्यभाषणं क्रोधं चित्तचाञ्चल्यमेव च।
वर्जयेच्च फलं क्षीरं मूलं तद्वद्धविष्यकम्॥ ३॥
भुञ्जीयाद् रात्रिसमये शयनं स्थण्डिलेऽथवा।
कुशासनेऽजिने श्वेतकम्बले धूतवाससि॥ ४॥
जपस्थाने समीपे वै ब्रह्मचर्यं सदाचरेत्।
त्रिकालं वा द्विकालं वा स्नानं स्यात्प्रातरेव वा॥ ५॥
त्रिद्व्येककालं वा पूजा चामध्याह्नाज्जपो भवेत्।
मूलाभिमन्त्ररहितं न पिबेन्न च भक्षयेत्॥ ६॥
कदलीमधुपर्णेषु पालाशे मध्यवर्जिते।
हितं मितं च भुञ्जीयाद्देवतायै निवेदितम्॥ ७॥
एलालवङ्गकर्पूरजातीपत्रफलात्मकम्।
पञ्चतिक्तं तेन युतं ताम्बूलं निशि भक्षयेत्॥ ८॥
न वदेदप्रियं मिथ्यां स्नुह्यर्कद्रुमयोस्तथा।
करञ्जस्य विभीतस्य छायां नैवाक्रमेत् क्वचित्॥ ९॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

मौनेन भोजनं स्नानमप्रतिग्रह एव च।
क्षौरमुष्णजलस्नानं गीतवाद्यनिषेवणम्॥ १०॥
अनृतुस्त्रीसङ्गमं च कञ्चुकौष्णीषधारणम्।
अन्धकारे च शयनं वर्जयेत् साधकोत्तमः।
वृद्धयोषिद्रोगिणां तु नियमः स्यात्तु शक्तितः॥ ११॥

अथ जपविधिः

उच्चोपांशू जिह्वकश्च मानसश्च चतुर्विधः।
उच्चः स्पष्टतयोच्चारादुपांशुश्चोष्ठसंस्थितः॥ १॥
जिह्वको जिह्वयोच्चारः मानसो हृदि संस्मृतः।
क्रूरकर्मातिरिक्ते तु वाचिकं नैव सिद्धिदम्॥ २॥

अथासनानि

हरिणव्याघ्रयोश्चर्म कुशवेत्रभवं कटम्।
कर्पासपट्टौर्णवस्त्रमच्छिद्रास्फुटितं भवेत्॥ १॥
त्रयं वा द्वयमेकं वा भिन्नजातीयकं स्मृतम्।
अत्रासीनः स्वस्तिकेन पद्माख्येनासनेन वा॥ २॥
योन्यासनेन सिद्धेन कपालासनकेन वा।
व्यत्यस्य पादयुगलं जानूर्वोरन्तरे क्षिपेत्॥ ३॥
ईषत्स्पृष्टाङ्गुष्ठकं तु **स्वस्तिकासन**मीरितम्।
वामदक्षिणयोरूर्वोर्मूलयोर्विन्यसेत् क्रमात्॥ ४॥
दक्षवामाङ्घ्रियुगलं तस्योपरि करद्वयम्।
सरलाङ्गुलमुत्तानं चैवं **पद्मासनं** भवेत्॥ ५॥
वामजानुमधः कृत्वा तदूर्ध्वे दक्षजानुकम्।
पार्श्वद्वये भूगताङ्घ्रियुगलं करयुग्मतः॥ ६॥
अवष्टभ्याम्बरस्थे तु **योन्यासन**मुदाहृतम्।
योनिस्थाने वामगुल्फं लिङ्गे दक्षिणगुल्फकम्॥ ७॥
पश्यन् भ्रुवोरन्तरालमिति **सिद्धासनं** स्मृतम्।
भुवि कृत्वा मस्तकं तु चरणद्वयमूर्ध्वतः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

अचलः स्थिरदृष्टिश्च कपालासनमीरितम्।
आसनं जपमध्ये तु न विमुञ्चेत् कदाचन॥ ९॥

अत्र पद्मयोन्यासनयोः वर्णमालाजप एव हस्तस्यासनोपयुक्तत्वात्। "सर्वत्रासनयोगे तु ऋजुकायः सदा भवेत्।" अत्रासनेषु यथोत्तरं श्रेष्ठम्।

अथ जपमाला

वर्णमाला बीजमाला करमालेति सा त्रिधा।
अकारादिळकारान्तं पञ्चाशद्वर्णमण्डलम्॥ १॥
मेरुं कृत्वा क्षकारं वै चानुलोमविलोमतः।
शतसंख्या भवेदेवं यावदिष्टं जपं चरेत्॥ २॥

अत्र चतुस्ताराद्यं प्रणवाद्यं वा नमोन्तं शुद्धं वा मन्त्रोच्चारादौ अन्ते वा एकमेकं वर्णमुच्चरेत्। अष्टोत्तरपक्षे तु अन्ते स्वरेणैकेन कादिवर्गसप्तकेन च अष्ठसंख्यापूर्तिः कर्तव्या। वर्गजपे ॐ कं खं गं घं ङं नम इत्यादिकं ज्ञेयम्।

अथ बीजमाला

पुण्यकाष्ठभवा पुत्रजीवनीरजतोद्भवा।
पद्माक्षजा शङ्खजा वा कुशग्रन्थिकृता तथा॥ १॥
विद्रुमोत्था काञ्चनी च पुष्परागभवा तथा।
वैडूर्यगोमेदनीलजाता मारकती तथा॥ २॥
मुक्तामयी वज्रजाता पद्मरागमयी तथा।
रुद्राक्षजेति संस्कृत्य मालया प्रजपेत्ततः॥ ३॥
पूर्वस्मादुत्तरं श्रेष्ठमत्र ज्ञेयं विचक्षणैः।
न दिवा शाक्तमन्त्राणां जपो रुद्राक्षमालया॥ ४॥

अथैतत्सूत्रम्

कार्पासमुञ्जकुशजैः वल्कलोत्थोर्णजैस्तथा।
पट्टसूत्रैरपि भवेत्कार्पासादिचतुष्टयम्॥ ५॥
द्विजनिर्मितमेव स्यादन्यत्र नियमो न हि।
स्थूलादिसूक्ष्मपर्यन्तं सर्पाकारतया मणीन्॥ ६॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

आरोपयेद्वा मध्ये तु स्थूलं गोपुच्छवद् भवेत्।
ब्रह्मग्रन्थिं मणीनां तु मध्ये कृत्वान्त्ययुग्मकम्।
एकीकृत्य स्थूलमणौ मेरावारोप्य ग्रन्थयेत्॥ ७॥

अथैतत्संस्कारः

द्वादश्यामच्युतस्य स्यात् त्रयोदश्यां शिवस्य तु।
शाक्तो नवम्यामष्टम्यां चतुर्दश्यां निशासु वै॥

अथ रात्रौ कृत्यनित्यक्रियः मालासंस्कारं करिष्य इति संकल्प्य, मणीन् सूत्रं च प्रत्येकं पञ्चगव्येन प्रक्षाल्य, पञ्चामृतेनाभिषिच्य, पुनः सुवासितजलैर्मूलाष्टाभिमन्त्रितैः संस्नाप्य, शुद्धवस्त्रेण संमार्ज्य, मूलाभिमन्त्रिताष्टगन्धेन सूत्रं मणींश्चानुघृष्य, मूलेन ग्रन्थिं विधाय, ग्रथितायां तु मूलं प्रजप्य, पीठे संस्थाप्य, षडङ्गन्यासं कृत्वा, सामान्यकलशं सम्पूज्य; तत्र मालायां देवतामावाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य, मालां स्पृशन् सद्योजातादिपञ्चकं प्रजप्य, देवतामुद्वास्य, मालामादाय, प्रतिबीजं हृल्लेखामष्टधा प्रजप्य, मेरुं अघोरेभ्य इति प्रजप्य, नित्यहोममग्नौ कृत्वा, अष्ठोत्तरशतमष्टाविंशतिसंख्यं वा मूलेनाज्येन हुनेत्। अथवा मूलं प्रजपेत्। ततः गुरुं दक्षिणादिभिः सम्पूज्य परदेवतायै समर्पयेदिति॥

अथ पर्वमाला

अनामामध्यपर्वण आरभ्य तन्मूलकनिष्ठामूलमध्याग्रानामामध्यमाग्रत- र्जन्यग्रमध्यमूलेषु दशसु स्थानेष्वनुलोमविलोमतः स्पृशन् जपेत्। अत्र मध्यमामध्यमूलयोर्मेरुत्वमिति ध्येयम्। रुद्राक्षमालायां मुखे मुखं पृष्ठे पृष्ठं च योजनीयमिति विशेषः॥

एवं पूर्वदिने बलिदानादि कृत्वा, तद्दिने नित्यक्रियां विधाय, प्राङ्मुखः पवित्रपाणिः गुरुं ब्राह्मणानिष्टदेवतां च नमस्कृत्य, प्राणानायम्य, तिथ्याद्युलिख्य, "अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं श्रीविद्यासिद्धिद्वारा महात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं एतावद्भिर्दिनैरेतावत्संख्याकं पञ्चाङ्गपुरश्चरणं करिष्ये" इति संकल्प्य, गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं च कृत्वा, ततः गुरुं प्रणम्य, तदाज्ञया जपमारभेत्। आसनोपरि प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा स्थित्वा, भूशुद्ध्यादिषडङ्गन्यासान्तं कुर्यात्। कृते भूशुद्ध्यादिके तु मूलस्य

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऋष्यादिपूजान्तं विधाय, मूलविद्यया प्राणायामत्रयं कृत्वा, सामान्यकलशं सम्पूज्य, देवतायै निवेदितपञ्चतिक्तं मूलाभिमन्त्रितं मुखे स्थाप्य, जपमालां पात्रान्तरस्थां वामकरे गृहीत्वा कलशोदकेन मूलेनाभ्युक्ष्य,

ॐ माले त्वं महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सिद्ध्यै नमः" इति गन्धाक्षतपुष्पैः मालां सम्पूज्य, "गं अविघ्नं कुरु मे माले स्वाहा" इति मालां दक्षकरे गृहीत्वा, मूर्ध्नि संस्थाप्य, ब्रह्मरन्ध्रे मातृकात्रिकोणं ध्यात्वा, तन्मयीं मूलविद्यां मुखे ध्यात्वा, तद्वाच्यां देवतां हृदि ध्यात्वा, तदपररूपं श्रीगुरुनाथमाज्ञायां ध्यात्वा, तेषां ऐक्यं देवतारूपं हृदि ध्यात्वा, नत्वा, दक्षकरेण मालामादाय, हृदयसमीपस्थकरः देवतां मन्त्रार्थं मन्त्रवर्णान् वा चिन्तयन्, भ्रूमध्यं नासिकाग्रं वाऽवलोकयन्, ऋजुकायः दिशः अनवलोकयन् अर्धनिमीलित-दृष्टिः अङ्गभङ्गचाञ्चल्यादिरहितः मध्यमामध्यपर्वस्थापितमालाया एकैकबीजं स्पृशन्, इतरबीजमस्पृशन्, मालायां शब्दमजनयन्, आदौ प्रणवमुच्चरन् जपमारभ्य, प्रणवान्तेन जपं समापयेत्।

मन्त्रोच्चारो नातिशीघ्रं नातिमन्दं च चास्फुटम्।
उच्चरेन्मणिमालेव नादैक्यं व्यक्तवर्णकम्॥
धाराया नैव विच्छेदं कुर्यान्मन्त्री कदाचन।
आरम्भः प्रणवादेव समाप्तिः प्रणवे भवेत्॥

एवं प्रणवान्तेन जपं समाप्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सिद्ध्यै नमः" इति मालां प्रणम्य, मूर्ध्नि संस्थाप्य,

ॐ माले त्वं महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

इति प्रार्थ्य, प्राणानायम्य, ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा, कलशोदकं चुलके गृहीत्वा,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति देवताहस्ते भावनया समर्पयेत्। "ह्रीं सिद्ध्यै नमः" इति मालां गन्धादिभिः सम्पूज्य, रहसि स्थापयेत्।

वर्णमाला-करमालापक्षे तु मालापूजनादानमस्तकस्थापनादि नास्ति। अवशिष्टं समानम्। अत्र जपमध्ये जृम्भाछिक्कोद्गारसम्भवे त्रिस्तारचतुष्टयं जपेत्। अपानवायुनिर्गमे तु तन्मालावृत्तिं परित्यज्य, आचम्य, षडङ्गन्यासं विधाय, पुनर्जपेत्। निद्रादिसम्भवेऽप्येवम्। निद्रादिना हस्ताज्जपमाला-च्युतावष्टोत्तरशतं जपः। जपमध्ये मालात्रोटने अष्टोत्तरसहस्रं जपः। जपमध्ये मूत्रोत्सर्गे कर्तव्ये मालां समाप्य, शङ्कां निर्वर्त्य, जानुकूर्परपर्यन्तं पादौ हस्तौ प्रक्षाल्य, आचम्य, त्रिः प्राणानायम्य, षडङ्गं कुर्यात्। मलोत्सर्गे स्नानमपि कर्त्तव्यम्। जपसंख्याविस्मृतौ पुनरारम्भाज्जपः कर्तव्यः। यावद्भिः दिनैः पुरश्चरणं कर्तव्यम्, तावत्संख्यया पुरश्चरणसंख्यां विभज्य, लब्धसंख्यात्मकजपः प्रत्यहं कर्तव्यः। शेषजपस्तु आरम्भदिनेऽन्त्यदिने वा कर्तव्य इति। यथा लक्षसंख्यात्मकपुरश्चरणं यदि एकेन मासेन कर्तव्यम्, तत्र लक्षसंख्यायां त्रिंशद्भिः भागे क्रियमाणे त्रयस्त्रिंशदुत्तर-त्रिशताधिकत्रिसहस्रसंख्या लब्धसंख्या, शेषसंख्या दश, तेन प्रत्यहं त्रयस्त्रिंशदुत्तरत्रिशताधिकत्रिसहस्रजपः (३३३३) कर्तव्यः। शेषात्मक-दशसंख्याजपस्तु आरम्भदिनेऽन्त्यदिने वा कर्तव्य इति।

एवं जपं कृत्वा होमादिकं कुर्यात्। तच्च प्रत्यहं वा, लक्षसमाप्तौ वा, सर्वजपसमाप्तौ वा कर्तव्यम्। होमस्तु दीक्षोक्तरीत्याग्निं संसाध्य, देवतावाहनादि नित्यहोमदेवता हुंत्वा, तारचतुष्टयाद्यस्वाहान्तं मूलेन होमं कुर्यात्।

होमद्रव्याणि तु—

पायसं बिल्वपत्रं वा द्राक्षा पुण्यफलानि वा।
करवीरं किंशुकं वा कमलं च कुसुम्भकम्॥ १॥
मधूकं च जपा चैव अन्यद्वा शुभगन्धयुक्।
एतेषां कुसमं तद्वद् गव्यं क्षीरं घृतं तथा॥ २॥

इत्यादि।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अत्र होमद्रव्यप्रमाणम्—

पुष्पाणि तु समग्राणि कौसुम्भं दशसंख्यकम्।
अम्लानं सुप्रफुल्लं च होमकर्मणि योजयेत्॥ १॥
कर्षद्वयन्यूनफलं समग्रं होमयेत् तथा।
ततोऽधिकफलस्येह खण्डं स्यात्कर्षतोऽधिकम्॥ २॥
घृतश्रीखण्डागरूणां माषत्रयमितं भवेत्।
षष्टितण्डुलजं तद्वत् पायसं संप्रकीर्तितम्॥ ३॥

क्षीरं कर्षमितं ज्ञेयमित्यादि। प्रथमदिनेऽग्निं सन्धाय तस्मिन्नेव प्रत्यहं होमं कुर्यात्। अग्निरक्षणासमर्थश्चेत्प्रत्यहमग्निमुखं कुर्यात्। अग्निमुखकरणेऽप्यशक्तश्चेत् नित्यहोमवदग्निं संस्थाप्य होमं कुर्यात्। उद्देशत्यागकथनं तु प्रत्याहुत्यन्ते वा, समस्तहोमान्ते वा भवेत्। स्त्रीणां शूद्राणां च होमो नास्ति। उत्कटेच्छा यदि शूद्रस्य होमकरणे तर्हि नमोऽन्तेन होमं कुर्यात्। अथवा ब्राह्मणद्वारा होमः कर्तव्यः। होमाकरणे तु होमसंख्याद्विगुणो जपः॥

तत्रायं विशेषः—अशक्त्यादिना यस्य यस्याङ्गस्य लोपः, तत्तत्संख्या द्वित्रिचतुःपञ्चगुणो जपः क्रमाद्ब्राह्मणादीनाम्, अत्यशक्तस्य तु जपब्राह्मणभोजनरूपाङ्गद्वयेनैव पुरश्चरणसिद्धिः। एवं गोक्षीरेण सुवासितोदकेन वा मूलान्ते तर्पयामिति तर्पयेत्। एतच्च जले देवतामावाह्य षोडशभिः पञ्चभिर्वोपचारैः सम्पूज्य तर्पणं कृत्वाऽन्ते चोद्वासयेत्॥

अथ तीर्थादौ स्नानविधिवत्तीर्थावाहनादि कृत्वा, पात्रस्थापितसुगन्धजले वा आवाह्य, स्वमूर्ध्नि देवतां ध्यात्वा, मूलान्ते मार्जयामीति मार्जयेत्। ततः ब्राह्मणानभ्यङ्गाद्यनेकोपचारैः सम्पूज्य, विविधफलभक्ष्यभोज्यादिभिः तर्पयित्वा, दक्षिणादिभिः सन्तोष्य, देवताबुद्ध्या प्रणमेत्। एवं जपादिकं कृत्वा समर्थश्चेन्मध्याह्नस्नानं विधाय, पुनः पूजां च यथाशक्तिः कृत्वा, स्तोत्रपाठादिना दिनशेषं नयेत्।

अथ सायाह्ने स्नानं विधाय, पुनः पूजां कृत्वा, रात्रौ भोजनं कुर्यात्।

भोज्यपदार्थास्तु—

व्रीहितण्डुलकं मुद्गा यवाः कृष्णतिलास्तथा।
सैन्धवं चापि सामुद्रं लवणं गोघृतं तथा॥ १॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनिःसारितसारं तु दधिदुग्धमथैक्षवम्।
गुडवर्जं नारिकेलं कदली लवली तथा॥ २॥
तिन्त्रिण्याम्रं च नागरं दाडिमं वास्तुशाककम्।
नीवाराः षष्टिकाश्चापि मेध्या कन्दाश्च सर्वशः।
आर्द्रकं च पटोलं च धात्री चैव हरीतकी॥ ३॥

इति। एवं भोजनं कृत्वा कृताचमनादिः जपस्थानसमीपतो निरुक्तास्तरणमास्तीर्य, मूलेन सप्तधाभिमन्त्र्य स्तोत्रं पठेत्—

अत्र देवास्त्रयस्त्रिंशदाशापाला मरुद्गणाः।
रक्षन्तु मां मन्त्रसिद्ध्यै यतन्तं विबुधेश्वराः॥ १॥
महाविद्यासाधकस्य भूता वेतालकादयः।
विघ्नं कुर्वन्ति सततं तेभ्यो रक्षतु मां शिवः॥ २॥
भैरवा मातृसहिताः कोटिशः सञ्चरन्ति वै।
सिद्धिनाशाय लोकस्य तेभ्यो रक्षतु शङ्करः॥ ३॥
सुप्तं सर्पादिरूपेण साधकं भीषयन्ति वै।
सिद्धिलोपाय देवाद्याः शूलपाणिस्ततोऽवतु॥ ४॥
अनन्तमूर्ध्नि देव्येषा धरा यस्मात्प्रतिष्ठिता।
तेन सत्येनावतु मामनन्तः सर्वरक्षकः॥ ५॥
नमः स्वप्नाधिपतये रुद्रायामिततेजसे।
इष्टार्थान् सम्यगाचक्ष्व नाशयानिष्टसूचकान्॥ ६॥

"ॐ नमः स्वप्नाधिपतये रुद्राय नमः स्वाहा (१६)" इति त्रिधा जप्त्वा, स्वाङ्गे मूलषडङ्गं न्यस्य स्वापं कुर्यात्।

अथ सिद्धिसूचकस्वप्नाः

उपास्यदेवतारूपं प्रासादं स्फटिकोपमम्।
गुरुं प्रियजनं पूर्णचन्द्रं सूर्यं सरित्पतिम्॥ १॥
पूर्णां नदीं तटाकं च प्रफुल्लं कमलाकरम्।
यन्त्रराजं महादेवलिङ्गं हैरण्यपर्वतम्॥ २॥
दृष्ट्वा सिद्धिस्तथा नौकातरणं स्वस्य वै जयः।
ज्वलदग्निं हंसचक्रवाकसारसबर्हिणः॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अश्वयुग्रथमध्यस्थं श्वेतच्छत्रादिभूषणम्।
दीपपङ्क्तिं श्वेतमाल्यं दिव्यस्त्रीणां कदम्बकम्॥ ४॥
फुल्लवृक्षं चाममांसं खेयानमभयं तथा।
श्वेताश्ववृषभौ मत्तवारणं तेषु रोहणम्॥ ५॥
विमानगमनं मद्यपानं मांसस्य भक्षणम्।
विष्टालेपं रक्तलेपं दधिलेपं च भक्षणम्।
राज्याभिषेकं रत्नादिभूषणं चैवमादिकम्॥ ६॥

अथाशुभसूचकाः—

काकगृध्रोलूकघूकान् खरमार्जारमाहिषान्।
चण्डालं कृष्णपुरुषं स्त्रियं वा विकटां तथा॥ १॥
शून्यगर्तं शुष्कवृक्षनदीपुष्करवापिकाः।
तैलाभ्यङ्गं कण्टकयुग्वृक्षं प्रासादभञ्जनम्॥ २॥
उन्मत्ततां नग्नतां च भीततां स्वात्मनस्तथा।
सङ्कटेन समायोगं पश्यन् शान्तिं समाचरेत्॥ ३॥

फलं तु—

वर्षेण च तदर्धेन तदर्धेन च मासतः।
आद्ययामादितो ज्ञेयं फलं यामचतुष्टये॥ ४॥

अथ शुभस्वप्ननिवेदनक्रमः

प्रातःस्नानं च सन्ध्यादि विधाय गुरुसन्निधौ।
तत्समानसमीपे वा देवतानिकटेऽथवा॥ १॥
नत्वा कृताञ्जलिः सर्वं वाच्यं दृष्टवदेव हि।
शुभस्वप्ने पुनः स्वापो न कर्तव्यः कदाचन॥ २॥

अशुभदर्शने प्रायश्चित्तम्—

मन्त्रराजं पठित्वा तु नृसिंहं प्रार्थ्य वै जपेत्।
नृसिंहबीजं देवेशि शुचिर्भूतो ह्युदङ्मुखः॥

प्रार्थनामन्त्रस्तु—

नृसिंहाय नमो दोषान् जहि दुःस्वप्नजान् मम।
यतः स्वप्नाधिपस्त्वं वै सर्वेषां फलदो मतः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ सिद्धिचिह्नानि—

आश्चर्यदर्शनं चित्तप्रसादोऽल्पाशनं तथा।
अल्पनिद्रा मनोल्लासः सिद्धिचिह्नानि शङ्करि॥ इति।

अथ प्रसङ्गान्मन्त्रशोधनसंस्कारो लिख्यते। तत्र शोधनं षड्विधम्—

सिद्धारि राशिचक्रं च भूतचक्रं भचक्रकम्।
धनार्णचक्रं देवेशि वश्यावश्याख्यकं तथा॥

सिद्धारिचक्रम्

यथा—

तिर्यगूर्ध्वं पञ्चरेखां कृत्वा षोडशकोष्ठकम्।
अकथादि त्रिधा कृत्वा रूपभूताऽक्षिषष्ठकाः॥
विश्वनन्देन्द्रदिग्वेदवस्वग्निस्वरभूमिपाः ।
मार्तण्डतिथिरुद्राः स्युरकाराद्याः स्वराः क्रमात्॥
एवं कादींस्तु तत्रैव पादीन् हादित्रयं तथा।

रूपं प्रथमः अकारः, भूतं पञ्चम उकारः, अक्षिः द्वितीय आकारः, षष्ठकः षष्ठ ऊकारः। एतच्चतुष्टयं प्रथमपङ्क्तौ कोष्ठचतुष्टये लेखनीयम्। विश्वः त्रयोदशः ओकार इत्यादि द्वितीयपङ्क्त्यादौ लेखनीयम्। नन्दः

अ क थ ह	उ ङ प	आ ख द ळ	ऊ च फ
ओ ड ब	लृ झ म	औ ढ श	लॄ ञ य
ई घ न	ॠ ज भ	इ ग ध क्ष	ऋ छ व
अः त स	ऐ ठ ल	अं ण ष	ए ट र

नवमः, इन्द्रः चतुर्दशः, दिक् दशमः, वेदः चतुर्थः, वसुरष्टमः, अग्निस्तृतीयः, स्वरः सप्तमः, भूमिपाः षोडशः, मार्तण्डः द्वादशः, तिथिः पञ्चदशः, रुद्रा एकादशः इति।

चतुश्चतुष्कं तज्ज्ञात्वा यत्र नामाद्यमक्षरम्।
तस्मान्मन्त्रादिवर्णान्तं कोष्ठानि गणयेत् पृथक्॥
चतुश्चतुष्कं प्रत्येकं प्रादक्षिण्यक्रमेण तु।
सिद्धसिद्धं सिद्धसाध्यमथ सिद्धसुसिद्धकम्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिद्धारि चापि देवेशि साध्याद्यानि पुनः क्रमात्।
चत्वार्यथ सुसिद्धाद्यान्यपि चत्वारि वै पुनः॥
अर्यादीन्यपि चत्वारि तेषां देवि फलं शृणु।
उक्ताज्जपाद् द्विगुणतः प्राप्तिमात्राच्च सिद्ध्यति॥
प्राप्त्या स्वबान्धवमृतिरिति क्लेशेन सिद्ध्यति।
दुःखकृत् सिद्धिकृत् तद्वद् धननाशस्तथेष्टदः॥
सिद्धिरुक्तजपात्तद्वत् सकृदुच्चारणात् फलम्।
हानिदः स्त्रीसुतभ्रातृस्वनाशः परतः क्रमात्॥

इति। साध्याद्यानि इत्यस्य साध्यसिद्धं साध्यसाध्यमित्यादिरर्थः। एवमग्रेऽपि। यत्र नामाद्यवर्णो वर्तते, तच्चतुष्कमारभ्य चतुश्चतुष्कं सिद्धादिनामकम्। एवं तत्कोष्ठमारभ्य कोष्ठचतुष्कं सिद्धादिनामकं ज्ञेयमिति सिद्धारिचक्रम्॥

अथ राशिचक्रम्

वेदाग्न्यग्न्यक्षिनेत्राक्षिबाणेष्विषुशराः शराः।
अब्धिसंख्याः शादयस्तु कन्यायां मेषतो लिखेत्॥
स्थितिसम्पद्भ्रातृबन्धुपुत्रारिस्त्रीमृतिः सुकृत्।
कर्मलाभव्ययाश्चैषां फलानि क्रमतो भवेत्॥
तत्र त्यजेद्रिपुमृतिव्ययान् नामगुणैर्युतान्।

सिद्धारिचक्रम्

१ अ आ इ ई	२ उ ऊ ऋ	३ ॠ ऌ ॡ	४ ए ऐ	५ ओ औ
१२ य र ल व				६ अं अः श ष स ह ळ क्ष
११ प फ ब भ म	१० त थ द ध न	९ ट ठ ड ढ ण	८ च छ ज झ ञ	७ क ख ग घ ङ

राशिचक्रम्

अत्र मन्त्राद्यवर्णेन मन्त्रराशिं ज्ञात्वा स्वनक्षत्रराशितो गणयेदिति राशिचक्रम्॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ भूतचक्रम्

पञ्च ह्रस्वाः पञ्च दीर्घाः सन्धयः पञ्च कादयः।
शान्ताश्च नव वर्गाः स्युरग्न्यब्ध्यश्वीन् द्विषु क्रमात्॥
षवर्गोऽब्ध्यश्विबाणेन्दुवह्निरेवं लिखेदथ।
भूवाय्वोरग्निजलयोररित्वमथ मित्रता॥
अन्येषां इति। विसर्गो हकारात्मको ज्ञेय इति भूतचक्रम्॥

पृथ्वी	उ ऊ ओ ग ज ड द ब ल ळ
जलम्	ऋ ॠ औ घ झ ढ ध भ व स
अग्निः	इ ई ऐ ख छ ठ थ फ र क्ष
वायुः	अ आ ए क च ट त प य ष
नभः	लृ लॄ अं ङ ञ ण न म श ह

अथ भचक्रम्

पक्षेन्द्वग्न्यब्धीन्दुरूपाक्षीन्द्वश्व्यश्वीन्दुलोचनम् ।
नेत्रनेत्रेन्द्वशिवरामचन्द्राग्नीन्द्विन्दुचन्द्रमाः ॥
पक्षेन्द्वश्व्यग्न्यब्धिसंख्यवर्णान् भेषु क्रमाल्लिखेत्।
अश्विन्यादिष्वकाराद्यान् स्वरान्त्यौ क्षान्ततो न्यसेत्॥
भेषु अश्विन्यादिनक्षत्रेषु अकारादीन् ह्येकत्रिकक्रमादित्यर्थः।
स्वभाच्च गणयेन्मन्त्रभपर्यन्तं क्रमाच्छिवे।
नवभिस्तु विभज्याथ शेषाद् ज्ञेयं क्रमात्फलम्॥

१ अ आ	१० घ ङ	१९ न प फ
२ इ	११ च	२० ब
३ ई उ ऊ	१२ छ ज	२१ भ
४ ऋ ॠ लृ लॄ	१३ झ ञ	२२ म
५ ए	१४ ट ठ	२३ य र
६ ऐ	१५ ड	२४ ल
७ ओ औ	१६ ढ ण	२५ व श
८ क	१७ त थ द	२६ ष स ह
९ ख ग	१८ ध	२७ अं अः ळ क्ष

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

साम्यं धनं दुःखसुखे शत्रुमित्रविनाशकः।
सौख्यं सर्वेष्टलाभश्च तत्तन्मन्त्राद्विजायते॥

इति। शून्यशेषे नवमं फले ज्ञेयमिति भचक्रम्॥

अथ धनऋणचक्रम्

तिर्यग्रेखाचतुष्कं च ऊर्ध्वाधो द्वादशैव च।
तेन कोष्ठानि जायन्ते त्रयस्त्रिंशन्मितानि वै॥
मध्यकोष्ठेषु देवेशि लिखेद्वर्णान् क्रमेण तु।
अकारादि द्विशो देवि लृकारान्तं च पञ्चसु॥
एकारादिकमेकैकं षट्कोष्ठेषु लिखेत् क्रमात्।
त्रिरावृत्या ककारादीन् हान्तानेकैकशो लिखेत्॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३
१४	२७	२	१२	१५	६	४	३	८	८	९
अ आ	ई ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ लॄ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
१०	१	७	४	८	३	७	५	४	६	३
२	२	५	०	०	२	१	०	४	४	१

रसर्तुरसखाग्न्यब्धिवेदखव्योमखाग्नयः ।
साध्याङ्का ऊर्ध्वकोष्ठस्थाः साधकास्त्वधोगताः॥
पक्षाश्वीषुखखाश्वीन्दुखवेदाब्धीन्दवः क्रमात्।
मन्त्रवर्णा नामवर्णाः स्वरव्यञ्जनभेदिताः॥
पृथगङ्कास्तु संयोज्य चाष्टभिर्भागमाहरेत्।
शेषाङ्को यस्य यस्मात्तु यावदेवाधिको भवेत्॥
तावत्तस्य ऋणं ज्ञेयं धनी मन्त्रो न सिद्धिदः।

अत्र ळक्षौ लसकार-कषकारात्मकौ। इति धनऋणचक्रम्॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ वश्यावश्यचक्रम्

तिर्यग्रेखासप्तकं च तथा सप्ताधरोर्ध्वतः।
भवन्ति षट् च त्रिंशच्च कोष्ठानि तु महेश्वरि॥
ऊर्ध्वाधःपङ्क्तिरूपेषु षट्सु कोष्ठेषु वै क्रमात्।
तत्राद्यपङ्क्तावूर्ध्वात्तु अकारादीन् षडुल्लिखेत्॥
एकारादीनन्त्यपङ्क्तौ षण्ढान् मध्यचतुष्टये।
द्वितीयपङ्क्तौ वर्गाद्यान् तृतीयस्यां द्वितीयकान्॥

अ ङ १	क ष २	ख ३	ग ४	घ स ५	ए ङ ६
आ ञ २०	च २१	छ२२	ज २३	झ २४	ऐ ञ ७
इ ण १९	ट ३२	ऋ ठ ३३	लृ ड ३४	ढ २५	ओ ण ८
ई न १८	त ३१	ॠ थ ३६	ॡ द ३५	ध २६	औ न ९
उ म १७	प ३०	फ २९	ब २८	भ २७	अं म १०
ऊ श १६	य ह १५	र १४	ल १३	व क्ष १२	अः श ११

चतुर्थ्यां तु तृतीयान् वै पञ्चम्यां तु चतुर्थकान्।
पञ्चमानाद्यन्तपङ्क्त्योर्द्विधा देवेशि संलिखेत्।
द्वितीयादौ पञ्चमादौ षसौ हक्षौ तथान्त्ययोः।
आद्यकोष्ठात्तु देवेशि लिखेदेकादितोऽङ्ककान्॥
प्रादक्षिण्यक्रमेणैव कुण्डल्याकारवल्लिखेत्।
थकारे तु समाप्तिर्वै चान्ते षट्त्रिंशदङ्ककम्॥
नामाद्यक्षरकोष्ठात्तु मन्त्रारम्भार्णकोष्ठकम्।
गणयित्वा फलं ज्ञेयं क्रमेणाङ्कस्य चेश्वरि।
वश्यावश्यौ तथा सिद्धिर्हानिर्लाभो रिपुः सुखम्।
मृतिः शून्यं चेति पुनश्चतुर्धा गणयेत् क्रमात्।
आद्ये तात्कालिकी सिद्धिर्द्वितीये चाल्पकालतः॥
तृतीये दीर्घकालेन चतुर्थे परजन्मनि।

अत्र षट्स्वरान् ऊर्ध्वाधो रीत्या लिखेत्। द्विधा लिखितवर्णानां

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सन्निहितं फलं ज्ञेयमिति। अत्र भचक्र-राशिचक्र-भूतचक्र-धनऋणचक्र-सिद्धारिचक्र-वश्यावश्यचक्राणां यथोत्तरं फलं द्वैगुण्यम्। तथा च भचक्रस्यैकगुणं फलं वश्यावश्यस्य तु द्वात्रिंशद्गुणं फलम्। एवं च,

एकत्रिंशद्गुणान्मन्त्रात् पादन्यूनफलं भवेत्।
तिथिसंख्यगुणान्मन्त्रादर्धं पादं स्वरोन्मितान्।
तस्मान्न्यूनगुणो मन्त्रः फलं नैव प्रयच्छति॥

इति। अत्र साधकस्य राशिर्नक्षत्रं च जन्मकालिकं ग्राह्यम्। यदि तन्न ज्ञायते तर्हि प्रसिद्धनामनक्षत्रादिकं ज्योतिःशास्त्रात् ज्ञेयम्॥

नाम तु—

सुप्तो जागर्ति येनासौ दूरस्थश्च प्रभाषते।
वदत्यन्यमनस्कोऽपि तन्नाम ग्राह्यमत्र तु॥

इति। अत्र सिद्धारिधनऋणवश्यावश्यचक्रशोधनं च नाममन्त्रयोराद्याक्षरस्याद्याक्षरेण, द्वितीयस्य द्वितीयेनेति रीत्या सर्वेषां मन्त्रार्णानां कर्तव्यम्। मन्त्राक्षरोऽधिकश्चेत् पुनर्नामावृत्त्या नामाक्षराधिक्ये मन्त्रावृत्त्या शोधयेत्। एवं सर्वमन्त्राक्षरशुद्धौ मुख्यफलम्। आद्यन्तयोः शुद्धौ मध्यं फलम्। आदिशुद्धौ अधमं फलमिति। एवं धनऋणचक्रे ऋणधनयोः शून्ये च मन्त्रं परित्यजेत्। यद्यपि मन्त्रशोधनं मूलविद्यादिकानां केषाञ्चित् मन्त्राणां नास्तीत्युक्तं तन्त्रेषु, तथापि काम्यादिषु तस्यावश्यकत्वाल्लिखितम्।

अथ संस्काराः

जननं जीवनं देवि दीपनं बोधनं ततः।
ताडनं चाभिषेकश्च विमलीकरणं प्रिये॥
तर्पणाप्यायने गुप्तिर्दशैता मन्त्रसंस्क्रियाः।
पश्चिमाग्रं त्रिकोणं तु विलिख्येशादि सप्तधा॥
विभजेदेवमाग्नेय्यां पुनः पश्चिमकोणतः।
एवं चैकोनपञ्चाशत्त्रिकोणानि भवन्ति वै॥
तत्रेशादिक्रमाद् देवि हकारान्तानकारतः।
अष्टगन्धेन विलिखेत् त्रयोदशसु पङ्क्तिषु॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

भूर्जपत्रेऽथवा तालपत्रे चालिख्य यन्त्रकम्।
देवतां तत्र चावाह्य पूजयेद् भक्तिभावत:॥
तद्यन्त्रान् मन्त्रवर्णांस्तु स्वरव्यञ्जनभेदत:॥
उद्धरेत् क्रमशो देवि **जननं** तद्भवेच्छिवे॥
शिर:शिखाभ्यां पुटितं सहस्रं प्रजपेन्मनुम्।
एतज्जीवनमाख्यातमजपायुग्ममध्यगम्॥
सहस्रं प्रजपेदेतद् **दीपनं** संप्रकीर्तितम्।
एवं मायापुटं जप्त्वा **बोधनं** तु भवेच्छिवे॥
अस्त्रेण तद्वज्जप्त्वा तु **ताडनं** वै भवेच्छिवे।
बालाद्यहंसतारैश्च सहस्रं पुटितं जपन्॥
तालपत्रेऽथवा भूर्जे मनुं लिख्या**भिषेचनम्**।
कुर्यात्सुगन्धतोयेन पुष्पेणोद्धृत्य सुन्दरि॥
अभिषेचनमेतद्वै तारमायावषट्पुटम्।
सहस्रं प्रजपेदेतद् **विमलीकरणं** स्मृतम्॥
भूर्जे पूर्ववदालिख्य त्रितारपुटितेन वै।
सहस्रधा तर्पयेद्वै दुग्धै: पुष्पोद्धृतै: शिवे॥
तत: प्रासादपुटितं जपेच्चैव सहस्रकम्।
एत**दाप्यायनं** प्रोक्तं मन्त्रं सिद्धिविधायकम्॥
सहस्रं प्रजपेन्मायापुटितं तद्धि **गोपनम्**।

शिर: स्वाहा, शिखा वषट्, अजपा हंस:, युग्ममध्यगं पुटितमित्यर्थ:। माया ह्रीं, एवं सहस्रमित्यर्थ:। अस्त्रेण फट् इत्यनेन तद्वत् पुटितं सहस्रं इत्यर्थ:। बालाद्यहंसतारै: ऐं हंस: ॐ इति पूर्ववदालिख्य अष्टगन्धेन लिखित्वा। त्रितारम् ऐं ह्रीं श्रीं। प्रासाद: ह्सौं: इति।

एवं भचक्रादिविचारणं जननादिसंस्करणं च काम्ये अवश्यं कर्तव्यम्। अथवा,

मायाकामरमाबीजान्यादौ मन्त्रेषु योज्य तु।
साधयेत् सर्वकर्माणि शत्रुमन्त्रैरसंस्कृतै:॥

इति। काम: क्लीं, रमा श्रीं एवम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आद्यन्तयोस्तु मन्त्राणां सूतकं द्वयमस्ति वै।
तच्छुद्ध्यर्थं तारपुटं सहस्रं प्रजपेच्छिवे॥ इति।

अथाशक्तानां पुरश्चरणानुकल्पा लिख्यन्ते। मासमात्रं त्रिकालं च चक्रराजं दूर्वाश्वत्थवटाङ्कुरैः सम्पूज्य पूजान्ते सहस्रं जपेत्। एवं च नवतिसहस्रसंख्याको जपो भवति। तत्रायं क्रमः—

पूर्णमासीमारभ्य शुक्लचतुर्दशीपर्यन्तं त्रिकालं दूर्वाश्वत्थवटाङ्कुरैः पूजनसहितं सहस्रजपात्मकपुरश्चरणं करिष्य इति संकल्प्य पुरश्चरणं कुर्यात्। अथवा, आश्विनशुद्धप्रतिपदमारभ्य पौर्णिमान्तमेवं कर्तव्यम्। अथवा, तत्प्रतिपदमारभ्य नवम्यन्तमयुतचतुष्टयं जपः नित्यपूजनवत्पूजनम्। अथवा, वारोदयमारभ्य नवदिनपर्यन्तं एवं कर्तव्यम्। वारोदयश्च नाथोदयाक्षरयोरैक्यम्। अथवा, कृष्णाष्टमीमारभ्य कृष्णचतुर्दशीपर्यन्तमयुत-चतुष्टयजपः कर्तव्यः। अथवा, नित्यायोगमारभ्य चित्रान्तपञ्चदशदिनपर्यन्तं प्रत्यहं पञ्चदशशतजपः कर्तव्यः। नित्यायोगो नित्यामेलनं तिथिदिननित्ययोरैक्यम्। अथवा, शुक्लाष्टमीमारभ्य पूर्णिमान्तं प्रत्यहं रात्रौ चन्द्रमण्डले देवतां ध्यात्वा षोडशशतजपः कर्तव्यः। अथवा, सूर्योदयमारभ्य पुनः सूर्योदयान्तं जपः। अत्र सर्वत्रापि नियमधारणं यथोक्तमेव। मासजपस्तु त्रिंशद्दिनपरिगणनेन कर्तव्यम्। यस्मिन्मासे पूर्णमासीमारभ्य चतुर्दश्यन्तं त्रिंशद्दिनानि भवन्ति तस्मिन्नेव कर्तव्यम्। तिथिस्तूदयव्यापिनी ग्राह्या।

अथ ग्रहणपुरश्चरणम्

चन्द्रग्रहणे सूर्यग्रहणे वा, पूर्वदिने उपवासं वा एकभुक्तं वा, विधाय तद्दिने नद्यादौ ग्रहणस्पर्शं दृष्ट्वा, शीघ्रं स्नानं विधाय, सूर्योपरागे स्पर्श-प्रभृतिमोक्षपर्यन्तं अमुकविद्याजपतद्दशांशहोमादिरूपपञ्चाङ्गपुरश्चरणमहं करिष्य इति संकल्प्य, समर्थश्चेत् कण्ठमात्रजले नाभिमात्रजले वा, अशक्तश्चेत् क्वचिदेकान्ते शुचौ देशे यथोक्तरीत्या जपं कुर्यादिति। अथवा, मातृकापुटितं शतसंख्याकं प्रत्यहमेवं मासपर्यन्तं जपेत्। मातृकया पुटीकरणं तु अकारादिक्षकारान्तमुच्चार्य, अन्ते मूलं पठित्वा, अन्ते क्षकाराद्यकारान्त-मुच्चरेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवमष्टोत्तरशतं प्रत्यहं जपेत्। एतेषां पुरश्चरणप्रकाराणां सर्वेषामन्ते होमादिकं पूर्ववज्ज्ञेयमिति। अथवा, पारायणस्कन्धे वक्ष्यमाणनामपारायण-मन्त्रपारायण-श्रीचक्रपारायणेष्वन्यतमेन पुरश्चरणसिद्धिः। अत्र तु होमादिकं विनापि पुरश्चरणं फलं भवति। यथा—मन्त्रसिद्धिकामः अमुकपारायणं करिष्य इति संकल्प्य, पारायणं कुर्यात्। नियमधारणादिकं तु पूर्ववदेव। पारायणसमाप्त्यनन्तरं यथाशक्ति देवतां सम्पूज्य, सुवासिनीर्ब्राह्मणांश्च भोजयित्वा, गुरुं दक्षिणादिभिस्तोषयेदिति शिवम्।

श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूर्वके।
कल्पद्रुमेऽभवत्स्कन्धः पुरश्चरणसत्फलः॥

॥ इति श्रीसौभाग्यकल्पद्रुमे पञ्चमः स्कन्धः॥

✤ ✤ ✤

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

षष्ठः स्कन्धः

अजपाजपसन्ध्याङ्गपारायणमुखैर्जपैः ।
उपासिता सुविद्वद्भिर्या तामम्बां स्मराम्यहम् ॥

अथात्र प्रसङ्गादुपासकानां **अजपाजपप्रकारो** लिख्यते। प्रातः गुरुदेवतास्तुत्यनन्तरं हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य, गण्डूषं कृत्वा, आचम्य, आसने प्राङ्मुख उपविश्य, हंसः इति प्राणानायम्य, पूर्वदिनैतत्कालमारभ्य अद्यैतत्कालपर्यन्तं कृतं षट्शताधिकैकविंशतिसहस्रमजपाजपं उच्छ्वास-निश्वासात्मकं गणेशाधिदेवताभ्यः समर्पयामीति संकल्प्य,

वादिवर्णचतुष्केण युक्ते पीते चतुर्दले।
आधारे तु गणेशाय षट्शतं जपमर्पये॥ १ ॥
बादिवर्णाढ्यषट्पत्रे विद्रुमाभे स्वयम्भुवे।
स्वाधिष्ठाने षट्सहस्रसंख्याकं जपमर्पये॥ २ ॥
डादिवर्णयुते विद्युन्निभे दशदलोज्ज्वले।
विष्णवे मणिपूरे षट्सहस्रं जपमर्पये॥ ३ ॥
काद्यक्षरयुते नीलप्रभे द्वादशपत्रके।
अनाहते षट्सहस्रजपं रुद्राय चार्पये॥ ४ ॥
स्वरयुक्ते धूम्रवर्णे षोडशच्छदशोभिते।
जीवात्मने विशुद्ध्याख्ये सहस्रं जपमर्पये॥ ५ ॥
हक्षयुक्ते तप्तहेमनिभे द्विदलसंयुते।
सहस्रं जपमाज्ञायामर्पये परमात्मने॥ ६ ॥
अशेषमातृकायुक्ते चन्द्राभे शतपत्रके।
अकुलाख्ये श्रीगुरवे सहस्रं जपमर्पये॥ ७ ॥

एवं समर्प्य, अद्यैतत्कालमारभ्य श्व एतत्कालपर्यन्तं षट्शताधिकैक-विंशतिसहस्रमजपाजपं उच्छ्वासनिःश्वासात्मकमहं करिष्य इति संकल्प्य, अस्य श्रीअजपामहामन्त्रस्य हंस ऋषिः, अव्यक्तगायत्रीच्छन्दः, परमहंसो देवता, हं बीजम्, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकं मोक्षार्थे विनियोगः।

हंसां हंसीं इत्यादि न्यासः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चिद्विमर्शमयं दिव्यं शिवशक्तियुगात्मकम्।
भोक्तृभोग्यस्वरूपं च स्वस्वभावमहं भजे॥ १॥
दक्षाङ्गे स्फटिकाभासं शूलमालालसत्करम्।
भस्माक्षसर्पचर्माद्यैः शोभितं जटिलं शिवम्॥ २॥
वामाङ्गे तप्तहेमाभं पाशचापलसत्करम्।
नवरत्नविभूषादिवस्त्रकोटीरशोभितम् ॥ ३॥
अर्द्धनारीश्वरं देवमहकारतनुं स्मरेत्।

इति ध्यात्वा, पञ्चोपचारैः समर्चयेत्। इत्यजपाविधिः।

अथ सन्ध्याङ्गपारायणविधिरालिख्यते। तच्च पारायणं सप्तविधम्—अङ्ग-नाथ-घटिका-तत्त्व-नित्या-नाम-मन्त्रभेदात्। तत्राद्यत्रयं प्रातःसन्ध्याङ्गभूतम्। मध्याह्नसन्ध्याङ्गं चतुर्थम्। सायंसन्ध्याङ्गं पञ्चमम्। षष्ठं सप्तमं च स्वतन्त्रम्। केचित्तु तुरीयसन्ध्याङ्गमित्याहुः।

अथ अङ्गपारायणम्

तत्राङ्गपारायणं यथा—प्रातःसन्ध्यासमर्पणोत्तरं मूलेन ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा, वाग्भवगायत्रीं यथाशक्ति जप्त्वा,

पुष्पबाणेक्षुकोदण्डपाशाङ्कुशलसत्कराम् ।
स्वेच्छागृहीतवपुषं युगनित्याक्षरात्मिकाम्॥
घटिकावरणोपेतां परितः प्राञ्जलीन् स्थितान्।
ज्ञानमुद्रावरकरान् वाग्भवोपास्तितत्परान्।
नवनाथान् स्मरेन्मूलपङ्कजे वह्निमण्डले॥

पञ्चपूजां कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अष्टाङ्गविद्या (८) आ अं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ईं ई हंसः। एवं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्षं ई हंसः इत्यन्तं एकपञ्चाशन्मातृकां जप्त्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ई दीपिनीविद्यामुच्चार्य, ह्सौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्सौः सर्वोद्दीपनानन्दनाथवाग्भव-शक्तिदीपिनीविद्याकलादेवी ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ पादुकाविद्यामुच्चार्य, ह्सौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्सौः अमुकानन्दनाथरूपिणीपादुकाविद्याकलादेवी ई हंसः। इति प्रथमाङ्गम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इं ई हंसः। एवं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ हं ळं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्षं ई हंसः इत्यन्तं मातृकाद्वयं द्वयं च अन्ते एकं क्षकारं च जप्त्वा, दीपिनीं पादुकां च पूर्ववत्समापयेदिति द्वितीयाङ्गम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ईं उं ऊं ई हंसः॥ एवं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ हं ळं क्षं ई हंसः इत्यन्तर्मातृका त्रयं त्रयं जप्त्वा दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति तृतीयाङ्गम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कं खं गं घं ङं ई हंसः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ चं छं जं झं ञं ई हंसः। एवं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ षं सं हं ळं क्षं ई हंसः इत्यन्तर्मातृकाष्टवर्गान् जप्त्वा दीपिनीं पादुकाभ्यां च समापयेदिति चतुर्थाङ्गमित्यङ्गपारायणम्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समर्थेनाङ्गचतुष्टयमपि कर्त्तव्यम्। असमर्थेन तु आद्यमन्त्यं वा अङ्गं कर्त्तव्यम्। इदं च प्रातःसन्ध्याङ्गपारायणस्यैवाङ्गमिति बहवः॥ परे त्वविशेषात्सर्वेषामङ्गमिति प्राहुः।

अथ नाथपारायणम्

तच्च यस्मिन्दिवसे यन्नाथाक्षरं तदारभ्य पूर्वदिननाथावर्णान्तं कृत्वा दीपिनीं पादुकाभ्यां च समापयेत्। यथा—

प्रातराधारमध्यस्थां नवनाथावृतां पराम्।
कालनित्याक्षरोपेतां स्मरेत् त्रिपुरभैरवीम्॥

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सर्वानन्दमयप्रकाशात्मकपरापररहस्य-योगिन्यानन्दनाथपराशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः सर्वसिद्धिप्रद-विमर्शात्मकातिरहस्ययोगिन्यानन्दनाथपराशक्तिश्रीत्रिपुराम्बाविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कं खं गं घं ङं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरानन्दात्मकरहस्ययोगिन्यानन्दनाथ-पराशक्तिश्रीत्रिपुरासिद्धाविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ चं छं जं झं ञं ह्रीं क्लीं व्लें सर्वरक्षाकरज्ञानात्मकनिगर्भयोगिन्यानन्दनाथ-पराशक्तिश्रीत्रिपुरमालिनीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ टं ठं डं ढं णं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकसत्यात्मककुलोत्तीर्ण-योगिन्यानन्दनाथपराशक्तिश्रीत्रिपुराश्रीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तं थं दं धं नं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकपूर्णात्मकसम्प्रदाय-योगिन्यानन्दनाथपराशक्तिश्रीत्रिपुरवासिनीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ पं फं बं भं मं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणस्वभावात्मकगुप्ततरयोगिन्यानन्द-नाथपराशक्तिश्रीत्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ यं रं लं वं शं ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरकप्रतिभात्मकगुप्तयोगिन्यानन्द-नाथपराशक्तिश्रीत्रिपुरेश्वरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ षं सं हं ळं क्षं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनसुभगात्मकप्रकटयोगिन्यानन्द-नाथपराशक्तिश्रीत्रिपुराविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ९॥

पूर्ववद्दीपिनीपादुकां च समापयेदिति नाथपरायणम्।

अथ घटिकापारायणम्

तच्च यस्मिन्दिने यदुदयाक्षरं तदारभ्य तत्पूर्वाक्षरान्तं कृत्वा, पुनस्तदादिदशाक्षरपर्यन्तं कृत्वा, दीपिनीपादुकां च समापयेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं प्रथमघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आं द्वितीयघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इं तृतीयघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ईं चतुर्थघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उं पञ्चमघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऊं षष्ठमघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऋं सप्तमघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ॠं अष्टमघटिकानन्दनाथरश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ८॥

एवं लृं नवमः॥ ९॥ ॡं दशमः॥ १०॥ एं एकादशः॥ ११॥ ऐं द्वादशः॥ १२॥ ओं त्रयोदशः॥ १३॥ औं चतुर्दशः॥ १४॥ अं पञ्चदशः॥ १५॥ कं षोडशः॥ १६॥ खं सप्तदशः॥ १७॥ गं अष्टादशः॥ १८॥ घं एकोनविंशतितमः॥ १९॥ ङं विंशतितमः॥ २०॥ चं एकविंशतितमः॥ २१॥ छं द्वाविंशतितमः॥ २२॥ जं त्रयोविंशतितमः॥ २३॥ झं चतुर्विंशतितमः॥ २४॥ ञं पञ्चविंशतितमः॥ २५॥ टं षड्विंशतितमः॥ २६॥ ठं सप्तविंशतितमः॥ २७॥ डं अष्टाविंशतितमः॥ २८॥ ढं एकोनत्रिंशत्तमः॥ २९॥ णं त्रिंशत्तमः॥ ३०॥ तं एकत्रिंशत्तमः॥ ३१॥ थं द्वात्रिंशत्तमः॥ ३२॥ दं त्रयस्त्रिंशत्तमः॥ ३३॥ धं चतुस्त्रिंशत्तमः॥ ३४॥ नं पञ्चत्रिंशत्तमः॥ ३५॥ पं षट्त्रिंशत्तमः॥ ३६॥ फं सप्तत्रिंशत्तमः॥ ३७॥ बं अष्टत्रिंशत्तमः॥ ३८॥ भं एकोनचत्वारिंशत्तमः॥ ३९॥ मं चत्वारिंशत्तमः॥ ४०॥ यं एकचत्वारिंशत्तमः॥ ४१॥ रं द्विचत्वारिंशत्तमः॥ ४२॥ लं त्रिचत्वारिंशत्तमः॥ ४३॥ वं चतुश्चत्वारिंशत्तमः॥ ४४॥ शं पञ्चचत्वारिंशत्तमः॥ ४५॥ षं षट्चत्वारिंशत्तमः॥ ४६॥ सं सप्तचत्वारिंशत्तमः॥ ४७॥ हं अष्टचत्वारिंशत्तमः॥ ४८॥ ळं एकोनपञ्चाशत्तमः॥ ४९॥ क्षं पञ्चाशत्तमः॥ ५०॥ अं एकपञ्चाशत्तमः॥ ५१॥ आं द्विपञ्चाशत्तमः॥ ५२॥ इं त्रिपञ्चाशत्तमः॥ ५३॥ ईं चतुःपञ्चाशत्तमः॥ ५४॥ उं पञ्चपञ्चाश-

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्तमः ॥ ५५ ॥ ॐ षट्पञ्चाशत्तमः ॥ ५६ ॥ ॠं सप्तपञ्चाशत्तमः ॥ ५७ ॥ ॠं अष्टपञ्चाशत्तमः ॥ ५८ ॥ लृं एकोनषष्ठितमघटिकानन्दनाथरश्मिशक्ति-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः ॥ ५९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं लॄं षष्टितमघटिकानन्दनाथ-रश्मिशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः ॥ ६० ॥ ततः पूर्ववद्दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति घटिकापारायणम्।

अथ तत्त्वपारायणम्

अथ मध्याह्नसन्ध्यासमर्पणोत्तरं तदङ्गत्वेन तत्त्वपरायणं कुर्यात्। तच्च यस्मिन्दिने यत्तत्त्वाक्षरं तदारभ्य तत्पूर्वाक्षरपर्यन्तं कुर्यात्। ऋष्यादि-पूजान्तं कृत्वा, कामराजगायत्रीं यथाशक्ति जप्त्वा,

कामराजात्मिकां देवीमालक्तकरसारुणाम्।
प्रसूनबाणपुण्ड्रेक्षुचापपाशाङ्कुशान्विताम् ॥
परितश्चात्ममुख्याभिः षट्त्रिंशत्तत्त्वशक्तिभिः।
रक्तमाल्याम्बरालेपभूषाभिः परिवारिताम् ॥
युगनित्याक्षरमयीं घटिकावरणां स्मरेत्।
पुष्पबाणेक्षुकोदण्डधराः शोणवपुर्धराः।
हृत्पङ्कजे च ताः कामराजोपास्तिपरायणाः ॥

पञ्चपूजा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं शिवतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ईं हंसः ॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कं शक्तितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः ॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ खं सदाशिवतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः ॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ गं ईश्वरतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः ॥ ४ ॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ घं शुद्धविद्यातत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ङं मायातत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आं चं कलातत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ छं विद्यातत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ जं रागतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ झं कालतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ञं नियतितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ टं पुरुषतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ठं प्रकृतितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ डं अहङ्कारतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ढं बुद्धितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ णं मनस्तत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ तं श्रोत्रतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ थं त्वक्तत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ दं चक्षुस्तत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ १९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ धं जिह्वातत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ नं घ्राणतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ पं वाक्तत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ फं पाणितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ बं पादतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ भं पायुतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ मं उपस्थतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आं यं शब्दतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ रं स्पर्शतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ लं रूपतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ २९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आं वं रसतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ शं गन्धतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ षं आकाशतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३२॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ सं वायुतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ हं वह्नितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ळं सलिलतत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्षं भूमितत्त्वेश्वरानन्दनाथमहात्रिपुरसुन्दरीविद्याकलादेवी ई हंसः॥ ३६॥

ततः पूर्ववद्दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति।

अत्र तत्तत्तत्त्ववर्णानन्तरं कामेश्वर्यादिमन्त्रान्, अन्ते च तत्तच्छक्ति-देवतानामानि च संयोज्य, समर्थैः पारायणं कर्त्तव्यम्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं शिवतत्त्वेश्वरानन्दनाथब्राह्मीशक्तिकामेश्वरीविद्याकलादेवी ई हंसः इत्यादि रीत्या ज्ञेयम्। मन्त्राः—कामेश्वरी (१), वज्रेश्वरी (२), भगमालिनी (३), शुद्धविद्या (४), बाला (५), द्वादशार्धा (६), राजमा-तङ्गी (७), शुकश्यामला (८), शारिकाश्यामला (९), सङ्गीतश्यामला (१०), साहित्यश्यामला (११), हसन्तीश्यामला (१२), लघुश्यामला (१३), सौभाग्यविद्या (१४), बगलामुखी (१५), वाराही (१६), बटुकभैरव (१७), तिरस्करिणी (१८), लोपामुद्रा (१९), भुवनेश्वरी (२०), अन्नपूर्णा (२१), कामकला (२२), तुरीया (२३), महार्धा (२४), अश्वारूढा (२५), मिश्राम्बा (२६), वाग्वादिनी (२७), प्रासादपरा (२८), पराप्रासाद (२९), परा (३०), पराशाम्भवी (३१), ऊर्ध्वाम्नायसमया (३२), उत्तराम्नायसमया (३३), पश्चिमाम्नायसमया (३४), दक्षिणाम्नायसमया (३५), पूर्वाम्नायसमया (३६)-ख्याः प्रसिद्धाः। शक्तिनामानि यथा—

ब्राह्मी (१), वैष्णवी (२), रौद्री (३), तुर्या (४), ब्रह्ममयी (५),

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिपुरभैरवी (६), महात्रिपुरभैरवी (७), बाला (८), शारदा (९), सिद्धा (१०), त्रिपुरासिद्धा (११), परमेश्वरी (१२), ललिता (१३), मालिनी (१४), सुन्दरी (१५), सुखदा (१६), भुवना (१७), निर्वाणा (१८), हरिप्रिया (१९), क्षत्रवल्लभा (२०), रति (२१), मही (२२), शाम्भवी (२३), प्राणदा (२४), जीवना (२५), महती (२६), परमात्मा (२७), पृथिवी (२८), हृल्लेखा (२९), भार्गवी (३०), क्रोधिनी (३१), पूतना (३२), भुवनेश्वरी (३३), वाग्भवी (३४), कामराज्ञी (३५), परा (३६) इति।

अथ नित्यपारायणम्

अथ सायंसन्ध्यासमर्पणोत्तरं तदङ्गत्वेन नित्यापारायणं कुर्यात्। तच्च यस्मिन् दिने या नित्या, तामारभ्य तत्पूर्वनित्यान्तं समापयेत्। यथा—मूलेन ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा शक्तिगायत्रीं यथाशक्ति जप्त्वा,

सायमाज्ञासरोजस्थे चन्द्रे चन्द्रसमद्युतिम्।
शक्तिबीजात्मिकां चेक्षुबाणपाशाङ्कुशान्विताम्॥
युगनित्यात्मिकां देवीं घटिकावरणां पराम्।
चिन्तयित्वा भगवतीं नित्याभिः परिवारिताम्॥
पुस्तकं चाक्षसूत्रं च दधानाः स्मेरवक्त्रकाः।
नित्याः षोडश चाज्ञायां सायंकाले तु संस्मरेत्॥

पञ्चपूजा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं ऐं कामेश्वरीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आं ऐं भगभुगे भगिनी भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हरब्लें ह्रीं (१४४) भगमालिनीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा (१०) नित्यक्लिन्नानित्याकलादेवी ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं द्रौं ज्रौं स्वाहा (९) भेरुण्डानित्याकलादेवी ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ उं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः (७) वह्निवासिनीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं (१३) महाविद्येश्वरीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः (६) शिवदूतीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् (११) त्वरितानित्या-कलादेवी ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऌं ऐं क्लीं सौः (३) कुलसुन्दरीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ॡं ह्स्क्ल्ड्रैं ह्स्क्ल्ड्रीं ह्स्क्ल्ड्रौः (१३) नित्यानित्याकलादेवी ई हंसः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं (२४) नीलपताकानित्याकलादेवी ई हंसः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऐं भ्म्र्यूं विजयानित्याकलादेवी ई हंसः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ओं स्वौं (८) सर्वमङ्गलानित्याकलादेवी ई हंसः॥ १३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा (५२) ज्वालामालिनीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं च्कौं (५) चित्रानित्याकलादेवी ई हंसः॥ १५॥

ततः पुनश्चित्रादिकामेश्वर्यान्तं जप्त्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ अः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरी-नित्याकलादेवी ई हंसः॥ ३१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अः ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं (१३) सप्तदशीनित्याकलादेवी ई हंसः॥ ३२॥

ततः दीपिनीं पादुकां च समापयेत्। अयं त्रिंशन्नित्याक्रमः। षोडशनित्याक्रमस्तु चित्रानित्योत्तरं महात्रिपुरसुन्दरीं सप्तदशीं च जपेदिति नित्यापारायणम्॥

अथ नामपारायणम्

तत्र तद्दिनकालनित्यया प्राणायामत्रयं कृत्वा, समर्थश्चेद् वक्ष्यमाण-पूर्णमण्डलन्यासमादौ कुर्यात्। अथवा, समस्तमातृकया व्यापकं कुर्यात्। ततः—

अस्य श्रीकालनित्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः महात्रिपुरसुन्दरी देवता। तत्तद्दिनकालनित्यावर्णत्रयेण न्यासः।

रक्तां रक्ताम्बरां रक्तस्रग्विभूषानुलेपनाम्।
पाशाङ्कुशेक्षुकोदण्डप्रसूनविशिखां स्मरेत्॥

पञ्चपूजा। तत्रादावङ्गपारायणं कुर्यात्। तद्यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं दिननित्याविद्या ई हंसः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आं दिननित्याविद्या ई हंसः॥

एवं क्षान्तं जप्त्वा दीपिनीं पादुकां च समापयेत्॥

अथ पारायणम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ का ई ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ खा ई ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ गा ई ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ घा ई ई हंसः॥ ५॥

एवम्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ क्षा ई ई हंसः ॥ ३६॥ इत्यन्तं जप्त्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आ आ ई ई हंसः॥ ३७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं आ आ का ई ई हंसः॥। ३ ॥।

एवम्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आ क्षा ई ई हंसः॥ ७२॥ इत्यन्तं जप्त्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इ आ ई ई हंसः॥ ७३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इ का ई ई हंसः॥ ७४॥

एवम्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इ क्षा ई ई हंसः॥ १०८॥ इत्यन्तं जप्त्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ई आ ई हंसः ॥ १०९ ॥ इत्यादिक्षान्तम् ॥ १४४ ॥ कृत्वा,

एवं ईकारस्थाने उकारादिकमेकमेकं अकारादितत्त्वाक्षरपर्यायेषु योजयेत्। अन्त्यपर्यायः— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अः आ ई ई हंसः इत्यादि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं आ अः क्षा ई ई हंसः इत्यन्तं जपेत् ॥ ५७६ ॥ षट्सप्त्युत्तरपञ्चाशतसंख्याकाः विद्याः भवन्ति। अन्ते दीपिनीं पादुकां च समापयेत् ॥ ५७८ ॥

द्वितीयदिने अङ्गपारायणान्तं कृत्वा, अ आ इ ई इत्यादि-प्रथमाक्षरस्थाने क का कि कीत्यादि कं कः इत्यन्तं संयोज्य, षोडश-पर्यायेण षट्सप्तत्यधिकपञ्चशतसंख्याकं जपेत्।

एवं तृतीयादिदिनेषु खकारादिक्षकारान्तान् षोडशस्वरभिन्नान् आदौ संयोज्य, षोडशपर्यायात्मकं षट्सप्तत्युरपञ्चशतजपः प्रत्यहं कर्त्तव्यः। षट्त्रिंशद्भिर्दिनैः समाप्तिः॥

इदं च पारायणं षट्त्रिंशद्भिस्त्रिंशद्भिरष्टादशभिः पञ्चदशभिः नवभिः सप्तभिर्दिनैरैकेन दिनेन वा कर्त्तव्यम्। तत्र षट्त्रिंशत्पक्षे एकैकः पर्यायः॥ १ ॥ त्रिंशत्पक्षे पञ्चमदशमपञ्चदशविंशतितमपञ्चविंशतित-मत्रिंशत्तमेषु दिनेषु पर्यायद्वयमन्येष्वेकमिति ॥ २ ॥ अष्टादशपक्षे द्वयं द्वयम् ॥ ३ ॥ पञ्चदशपक्षे त्रिंशत्पक्षे द्वैगुण्यम् ॥ ४ ॥ नवपक्षे चतुष्टयम् ॥ ५ ॥ सप्तपक्षे पञ्चकमन्त्यदिने षट्कम्। अत्र क्रमेण मासोदयं प्रतिपदं प्रकाशवासरं आदित्यवारमारभ्य कर्त्तव्यम्। मुख्यजपः अष्टोत्तराष्टशताधिक-विंशतिसहस्रसंख्याकः (२०८०८)। अङ्गपारायणजपः अष्टोत्तरनवशता-धिकैकसहस्रसंख्याकः (१९०८) मिलित्वा, षोडशोत्तरसप्तशताधिक-द्वाविंशतिसहस्रसंख्याकः (२२७१६)।

एतन्नामपारायणं त्रिविधम्—दिनोत्थमासोत्थयुगोत्थभेदात्। दिनोत्थं यस्मिन् दिने यद्दिनाक्षरं तदारभ्य पूर्वदिनाक्षरे समापनरूपम्। मासोत्थं तु यदा यन्मासाक्षरं तदारभ्य पूर्वमासाक्षरे समापनरूपम्। युगोत्थं तु युग इति वर्षस्य नाम। यदा यद्वर्षाक्षरं तदारभ्य पूर्वं पूर्ववर्षाक्षरे समापनरूपम्। एवं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

शुद्धं त्रिविधं मिश्रं चतुर्विधम्—दिनमासोत्थं (१), मासयुगोत्थम् (२), युगदिनोत्थम् (३), दिनमासयुगोत्थं (४) चेति। शुद्धं चैकमित्यष्टविधम्—परिवृत्यादिदिने त्वष्टानामैक्यमित्यादिकं सुधीभिरूहनीयम्। अत्र पारायणमन्त्रेषु सर्वत्र आ ई, एतयोर्मध्ये आ आ ई, अ का ई, अ खा ई इत्यादिकस्त्र्यक्षरात्मकः कालनित्यामन्त्रः। स च षट्त्रिंशदुत्तरसप्तशताधिक-विंशतिसहस्रभेदः (२०७३६)। तत्र च परिवृत्तिः प्रथमदिनमारभ्यैकैकस्मिन् दिने एकैको मन्त्रः। एक परिवृत्तेरपि तावानेव दिनगणः। तेन परिवृत्तिः समाप्तौ मन्त्रगणसमाप्तिः। पुनः परिवृत्त्यारम्भे पुनः मन्त्रारम्भ इत्येवं स्थितिः। एवं च तत्तद्दिनमन्त्रं ज्ञात्वा, तन्मन्त्रगताक्षरत्रयेण न्यासं कुर्यात्। तन्मन्त्रज्ञानोपायस्तु—यस्मिन्दिने यद्वर्षाक्षरं तदाद्यं मासाक्षरं द्वितीयं दिनाक्षरं तृतीयं वर्षाक्षरमासाक्षरयोर्योजनं दिनाक्षरे च आकारो योजनीयः। अन्ते च ईकार इति सर्वत्र। म वर्षे ए मासे ष दिने मेषाई इति मन्त्रः। एतद्विस्तरस्त्वष्टाङ्गनिर्णयामृतचषके द्रष्टव्यः। अष्टाङ्गज्ञानोपायश्च तत्रैव विस्तरेण प्रतिपादितः। अत्रापि तत्रत्य मूलवाक्यानि लिख्यन्ते॥ यथा—

हरो ज्ञाति हतो हाला गताब्दाभ्यां युतः शकः।
घूसीकालयुतोऽब्दस्तु साधुदेवोनिताब्दकः॥ १॥
ज्ञातिभक्तो लब्धकेन हत्वान्त्यं योजयेद् ध्रुवे।
शेष एकादिदशकपर्यन्तस्य च विंशतेः॥ २॥
त्रिंशच्चत्वारिंशतोश्च पञ्चाशच्छून्ययोरपि।
क्रमाद्रङ्गादियागान्तवाक्यं तद्ध्रुवयोगतः॥ ३॥
वर्तमानाब्दमेषार्कयोगान्तद्युगणो भवेत्।
एकादशादिशेषे तु दश माघादियुग्ध्रुवात्॥ ४॥
एकविंशत्यादिशेषे चोह्यस्त्वीदृशरीतितः।
(३१) (६२) (९४) (१२६) (१५७)
कालेन रीतिनां मोधेर्ज्ञा निरूप समाक था॥ ५॥
(१८७) (२१७) (२४६) (२७६) (३०५) (३३५)
देया सायं री ति भारं तत्सारं मानगा मलाग्।
मेषाद्यतीतसङ्क्रान्तिपर्यन्तानां त्रयं त्रयम्॥ ६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अतीताहयुतोऽर्कादि ज्ञेयो वारेण शोधितः।
शून्यशेषेऽथ पूर्वेण ध्रुवेणैव तु योजयेत्॥ ७॥
(९) (४)
धनभक्तो भवेच्छेषो वारो लब्धो धनैर्हृतः।
(९)
शेषं धनेन गुणितं वारयुक्तं दिनं भवेत्॥ ८॥
(९)
लब्धे चापेन भक्ते तु शेषो मासस्तदासके।
(३६) (८५)
तालभक्ते वत्सरः स्याच्छेषो लब्धे मुदायुते॥ ९॥
(३६)
परिवृत्तिस्तालभक्ते शेषो लब्धं युगं विदुः।
(३०) (१५)
नागहृच्छेषतो नित्यां मानहृच्छेषतो घटिम्॥ १०॥
अहर्गणे षड्योगस्तु ज्ञेया नित्यास्तु षोडश॥ इति।

वाक्यानि तु रङ्गशायी शान्तगीः	॥ १ ॥	३६५।	१५।	३२॥
गानेयागङ्गगाथा	॥ २॥	७३०।	३१।	३॥
शालातेभामान्धानेयम्	॥ ३॥	१०९५।	४६।	३५।
तेन राज्ञः पतिर्वार्युः	॥ ४॥	१४६१।	०२।	०६॥
हलार्थः कतरो जयः	॥ ५॥	१८२६।	१७।	३८॥
धेनुबालकोऽन्धं पुरः	॥ ६॥	२१९१।	३३।	०९॥
कावादेवताभे मखे	॥ ७॥	२५५६।	४८।	४१॥
प्रायो भानुः खरा धात्री	॥ ८॥	२९२२।	०४।	१२॥
भावो धार्यः सदा रोगः	॥ ९॥	३२८७।	१९।	४४॥
माया शालात्र शीतला	॥ १०॥	३६५२।	३५।	१५॥
नागाज्ञया मनोल्लासः	॥ २०॥	७३०५।	१०।	३०॥
ते मामैव समाधौ नेया	॥ ३०॥	१०९५७।	४५।	४६॥
यज्ञाय राज्ञः कान्ता भार्या	॥ ४०॥	१४६१०।	२१।	०१॥
ते यान्ति मखे चोरहयाः	॥ ५०॥	१८२६२।	५६।	१६॥
यागकाले शापान्धकारः	॥ ०॥	२१९१५॥	३१॥	३१॥
धावरेवाधनाय तीरे ध्रुवम्	॥ २६१०९॥		४२॥	४९॥

अत्रेदमवधेयम्—युगपरिवृत्तिवर्षमासदिननित्यावारघटिका इत्यष्टा-

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ङ्गानि। तत्र अ क ख इत्यादि क्ष इत्यन्तषट्त्रिंशद्वर्णात्मकाः षट्त्रिंशद्युगाः। तत्रैकस्मिन् युगे पूर्ववदकारादिक्षकारान्ताः षट्त्रिंशत्परिवृत्तयः। एकपरिवृत्तौ तथैव षट्त्रिंशद्वत्सरा एकवत्सरे अकारादिविसर्गान्तषोडश-स्वरात्मकाः षोडशमासाः। एकमासे अकारादिक्षकारान्तात्मकानि षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकानि षट्त्रिंशद्दिनानि। अकाराद्यनुस्वारान्तं तदादिपुनरका-रान्तमिति। त्रिंशत्स्वरात्मकाः कामेश्वर्यादिचित्रान्ताश्चित्रादिकामेश्वर्यन्ता-स्त्रिंशन्नित्याः। अलृकचटतपयषेति नववर्गात्मका नवनाथात्मका नववाराः॥

तेषां नामानि—

प्रकाशश्च विमर्शश्च आनन्दो ज्ञान एव च।
सत्यः पूर्णः स्वभावश्च प्रतिभः सुभगस्तथा॥

इति। विसर्गरहिता अकारादिक्षकारान्ताः पञ्चाशद्घटिकाः। एवं च प्रथमदिने उदयघटिका अकारः, पञ्चाशत्तमघटिका क्षकारः। एकपञ्चाशत्तमघटिका पुनरकारः। षष्ठितमघटिका लृकारः। द्वितीयदिने उदयघटिका एकारः। एवं तृतीयदिने चकारः। चतुर्थे तकारः। पञ्चमे यकारः। पुनः षष्ठे अकारः। तथा च उदयघटिका अ ए च त य इति पञ्च।

तत्राष्टाङ्गविद्यायां वर्णयोजनक्रमस्तु वारो घटिर्दिनं नित्या वर्षो मासो युगो वृत्तिरिति। अत्र संकल्पे ऋतुनक्षत्रयोगकरणानामप्यावश्यकत्वम्। तत्रैकवर्षे दीर्घस्वरात्मकाः अष्टावृतवः। तन्नामानि तु—

श्रीकरी मोहिनी चैव कामिनी विमला तथा।
हरिणी भ्रामणी गौरी तथा लक्ष्मी कुमारिका॥

इति षट्त्रिंशद्दिनात्मके मासे षट्त्रिंशन्नक्षत्रयोगौ लृकारादिलकारान्त अकारादिनकारान्तात्मकौ ऋकारादिखकारान्तात्मकानि करणानि द्वादश इति।

अत्र प्रसङ्गात्पर्वाणि निरूप्यन्ते। अक्षरद्वययोगात्मकानि षट् पर्वाणि। तत्र वर्षे मासदिनोदयानां प्रत्येकं योगात्—पुष्पिणी (१), मोहिनी (२), जयिनी (३) इति। मासे दिनोदययोर्योगात्—कुमारिका (४), विमला (५) इति। दिने उदययोगात्—श्रीकरी (६) इति। वर्षमासदिनोदयवाराणां योगे सूर्योपरागः। वर्षमासनित्योदयानां योगे चन्द्रोपरागः। दिननित्यावार-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घटिकानां योगे श्रीरात्रिः। एतेषां एकस्मिन्मासे बहुदिनव्याप्तानामाक्षरत्रय-योगस्य च मासारम्भे एव पर्वत्वमेव। एवं तिथिदिननित्ययोरैक्ये नित्यामेलनम्। प्रतिपदादिपक्षमासपर्यन्तमैक्ये नित्यापक्षो नित्यामासावित्या-द्यन्यत्र विस्तरः।

अथ मन्त्रपारायणम्

मातृकया प्राणायामं मूलस्य ऋष्यादिन्यासान्तं च कृत्वा,

मायावाग्भवकामराजनयनां शुद्धादिवर्णोल्लसद्-
बाहूनां च चतुष्टयेन रुचिरां काल्याद्यनेकाभिधाम्।
नानारूपतनुं च शक्तिवदनानेकान्तविद्यां शिवां
स्मृत्वैवं जननीं सकृज्जनुषि नो भूयः सृतिं प्राप्नुयात्॥

पञ्चपूजा। तत्रादावङ्गपारायणं कुर्यात्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आं ह्रीं काली सौः ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कला ह्स्त्रीं स्ह्रीं ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं मालिनी वौषट् ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं मातङ्गी ऐं ह्रीं सौः वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं विजया ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं जया ह्रीं ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं भगवती क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं देवी ह्सौः स्हौः ई हंसः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शिवा ह्स्क्ल्डैं ह्स्क्ल्डीं ह्स्क्ल्डौं ई हंसः॥ ९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शाम्भवी ऐं क्लीं सौः ई हंसः॥ १० ॥

एवं दशधा जप्त्वा, पुनः हृल्लेखास्थाने वाग्भवं संस्थाप्य दशधा जप्त्वा, पुनः हृल्लेखास्थाने कामराजं संस्थाप्य दशधा जप्त्वा, पूर्ववद्दीपिनीं पादुकां च समापयेदित्यङ्गपारायणम्॥ ३२ ॥

अथ पारायणम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अं काली सौः ई हंसः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं आं काली सौः ई हंसः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं इं काली सौः ई हंसः॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ईं काली सौः ई हंसः॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं उं काली सौः ई हंसः॥ ५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऊं काली सौः ई हंसः॥ ६ ॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं क्षं काली सौः ई हंसः॥ ५१ ॥ इत्यन्तं शुद्धमातृकां जप्त्वा, पुनः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अं काली सौः ई हंसः॥ ५२ ॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं क्षं काली सौः ई हंसः॥ १०२ ॥ इत्यन्तं बिन्दुमातृकां जप्त्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अत्र शुद्धेऽपि बिन्दुयोगो बीजत्वसिद्ध्यर्थम्। एवं पुनः,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अः काली सौः ई हंसः॥ १०३॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं क्षः काली सौः ई हंसः॥ १५३॥ इत्यन्तं विसर्गमातृकां जप्त्वा, पुनः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अंः काली सौः ई हंसः॥ १५४॥ इत्यादि-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं क्षंः काली सौः ई हंसः॥ २०४॥ इत्यन्तं बिन्दुविसर्गमातृकां जप्त्वा, पुनः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऐं अं काली सौः ई हंसः॥ २०५॥ इत्यादि-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऐं क्षं काली स्रौः ई हंसः॥ ४०८॥ इत्यन्तम्।

हृल्लेखास्थाने वाग्भवं संस्थाप्य, शुद्धबिन्दुविसर्गाख्यमातृकाचतुष्टयं जप्त्वा, पुनः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्लीं अं काली सौः ई हंसः॥ ४०९॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्लीं क्षं काली सौः ई हंसः॥ ६१२॥ इत्यन्तम्।

हृल्लेखास्थाने कामराजं संस्थाप्य चतुर्विधमातृकां जप्त्वा दीपिनीं पादुकां च समापयेत्॥ ६१४॥ इति प्रथमदिनपारायणम्।

एवं द्वितीयदिने कालीपदस्थाने कलापदं संस्थाप्य जपेत्॥ १२२८॥ एवं तृतीयदिने मालिनीपदम्। चतुर्थे मातङ्गीति। पञ्चमे विजयेति। षष्ठे जयेति। सप्तमे भगवतीति। अष्टमे देवीति। नवमे शिवेति। दशमे शाम्भवीति। इति दशसु दिनेषु शक्तिपर्यायः॥ १॥

अथैकादशदिनमारभ्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अं काली ह्स्त्रीं स्ह्रीं ई हंसः॥ ६१४॥ १॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इत्यादि सौः इति शक्तिबीजस्य स्थाने ह्स्त्रीं स्ह्रीं इति हैमवतीमन्त्रयोजनेन विंशतिदिनपर्यन्तं पूर्ववत् कालीकलामालिनीत्यादिनामयोगेन हेमवतीपर्यायं जप्त्वा॥ २॥ तत एकविंशतितमदिनमारभ्य त्रिंशद्दिनपर्यन्तं शक्तिबीजस्थाने वौषडिति नेत्रमन्त्रयोगेन नेत्रपर्यायः॥ ३॥ तत एकत्रिंशत्तमदिनमारभ्य चत्वारिंशत्तमदिनपर्यन्तं वाग्वादिनीमन्त्रयोगेन वाग्वादिनीपर्यायः॥ ४॥ तत एकचत्वारिंशत्तमदिनमारभ्य पञ्चाशत्तमदिनपर्यन्तं हस्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः इति भैरवीयोगेन भैरवीपर्यायः॥ ५॥ तत एकपञ्चाशत्तमदिनमारभ्य षष्ठितम-दिनपर्यन्तं हृल्लेखायोगेन हृल्लेखापर्यायः॥ ६॥ तत एकषष्ठितमदिनमारभ्य सप्ततितमदिनपर्यन्तं सौभाग्यविद्यायोगेन त्रिपुरापर्यायः॥ ७॥ तत एकसप्ततितमदिनमारभ्याशीतितमदिनपर्यन्तं पराप्रासादविद्यायोगेन पराप्रासादपर्यायः॥ ८॥ तत एकाशीतितमदिनमारभ्य नवतितमदिनपर्यन्तं द्वादशार्धाविद्यायोगेन द्वादशार्धापर्यायः॥ ९॥ ततः एकनवतितमदिनमारभ्य शततमदिनपर्यन्तं बालाविद्यायोगेन बालापर्यायः॥ १०॥

एव शतदिनैरेकं मन्त्रपारायणम्। एकपारायणेन षट्शताधिकचतुः-षष्ठिसहस्र(६४६००)जपो भवतीति मन्त्रपारायणम्। एतच्च शतेन पञ्चाशता विंशत्या दशभिर्वा दिनैः कर्तव्यम्। नाम्नामेकं द्वयं पञ्चकं दश चेति क्रमेणेति।

अथ श्रीचक्रपारायणम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इति प्राणानायम्य, मूलस्य ऋष्यादिपूजान्तं कृत्वा,

मायावाग्भवशक्तितारकरमासंभिन्नमात्राननां
श्रीचक्रात्मकमध्यभागरुचिरां श्रीनाथनित्याङ्घ्रिकाम्।
ज्ञानाज्ञाननयाङ्गभेदसुभगां स्वात्मैकशक्तिं जनः
स्मृत्वा तां शिवसुन्दरीं त्रिभुवने कर्त्ता भवेदञ्जसा॥

इति ध्यात्वा, पञ्चपूजा। तत्रादौ अङ्गपारायणं कुर्यात्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरी ई हंसः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरीचक्रेश्वरी ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं आ ह्रीं ऐं सौः ॐ श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी ई हंसः॥ ९॥ दीपिनीं पादुकां च समापयेदित्यङ्गपारायणम्॥

अथ पारायणम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं हृदयदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शिरोदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शिखादेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कवचदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं नेत्रदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अस्त्रदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कामेश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं भगमालिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं नित्यक्लिन्नात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं भेरुण्डात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं वह्निवासिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महाविद्येश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शिवदूत्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं त्वरितात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कुलसुन्दर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं नित्यानित्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं नीलपताकात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ११॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं विजयात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वमङ्गलात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ज्वालामालिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं चित्रात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १६॥ २२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अमुकानन्दनाथश्रीगुर्वात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥ २३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अणिमासिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं लघिमासिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महिमासिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ईशित्वसिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं वशित्वसिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं प्राकाम्यसिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं भुक्तिसिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं इच्छासिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं प्राप्तिसिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वकामसिद्ध्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १०॥ ३३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं ब्राह्म्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं माहेश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कौमार्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं वैष्णव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं वाराह्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं माहेन्द्र्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं चामुण्डात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महालक्ष्म्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥ ४१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसंक्षोभिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वविद्राविण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्ववशङ्कर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वोन्मादिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वमहाङ्कुशात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वत्रिखण्डात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वबीजात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वखेचर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वयोन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १०॥ ५१॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कामाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं बुद्ध्याकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अहङ्काराकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शब्दाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं स्पर्शाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं रूपाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं रसाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं गन्धाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं चित्ताकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं धैर्याकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं स्मृत्याकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं नामाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं बीजाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं आत्माकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अमृताकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं शरीराकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १६॥ ६७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गकुसुमात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गमेखलात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गमदनात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गमदनातुरात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गरेखात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गवेगिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गाङ्कुशात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अनङ्गमालिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥ ७५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसंक्षोभिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वविद्राविण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वाकर्षिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वाह्लादिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसम्मोहिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वस्तम्भिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वजृम्भिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्ववशङ्कर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वरञ्जिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वोन्मादिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वार्थसाधिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसम्पत्तिपूरण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वमन्त्रमय्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १४॥ ८९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसम्पत्प्रदात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वप्रियङ्कर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वमङ्गलकारिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वकामप्रदात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वदुःखविमोचिन्यान्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वमृत्युप्रशमन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वाङ्गसुन्दर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वसौभाग्यदायिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १० ॥ ९९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वज्ञात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वशक्त्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वज्ञानमय्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वव्याधिविनाशिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वाधारस्वरूपात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वपापहरात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वानन्दमय्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हं सः॥ ८ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वरक्षास्वरूपिण्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वेप्सितफलप्रदात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १० ॥ १०९ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं वशिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कामेश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं मोदिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं विमलात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अरुणात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं जयिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं सर्वेश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं कौलिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥ ११७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं बाणिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं चापिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं पाशिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं अङ्कुशिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महाकामेश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महावज्रेश्वर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महाभगमालिन्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ ८॥ १२५॥

एवं पञ्चविंशत्युत्तरशतमन्त्रान् जप्त्वा, पुनः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऐं हृदयदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः॥ इत्यादि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ऐं महात्रिपुरसुन्दर्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः इत्यन्तं मायाबीजस्थाने वाग्भवबीजयोगेन जप्त्वा, पुनः मायाबीजस्थाने सौः इति शक्तिबीजयोगेन, पुनः ॐ इति तारयोगेन, पुनः श्रीं इति रमाबीजयोगेन जप्त्वा, दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति प्रथमदिनपारायणम्॥ १॥ जपसंख्या = ६२५, दीपिनीपादुका = २, अङ्गजपसंख्या = ९, मिलित्वा = ६३६।

ततः द्वितीयदिने ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं आ ह्रीं हृदयदेव्यात्मकविमर्शानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः। इत्यादि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आं ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यात्मकविमर्शानन्दनाथशक्तिकामेश्वरीनित्या ई हंसः। इत्यन्तं प्रकाशानन्दनाथस्थाने विमर्शानन्दनाथयोगेन जपेत्॥ २॥

एवं तृतीयदिने आनन्दानन्दनाथयोगम्॥ ३॥

चतुर्थे ज्ञानानन्दनाथयोगम्॥ ४॥

पञ्चमे सत्यानन्दनाथयोगम्॥ ५॥

षष्ठे पूर्णानन्दनाथयोगम्॥ ६॥

सप्तमे स्वभावानन्दनाथयोगम्॥ ७॥

अष्टमे प्रतिभानन्दनाथयोगम्॥ ८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवमे सुभगानन्दनाथयोगम्॥ ९॥

दशमे अमुकानन्दनाथेति श्रीगुरुनामयोगं कृत्वा जपेत्॥ १०॥

इति दशभिर्दिवसैः प्रथमः कामेश्वरीपर्यायः॥ ६२५०॥ ६३६०॥

अथैकादशदिने ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ह्रीं हृदयदेव्यात्मकप्रकाशानन्दनाथशक्तिभगमालिनीनित्या ई हंसः। इत्यादि। कामेश्वरीस्थाने भगमालिनीयोगं कृत्वा जपेत्। द्वादशदिनेषु विमर्शादीनां योगः पूर्ववत्। एवं भगमालिनीपर्यायः॥ २०॥ एवमेकविंशतितमादिदशदशसंख्याकदिनेषु नित्यक्लिन्नादिमहात्रिपुरसुन्दरीनित्यापर्यायान्तं जपेत्।

एवं षष्ट्युत्तरशतदिनैरेकं पारायणम्। मुख्यसंख्या = १०००००, दीपिनीपादुकयोः संख्या = ६४०, अङ्गसंख्या १४४०, मिलित्वा = १०२०८० अशीत्युत्तरद्विसहस्राधिकैकलक्षजपात्मकं श्रीचक्रपारायणम्। इदं पारायणं षष्ट्युत्तरशतदिनैरशीतिदिनैर्द्वात्रिंशद्दिनैः षोडशदिनैर्वा कर्तव्यम्। आद्ये एकनाथपर्यायः, द्वितीये नाथद्वयम्, तृतीये नाथपञ्चकम्, चतुर्थे एको नित्यापर्यायः। इति श्रीचक्रपारायणम्॥

अथ कालचक्रपारायणम्

तत्तद्दिनकालनित्यया प्राणानायम्य, मूलस्य ऋष्यादिन्यासान्तं कृत्वा,

जपापुष्पच्छायां शशिशकलभूषां त्रिनयनां
करैः पाशं पौण्ड्रं धनुरथ सृणिं पुष्पजशरान्।
तथाच्छायां लीलां परमशिवपर्यङ्कनिलयां
महाचक्रस्यान्तर्विरचितनिकेतां हृदि भजे॥ १॥

इति ध्यात्वा, पञ्चपूजा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई अं ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई आं ई हंसः॥ २॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई इं ई हंसः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई ईं ई हंसः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई उं ई हंसः॥ ५॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अ आ ई क्षं ई हंसः॥ ५१॥ इत्यन्तं एकपञ्चाशन्मातृका तत्तद्दिनकाल-नित्यासहितां जप्त्वा, दीपिनीं पादुकां च जपेदित्यङ्गपारायणम्॥ ५३॥

अथ पारायणम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं आ आं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ इं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ ३॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अः वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १६॥ इत्यन्तं षोडशस्वरान् क्रमेण जप्त्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कां वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १८॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कः वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ ३२॥ इत्यन्तं जप्त्वा,

एवमेव खकारादिक्षकारान्तं षोडशस्वरभिन्नं खं खां इत्यादि क्षं क्षः इत्येतदन्तं जपेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमानुलोमरूपिणीविद्या ई हंसः। अन्ते दीपिनीं पादुकां च संमापयेदिति प्रथमदिनपारायणम्। संख्या अङ्गजपः = ५३, मुख्यजपः = ५७७, दीपिनीपादुके = २, मिलित्वा = ६३२।

अथ द्वितीयादिदिनेषु तत्तद्दिनविद्यया प्राणायामाद्यङ्गपूजान्तं कृत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अः वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ २॥ एवमेव-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ औ वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ ३॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १॥ १५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १६॥ इत्यन्तं कृत्वा, एवमेव कंः कं कौं इत्यादि क्षीं क्षां क्षं इत्यन्तं विसर्गाद्यकारान्तषोडशस्वरभिन्नं जपेत्॥ २॥

अन्ते च- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमविलोमरूपिणीविद्या ई हंसः। ततो दीपिनीं पादुकां च समापयेत्।

अत्र आकारादिक्षकारान्ताः षट्त्रिंशत्तत्त्ववर्णाः। अकारादिविसर्गान्त-षोडशस्वरैः संभिन्नाः पूर्णमण्डलवर्णा इत्युच्यन्ते। अ आ इ ई इत्यादि क्षं क्षः एतदन्ताः। तेषामेव योजनयैतत्पारायणम्।

एवं तृतीय दिने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १॥ इत्यादि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ ॠं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ ८॥ एतदन्तं कृत्वा, ततः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अंः वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ ९॥ इत्यादि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ लृं वृत्तेश्वरी ई हंसः॥ १६॥ एतदन्तं विलोमेन कुर्यात्। एवं कं कां किं कीं कुं कूं कृं कॄं एतदन्तमनुलोमेन कृत्वा, ततः कंः कं कौं कों कैं कें क्लॄं क्लृं इत्यन्तं विलोमेन कर्त्तव्यम्। एवमेव खकारादिक्षकारान्तं तृतीयदिने कृत्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अंः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमबाह्यसम्पुटरूपिणीविद्या ई हंसः। ततो दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति तृतीयदिनपारायणम्॥ ३॥

ततश्चतुर्थदिने लृकारादि विसर्गान्तं ॠकारादि अकारान्तं षोडशस्वरसंभेदक्रमेण वर्णान् जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अंः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमाभ्यन्तर-सम्पुटरूपिणीविद्या ई हंसः। दीपिनीं पादुकां च समापदयेदिति चतुर्थदिनपारायणम्।

ततः पञ्चमदिने ॠकारादि अकारान्तं लृकारादि विसर्गान्तं इति षोडशस्वरसंभेदक्रमेण वर्णान् जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अंः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमबाह्यपरावृत्तरूपिणीविद्या ई हंसः। दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति पञ्चमदिनपारायणम्।

ततः षष्ठे दिने विसर्गान्तादि लृकारान्तं अकारादि ॠकारान्तमिति षोडशस्वरसंभेदक्रमेण वर्णान् जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अंः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमाभ्यन्तरपारावृत्तरूपिणी विद्या ई हंसः॥ दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति षष्ठदिनपारायणम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः सप्तमदिने अ इ उ ऋ लृ ए ओ अं अः औ ऐ लॄ ॠ ऊ ई आ इति षोडशस्वरसंभेदक्रमेण वर्णान् जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमबाह्यव्याकीर्णरूपिणीविद्या ई हंसः। दीपिनीं पादुकां च समापयेदिति सप्तमदिनपारायणम्।

ततः अष्टमदिने आ ई इत्यादि इ अ इत्यन्तं पूर्वोक्तविलोमक्रमस्वरसंभेदक्रमेण वर्णान् जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अनुलोमाभ्यन्तरव्याकीर्णरूपिणीविद्या ई हंसः। दीपिनीं पादुकां च समापयेदित्यष्टमदिनपारायणम्॥ इति प्रथमानुलोमपर्यायः।

अथ नवमदिनमारभ्य षोडशदिनावधि द्वितीयपर्यायः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्षं वृत्तरूपिणीविद्या ई हंसः॥ १॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्षां वृत्तरूपिणीविद्या ई हंसः। इत्यादि विलोमान् तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडशस्वरसंभिन्नान् जप्त्वा, अष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्॥

अन्ते, समष्टिविद्यायां अनुलोमानुलोमरूपिणीत्यादौ आद्यानुलोमपदस्थाने विलोमपदं दत्वा, विलोमानुलोमरूपिणी विलोमविलोमरूपिणी विलोमबाह्यसम्पुटरूपिणीत्यादिकं जप्त्वा, दीपिनीं पादुकां च प्रत्यहं एवं समापयेदिति द्वितीयविलोमपर्यायः। अथ सप्तदशदिनमारभ्य चतुर्विंशतितमदिनावधितृतीयपर्यायः। अकारादिथकारान्तमनुलोमेन क्षकारादिदकारान्तं विलोमेनैवं तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडशस्वरसंभिन्नान् जपन्नष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्।

अन्त्ये, समष्टिविद्यां बाह्यसंपुटानुलोमरूपिणीत्यादिरीत्या जप्त्वा, दीपिन्यादिकं समापयेदिति तृतीयः बाह्यसम्पुटपर्यायः। अथ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पञ्चविंशतितमदिनमारभ्य द्वात्रिंशत्तमदिनपर्यन्तं चतुर्थपर्यायः। दकारादि क्षकारान्तमनुलोमेन थकारादि अकारान्तं विलोमेनैवं तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडशस्वरसंभिन्नान् जपन् अष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्। अन्त्ये, समष्टिविद्यामाभ्यन्तरसम्पुटानुलोमरूपिणीत्यादिरीत्या जप्त्वा दीपिन्यादिकं समापयेदिति चतुर्थ आभ्यन्तरसंपुट पर्यायः। अथ त्रयस्त्रिंशत्तमदिनमारभ्य चत्वारिंशत्तमदिनपर्यन्तं पञ्चमपर्यायः।

थकारादि अकारान्तं विलोमेन दकारादि क्षकारान्तमनुलोमेनैवं तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडशस्वरसंभिन्नान् जपन्नष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्। अन्त्ये, समष्टिविद्यां बाह्यपरावृत्तानुलोमरूपिणीत्यादिरीत्या जप्त्वा दीपिन्यादिकं समापयेदिति पञ्चमः बाह्यपरावृत्तपर्यायः। अथैकचत्वारिंशत्तमदिनमारभ्य अष्टचत्वारिंशत्तमदिनपर्यन्तं षष्ठपर्यायः। क्षकारादि-दकारान्तं विलोमेन अकारादि-थकारान्तं अनुलोमेनैवं तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडशस्वरसंभिन्नान् जपन्नष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्। अन्त्ये समष्टिविद्यां आभ्यन्तरपरपरावृत्तानुलोमरूपिणीत्यादिरीत्या जप्त्वा, दीपिन्यादिकं समापयेदिति षष्ठ आभ्यन्तरपरावृत्तपर्यायः। अथैकोनपञ्चाशत्तमदिनमारभ्य षट्पञ्चाशत्तमदिनपर्यन्तं सप्तमपर्यायः। अकारादि-थकारान्ताष्टादशकमनुलोमेन क्षकारादि-दकारान्ताष्टादशकं विलोमेनेत्येतद् गुणद्वयम्। तत्र अ क्ष क ळ ख ह ग स घ ष इति द्वयोराद्यं द्वयोर्द्वितीयं द्वयोस्तृतीयमितिक्रमेण तधथद इत्यन्तमेवं तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडश-स्वरभिन्नान् जपन्नष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्। अन्त्ये, समष्टिविद्यां बाह्यव्याकीर्णानुलोमरूपिणीत्यादिरीत्या जप्त्वा दीपिन्यादिकं समापयेदिति सप्तमः बाह्यव्याकीर्णपर्यायः। अथ सप्तपञ्चाशत्तमदिनमारभ्य चतुःषष्ठितम-दिनपर्यन्तं अष्टमपर्यायः। अत्र क्षगणमाद्यं द्वितीयमगणं कृत्वा, क्ष अ ळ क ह ख स ग ष घ इति पूर्वक्रमेण ध त द थ इत्यन्तमेव तत्त्ववर्णान् पूर्ववत्षोडशस्वरसंभिन्नान् जपन्नष्टभिर्दिनैः पर्यायं समापयेत्। अन्ते, समष्टिविद्यां आभ्यन्तरव्याकीर्णानुलोमरूपिणीत्यादिरीत्या जप्त्वा दीपिन्यादिकं समापयेदित्यष्टम आभ्यन्तरव्याकीर्णपर्यायः। एवं चतुःषष्टिदिनैरेकं वृत्तेश्वरीपारायणम् (१) एवमेव षट्त्रिंशदस्त्रेश्वरी (२)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टादशास्त्रेश्वरी (३) द्वादशास्त्रेश्वरी (४) नवास्त्रेश्वरी (५) अष्टास्त्रेश्वरी (६) षडस्त्रेश्वरी (७) चतुरस्त्रेश्वरी (८) त्र्यस्त्रेश्वरीणां पारायणम्। वृत्तेश्वरीपदस्थाने षट्त्रिंशदस्त्रेश्वरीत्यादि तत्तन्नाम निक्षिप्य पारायणं कुर्यात्।

अष्टास्त्रे तु विशेषः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ अं अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ १॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कं अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ २॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ खं अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ ३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ गं अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ ४॥ इत्यादि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ क्षं अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ ३६॥ इत्यन्तं जप्त्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ आं अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ ३३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ८ आ कां अष्टास्त्रेश्वरी ई हंसः॥ ३४॥ एवं क्षान्तं जप्त्वा इं किं खिं इत्यादि— क्षीत्यन्तं जप्त्वा, एवमेवान्ते अः कः खः इत्यादि—अः क्षः एतदन्तं जपेदिति।

अत्राष्टास्त्रेश्वरीपारायणे तत्त्वार्णभेदितान् स्वरान् जपेदिति तत्त्वम्। अत्र तत्तद्दिनविद्यया प्राणायाममङ्गपारायणं च कुर्यादित्युक्तम्। तत्र दिनविद्यानाम त्र्यक्षररूपिणी। तत्राद्यमक्षरं पूर्वोक्तपूर्णमण्डलवर्णस्यैकैकम्। द्वितीयं तु तत्तद्दिनपारायणाद्याक्षरं आकारयुतम्। तृतीयं तु ईकारः। यथा वृत्तेश्वरीपारायणे अनुलोमपर्यायाद्यदिनपूर्णमण्डलाद्याक्षरं अकारः। पारायणाद्याक्षरं अःकारः। तेन अ आ ई इति। द्वितीयदिने पूर्णमण्डलवर्ण आकारः पारायणाद्यवर्ण अःकारः। तेन आ आः ई इति। एवं तत्तद्दिनविद्यां ज्ञात्वा पारायणं कुर्यात्।

अथैतत्संख्या—तत्राङ्गपारायणसंख्या अष्टाविंशत्युत्तरपञ्चशताधिक-त्रिंशत्सहस्रमिता (३०५२८)। मुख्यपारायणसंख्या षट्सप्तत्युत्तरसप्त-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शताधिकैकत्रिंशत्सहस्रोत्तरत्रिलक्षमिता (३३१७७६)। समष्टिविद्यासंख्या षट्सप्तत्युत्तरपञ्चशतमिता (५७६)। दीपिनीपादुकयोः द्विपञ्चाशदुत्तरैकशतोत्तरसहस्रमिता (११५२)। मिलित्वा द्वात्रिंशदुत्तरचतुःषष्टिसहस्राधिकत्रिलक्षमिता (३६४०३२)। इति षटसप्तत्युत्तरपञ्चशतैर्दिनैरेकं पारायणम्। इति॥

इदं परायणं षट्सप्तत्युरपञ्चशतदिनैरष्टाशीत्युत्तरद्विशतदिनैश्चतुश्चत्वारिंशत्युत्तरशतदिनैर्द्विसप्तदिनैर्वा कर्त्तव्यम्। अत्र पारायणेषु स्वसम्प्रदायानुरोधेनाष्टाङ्गयोग उक्तः। द्व्यङ्गचतुरङ्गद्वादशाङ्गषोडशाङ्गादीनां योगः स्वसम्प्रदायानुरोधेन कर्त्तव्यः। तद्विस्तरस्तु सौभाग्यतन्त्रोत्तर-ज्ञानार्णव-चिदम्बरनट-कालोत्तरवासनादौ द्रष्टव्य इति शिवम्।

इति श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूरके।
कल्पद्रुमे भवेत्स्कन्धः पारायणफलैर्वृतः॥

॥ इति श्रीसौभाग्यकल्पद्रुमे षष्ठस्कन्धः समाप्तः॥

✤ ✤ ✤

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सप्तमः स्कन्धः

विशेषन्यासजालेन न्यस्तदेहस्तु साधकः।
यत्सारूप्यं समाप्नोति तामम्बां प्रणतोऽस्म्यहम्॥ १॥

अथोपासकजनोपास्तिदार्ढ्याय **विशेषन्यासा** लिख्यन्ते। तत्रादौ दीक्षादावावश्यकपञ्चाम्बादिन्यासाः लिख्यन्ते। मातृकादिषडङ्गान्तन्यास-दशकं कृत्वा, पञ्चाम्बादिन्यासाष्टकं कुर्यात्। यथा—ब्रह्मरन्ध्रे मातृकात्रिकोणं ध्यात्वा, अग्रादिवामावर्तेन कोणत्रये दक्षवामपार्श्वयोश्च **पञ्चाम्बा न्यसेत्**।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं आदिनाथव्योमातीताम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं अनादिनाथव्योमेश्वर्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं अनामयनाथव्योमगाम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं अनन्तनाथव्योमचारिण्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं चिदाभासानन्दनाथव्योमस्थाम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥ इति पञ्चाम्बान्यासः॥ १॥

अथ नवनाथन्यासः

यथा—त्रिकोणवामपृष्ठदक्षरेखासु पङ्क्त्या त्रयं त्रयं न्यसेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं उन्मन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सं समनाकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्षं व्यापकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं मं शक्त्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं लं ध्वन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं वं ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं रं अनाहताकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं यं इन्द्वाकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऊं बिन्द्वाकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ९॥ इति नवनाथन्यासः॥ २॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ षोडशमूलविद्यान्यासः

पूर्ववत्प्रतिरेखासु पञ्चकं मध्ये चैकमिति न्यसेत्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरसिद्धविद्याकुलयोगिनी ह्रीं। कुलयोगिन्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्वात्मानं बोधय बोधय स्हौः। प्रासादपराम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ब्लूं क्लिन्ने क्लेदिनि महामदद्रवे क्लीं क्लेदय क्लेदय क्लां क्लीं मोदय मोदय ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा। अतिरहस्ययोगिन्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने स्वाहा स ह क्षौं शाम्भव्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं नित्यस्फुरच्चैतन्यानन्दमये महाबिन्दुव्यापकमातृकास्वरूपिणि ऐं ईं ह्रीं श्रीं ईं। चिल्लेखाम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं स्वच्छप्रकाशात्मिके ह्रीं कुलमहामालिनि ऐं कुलगर्भमातृके ह्रीं ऐं समयविमले श्रीं। समयाम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः नित्यप्रकाशात्मिके कुलकुण्डलिनि आज्ञासिद्धिमहाभैरवि आत्मानं बोधय बोधय अम्बे भगवति ह्रीं हुं। परापरबोधिन्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ मोक्षं कुरु। कुलपञ्चाक्षर्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः। अनुत्तरापञ्चदशाक्षर्यम्बा श्रीपादुकायै नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं शुद्धसूक्ष्मनिराकारनिर्विकल्पपरब्रह्मस्वरूपिणि क्लीं परानन्दशक्तिः सौः शाम्भवानन्दनाथश्रीं। अनुत्तरकौलविद्याम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ १०॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने स्वाहा। गुरूत्तरविमर्शिन्यम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ११ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं अनामाख्यव्योमातीतनाथपरापरव्योमातीत-व्योमेश्वर्यम्बा ह्रीं श्रीं। अनामाख्याम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ १२ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं ईं ऊं। सङ्केतविद्याम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ १३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं भगवति विच्चे वाग्वादिनि क्लीं महाहृदयमहामातङ्गिनि ऐं क्लिन्ने ब्लूं ह्रीं। अनुत्तरवाग्वादिन्यम्बा-श्रीपादुकायै नमः॥ १४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौं। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बा-श्रीपादुकायै नमः॥ १५ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं सर्वानन्दमयबैन्दवचक्रे परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगीश्वरी सर्ववीरेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वविद्येश्वरी सकलजगदुत्पत्तिमातृकाः सचक्राः सदेवताः सासनाः समुद्राः ससिद्धिः सायुधाः सवाहनाः सालङ्काराः सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताऽस्तु। श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीपूर्तिविद्याम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ इति षोडशमूलविद्यान्यासः॥ ३ ॥

अथ षडाधारन्यासः

तत्त्रिकोणाग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन त्रिषु कोणेषु वामपृष्ठदक्षपार्श्वेषु च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः स्वात्मानन्दविभूत्यै स्वाहा॥ आधारविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सोहं परमहंसविभूत्यै स्वाहा। स्वाधिष्ठानविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ २ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने स्वाहा। मणिपूरविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ ३ ॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः स्वात्मानं बोधय बोधय स्वात्मानन्दनाथ। अनाहतविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सोहं परमात्मानं बोधय बोधय परमात्मानन्दनाथ। विशुद्धिविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं स्वच्छानन्दनाथचित्प्रकाशामृतहेतवे स्वाहा। आज्ञाविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ ६॥ इति षडाधारन्यासः॥ ४॥

अथ षडध्वन्यासः

पूर्ववत् षट्सु स्थानेषु—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं क्लीं वर्णाध्वश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं ऐं पदाध्वश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं ह्रीं मन्त्राध्वश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं सौः कलाध्वश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं श्रीं तत्त्वाध्वश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं भुवनाध्वश्रीपादुकायै नमः॥ ६॥ इति षडध्वन्यासः॥ ५॥

अथ षड्दर्शनन्यासः

पूर्ववत् षट्सु स्थानेषु—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तारे तुत्तारे स्वाहा। तारादेव्यधिष्ठितबौद्धदर्शन-श्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। परो रजसे सावदोम्। ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शनश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हौं रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं हंसः सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शनश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो नारायणाय। विष्णुदेवताधिष्ठित-वैष्णवदर्शनश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्रीपादुकायै नमः॥ ६॥ इति षड्दर्शनन्यासः॥ ६॥

अथ षड्योगिनीन्यासः

षट्स्थानेषु—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डां डीं डूं डैं डौं डः डाकिनीश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः राकिनीश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लां लीं लूं लैं लौं लः लाकिनीश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कां कीं कूं कैं कौ कः काकिनीश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सां सीं सूं सैं सौं सः साकिनीश्रीपादुकायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं हूं हैं हौं हः हाकिनीश्रीपादुकायै नमः॥ ६॥

इति षड्योगिनीन्यासः॥ ७॥

अथ चरणन्यासः—

संघट्टमुद्रया त्रिकोणस्य अग्रादिवामतः कोणेषु मध्ये च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हंसः रक्तचरणाभ्यां नमः। रक्तचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं सोहं शुक्लचरणाभ्यां नमः। शुक्लचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं हंसः सोहं मिश्रचरणाभ्यां नमः। मिश्रचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं हंसः शिवः सोहं हंसः निर्वाणचरणाभ्यां नमः। निर्वाणचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ४॥ इति चरणन्यासः॥ ८॥

एते अष्टौ न्यासाः दीक्षादिविशेषकर्मस्वावश्यकाः।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

अथ शाम्भवविद्यान्यासः

त्रिकोणस्य दक्षवामपार्श्वयोः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः चित्प्रकाशानन्दनाथसहजपराम्बा-श्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं शान्तानन्दनाथसहजपराम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

अग्रादिवामतःकोणेषु—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौः ह्स्त्रौः शुक्लविद्यामहापीठशुक्लपुष्पशुक्ल-मण्डलमहापीठशुक्लरूपशुक्लमन्त्रमहापीठशुक्लद्वीपशुक्लमुद्रामहापीठशुक्लनति-महाप्रकाशानन्दनाथ ह्स्त्रौः ह्स्त्रौः ह स क ह ल ह्रीं शुक्लविद्याश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्ह्रौः स्ह्रौः रक्तविद्यामहापीठरक्तपुष्परक्त-मण्डलमहापीठरक्तरूपरक्तमन्त्रमहापीठरक्तद्वीपरक्तमुद्रामहापीठरक्तनतिमहाप्रकाशिनि पराम्बा स्ह्रौः स्ह्रौः ह स क ह ल ह्रीं रक्तविद्याम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रौः स्ह्रौः मिश्रविद्यामहापीठमिश्रपुष्पमिश्रमण्डल-महापीठमिश्ररूपमिश्रमन्त्रमहापीठमिश्रद्वीपमिश्रमुद्रामहापीठमिश्रनतिमहाप्रकाशा-नन्दनाथ ह्स्त्रौः स्ह्रौः स क ल ह्रीं मिश्रविद्याम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

वामपृष्ठदक्षपार्श्वे मध्ये च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं श्रीनवात्मानन्दनाथ ऐं छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्ख्फ्रें निष्कलसमयपराम्बाश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं श्रीपरापावकसर्वाराध्यसर्वमूर्धश्रीपुरनाथ-सर्वगुरुस्वयंगुरुशम्भुगुरु ह्स्क्ष्म्लव्र्यूं श्रीपरापावकश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं श्री कामदुधे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर स्फुर श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ह्रीं ॐ ह स क ह ल ह्रीं कुलकामधेनुश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं अहमस्मि निर्वाणानन्दनाथ ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं अः हंसः सोहं ॐ हां हौं स्वात्म-प्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥ इति शाम्भवविद्यान्यासः॥ ९॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ शाम्भवचरणन्यासः

पूर्ववत् संघट्टमुद्रया कोणेषु मध्ये च—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ईं हंसः प्रकाशचरणाभ्यां नमः। प्रकाशचरणश्रीपादुकां नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं ईं सोहं विमर्शचरणाभ्यां नमः। विमर्शचरणश्रीपादुकां नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं ईं हंसः सोहं प्रकाशविमर्शचरणाभ्यां नमः। प्रकाशविमर्शचरणश्रीपादुकां नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ईं हंसः शिवः सोहं अं अः निर्वाणचरणाभ्यां नमः। निर्वाणचरणश्रीपादुकां नमः॥ ४॥

पुनः क्रमेण—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं ईं हंसः प्रकाशचरणाभ्यां नमः। प्रकाशचरणश्रीपादुकां नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं ईं सोहं विमर्शचरणाभ्यां नमः। विमर्शचरणश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं ईं हंसः सोहं प्रकाशविमर्शचरणाभ्यां नमः। प्रकाशविमर्शचरणश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ईं हंसः शिवः सोहं अं अः निर्वाणचरणाभ्यां नमः। निर्वाणचरणश्रीपादुकायै नमः॥ ४॥ इति शाम्भवचरणन्यासः॥ १०॥

अथ कामकलान्यासः

मध्ये—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं सकलसच्चिदानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं निष्कलानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं सर्वानन्दनाथश्रीपादुकायै नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं सच्चिदानन्दनाथपरमसंविदि ईं ईं सपरार्धकलानाथ-चक्रश्रीपादुकायै नमः—इति मुखे॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं सच्चिदानन्दनाथबिन्दुस्तनयुगलश्रीपादुकायै नमः—इति हृदि॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं सच्चिदानन्दनाथव्यञ्जकरेखायोनिश्रीपादुकायै नमः—इति गुह्ये॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं हृदयाय नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शिरसे स्वाहा॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं शिखायै वषट्॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कवचाय हुं॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः अस्त्राय फट्॥ ६॥ —इति षडङ्गेषु।

प्रकाशमध्यस्थितचित्स्वरूपां
वराभये सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।
सिन्दूरवर्णामतिकोमलाङ्गीं
मायामयीं तत्त्वमयीं नमामि॥

इति ध्यात्वा, त्रिखण्डमुद्रया ब्रह्मरन्ध्रे कामकला न्यसेत्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्लीं हसकलईं सकलईं कलईं लईंईं कामकलाम्बाश्रीपादुकायै नमः।

पुनः संघट्टमुद्रया तत्रैव ब्रह्मरन्ध्रे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सौः प्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं सौः विमर्शाम्बाश्रीपादुकां नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं हं सौः प्रकाशविमर्शात्मकश्रीपादुकां नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमशिवानन्दनाथश्रीपादुकां नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरुनाथअमुकानन्दनाथश्रीपादुकां नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शिवः सोऽहं निर्वाणपादुकां नमः॥ ६॥

इति कामकलान्यासः॥ ११॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथाष्टत्रिंशत्कलान्यासः

अस्य श्रीअष्टात्रिंशत्कलामातृकान्यासस्य सोमसूर्याग्नयो ऋषयः, अनुष्टुप्त्रिष्टुप्पङ्क्तयः छन्दांसि, अष्टात्रिंशत्कलारूपिणीमातृका देवता विद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

चन्द्रसूर्याग्निसङ्काशचक्रदेहपदद्वयाम् ।
सुधाकुम्भं पद्मकोशमभयं वरमेव च॥
दधानां चिन्तयेद् देवीं पद्मस्थां परमेश्वरीम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां दिव्यभूषां स्मरेद् हृदि॥

दक्षोर्ध्वाद्यधःपर्यन्तमायुधानि। पञ्चपूजा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताकलायै नमः॥ १॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदाकलायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषाकलायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टिकलायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टिकलायै नमः॥ ५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रतिकलायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृतिकलायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनीकलायै नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं चन्द्रिकाकलायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं कान्तिकलायै नमः॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नाकलायै नमः॥ ११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीकलायै नमः॥ १२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीतिकलायै नमः॥ १३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदाकलायै नमः॥ १४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णाकलायै नमः॥ १५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृताकलायै नमः॥ १६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनीकलायै नमः॥ १७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिनीकलायै नमः॥ १८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः॥ १९॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीचीकलायै नमः॥ २०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः॥ २१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुचिकलायै नमः॥ २२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्नाकलायै नमः॥ २३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदाकलायै नमः॥ २४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वाकलायै नमः॥ २५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिनीकलायै नमः॥ २६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं धारिणीकलायै नमः॥ २७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमाकलायै नमः॥ २८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिकलायै नमः॥ २९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्माकलायै नमः॥ ३०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिनीकलायै नमः॥ ३१॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिनीकलायै नमः॥ ३२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः॥ ३३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रीकलायै नमः॥ ३४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपाकलायै नमः॥ ३५॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलाकलायै नमः॥ ३६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं हव्यवाहाकलायै नमः॥ ३७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवाहाकलायै नमः॥ ३८॥

इति मूर्धादिवामपादाङ्गुल्यग्रान्तषट्त्रिंशन्मातृकास्थानेषु मूर्ध्नि सर्वाङ्गे न्यसेदित्यष्टत्रिंशत्कलान्यासः॥ १२॥

अथ पूर्णमण्डलन्यासः

अस्य पूर्णमण्डलन्यासस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, मातृकादेवता।

नित्यासंयुक्ततत्त्वार्णपूर्णमण्डलरूपिणीम्।
श्वेतां श्वेताम्बराभूषां ध्यायेऽम्बुजचतुर्भुजाम्॥

पञ्चपूजा। मुखे स्वरान् मातृकास्थानेषु विन्यस्य, ककारादिक्षकारान्तं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पञ्चत्रिंशत्स्थानेषु रक्तषोडशदलकमलं ऊर्ध्वमुखं विभाव्य, तद्दलेषु प्रागादिप्रादक्षिण्येन ककारादीन् षोडशस्वरभिन्नान् कं नमः कां नम इत्यादि— क्षं नम इत्यन्तान् न्यसेदिति पूर्णमण्डलन्यासः॥ १३॥

अथ लघुषोढान्यासः

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, पङ्क्तिः छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः सौः करतलपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥

एवं हृदयादि।

उद्यत्सूर्यसहस्राभां रक्तमाल्याम्बरोज्ज्वलाम्।
पाशाङ्कुशेषुचापाढ्यां त्रिनेत्रां चन्द्रशेखराम्॥
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीं पराम्॥

वामोर्ध्वाद्यधःपर्यन्तमायुधानि। पञ्चपूजा।

तत्र गणेशन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रान् त्रिलोचनान्।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान्॥

वामोर्ध्वाद्यधःपर्यन्तमायुधानि।

तास्तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालङ्कारभूषिताः।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति ध्यात्वा, पञ्चपूजा। मातृकास्थाने न्यसेद्यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं विघ्नेश्वराय श्रियै नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं विघ्नराजाय ह्रियै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं विनायकाय तुष्ट्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शिवोत्तमाय शान्त्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं विघ्नकृते पुष्ट्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं विघ्नहर्त्रे सरस्वत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं विघ्नराजे रत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं गणनायकाय मेधायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं एकदन्ताय कान्त्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं द्विदन्ताय कामिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं गजवक्त्राय मोहिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं निरञ्जनाय जटायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कपर्दिने तीव्रायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं दीर्घवक्त्राय ज्वालिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सङ्कर्षणाय नन्दायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः वृषध्वजाय सुरसायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं गणनाथाय कामरूपिण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं गजेन्द्राय सुभ्रुवे नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं शूर्पकर्णाय जयिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं त्रिनेत्राय सत्यायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं लम्बोदराय विघ्नेश्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं महानादाय सुरूपिण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं चतुर्मूर्तये कामदायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं सदाशिवाय मदविह्वलायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं आमोदाय विकटायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं दुर्मुखाय धूम्रायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं सुमुखाय भूत्यै नमः।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं प्रमोदाय भूम्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं एकपादाय सत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं द्विजिह्वाय रमायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं शूराय मानुष्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं वीराय मकरध्वजायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं षण्मुखाय विकर्णायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं वरदाय भ्रुकुट्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं वामदेवाय लज्जायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं वक्रतुण्डाय दीर्घघोणायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं द्विरण्डाय धनुर्धरायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं सेनान्यै यामिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं ग्रामण्यै रात्र्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं मत्ताय चन्द्रिकायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं विमत्ताय शशिप्रभायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं मत्तवाहनाय लोलायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं जटिने चपलाक्षिण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं मुण्डिने ऋद्ध्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं खड्गिने दुर्भगायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं वरेण्याय सुभगायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं वृषकेतवे शिवायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं भक्षप्रियाय दुर्गायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं मेघनादाय कालिकायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं गणपाय कालजिह्वायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं गणेशाय विघ्नहारिण्यै नमः।

इति गणेशन्यासः॥ १ ॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ ग्रहन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरम्।
धूम्रकृष्णं तथा धूम्रं ग्रहानेवं विचिन्तयेत्॥
रविमुख्यान् कामरूपान् सर्वाभरणभूषितान्।
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षिणेन वरप्रदान्॥

पञ्चपूजा।

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः सूर्याय रेणुकाम्बायै नमः।

भ्रूमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं चन्द्रायामृताम्बायै नमः।

नेत्रत्रये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं मङ्गलाय धात्र्यम्बायै नमः।

हृदयाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं बुधाय ज्ञानरूपाम्बायै नमः।

हृदयोपरि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं बृहस्पतये यशस्विन्यम्बायै नमः।

गले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं शुक्राय शाङ्कर्यम्बायै नमः।

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं शनैश्चराय शक्त्यम्बायै नमः।

वक्त्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं राहवे कृष्णाम्बायै नमः।

गुदे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं केतवे धूम्राम्बायै नमः।

इति ग्रहन्यासः॥ २॥

अथ नक्षत्रन्यासः—

ज्वलत्कालाग्निसङ्काशाः सर्वाभरणभूषिताः।
नतिपाण्योऽश्विनीमुख्या वरदाभयपाणयः॥

पञ्चपूजा।

ललाटे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं अश्विन्यै नमः।

दक्षनेत्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं भरिण्यै नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः।

दक्षकर्णे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ॠं लृं ॡं रोहिण्यै नमः।

वामकर्णे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं मृगशीर्षाय नमः।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षनासायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं आर्द्रायै नमः।
वामनासायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं औं पुनर्वसवे नमः।
कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं पुष्याय नमः।
दक्षस्कन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं गं आश्लेषायै नमः।
वामस्कन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं ङं मघायै नमः।
दक्षकूर्परे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं पूर्वाफल्गुन्यै नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं जं उत्तराफल्गुन्यै नमः।
दक्षमणिबन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं ञं हस्ताय नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं चित्रायै नमः।
दक्षहस्ततले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं स्वात्यै नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं णं विशाखायै नमः।
नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं अनुराधायै नमः।
दक्षकट्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं ज्येष्ठायै नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं पं फं मूलाय नमः।
दक्षोरौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं पूर्वाषाढायै नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं उत्तराषाढायै नमः।
दक्षजानुनी—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं श्रवणाय नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं धनिष्ठायै नमः।
दक्षजङ्घायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं शतभिषजे नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमः।
दक्षपादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सं हं उत्तराभाद्रपदायै नमः।
वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः।

इति नक्षत्रन्यासः॥ ३ ॥

अथ योगिनीन्यासः—

सितासितारुणारक्ताश्चित्रां पीतां च चिन्तयेत्।
चतुर्भुजाः समैर्वक्त्रैर्युता भूषणभूषिताः।
पुस्तकं च कपालं च वराभीतिधराः शुभाः॥

दक्षोर्ध्वाद्यधःपर्यन्तमायुधानि। पञ्चपूजा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कण्ठे विशुद्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः डां डीं डूं डैं डौं डः डमलवरयूं रक्ष रक्ष त्वगात्मने डाकिन्यै नमः।

हृदि अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छ जं झं ञं टं ठं रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं रक्ष रक्ष असृगात्मने राकिन्यै नमः।

नाभौ मणिपूरे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं लां लीं लूं लैं लौं लः लमलवरयूं रक्ष रक्ष मांसात्मने लाकिन्यै नमः।

उपस्थे स्वाधिष्ठाने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं भं मं यं रं लं कां कीं कूं कैं कौं कः कमलवरयूं रक्ष रक्ष मेदात्मने काकिन्यै नमः।

पायौ आधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं शं षं सं सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मने साकिन्यै नमः।

भ्रूमध्ये आज्ञायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं ळं क्षं हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं रक्ष रक्ष मज्जात्मने हाकिन्यै नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रदले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं यां यीं यूं यैं यौं यः यमलवरयूं रक्ष रक्ष शुक्रात्मने याकिन्यै नमः॥ इति योगिनीन्यासः॥ ४॥

अथ राशिन्यासः—

रक्तं श्वेतं हरिद्वर्णं पाण्डुचित्रं सितं स्मरेत्।
पिशङ्गपिङ्गलौ कम्बुकर्बुरासितधूम्रभाः॥

तत्तदाकाराणि ध्यात्वा, पञ्चपूजा।

दक्षिणगुल्फे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं मेषाय नमः।

तज्जानुनि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं ऊं वृषाय नमः।

तद्वृषणे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ॠं लृं लॄं मिथुनाय नमः।

तत्कुक्षौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ऐं कर्कटाय नमः।

तत्स्कन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं औं सिंहाय नमः।

तच्छिरोभागे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अः शं षं सं हं कन्यायै नमः।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

वामशिरोभागे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं तुलायै नमः।

तत्स्कन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं वृश्चिकायै नमः।

तत्कुक्षौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः।

तद्वृषणे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं मकराय नमः।

तज्जानुनि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः।

तद्गुल्फे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः॥

इति राशिन्यासः॥ ५॥

अथ पीठन्यासः—

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात्।
पुनः पुनः क्रमादेवं पञ्चाशत्स्थानसञ्चये।
पीठानि संस्मरेद्विद्वान् सर्वकामार्थसिद्धये॥

पञ्चपूजा। मातृकास्थानेषु न्यसेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कामरूपपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं वाराणसीपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं नेपालपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं पौण्ड्रवर्धनपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं काश्मीरपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं कान्यकुब्जपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं पूर्णशैलपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं अर्बुदपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं आम्रातकेश्वरपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं एकाम्रपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं त्रिःस्रोतपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कामकोटपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कैलासपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं भृगुपीठाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं केदारपीठाय नमः।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः चन्द्रपुरीपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं श्रीपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं ओङ्कारपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं जालन्धरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं मालवपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं कुलान्तपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं देवकोटपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं गोकर्णपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं मारुतेश्वरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं अट्टहासपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं विरजपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं राजगृहपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं महागिरिपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं गोलगिरिपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं एलापुरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं कालेश्वरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं जयन्तिकापीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं उज्जयिनीपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं चरित्रपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं क्षिरिकापीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं हस्तिनापुरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं ओड्डीशपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं प्रयागपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं षष्ठीशपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं मायापुरीपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं जलेश्वरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं मलयपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं श्रीशैलपीठाय नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं मेरुपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं गिरिपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं महेन्द्रपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं वामनपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं हिरण्यपुरपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं महालक्ष्मीपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं ओड्याणपीठाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं छायाछत्रपीठाय नमः॥

इति पीठन्यासः॥ ६॥

॥ इति लघुषोढान्यासः॥

अथ महाषोढान्यासः

अस्य महाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीअर्धनारीश्वरो देवता, मोक्षार्थे विनियोगः। ह्सां ह्सीं ह्सूं ह्सैं ह्सौं ह्सः इति षड्भिर्न्यासः।

सुधासमुद्रमध्योद्यद्रत्नद्वीपस्य मध्यतः।
कल्पद्रुवाटिकामध्ये विराजन् मणिमण्डपे॥
नवरत्नगणाकीर्णसिंहासनगतं विभुम्।
अर्धनारीश्वरं शुद्धस्फटिकाभं जटाधरम्॥
व्याघ्रचर्मपरीधानं अजचर्मोत्तरीयकम्।
त्रिशूलाक्षकरं देवं भस्मच्छन्नकलेवरम्॥
फणिकेयूरकटककुण्डलादिविभूषितम्।
पुरुषाभं दक्षिणाङ्गे वामे स्त्रीरूपधारिणम्॥
तप्तहेमसमाभासं रत्नकोटीरशोभितम्।
सिन्दूरकौशेयवासं कौसुम्भोज्ज्वलकञ्चुकम्॥
पाशचापधरं चन्द्रचन्दनालिप्तविग्रहम्।
नासामौक्तिकताटङ्कहारनूपुरशोभितम्॥
त्रिनेत्रं चन्द्रचूडालं सनकादिसुसेवितम्।
चिद्विमर्शतनुं ध्यायेद् आनन्दघनसुन्दरम्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति ध्यात्वा, पञ्चपूजा। तत्र प्रपञ्चन्यासः मातृकास्थानेषु न्यसेत्—
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः आं द्वीपरूपायै मायायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः इं जलधिरूपायै कमलायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लृं आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लॄं गुहारूपायै मावायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः एं नदीरूपायै रमायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऐं चत्वररूपायै पद्मायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ओं उद्भिजरूपायै नारायणप्रियायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः औं स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं लवरूपायै आर्यायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः खं त्रुटिरूपायै उमायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः गं कलारूपायै चण्डिकायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः चं क्षणरूपायै अपर्णायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः छं घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः जं मुहूर्त्तरूपायै सत्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ञं दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः टं सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः डं तिथिरूपायै सर्वमङ्गलायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः तं योगरूपायै महामायायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः दं पक्षरूपायै मृडान्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः धं मासरूपायै रुद्राण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः नं राशिरूपायै शर्वाण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः फं अयनरूपायै काल्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः भं युगरूपायै गौर्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः मं प्रलयरूपायै भवान्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः यं पञ्चभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः रं पञ्चतन्मात्ररूपायै वागीश्वर्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लं पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः वं पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः शं पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः सं अन्तःकरणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः हं अवस्थात्रयरूपायै शारदायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ळं सप्तधातुरूपायै भारत्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः हसौः क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः।

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलप्रपञ्चरूपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः। इति प्रपञ्चन्यासः॥ १॥

अथ भुवनन्यासः

तत्र, पादयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं अतललोकनिलयशतकोटिगुह्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

गुल्फयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ईं उं ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरानन्तयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

जङ्घयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलयशतकोटिगुह्याचिन्त्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

जान्वोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लॄं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्रयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

ऊर्वोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्येच्छायोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

गुह्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं अः रसातललोकनिलयशतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

लिङ्गमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतरक्रियायोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

लिङ्गोर्ध्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः चं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयशतकोटिमहारहस्यराकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः पं फं बं भं मं महर्लोकनिलय-शतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

नासाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः यं रं लं वं जनलोकनिलय-शतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

ललाटे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः शं षं सं हं तपोलोकनिलय-शतकोट्यतिगुप्तहाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ळं क्षं सत्यलोकनिलय-शतकोटिमहागुप्तयाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलभुवनाधिष्ठात्र्यै श्रीपराम्बादेव्यै नमः॥ इति भुवनन्यासः॥ २॥

अथ मूर्तिन्यासः

तत्र, शिरसि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं केशवायाक्षरायै नमः॥

मुखे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः आं नारायणायाद्यायै नमः॥

दक्षिणांसे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः इं माधवायेष्टदायै नमः॥

वामांसे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ईं गोविन्दायेशानायै नमः॥

दक्षपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः उं विष्णवे उग्रायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः॥

दक्षकट्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्ध्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ॠं वामनाय ॠरूपिण्यै नमः॥

दक्षोरौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लृं श्रीधराय लुप्तायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ॡं हृषीकेशाय लूनदोषायै नमः॥

दक्षजानुनि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः एं पद्मनाभायैकनायिकायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऐं दामोदरायैकारिण्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षजङ्घायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ओं वासुदेवायौघवत्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः औं सङ्कर्षणायौर्वकामायै नमः॥

दक्षपादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अः अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः॥

दक्षपादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं भं भवाय करभद्रायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः खं बं शर्वाय खगबलायै नमः॥

दक्षपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः गं फं रुद्राय गरिमादि-फलप्रदायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः घं पं पशुपतये घण्टापद्मधरायै नमः॥

दक्षबाहौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ङं नं उग्राय ङार्णायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः चं धं महादेवाय चन्द्रार्द्धधारिण्यै नमः॥

कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः छं दं भीमाय छन्दोमय्यै नमः॥

वदने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः जं थं ईशानाय जगत्स्थानायै नमः॥

दक्षकर्णे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः झं तं तत्पुरुषाय झलत्तारायै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ञं णं अघोराय ज्ञानदायै नमः॥

मस्तकपृष्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः टं ढं सद्योजाताय टङ्कढक्का-द्यायै नमः॥

शिरसि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ठं डं वामदेवाय ठङ्कारडामयैं नमः॥

आधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः॥

स्वाधिष्ठाने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः रं प्रजापतये रञ्जिन्यै नमः॥

मणिपूरके—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लं वेधसे लक्ष्म्यै नमः॥

अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

विशुद्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः शं पितामहाय शशिधारिण्यै नमः॥

आज्ञायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः षं विधात्रे षडाधारालयायै नमः॥

अर्द्धेन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः सं विरिञ्चये सर्वनायिकायै नमः॥

रोधिन्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः हं स्त्रष्टे हसिताननायै नमः॥

नादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ळं चतुराननाय ललितायै नमः॥

नादान्ते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः॥

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अंः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलमूर्तिरूपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः। इति मूर्त्तिन्यासः॥ ३॥

अथ मन्त्रन्यासः

आधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं एकलक्षकोटिभेद-प्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

स्वाधिष्ठाने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेद-हंसादिद्व्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

मणिपूरे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऋं ॠं लृं त्रिलक्षकोटिभेद-वह्न्यादित्र्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लॄं एं ऐं चतुर्लक्षकोटि-भेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विशुद्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेदसूर्यादिपञ्चाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

लम्बिकायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं षड्लक्षकोटिभेदस्कन्दादिषडक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

आज्ञायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेदगणेशादिसप्ताक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

बिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेदबटुकाद्यष्टाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

अर्धेन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

रोधिन्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः डं ढं णं दशलक्षकोटिभेदविष्ण्वादिदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

नाद-नादान्तयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेदरुद्राद्येकादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

शक्तौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादिद्वादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

व्यापिकायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेदलक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

समनायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः मं यं रं चतुर्दशलक्ष-कोटिभेदगौर्यादिचतुर्दशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

उन्मनायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लं वं शं पञ्चदशलक्ष-कोटिभेददुर्गादिपञ्चदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः॥

महाबिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः षं सं हं ळं क्षं षोडश-लक्षकोटिभेदत्रिपुरादिषोडशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफल-प्रदायै षोडशकूटेश्र्यम्बादेव्यै नमः॥

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सकलमन्त्राधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः। इति मन्त्रन्यासः॥ ४॥

अथ दैवतन्यासः

तत्र, दक्षपादाङ्गुष्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं सहस्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्यम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः इं ईं सहस्रकोटियोगिकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः॥

दक्षगुल्फे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुल-सेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः॥

वामगुल्फे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुल-सेवितायै शान्त्यम्बादेव्यै नमः॥

दक्षजङ्घायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ऌं ॡं सहस्रकोटि-मुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः एं ऐं सहस्रकोटिदेवकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षजानुनि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः॥

दक्षोरौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः॥

दक्षकट्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ङं चं सहस्रकोट्यप्सरकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः॥

दक्षपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः झं ञं सहस्रकोटिगुह्यकुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः॥

दक्षस्तने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः॥

दक्षकक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्र्यम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः धं नं सहस्रकोटिगणेशकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः॥

दक्षकरे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः बं भं सहस्रकोटिबटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षांसे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः॥

दक्षकर्णे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यदेव्यै नमः॥

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञाम्बादेव्यै नमः॥

दक्षमूर्धभागे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः।

वामे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै शक्त्यम्बादेव्यै नमः।

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः। इति दैवतन्यासः॥ ५॥

अथ मातृन्यासः

आधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङं अनन्तकोटिभूचरीकुलसहितायै आं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूतकुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः॥

स्वाधिष्ठाने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः चं छं जं झं ञं अनन्तकोटिखेचरीकुलसहितायै ईं ळां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेतालकुलसहिताय इं ळं चर्चिकनाथाय इं ळं रुरुभैरवनाथाय नमः॥

मणिपूरके—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसहितायै ऊं हां योगीश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुलसहिताय उं हं योगीश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवनाथाय नमः॥

अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः तं थं दं धं नं अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसहितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहिताय ॠं सं हरसिद्धनाथाय ॠं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः॥

विशुद्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः पं फं बं भं मं अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै लृं षां भद्राम्बादेव्यै लृं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षसकुलसहिताय लृं षं भद्रनाथाय लृं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः॥

आज्ञायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शां किलकिलाम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुलसहिताय एं शं किलकिलनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नमः॥

नादान्ते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः शं षं सं हं अनन्तकोटिवनचरीकुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवनाथाय नमः।

महाबिन्दौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः ळं क्षं अनन्तकोटिजलचरीकुलसहितायै अः लां भीषणाम्बादेव्यै अः लां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अं लं भीषणनाथाय अं लं संहारभैरवनाथाय नमः॥

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं समस्तमातृभैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः। इति मातृभैरवन्यासः॥ ६॥

॥ इति महाषोढान्यासः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ श्रीचक्रन्यासः

तत्रादौ मूलेन प्राणानायम्य, मूलस्य ऋष्यादिन्यासान्तं कृत्वा, हृदि देवता ध्यात्वा, मानसैः सम्पूज्य, स्वदेहं श्रीचक्रत्वेन ध्यायेत्। यथा—

पृथ्वीपुरत्रितयभूमिपपत्रनाग-
पत्रेन्द्रकोणदशकोणयुगेभकोणम्।
अन्तस्त्रिकोणमथ बिन्दुपदं समीड्यं
श्रीचक्रराजमतुलं विमृशेत् स्वदेहम्॥

इति ध्यात्वा, आदौ पीठशक्तिं न्यसेत्। यथा—

पादाङ्गुष्ठयोः— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मों मोहिन्यै नमः॥ १॥
दक्षजानुनि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षों क्षोभिण्यै नमः॥ २॥
दक्षकूर्परे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वशिन्यै नमः॥ ३॥
दक्षाङ्गुल्यग्रे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तं स्तम्भिन्यै नमः॥ ४॥
शिखायाम्— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आकर्षिण्यै नमः॥ ५॥
वामाङ्गुल्यग्रे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्राविण्यै नमः॥ ६॥
वामकूर्परे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आह्लादिन्यै नमः॥ ७॥
वामजानुनि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लिं क्लिन्नायै नमः॥ ८॥
हृदि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लें क्लेदिन्यै नमः॥ ९॥
सर्वाङ्गे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः॥ १०॥

इति स्वदेहं पीठशक्तिमयं ध्यात्वा,

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नम इति त्रिर्न्यस्य, पुनस्तत्रैव तिथिनित्यां दिननित्यां च तत्तन्मन्त्रेण विन्यस्य, कण्ठमध्याधःस्थानमारभ्य दक्षवामस्तनक्रमेण त्रिकोणं ध्यात्वा, दक्षरेखायां पङ्क्त्याकारेण न्यसेत्। एवमेवाग्रेऽपि तत्तत्स्थानेषु तत्तच्चक्रं ध्यात्वा न्यसेत्।

नित्यान्यासः

यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कामेश्वरीनित्यायै नमः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः॥ २॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः॥ ३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं भेरुण्डानित्यायै नमः॥ ४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः॥ ५॥

दक्षिणस्तनमारभ्य वामस्तनपर्यन्तम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं महाविद्येश्वरीनित्यायै नमः॥ ६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः॥ ७॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं त्वरितानित्यायै नमः॥ ८॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः॥ ९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं नित्यानित्यायै नमः॥ १०॥

वामस्तनमारभ्य कण्ठमध्याधःपर्यन्तम्—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं नीलपताकानित्यायै नमः॥ ११॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं विजयानित्यायै नमः॥ १२॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सर्वमङ्गलानित्यायै नमः॥ १३॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः॥ १४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं चित्रानित्यायै नमः॥ १५॥

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरीमहानित्यायै नमः॥

पुनः तत्रैव, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं सप्तदशीकलातीतानित्यायै नमः। इति नित्यान्यासः॥ १॥

अत्र समर्थस्तु अं आं इत्येतदुत्तरं तत्तन्नित्यामन्त्रान् पठेत्। पक्षे व्यवस्था ध्यानं चावरणपूजावत् ज्ञेयम्।

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुन्दरीमहानित्यायै नमः इति त्रिः।

ओघत्रयन्यासः

अथ नाभ्युपरि दक्षादिवामान्तं त्रिपङ्क्तिरूपेणौघत्रयं न्यसेत्। यथा—

हृदयसमीपरेखायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं दिव्यौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति व्यापकं न्यस्य,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परप्रकाशानन्दनाथाय नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परशिवानन्दनाथाय नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं परशक्त्यम्बायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कौलेश्वरानन्दनाथाय नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं शुक्लादेव्यम्बायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कुलेश्वरानन्दनाथाय नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कामेश्वर्यम्बायै नमः॥ ७॥

द्वितीयरेखायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सिद्धौघेभ्यः सपरापराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति व्यापकं न्यस्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भोगानन्दनाथाय नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लिन्नानन्दनाथाय नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं समयानन्दनाथाय नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सहजानन्दनाथाय नमः॥ ४॥

तृतीयरेखायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं मानवौघेभ्यो पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नम इति व्यापकं न्यस्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं गगनानन्दनाथाय नमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं विश्वानन्दनाथाय नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं विमलानन्दनाथाय नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं मदनानन्दनाथाय नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भुवनानन्दनाथाय नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं लीलानन्दनाथाय नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं स्वात्मानन्दनाथाय नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्रियानन्दनाथाय नमः॥ ८॥

तत्रैव परमेष्ठिगुर्वादित्रयं तत्तन्मत्रेण न्यस्य, रेखात्रये महापादुकां व्यापकत्वेन न्यसेदिति ओघत्रयन्यासः॥ २॥

अथ षडङ्गयुवतीन्यासः

दक्षस्तनाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वज्ञा-हृदयशक्तये नमः॥ १॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वामस्तनाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नित्यतृप्ता-शिरःशक्तये नमः॥ २॥
दक्षग्रीवाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः अनाधिबोधाशिखाशक्तये नमः॥ ३॥
वामग्रीवाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं स्वतन्त्रा-कवचशक्तये नमः॥ ४॥
कण्ठमध्याधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नित्यमलुप्ता-नेत्रशक्तये नमः॥ ५॥
दक्षस्तनादिव्यापकत्वेन—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौं अनन्ता-अस्त्रशक्तये नमः॥ ६॥ इति षडङ्गयुवतीन्यासः॥ ३॥

अणिमादिन्यासः

पुनः हृदि मूलेन त्रिः। समस्तदेहे ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं समस्तप्रकटयोगिनीभ्यो नमः। पुनस्तत्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः। पुनः शिखादिपादाङ्गुष्ठाग्रान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्राद्यरेखायै नमः।

शिखायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अणिमासिद्ध्यै नमः॥ १॥
वामकूर्पराग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लघिमासिद्ध्यै नमः॥ २॥
पादाङ्गुष्ठयोरग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महिमासिद्ध्यै नमः॥ ३॥
दक्षकूर्पराग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ईशित्वसिद्ध्यै नमः॥ ४॥
वामकराङ्गुल्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वशित्वसिद्ध्यै नमः॥ ५॥
जान्वग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः॥ ६॥
दक्षजान्वग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुं भुक्तिसिद्ध्यै नमः॥ ७॥
दक्षकराङ्गुल्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं इच्छासिद्ध्यै नमः॥ ८॥
दक्षकर्णाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां प्राप्तिसिद्ध्यै नमः॥ ९॥
वामजङ्घागुल्फमध्याग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वकामसिद्ध्यै नमः॥ १०॥

पुनः शिखामूलादिपादाङ्गुष्ठमध्यान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रद्वितीयरेखायै नमः।

शिखामूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ब्राह्म्यै नमः॥ १॥
वामकूर्परमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं माहेश्वर्यै नमः॥ २॥
पादाङ्गुष्ठयोर्मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं कौमार्यै नमः॥ ३॥
दक्षकूर्परमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं वैष्णव्यै नमः॥ ४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

वामकराङ्गुलिमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं वाराह्यै नमः॥ ५॥

वामजानुमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं माहेन्द्र्यै नमः॥ ६॥

दक्षजानुमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं चामुण्डायै नमः॥ ७॥

दक्षकराङ्गुलिमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः महालक्ष्म्यै नमः॥ ८॥

पुनर्ब्रह्मरन्ध्रादिपादाङ्गुष्ठमूलान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्तश्चतुरस्त्ररेखायै नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः॥ १॥

वामकूर्परमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रायै नमः॥ २॥

पादाङ्गुष्ठयोर्मूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रायै नमः॥ ३॥

दक्षकूर्परमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रायै नमः॥ ४॥

वामकराङ्गुलिमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्रायै नमः॥ ५॥

वामजानुमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशमुद्रायै नमः॥ ६॥

दक्षजानुमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौं सर्वत्रिखण्डामुद्रायै नमः॥ ७॥

दक्षकराङ्गुलिमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः सर्वबीजामुद्रायै नमः॥ ८॥

दक्षकर्णरन्ध्रोर्ध्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्रायै नमः॥ ९॥

वामजङ्घागुल्फमध्ये अन्तः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्रायै नमः।

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रं प्रकटयोगिन्यै नम इति अणिमादिन्यासः॥ १॥

कामाकर्षिण्यादिन्यासः

फालाग्रादिपादपृष्ठपर्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः।

फालाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ १॥

दक्षकर्णरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ २॥

दक्षकरभे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं अहङ्काराकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षमणिबन्धाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ४॥

दक्षकराग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ५॥

दक्षोर्वग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ६॥

दक्षजङ्घाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रसाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ७॥

दक्षगुल्फाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ८॥

पादपृष्ठयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ९॥

वामगुल्फाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं धैर्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ १०॥

वामजङ्घाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ ११॥

वामोर्वग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ १२॥

वामकराग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं बीजाकषिणीनित्याकलायै नमः॥ १३॥

वाममणिबन्धाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं आत्माकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ १४॥

वामकरभे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ १५॥

वामकर्णरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः शरीराकर्षिणीनित्याकलायै नमः॥ १६॥

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं त्रिपुरेशीचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुं गुप्तयोगिन्यै नम इति कामाकर्षिण्यादिन्यासः॥ २॥

अनङ्गकुसुमादिन्यासः

पार्ष्णिद्वयाग्रादिफालमध्यान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः।

पार्ष्ण्यग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमायै नमः॥ १॥

दक्षकरमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलायै नमः॥ २॥

फालमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनायै नमः॥ ३॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वामकरमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरायै नमः॥ ४॥

दक्षगुल्फे मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं अनङ्गरेखायै नमः॥ ५॥

दक्षकरतले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं अनङ्गवेगिन्यै नमः॥ ६॥

वामकरतले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशायै नमः॥ ७॥

वामगुल्फे मध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं अनङ्गमालिन्यै नमः॥ ८॥

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गुप्ततरयोगिन्यै नम इत्यनङ्गकुसुमादिन्यासः॥ ३॥

सर्वसंक्षोभिण्यदिन्यासः

भ्रूमध्यादिपार्ष्णिमूलान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः।

भ्रूमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं सर्वसंक्षोभिणीशक्त्यै नमः॥ १॥

दक्षकर्णमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं सर्वविद्राविणीशक्त्यै नमः॥ २॥

दक्षकराङ्गुष्ठमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं सर्वाकर्षिणीशक्त्यै नमः॥ ३॥

दक्षभुजमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं सर्वाह्लादिनीशक्त्यै नमः॥ ४॥

दक्षोरुमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं सर्वसम्मोहिनीशक्त्यै नमः॥ ५॥

दक्षजङ्घामूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं सर्वस्तम्भिनीशक्त्यै नमः॥ ६॥

दक्षगुल्फमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं सर्वजृम्भिणीशक्त्यै नमः॥ ७॥

पार्ष्णिमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं सर्ववशङ्करीशक्त्यै नमः॥ ८॥

वामगुल्फमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं सर्वरञ्जिनीशक्त्यै नमः॥ ९॥

वामजङ्घामूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं सर्वोन्मादिनीशक्त्यै नमः॥ १०॥

वामोरुमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं सर्वार्थसाधिनीशक्त्यै नमः॥ ११॥

वामभुजमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्त्यै नमः॥ १२॥

वामकराङ्गुष्ठमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं सर्वमन्त्रमयीशक्त्यै नमः॥ १३॥

वामकर्णमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्त्यै नमः॥ १४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सम्प्रदाययोगिन्यै नम इति सर्वसंक्षोभिण्यादिन्यासः॥ ४॥

सर्वसिद्धिप्रदादिन्यासः

नासामूलाद्युपस्थान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः।

नासामूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं सर्वसिद्धिप्रदादेव्यै नमः॥ १॥

दक्षनेत्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं सर्वसम्पत्प्रदादेव्यै नमः॥ २॥

दक्षहनौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं सर्वप्रियङ्करीदेव्यै नमः॥ ३॥

दक्षकट्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं सर्वमङ्गलकारिणीदेव्यै नमः॥ ४॥

दक्षस्फिचि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं सर्वकामप्रदादेव्यै नमः॥ ५॥

उपस्थे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं सर्वदुःखविमोचिनीदेव्यै नमः॥ ६॥

वामस्फिचि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेव्यै नमः॥ ७॥

वामकट्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेव्यै नमः॥ ८॥

वामहनौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेव्यै नमः॥ ९॥

वामनेत्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेव्यै नमः॥ १०॥

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुं कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नम इति सर्वसिद्धिप्रदादिन्यासः॥ ५॥

सर्वज्ञादिन्यासः

नासाग्रादिबस्तिपर्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः।

नासाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं सर्वज्ञादेव्यै नमः॥ १॥

दक्षकपोले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं सर्वशक्तिदेव्यै नमः॥ २॥

दक्षस्कन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं सर्वैश्वर्यप्रदादेव्यै नमः॥ ३॥

दक्षपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं सर्वज्ञानमयीदेव्यै नमः॥ ४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षकटिसन्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेव्यै नमः॥ ५॥

बस्तौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं सर्वाधारस्वरूपादेव्यै नमः॥ ६॥

वामकटिसन्धौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सर्वपापहरादेव्यै नमः॥ ७॥

वामपार्श्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वानन्दमयीदेव्यै नमः॥ ८॥

वामस्कन्धे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेव्यै नमः॥ ९॥

वामकपोले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं सर्वेप्सितप्रदादेव्यै नमः॥ १०॥

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निं निगर्भयोगिन्यै नम इति सर्वज्ञादिन्यासः॥ ६॥

वशिन्यादिन्यासः

चिबुकादिनाभ्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः।

चिबुके—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः॥ १॥

दक्षग्रीवायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः॥ २॥

दक्षकक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः॥ ३॥

दक्षकुक्षौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः॥ ४॥

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः॥ ५॥

वामकुक्षौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः॥ ६॥

वामकक्षे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः॥ ७॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

वामग्रीवायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः॥ ८॥

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रहस्ययोगिन्यै नम इति वशिन्यादिन्यासः॥ ७॥

कामेश्वर्यादिन्यासः

कण्ठादिहृदयाधःपर्यन्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः।

वामस्कन्धमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः यां रां लां वां सां सर्वजम्मनकामेश्वरीबाणदेवतायै नमः॥ १॥

दक्षस्कन्धमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं थं सर्वमोहनकामेश्वरीचापदेवतायै नमः॥ २॥

दक्षस्तनाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं सर्ववशीकरकामेश्वरी-पाशदेवतायै नमः॥ ३॥

वामस्तनाधः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों क्रों सर्वस्तम्भनकामेश्वर्यङ्कुश-देवतायै नमः॥ ४॥

कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अग्निचक्रेश्वरीकामेश्वर्यै नमः॥ १॥

दक्षस्तने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सूर्यचक्रेश्वरीवज्रेश्वर्यै नमः॥ २॥

वामस्तने—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं सोमचक्रेश्वरीभगमालिन्यै नमः॥ ३॥

पुनरुक्तस्थानेषु व्यापकम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वर्यै नमः। पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अतिरहस्ययोगिन्यै नमः इति कामेश्वर्यादिन्यासः॥ ८॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

महात्रिपुरसुन्दरीन्यासः

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नमः।

पुनस्तत्रैव—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं परंब्रह्मचक्रेश्वरीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

पुनस्तत्रैव पूर्ववत् महात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै नमः।

पुनस्तत्रैव ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परापररहस्ययोगिन्यै नम इति महात्रिपुरसुन्दरीन्यासः॥ ९॥

समस्तदेहे व्यापकत्वेन ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं महौड्याणपीठे चर्यानाथात्मके तुरीयातीतदशाधिष्ठायके शान्त्यतीताशक्त्यात्मकपरब्रह्मात्मकप्रकाशविमर्शसामरस्यात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नम इति विन्यसेदिति श्रीचक्रन्यासः॥

अयं च न्यासस्त्रिविधः—संहारसृष्टिस्थितिभेदात्। तत्र भूपुरादि-बिन्दुपर्यन्तं न्यासः संहाराख्यः। बिन्द्वादिभूपुरान्तः सृष्ट्याख्यः। पादजानूरुमूलनाभिहृदयकण्ठचिबुकललाटमूर्धासु क्रमेण त्रिपुरादि-चक्रेश्वरीमन्त्रान् नमोऽन्तान् न्यसेदिति स्थितिचक्रन्यासः॥

अथ महाशक्तिन्यासः

आदौ जगच्छून्यं ध्यायन् निरालम्बमुद्रया क्षणं स्थित्वा, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं पृथिव्यै नम इति स्वासनाधः सम्पूज्य, आसनं स्पृशन् हृल्लेखां सप्तधा प्रजप्य, स्वासने सप्तशक्तीः पूजयेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं जयायैनमः॥ १॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विजयायै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं जयन्त्यै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अजितायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अपराजितायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सङ्गमायै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रम्भायै नमः॥ ७॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति। ततः मूलविद्यया प्राणायामं त्रिधा कृत्वा,

अस्य श्रीमहाशक्तिन्यासस्य परमशिव ऋषिः, अतिजगतीच्छन्दः, श्रीमहाशक्तिर्देवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं इति करषडङ्गन्यासं कृत्वा, महाशक्तिरूपां मूलदेवीं हृदि ध्यात्वा, तद्रूपं स्वदेहं ध्यायन् न्यसेत्। यथा—

योनौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं नमः॥ १॥

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः॥ २॥

कराग्रयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लां क्लीं क्लूं नमः॥ ३॥

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्लां ह्लीं ह्लूं नमः॥ ४॥

ललाटे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सां सीं सूं नमः॥ ५॥

कर्णयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः॥ ६॥

लिङ्गमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं द्रूं नमः॥ ७॥

चिबुकाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः श्रीं सौः नमः॥ ८॥

ब्रह्मरन्ध्रे सकलमातृकामूलभूतं सर्वानुस्यूतं च अकारं ध्यायन्,

ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः अं नमः।

ततः अकारमयानन्यान् आकाराद्या ध्यायन्,

तालुमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः आं नमः।

नासाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः इं नमः।

उपस्थे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ईं नमः।

गुदे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः उं नमः।

पृष्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ऊं नमः।

कटिमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ऋं नमः।

वृषणे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ॠं नमः।

पृष्ठोर्ध्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः लृं नमः।

लम्बिकायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः लॄं नमः।

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः एं नमः।

शिवशक्तिसामरस्यमयं ऐंकारं ध्यायन्,

गुह्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ऐं नमः।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लिङ्गमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ओं नमः।

नादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः औं नमः।

नादान्ते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः अं नमः।

कण्ठे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः अः नमः।

हृदि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः कं नमः।

मस्तके—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः खं नमः।

जङ्घयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः गं नमः।

स्तनयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः घं नमः।

नासिकायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ङं नमः।

भ्रूमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः चं नमः।

वामकुक्षौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः छं नमः।

दक्षकुक्षौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः जं नमः।

ऊरुमूलयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः झं नमः।

दन्ते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ञं नमः।

जिह्वाग्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः टं नमः।

मुखे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ठं नमः।

कक्षयो—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः डं नमः।

अस्थिषु—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ढं नमः।

चित्ते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः णं नमः।

नाभौ—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः तं नमः।

ललाटे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः थं नमः॥

कर्णरन्ध्रयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः दं नमः।

कपोलयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः धं नमः।

नेत्रयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः नं नमः।

ऊर्ध्वसहस्त्रदलकमले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः पं नमः।

अनाहते—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः फं नमः।

स्कन्धयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः बं नमः।

भ्रूद्वये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः भं नमः।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हनुमूलयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः मं नमः।

तालुमूलयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः यं नमः।

गुदलिङ्गमध्ये—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः रं नमः।

जिह्वायाम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः लं नमः।

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः वं नमः।

वाममूर्धादिवामपाददक्षपादक्रमेण दक्षमूर्धान्तं व्यापकत्वेन—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः शं नमः।

तालुमूलयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः षं नमः।

सर्वाङ्गे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः सं नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः हं नमः।

हस्तपादयोः सर्वाङ्गुलिषु—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः क्षं नमः।

कुण्डलिन्याम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः ॐ नमः।

कुण्डलिनीं सुषुम्णामार्गेण षट्चक्रभेदक्रमेण ब्रह्मरन्ध्रस्थचन्द्रमण्डले लीनां विभाव्य—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः—

रक्ष रक्ष शूलिनि मां त्रैलोक्यानन्ददायिनि।
रक्ष मां त्रिपुरे देवि रक्ष मां त्रिपुरेश्वरि।
रक्ष रक्ष महादेवि अस्मदीयमिदं वपुः॥

ऐं ह्रीं श्री ह्स्ख्फ्रें ह्सौः ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं श्रीसमयिनि मदिरानन्दसुन्दरि समस्तसुरासुरवन्दिते भुजङ्गभूपालमौलिमालालङ्कृतचरणकमले विकटदन्तघटाटोपनिवारिणि मदीयं शरीरं रक्ष रक्ष परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

नराङ्गमालाभरणभूषिते महाकौलिनि महाब्रह्मरन्ध्रवन्दिनि महाघनोन्मादनकारिणि महाभोगप्रदे अस्मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु दुर्जनान् हन हन दुष्टमहीपालान् भक्षय भक्षय परचक्रं भञ्जय भञ्जय जयङ्करि गगनगामिनि त्रैलोक्यस्वामिनि य्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं ल्म्ल्व्र्यूं क्ल्व्र्यूं श्म्ल्व्र्यूं श्रीभैरवि प्रसादय स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

कुलाङ्गनाकुलं सर्वं मदीयं त्रिपुरेश्वरी।
देवी रक्षतु दिव्याङ्गी दिव्यात्मा भोगदायिनी॥
रक्ष रक्ष महादेवि शरीरं परमेश्वरि।
मदीयं मदिरानन्दे आपादतलमस्तके॥

इति व्यापकेन आत्मरक्षां कृत्वा,

त्रिपुराख्या महादेवी भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
न गुरोः सदृशं वस्तु न देवः शङ्करोपमः॥
न च कौलात्परो योगो न विद्या त्रैपुरीसमा।
न च शान्तेः परं ज्ञानं न च क्षान्तेः परं सुखम्।
न वै शक्तिसमो न्यासो विद्यते भुवनेष्विह।
दर्शनेषु समस्तेषु षडङ्गेषु विशेषतः।
दिव्यरूपा महादेवी सर्वत्र परमेश्वरी॥

इति न्यासविद्ययोर्महिमानं स्मृत्वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीठोपपीठशिरस्था गगनगिरिभुवनगोकुलनिवासिनी जयन्ती कुलशक्तिर्महीतलपातालनिवासिनी कुलकौलविभेदिनी सकलजनमनआनन्दकारिणी करोतु मम चिन्तितं कार्यं भैरवीशतमेकं पुनातु परमेश्वरी मदनमण्डलालम्बिनी सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां परमेश्वरी (११६)। इति मन्त्रं पठित्वा,

ॐ नमो भगवति त्रिकोणे त्रिधावर्त्ते महालिङ्गालङ्कृते त्रैलोक्योत्पत्तिस्थितिप्रलयकारिणि स ह ल ह्रीं कन्दर्पानन्ददायिनि स ह ह्रीं ब्रह्मदण्डरेखे स ह हौ चित्स्वरूपे पाशाङ्कुशालङ्कृते वद वद वाग्वादिनि श्रीभ्रष्टमहिपालराज्यप्रदे ऐं वरदाश्रितहस्ते समस्तजनानन्दकारिणि क्लीं क्लीं कामराजबीजाश्रये द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्षोभय परक्षोभिणि ह्सौः ह्सौः ह्सौः मथ मथ अभयप्रदायिनि चतुर्भुजे त्रिनेत्रे प्रेतासनोच्चारिणि महाकपालमालालङ्कृते चन्द्रकृतशेखरे त्रिपुरे भुक्तिमुक्तिफलप्रदे ॐ ऐं ॐ नमः सिद्धं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शं षं सं हं ळं क्षं क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं द्धं सि मः न ॐ ऐं ॐ सर्वबीजमातः श्रीसमयिनि मम मनोरथं देहि स्वाहा (३२३)।

इति मन्त्रद्वयं पठित्वा, ऐं ईं सौः मन्त्रराजाय नम इति नत्वा, सकृत् त्रिपुराविद्यागणं जपेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं स्हौः स ह ल ह्रीं स ह हौः ऐं स ह ह्रीं स ह हूं (१६) कामत्रिपुरायै नमः॥ १॥ इति प्रणमेत्। एवं सर्वत्र विद्यागणे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौः ह्सौ (५) त्रिपुरभैरव्यै नमः॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं सः (३) वाक्त्रिपुरायै नमः॥ ३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः (१) महालक्ष्मीत्रिपुरायै नमः॥ ४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ह्सौः (३) वह्नित्रिपुरायै नमः॥ ५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं (२) मोहिनीत्रिपुरायै नमः॥ ६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं (४) भ्रामरीत्रिपुरायै नमः॥ ७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें ह्सौः (५) त्रैलोक्यस्वामिनीत्रिपुरायै नमः॥ ८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं डां डीं डूं डैं डौं डः (७) हंसात्रिपुरायै नमः॥ ९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐं सौः (३) कौलिकात्रिपुरायै नमः॥ १०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐं सौः (३) चण्डिकात्रिपुरायै नमः॥ ११॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐं सौः (३) तालुमध्यात्रिपुरायै नमः॥ १२॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐं सौः (३) कपालाङ्कुरवासिनीत्रिपुरायै नमः॥ १३॥

ततः ठः ठः ठः इति यथाशक्ति जपित्वा, स्वशिरसि रक्तपुष्पै ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः आत्मने नम इति सम्पूज्य, पञ्चोपचारैः स्वात्मनमभ्यर्च्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं सौः इति जपन् स्वदेहं महाकामकलात्मकं ध्यायन् श्लोकशतकं न्यासानुसन्धानेन पठेत्। यथा—

रुद्रशक्तिमयं देहं मदीयं त्रिपुरे कुरु।
देहि मे देवदेवेशि नित्यं नित्यमभीप्सितम्॥ १॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

मस्तकं मङ्गला देवी ललाटं कुलसुन्दरी।
नेत्रयुग्मं महाकाली करौ रक्षतु कुण्डली॥ २॥
कपाली कर्णगर्भं तु कपोलौ कमलावती।
दन्तान् रक्षतु चामुण्डा चिबुकं मेरुवासिनी॥ ३॥
भ्रूमध्यं कण्ठदेशं च रक्षेन्मे भुवनेश्वरी।
जिह्वां सरस्वती रक्षेत् तालुके तालुवासिनी॥ ४॥
स्थातु मे कपिला स्कन्धे स्कन्धान्ते कुलमालिनी।
कुक्षौ विनायकी स्थातु जया नन्दा स्तनद्वये॥ ५॥
कण्ठकूपे महालक्ष्मीर्हृदये चण्डभैरवी।
ब्रह्माणी नाभिदेशे तु स्थातु ज्वालावली गुदे॥ ६॥
लिङ्गे लिङ्गप्रभा चैव मुण्डिनी भेदमण्डले।
नाडीचक्रे महावेगा उद्धटा दक्षिणे करे॥ ७॥
वामहस्ते महामाया विद्या हस्ताङ्गुलीषु च।
वैष्णवी वामपादे च स्थातु चक्रायुधाऽन्विता॥ ८॥
तथा दक्षिणपादे तु एकपादा सुरेश्वरी।
पादाङ्गुलीषु कौमारी रोमकूपे महोद्भवा॥ ९॥
मण्डला नखमूले तु वाराही नखमूर्धसु।
जालन्धरी जलस्थाने कामाक्षी काममध्यगा॥ १०॥
उद्धटा नाभिलिङ्गान्तं नासाग्रे पूर्णपीठगा।
पृष्ठवंशे जयादेवी अस्थिसन्धिषु चर्चिका॥ ११॥
त्वचि स्थातु चर्मधरा रसे नित्यं महायशा।
रक्तमध्ये मांसके च स्थातु मे हंसिनी शुभा॥ १२॥
माहेश्वरी च कौमारी द्वे च ते स्थातु चाङ्गयोः।
वामदक्षिणयोश्चैव धीराली कटिसन्धिषु॥ १३॥
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलकामिनी।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च॥ १४॥
पञ्चभूतेषु भूतेशी सदा रक्षतु मे कुलम्।
राज्यं ददातु मे चैन्द्री प्रजां चैव प्रजावती॥ १५॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने॥ १६॥
रक्तनेत्रा महादेवी करोतु मम चिन्तितम्।
समया समयं रक्षेत् विद्यां विद्या कुलागमे॥ १७॥
साधकानां जगन्नाथा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
प्राणान् करोतु मे सिद्धिं त्रैलोक्यविजया सुखम्॥ १८॥
घण्टाली या महाविद्या सा मे यच्छतु मङ्गलम्।
सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां नायिका तु या॥ १९॥
सा मे सुरेश्वरी देवी सदा सिद्धिं प्रयच्छतु।
उल्कामुखी मुखे स्थातु मार्जारी देहसन्धिषु॥ २०॥
भद्रकाली तु या विद्या सा मे स्थातु शिखाभुवि।
त्रिकोणं च त्रिधावर्त्तं त्रैपुरं चक्रमुत्तमम्॥ २१॥
मस्तके स्थातु मे नित्यं तस्यान्तर्बहुरूपिणी।
पूर्वोक्ता त्रैपुरीशक्तिः स्थातु मे मन्मथोत्थिता॥ २२॥
क्षोभयन्ती जगत्सर्वं मदिरानन्दविह्वला।
निवासं कुरु मे देहे साम्प्रतं दिव्ययोगिनी॥ २३॥
एह्येहि त्वं महादेवि सिद्धियोगिनि मे कुले।
शत्रूणां घातनार्थाय जन्तूनां भोगदायिनी॥ २४॥
महायोगिनि देहेऽस्मिन् सर्वदा निलयं कुरु।
माहेन्द्री च शिखा स्थातु योनिमध्ये गणेश्वरी॥ २५॥
प्रेताशी नाम विख्याता करोतु कुशलं मम।
डाकिनी पूर्वभागे च मम सौख्यं प्रयच्छतु॥ २६॥
साकिनी पश्चिमाङ्गेषु दक्षिणे चापि राक्षसी।
वामभागे महामाया करोतु कुशलं मम।
अस्मदीयं शिरःस्थाने सदा तिष्ठतु भैरवी॥ २७॥
या विशाला विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ २८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

या कालकल्पिका काली कालरात्रिस्तु कथ्यते।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ २९॥
या निशाचरराजन्यपूजिता च निशाचरी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३०॥
या चोर्ध्वकेशिका नाम मुक्तकेशी महाभया।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३१॥
या वीरेति समाख्याता वीराणां जयदायिनी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३२॥
या मालिनी समाख्याता नासाग्रे बिन्दुमालिनी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३३॥
या कङ्कालकरालाङ्गी चण्डकङ्कालकुण्डला।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३४॥
या प्रचण्डा विरूपाक्षी विरूपा विश्वरूपिणी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३५॥
खट्वाङ्गी कथ्यते या च रौद्री रुद्रेण पूजिता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३६॥
कलायोगेन प्रसिद्धा या लोके श्रूयते कलौ।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३७॥
प्रेताक्षी कथ्यते या च फेत्कारोत्कटगर्जिता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३८॥
धूम्राक्षी या समाख्याता शास्त्रेऽस्मिन् योगिनी मता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ३९॥
घोररूपा महादेवी कथ्यते या कुलागमे।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४०॥
विश्वरूपा विशेषेण करोति च जगत्त्रयम्।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४१॥
भयङ्करी समादिष्टा या चोक्ता वै कुलागमे।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कपालमालिका प्रोक्ता या देवी मुण्डधारिणी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४३॥
भीषणी भैरवी नाम या देवी भीमविक्रमा।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४४॥
न्यग्रोधवासिनी या च कथ्यते च सुरार्चिता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४५॥
भैरवी भीषणी या च भैरवाष्टकवन्दिता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४६॥
प्रोच्यते दीर्घलम्बोष्ठी महामाया महाबला।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४७॥
खट्वाङ्गी या महाशक्तिः संसारार्णवतारिणी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४८॥
या समस्तेषु तन्त्रेषु प्रोच्यते तन्त्रवादिनी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ४९॥
कालघ्नी कथ्यते या च युगान्ते परमेश्वरी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५०॥
ग्राहिणीति समाख्याता सुरासुरमहोरगैः।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५१॥
चक्रिणी गद्यते या च एकपादा त्रिलोचना।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५२॥
या विश्वबाहुका देवी विश्वनाथप्रिया सदा।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५३॥
दर्शनेषु समस्तेषु विदिता भुवनेश्वरी।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५४॥
कण्टकोच्छेदनार्थाय शास्त्रे या कण्टकी स्मृता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५५॥
कीलकी कथ्यते या च सप्तहस्ता महाबला।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संग्रामे या महादेवी महामारीति कथ्यते।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५७॥
यमदूतीति विख्याता या सुरासुरपूजिता।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५८॥
करालिनीति या देवी महामाया महाबला।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ५९॥
ललिताम्बा महाराज्ञी सर्वचक्रैकनायिका।
सा योगिनी महायोगा स्थातु श्रीर्मस्तके मम॥ ६०॥
नासाग्रे कौलिकी स्थातु मदिराक्षी तथा मुखे।
व्योमजङ्घा कपोले च तालुके चापधारिणी॥ ६१॥
द्राविणी क्षोभिणी चैव स्तम्भिनी मोहिनी तथा।
रौद्रकर्मा महाघण्टा डामरी त्वरिता मतिः॥ ६२॥
ऐं ह्रीं श्रीं कुलमाता च काकवक्त्राऽप्यधोमुखी।
कपालकुण्डला दीर्घा कपाली कुलमालिनी॥ ६३॥
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलमालिनी।
भूमिरापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च॥ ६४॥
पञ्चभूतेषु भूतेशी सदा रक्षतु मे कुलम्।
राज्यं ददातु मे चैन्द्री प्रजां चैव प्रजावती॥ ६५॥
माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने॥ ६६॥
रक्तनेत्रा महादेवी करोति मम चिन्तितम्।
समया समयं रक्षेत् विद्यां विद्या कुलागमे॥ ६७॥
साधकानां जगन्नाथा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
द्विजटा त्रिजटा प्रोक्ता कदली दलिताखिला॥ ६८॥
गायत्री चाम्बिका तारा पार्वती कमला प्रभा।
मोदिनी मदना भावा मन्दरा मदनातुरा॥ ६९॥
भीषणाऽभीषणा नम्रा प्रेतसिद्धा विभीषणा।
क्षुधा तृषा तथा निद्रा कान्तिर्वृद्धिस्तथा द्युतिः॥ ७०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सन्ध्या धृती रतिः क्षान्तिर्ह्यनिशं परिपठ्यते।
सुरनाथेति विख्याता नगरे नरदेवता॥ ७१॥
ग्रामदेवी ह्यधिष्ठात्री पीठपीठेश्वरीं विदुः।
कावेरी नर्मदा चैव गङ्गा च यमुनोच्यते॥ ७२॥
गोदावरी महापुण्या प्रोच्यते चाप्यरुन्धती।
त्रैलोक्येऽपि महादेवी स्त्रीनाम्नी चाप्रकाशिता॥ ७३॥
सा देवी रूपलक्ष्या तु स्थातु श्रीर्हृदये मम।
सुवर्णरेखिणी प्रोक्ता विद्या सा प्रोच्यते किल॥ ७४॥
निर्मूलिनी भुजङ्गानां सा करोतु सुखं मम।
कुरुकुल्लेति विख्याता पक्षिराजमुखोद्भवा॥ ७५॥
या विद्या सा महारूपा जिह्वाग्रे स्थातु मे सदा।
ओङ्कारिणीति विख्याता देहे स्थातु सदा मम॥ ७६॥
विद्यापहारिणी नाम कलिरूपविदारिणी।
भेरुण्डा स्थातु मे कण्ठे तोतला स्थातु मस्तके॥ ७७॥
तथा सुबलरेखापि मूले स्थातु सदा मम।
जाङ्गली विषनाशाय वाचां सिद्धिं करोतु मे॥ ७८॥
सर्वसिद्धिकरी विद्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
अहं ब्रह्मा अहं विष्णुरहं देवो महेश्वरः॥ ७९॥
सर्वभूतनिवासोऽहं लोके श्रीचक्रचिन्तकः।
शक्तिन्यासेन पूतेन शरीरेण सुरासुराः॥ ८०॥
प्रदत्ता देशमात्रेण आज्ञां कुर्वन्ति मे सदा।
यत्किञ्चिद् योगिनीरूपं त्रैलोक्ये चास्ति शङ्करि॥ ८१॥
तत्सर्वं स्यान्निजे देहे शक्तिन्यास उपासिते।
कामिनी कुरुते चापि या न्यासं शक्तिनिर्मितम्॥ ८२॥
तां देवीं दिव्यरूपस्थां संसारे त्रिपुरां विदुः।
नमोऽस्तु ते जगन्मातर्नमोऽस्तु भुवनेश्वरि॥ ८३॥
नमो भोगप्रदे देवि नमो देवि महेश्वरि।
प्रकटा गोपिता सर्वा निर्वाणा भैरवी शिवा॥ ८४॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्भ्रमा विजया हंसा शुभा सा जलदेवता।
यक्षिणी चूडकन्या च तथा चाकाशगामिनी॥ ८५॥
भूचरी त्वरिता कुम्भी सर्वांगमनिवासिनी।
रञ्जनी देवमन्त्री च प्रसिद्धा मदिरालका॥ ८६॥
पूजिता सर्वसिद्ध्यर्थं शास्त्रेऽस्मिन् योगिनीमते।
स्थापिनी कथ्यते सद्भिः सानन्दा वनवासिनी॥ ८७॥
चतुःषष्ट्याश्रया देवी योगिन्यो येन चिन्तिताः।
आधारे लीयमानासु स योगी योगविद् भवेत्॥ ८८॥
ललाटे मण्डला स्थातु विरजा स्थातु मस्तके।
एकाक्षी दक्षिणे स्कन्धे वामे चैव त्रिलोचना॥ ८९॥
जयन्ती स्थातु मे कुक्षौ कट्यां कन्दर्पकुण्डली।
मालिनी लिङ्गसन्धौ च हृदि स्थातु समृद्धिनी॥ ९०॥
अम्बिका पृष्ठवंशे च पार्श्वयोः स्थातु मेदिनी।
दिग्राजाङ्गी कराग्रे च नागेन्द्री नखसन्धिषु॥ ९१॥
व्याघ्रवक्त्री च जङ्घायां स्थातु पादतले मही।
अमृता शङ्खिनी रन्ध्रे लोचने च विलासिनी॥ ९२॥
कालिन्दी मूलजिह्वां च रक्तं रक्षतु रक्तिनी।
लाङ्गला जाङ्गला रक्षेदस्थिनी चास्थिसन्धिषु॥ ९३॥
मज्जिनी देहमज्जां तु शुक्रं शुक्रेश्वरी तथा।
त्वचं रक्षतु वेताली मम रोगप्रणाशिनी॥ ९४॥
उद्धटा कुरुते शान्तिं सदैव मम विग्रहे।
पादा पादतले स्थातु पथि रक्षतु पन्थिनी॥ ९५॥
चौराग्निराजसर्पेभ्यो भये रक्षतु भैरवी।
दुष्टानां दृष्टिबन्धं तु सदा कुर्यात्तु बन्धिनी॥ ९६॥
चपेटी नाम या विद्या सा मे कुर्यात्तु मङ्गलम्।
मर्कटी घण्टकर्णी च हनुमद्भीतिराविणी॥ ९७॥
घुर्घुरी कीर्तिविख्याता वन्दे विद्याचतुष्टयम्।
चेटका ज्ञानदा विद्या कौमारी चरणावली॥ ९८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विघ्नराजस्तुता नाम तुष्टा सन्तानरूपिणी।
मूलाकाशस्थिता हंसी पताकी दलनोद्धता॥ ९९॥
दशैता मन्त्रविद्यास्तु तिष्ठन्तु मम मस्तके।
शुभा मे चाग्रतः स्थातु लोहिता स्थातु दक्षिणे॥ १००॥
वामाङ्गे रतिका स्थातु पश्चिमे स्थातु शृङ्खला।
शिखायां शिखिनी रक्षेदस्त्रे त्वस्त्रवती सदा॥ १०१॥
कवचे कवचाङ्गी च नेत्रे नेत्रकृतोत्सवा।
तिष्ठन्ति योगिनीरूपास्त्रैलोक्ये सचराचरे॥ १०२॥
योगिन्यो यास्तु ताः सर्वा गेहं कुर्वन्तु मे वपुः।
पुत्राणां च तथा देयो भक्तानां च विशेषतः॥ १०३॥
शक्तिन्यासस्त्वयं देवि न देयो यस्य कस्यचित्।
मनुष्याणां महीलोके चिन्तितार्थफलप्रदः॥ १०४॥
यः करोति सदा न्यासं षोढान्यासादिकं शिवे।
स जीवन् शक्तिरूपी वै त्रैलोक्योन्मूलनक्षमः॥ १०५॥
अयं तु परमोन्यासः सकृद्विन्यस्य देहके।
सकलन्यासजालानां यावज्जन्मफलं लभेत्॥ १०६॥
शक्तिन्यासकृते जीवे यः कश्चिच्छेदको भवेत्।
कर्मणा मनसा वाचा तस्य पातो भविष्यति॥ १०७॥

॥ इति महाशक्तिन्यासः॥

अथ सौभाग्यवर्द्धनन्यासः

ब्रह्मरन्ध्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः।
अरुणप्रभां ध्यात्वा, पुन, स्रवत्सुधां ध्यात्वा,

वामांसे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः। सरलोर्ध्वाग्रतर्जनी-युतवाममुष्टिरूपसौभाग्यदण्डिनीमुद्रां प्रदक्षिण्येन भ्रामयेत्।

वामपादमूले—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः। अन्तरङ्गुष्ठवाम-मुष्टिरूपारिजिह्वाग्रहमुद्रां न्यसेत्।

ललाटमध्ये—त्रैलोक्यस्याहं कर्त्तेति ध्यायन्, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः। न्यस्य,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चिबुकाग्रात् प्रादक्षिण्येन चिबुकान्तम्—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः।

गलोर्ध्वे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः।

दक्षपादादिवामपादान्तं व्यापकत्वेन—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः। महायोनिमुद्रां प्रादक्षिण्येन भ्रामयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः मुखे न्यस्य प्रणमेदिति सौभाग्यवर्द्धनन्यासः॥

अथ सम्मोहनन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः मुष्टिनिर्गतानामया मूर्ध्नि परिभ्रामणेन ब्रह्मरन्ध्रे न्यस्य, एवं दक्षमणिबन्धे अनामिकया ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः, पुनस्तथैव वामे, एवं ललाटे पुनरनामिकया ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशीं नमः न्यसेदिति सम्मोहनन्यासः॥

श्रीमाधवानन्दनाथकृते सौभाग्यपूर्वके।
कल्पद्रुमे ह्यभूत्स्कन्धो विशेषन्याससत्फलः॥

॥ इति सौभाग्यकल्पद्रुमे सप्तमः स्कन्धः॥

✤ ✤ ✤

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टमः स्कन्धः

यस्याः शेषविधिं सम्यगज्ञात्वा साधकोऽपि सन्।
वीरेन्द्रत्वं न लभते तामम्बां सततं भजे॥ १॥

अथोपासकानामावश्यकः **शेषविधिर्निरूप्यते**। तत्रादावुपासकानां **प्रायश्चित्तविधिः**। तच्च चान्द्रायणं कृच्छ्रं महासान्तपनमिति त्रिविधम्। यथा—गुरोराज्ञामादाय, शुभयोगयुक्तायां सिताष्टम्यामुषस्युत्थितः मौनेन स्नानादिसन्ध्यान्तं निर्वर्त्य, गुरुज्येष्ठादिसमीपे आचम्य, त्रिः प्राणानायम्य, तिथ्याद्युल्लिख्य, "जन्मप्रभृत्येतत्क्षणपर्यन्तं कृतानामपराधानामघानां च क्षयद्वारा श्रीपरदेवताप्रीत्यर्थं महासान्तपनाख्यं देवताव्रतं करिष्ये" इति संकल्प्य, शिवालयादिपुरश्चरणस्कन्धोक्ते स्थाने भूशुद्ध्यादिषडङ्गन्यासान्तं कृत्वा, मूलं पञ्चदशशतसंख्यया जप्त्वा, जपदशांशेन दीक्षाप्रकरणोक्त-संस्कृताग्नौ अथवा नित्यहोमवद्वा सिद्धाग्नौ घृताक्तैर्बिल्वपत्रैर्हुत्वा, रात्रावाचार्यादिद्वारा चक्रराजमभ्यर्च्य, सामयिकपूजान्तं निर्वर्त्य, स्वयमपि यथायोग्यतः पात्राणां त्रयं चतुष्टयं पञ्चकं वा स्वीकृत्य, एकैकपात्रान्ते शुद्ध्यादिमिश्रितं मयूराण्डमितं ओष्ठासंस्पर्शिग्रासं भक्षयेत्। ततः पात्रसमसंख्यं चुलुकोदकं पिबेत्। ततः मूलशतत्रयं प्रजप्य, सामयिकान् भोजयित्वा, स्थण्डिले ब्रह्मचर्येण शयीत। एवं त्रिरात्रं निर्वर्त्य, चतुर्थदिने चक्रराजं समभ्यर्च्य, सामयिकपूजान्तं कृत्वा, गुरुमाचार्यान् सामयिकांश्च यथाशक्ति दक्षिणाद्यैः सन्तोष्य, देवतायै व्रतं निवेदयेदिति **महासान्तपनविधिः**।

अथ **चान्द्रायणम्**। तच्च पशुपानादौ विहितं यथा—शुद्धपक्षे शुक्रवासरे कृतनित्यक्रियः गुर्वाज्ञया प्राणायामपूर्वकं संकल्प्य, प्रोक्तस्थाने त्रिसहस्रजपः। त्रिकालस्नानमपि कुर्यात्। क्षारं लवणं च वर्जयेत्। पूजान्ते तीर्थादिग्रहणं कृत्वा भोजनं कुर्यात्। ततः सहस्रं प्रजप्यावशिष्टं पूर्ववत्। एवं सप्तरात्रं कृत्वा, अष्टमदिने शुक्रवारे पूर्ववद्दशांशं अष्टशतोत्तर-द्विसहस्रसंख्याकं हुत्वा, पायसेनावरणदेवता हुत्वा, तस्मिन्दिने उपवसेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

पूजादिकं कारयित्वा, द्वितीयाद्येकैकग्रासेन सह तीर्थग्रहणं कुर्यात्। नवमदिने गुरुपूजनं ब्राह्मणभोजनादिकं पूर्ववदिति चान्द्रायणम्।

पञ्चमदिने एवमेव समापने **कृच्छ्र**मिति जानीयात्। महापराधानां अज्ञातकृतमहापातकानां च तारतम्येनेदं प्रायश्चित्तम्। विप्रस्य पशुपाने चान्द्रायणम्। महापातकानि तु गुरुद्रोहश्च तत्पत्नीगमनं समयक्षतिः। आचारस्य परित्यागः पशुप्रकटनं तथेति। गुरुद्रोहस्तद्वित्तहरणादिरूपः समयक्षतिः। क्वचित्परदेवतासपर्यादावुद्युक्तानां विघ्नकरणम् आचार-परित्यागः। पशुशास्त्रादिश्रवणेनाश्रद्धया स्वसम्प्रदायत्यागः। पशुप्रकटनं पशुषु स्वसम्प्रदायप्रकाशनमिति। एतच्च दैववशात्सकृत्सम्भूतम्। पुनः कालान्तरे पुण्यकर्मवशात् सच्छास्त्रश्रवणेन यदा पश्चात्तापः, तदोक्तप्रायश्चित्तं कर्त्तव्यम्। पशुपाने, बलात्स्त्रीसम्भोगे, मण्डले क्रोधादिनान्यस्य स्वस्य वा लोहितकरणे चान्द्रायणं कर्तव्यम्। स्वस्माज्ज्येष्ठायां बलात्कारेण सम्भोगे महासान्तपनम्, मण्डले अज्ञानेन लोहिते कृच्छ्रम्। ज्येष्ठे अज्ञानेन चेच्चान्द्रायणम्। ज्ञानेन चेन्महासान्तपनम्। पानादीनां पशुभिः प्रत्यक्षेण वीक्षणेन प्राकट्ये कृच्छ्रादित्रयम्। पशुभिर्बहिष्कृतो बाह्यप्रायश्चित्तेन बाह्यशुद्धिं सम्पाद्य, पश्चादान्तरप्रायश्चित्तं कर्त्तव्यम्। सर्वैरुपासकैरेतत्त्रयं द्वयमेकं वा प्रत्यब्दं दीक्षादिकर्मारम्भे च कर्त्तव्यम्। अशक्तेन त्वेकस्मिन्दिने वा कर्त्तव्यम्।

एवमशेषपातकनिवृत्तये कामितार्थलाभाय च रहस्यनाम-साहस्रोक्तनामभिस्त्रिशतीनामभिर्वा सुवासिनीः ब्राह्मणान् वा भोजयेत्। यथा—उक्तान्युत्तमपर्वसु संकल्प्य गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं च कृत्वा, गुर्वाज्ञानुरोधेन सुवासिनीपूजान्तां सपर्यां विधाय, वशिन्याद्यष्टकं तत्तन्नामभिरष्टसु सुवासिनीषु ब्राह्मणेषु वा आवाहनाद्युपचारैः सम्पूज्य, पात्राणि दत्वा, तरुणोल्लासयुतास्ताः दक्षिणादिभिः सन्तोष्य, समाप्य, द्वितीयदिनमारभ्य यावद्भिर्दिनैः सहस्रभोजनं समापनीयम्, तावद्दिनेषु समसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाशक्ति सम्पूज्य भोजयित्वा, अन्तेऽपि वशिन्याद्यष्टकं पूर्ववत्पूजयेदिति **सहस्रभोजनविधिः**।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं त्रिशतीनामभिस्त्रिशतभोजनं कुर्यात्। तत्राद्यं तयोः षोडशनित्यानामभिः सुवासिनीर्ब्राह्मणान् वा भोजयेदिति **त्रिशतभोजनविधिः।**

अथ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां उक्तपर्वान्यतमे वा मिथुनाष्टकं पूजयेत्। यथा—यथोक्तविधिना सुवासिनीपूजान्तां सपर्यां विधाय, दम्पतीनामाष्टकं युग्मक्रमेणोपविश्य पूजाप्रकरणोक्तब्राह्म्याद्यसिताङ्गादिनामभिः क्रमेणोक्त-विधिना भोजयेदिति **मिथुनाष्टकभोजनविधिः।**

एवमेव त्रिपुरसुन्दर्यादिनवचक्रेश्वरीनामभिः प्रकाशादिनव-नाथनामभिश्च **मिथुननवकभोजनविधिः।** एवमेव त्रिपुरसुन्दरीत्यादि-नामभिर्मालामन्त्रोक्तैरै**काशीत्युत्तरशतमिथुनभोजनविधिः।** तच्चैकस्मिन् दिने वा एकद्व्याद्यावरणक्रमेण वा कर्त्तव्यम्।

अथ **सम्मेलनमिथुनपूजनविधिः।** यथा—पूर्ववत्सुवासिनीपूजान्तां कृत्वा, पुष्पाञ्जल्यन्तं कारयित्वा, मिथुनाष्टकं मण्डलाकारेण ब्राह्मीम-सिताङ्गभैरवं(१), रुरुभैरवं माहेश्वरीं(२), कौमारीं चण्डभैरवं(३), क्रोधभैरवं वैष्णवीं(४), वाराहीमुन्मत्तभैरवं (५), कपालिभैरवं माहेन्द्रीं (६), चामुण्डां भीषणभैरवं (७), संहारभैरवं महालक्ष्मीं (८) इतिवीर-युग्मशक्तियुग्मे पूर्वाद्यष्टदिक्षु क्रमेणोपवेशयेत्। मध्ये सिन्दूरेणाष्टदलं सकर्णिकं कृत्वा, तत्र गुडयुक्तपिष्टमयान् घृतपाचितान् डमर्वाकारान् पार्श्वद्वयमुखानष्टौ दीपान् सघृतान् सकर्पूरवर्त्तियुतान् परस्परमिलितमुखान् दलेषु शालितण्डुलोपरि संस्थाप्य, हूँ सूँ क्षूँ मूँ लूँ वूँ रूँ यूँ इति एकैकबीजेनैकैकं ब्राह्म्यादिसम्मुखस्थं दीपं प्रज्वाल्य, एकैकस्मिन् दीपमुखे—महालक्ष्मीयुतां ब्राह्मीं(१), ब्राह्मीयुतामसिताङ्गभैरवं(२), असिताङ्गभैरवयुतं रुरुभैरवं(३), रुरुभैरवयुतं माहेश्वरीं(४), माहेश्वरीयुतां कौमारीं(५), कौमारीयुतां चण्डभैरवं(६), चण्डभैरवयुतं क्रोधभैरवं(७), क्रोधभैरवयुतं वैष्णवीं(८), वैष्णवीयुतां वाराहीं(९), वाराहीयुतामुन्मत्तभैरवं(१०), उन्मत्तभैरवयुतं कपालिभैरवं(११), कपालिभैरवयुतं माहेन्द्रीं(१२), माहेन्द्रीयुतां चामुण्डां(१३), चामुण्डायुतां भीषणभैरवं(१४), भीषणभैरवयुतं संहारभैरवं(१५), संहारभैरवयुतं

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

महालक्ष्मीं(१६) क्रमेण सम्पूज्य, तद्दीपं समष्ट्या परदेवतारूपं यथाशक्ति सम्पूज्य, श्रीतीर्थेन व्यष्ट्या तत्तन्नामभिः समष्ट्या देवतानाम्ना च सन्तर्प्य, तथैव मिथुनानि प्रत्येकं वीरं शक्तिं च पूर्वोक्तरीत्या तत्तन्नाम्ना सम्पूज्य, पात्राणि दत्वा भोजयेत्। मिथुनोद्वासान्तं दीपान् रक्षेत्। मिथुनावाहनानन्तरं तत्र मध्ये न गच्छेत्। परिवेषक आवाहनात्पूर्वमेव मध्ये स्थितः पदार्थानादाय परिवेषयत्। साधकोऽपि तीर्थादिकमादाय, मध्ये स्थितः तेभ्यः समर्पयेत्। ततः भुञ्जानान् तान् समीक्ष्य स्तोत्रं पठेत्। यथा—

महालक्ष्मीयुता देवी ब्राह्मी मे वाचि संस्थिता।
हंसारूढासिताक्षस्त्रक् पुस्ताभीतिवरैर्युता।
मां रक्षतु सदा देवि विद्याव्याहारकर्मसु॥ १॥
ब्राह्मीयुतोऽसिताङ्गस्तु वाक्प्रेरकतया स्थितः।
हंसारूढः सितोऽक्षस्त्रक्पुस्ताभीतिवरैर्युतः।
मच्छत्रुवाचं बध्नातु प्रसन्नो मां सदावतु॥ २॥
असिताङ्गयुतो देवो रुरुरैश्वर्यप्रेरकः।
वृषारूढः सितः शूलमृगाभयवरैर्युतः।
प्रसन्नो मद् रिपुगणसमृद्धीनां तु भक्षकः॥ ३॥
माहेश्वरी रुरुयुता मत्पाणितलसंस्थिता।
वृषारूढासिता शूलमृगाभयवरैर्युता।
मां रक्षतु सदा देवी धनधान्यागमादिषु॥ ४॥
माहेश्वरीयुता देवी कौमारीरूपसंस्थिता।
मयूरस्थारुणा शक्तिभल्लाभयवरान्विता।
मां रक्षतु सदा देवी रूपसौन्दर्यदायिनी॥ ५॥
कौमारीयुक्तश्चण्डस्तु रूपसौन्दर्यप्रेरकः।
मयूरस्थोऽरुणः शक्तिभल्लाभयवरान्वितः।
मद् रिपूणां च सौन्दर्यं रूपं नाशयतु द्रुतम्॥ ६॥
चण्डयुक्तः क्रोधमयो बलवीर्यादिप्रेरकः।
गरुडस्थोऽसितः शङ्खचक्रारिकमलान्वितः।
मच्छत्रूणां बलं वीर्यं हरत्वाशु मयार्चितः॥ ७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वैष्णवी क्रोधसंयुक्ता मदीयभुजसंश्रया।
गरुडस्थासिता शङ्खचक्रारिकमलान्विता।
मां रक्षतु सदा देवी युद्धे रिपुसमागमे॥ ८॥
वाराही वैष्णवीयुक्ता संस्थिता मन्मनोभुवि।
किरिसंस्था सुवर्णाभा हलशूलाम्बुजान्विता।
मां रक्षतु सदा देवी महापद्विनिवारिणी॥ ९॥
वाराह्या सहितोन्मत्तो भक्तानामभयप्रदः।
किरिसंस्थः सुवर्णाभो हलशूलाम्बुजान्वितः।
मच्छत्रूणां तु सर्वेषां भयपीडाप्रयच्छकः॥ १०॥
उन्मत्तयुक्तः सामर्थ्ये कपालीप्रेरकः शुभः।
गजस्थो गौरगात्रश्च वज्राङ्कुशलसत्करः।
मच्छत्रूणां च सामर्थ्यं हरत्वाशु मयार्चितः॥ ११॥
कपालियुक्ता माहेन्द्री सर्वगात्रेषु संस्थिता।
गजस्था गौरगात्री च वज्राङ्कुशलसत्करा।
मां रक्षतु सदा देवी सामर्थ्यस्य प्रदानतः॥ १२॥
माहेन्द्रीयुक्ता चामुण्डा सर्वतः समवस्थिता।
नृदेहस्थासिता शूलघण्टाचर्मासिसंयुता।
मां रक्षतु सदा देवी सर्वतोभयनाशिनी॥ १३॥
स चामुण्डो भीषणस्तु सर्वतो भयनाशनः।
नृदेहस्थोऽसितः शूलघण्टाचर्मासिसंयुतः।
मच्छत्रूणां सर्वतस्तु प्रयच्छतु सदा भयम्॥ १४॥
संहारो भीषणयुतः सर्वसिद्धिप्रदः शुभः।
पद्मसंस्थोऽरुणोऽक्षस्त्रग्ज्ञानाभयवरान्वितः।
मच्छत्रूणां सर्वसिद्धिं निवारयतु चार्चितः॥ १५॥
ससंहारा महालक्ष्मीर्मम नेत्रद्वयस्थिता।
पद्मसंस्थारुणाऽक्षस्त्रग्ज्ञानाभयवरान्विता।
मां रक्षतु सदा देवि सर्वसिद्धिप्रदानतः॥ १६॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

मिथुनाष्टकसंयुक्ता जपाकुसुमसन्निभा।
कामेशवामाङ्कगता नेत्रत्रयविराजिता॥
सृणिपाशेक्षुचापेषुधरा रत्नविभूषिता।
सर्वाभीष्टप्रदा मेऽस्तु पूजिताऽनेन सुन्दरी।

इति स्तुत्वा, भोजनानन्तरं दक्षिणाद्यैः संतोष्य, प्रदक्षिणां नमस्कारान् कृत्वा, उद्वास्य, दीपस्थदेवतां च पुनः सम्पूज्योद्वास्य, देवतायै समर्प्य, पूजां समाप्य, दीपपात्रसहितं शेषभक्ष्यभोज्यादिकं भुक्त्वा यथासुखं विहरेदिति।

एतत्फलं तु—

मिथुनाष्टकपूजैषा सर्वापत्प्रविनाशिनी।
सर्वसम्पत्प्रदा तद्वल्ललिताप्रीतिदायिनी॥
तथैव नवसंख्यात मिथुनानां प्रपूजने।
मालामन्त्रोक्तविधिना मिथुनानां प्रपूजनात्॥
सर्वसिद्धिप्रदा तस्य ललिता सर्वदा भवेत्।
सम्मेलनविधेर्देवि फलं वक्तुं न शक्यते॥
विधिनापि भवेनापि हरिणापि मयापि च।
साक्षात्स एव देवेशि ललितारूपवान् भवेत्॥
तपः पूजा व्रतं स्नानं यज्ञाध्ययनमेकतः।
कलां नार्हन्ति देवेशि सम्मेलनविधेः शिवे॥ इति।

अत्र प्रसङ्गात् अखिलदोषप्रायश्चित्तभूता अखिलाभीष्ट-प्रदमहायागविधिः संक्षेपेण लिख्यते। दीक्षास्कन्धोक्तशुभे दिने रहस्यनिरुपद्रवादिपुण्यदेशे संकल्पं कुर्यात्। तत्रादौ मण्डपशास्त्रोक्तविधिना चतुर्द्वारं मण्डपं कृत्वा, मण्डपनवमभागेन मध्ये स्तम्भचतुष्कमध्ये हस्तोच्चां वेदिकां, तच्चतुर्दिक्षु तत्सम्बद्धा द्वादशाङ्गुलोच्छ्रिता हस्तमितविस्तृता उपवेदिकाः, ईशान्ये हस्तमितं चतुरस्रकुण्डं, पश्चिमनिर्ऋतमध्ये हस्तमितां वेदिकां, आग्नेये हस्तद्वयमितां वेदिकां च कृत्वा, तद्दिने प्रातः कृतनित्यक्रियः ब्राह्मणैः सहितः श्रीगुर्वाज्ञामादाय, गुरुं नत्वा, आसने आसीनः, गणपतिमिष्टदेवतां च नत्वा, प्राणानायम्य, शुभतिथौ

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

देशकालावष्टाङ्गस्थितिमुल्लिख्य, "समस्तदुरितक्षयद्वाराश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं महायागेन यक्ष्ये" इति संकल्प्य, दीक्षोक्तरीत्या गणेशं तिरस्कृतिं च सम्पूज्य, मण्डपान्तः क्षेत्रपालं च सम्पूज्य, पुण्याहवाचनं नान्दीमातृकां च कृत्वा, तत्र पुरश्चरणस्कन्धोक्तरीत्या कीलखननादिबलिदानान्तं मण्डपद्वारेषु कोणेषु च ब्राह्म्यादिसहिताष्टभैरवपूजनं च कृत्वा, मण्डपबहिःस्थितः मण्डपोपरि शान्ताम्बिकासहितकालाग्निरुद्रपूजनं च कृत्वा, मण्डपं देवतारूपं ध्यायन्, ब्राह्मणैः सहान्तःप्रविश्य, "आसीनः आचार्यादिवरणं करिष्ये" इति संकल्प्य, आचार्यं ब्राह्मणं गणेशमातङ्गीवाराहीबालापूजकानृत्विजः पूर्वादिद्वारऋत्विजनाम्ना सम्पूज्य, क्रमेण वृणुयात्। ततः एकासने यजमानः सभार्यः पश्चिमवायुमध्ये उपविशेत्। यजमानदक्षे ब्रह्मा उदङ्मुखः, पूर्वदक्षिणोत्तरनैर्ऋत्यवेदीसमीपे ऋत्विजः पूर्वदक्षिणयोरुदङ्मुखः। अन्यत्र प्राङ्मुखः। ततः दीक्षास्कन्धोक्तरीत्या मध्यवेदिकायां सर्वतोभद्रमण्डले व्रीहिपुञ्जोपरि एकं कलशं संस्थाप्य, तत्र महात्रिपुरसुन्दरीं महोपचारैः पूजयेत्। ततः आचार्यः

यजमानस्य वाञ्छार्थसिद्धयेऽस्मिन् महार्चने।
गणेशं पूजयिष्यामि आज्ञया तव भोः प्रभो॥

इति ब्रह्माणं प्रार्थयेत्। ततः ब्रह्मा

यजमानस्य वाञ्छार्थसिद्धयेऽस्मिन् महार्चने।
गणेशं पूजयाचार्यं सावधानेन चेतसा॥

इति तदाज्ञामादाय, पूर्वोपवेदिकायामुदङ्मुखः गणेशयन्त्रे यथाविधिनां गणेशं मोदकापूपलड्डुकादिभक्ष्यैः सम्पूज्य, अग्निस्थापनपूर्वकं गणेशं तत्रावाह्य, त्रिधा हुत्वा, स्रुचा विशेषार्घ्यतीर्थेन च त्रिधा हुत्वा, गणेशं उद्वास्य, सम्पूज्य, ब्रह्मादीनां सर्वेषां सुवासिनीप्रमुखानां तत्त्वशोधनम्। उद्वासनं विना पूजां समाप्य गणपमृत्विजं सम्पूज्य,

जगन्मातुर्महायागे पूर्वदिग्गणपार्चने।
सावधानेन मनसा कर्मशेषं समापय॥

इति प्रार्थ्य, हस्ते गृहीत्वा, तत्सम्मुखे उपवेशयेत्। ततः स उपविष्टः गणेशन्यासादिकृत्वा स्तोत्रपाठादिकं कुर्यात्। ततः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यजमानस्य वाञ्छार्थसिद्धयेऽस्मिन् महार्चने।
गणेशः पूजितो देव आज्ञया तव भोः प्रभो॥

इति ब्रह्माभिमुखः कर्म निवेदयेत्।

ततः सायाह्नसमये पूर्ववत्

यजमानस्य वाञ्छार्थसिद्धयेऽस्मिन् महार्चने।
श्रीदेवीं पूजयिष्यामि आज्ञया तव भोः प्रभो॥

इति प्रार्थ्य, श्रीदेवीं पूजयाचार्येत्यादि तेनाज्ञप्तः पश्चिमवेदिकायां प्राङ्मुखश्चक्रराजं महोपचारैरभ्यर्च्य, देवीं सावरणं हुत्वा, श्रीतीर्थेन त्रिधा स्रुचा हुत्वा, ततः सुवासिन्यादिसामयिकपूजान्तां कृत्वा, उद्वासनं विना पूजां समाप्य, श्रीदेवीपूजिता देवेत्यादि ब्रह्मणि निवेद्य देवताप्रसादं भुक्त्वा, पवित्रशयनादौ यथासुखं शयनं कुर्यात्। रात्रौ अग्निदीपदेवतानां रक्षणं कुर्यादिति **प्रथमदिनविधिः**॥

अथ **द्वितीयदिने** आज्ञाप्रार्थनपूर्वकं दक्षवेदिकायां मातङ्गीं यथाविभवतः सम्पूज्य, गणेशवद्धोमं कृत्वा, तत्र सुवासिनीमप्रसूतां तरुणीं दीक्षावतीं सम्पूज्य, तत्प्रसादमादाय ब्रह्मणि निवेद्य, तत्प्रसादमाचार्यः स्वयं स्वीकृत्य, शेषं यजमानाय प्रयच्छेत्। ततो यजमानस्तत्प्रसादं स्वीकृत्य, तत्पात्रं प्रक्षाल्य, सुवर्णादिभरितं सुवासिन्यै दत्वा, वस्त्रदक्षिणाभरणाद्यैस्तां सम्पूजयेत्।

ततः गीतवाद्यादिभिः परस्परोपहासैश्च देवतां सन्तोष्य प्रसादं स्वीकृत्य, पूर्ववदृत्विजं नियोज्य, ततः सायाह्ने आज्ञाप्रार्थनपूर्वकं पूर्वद्वारऋत्विक्गणेशपूजनम्, आचार्यः मूलदेवीपूजनं च कुर्यात्। अत्र सर्वासां देवतानां तत्तदाद्यदिने आवाहनं, चरमदिने उद्वासनं च ज्ञेयम्। ब्रह्मादीनां गणेशादिक्रमेण प्रसादस्वीकारः। सर्वत्र पूजायाः ब्रह्मण आज्ञाप्रार्थनपूर्वक आरम्भः, अन्ते च निवेदनं इति प्रत्यहं कर्त्तव्यम्। अवशिष्टं च प्रथमदिनवत् ज्ञेयम्।

ततः **तृतीयदिने** वाराहीपूजनम्। वाराही पूजनसमये तत्र सर्वैर्मौनमुपांशुभाषणं च कर्त्तव्यम्। ऋत्विङ्नियोजनं कृत्वा, सायाह्ने गणेशमातङ्गीमूलदेवीनां पूजनम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्थदिने पश्चिमनैर्ऋत्यन्तराले प्राङ्मुखः बालां सम्पूज्य, कुमारीं च सम्पूज्य, ऋत्विङ्नियोजनं कृत्वा, ततः आग्नेयवेदिकायां गन्धोदकेन वृत्तचतुरस्रं त्रिकोणषट्कोणानि मत्स्यमुद्रया कृत्वा, वृत्ते असिताङ्गाद्यष्ट-भैरवान्, चतुरस्रे दिक्पालान्, त्रिकोणे इच्छाज्ञानक्रियाख्यशक्तित्रयं, षट्कोणे षडङ्गं च सम्पूज्य, ततः समस्तमण्डलेन—

नमो मण्डलनाथाय महामण्डलरूपिणे।
कारणं धारयाक्षय्यं महदानन्दकारणम्॥

इति गन्धाद्यैः सम्पूज्य, तत्र पुण्यकाष्ठसम्भवं पञ्चपादसमाधारं संस्थाप्य, प्रागादिपादपञ्चके निवृत्तिप्रतिष्ठाविद्याशान्तिशान्त्यतीताख्यकलापञ्चकं सम्पूज्य, तदुपर्यग्निकलाः सम्पूज्य, अग्निकलाप्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, षोडशोपचारैराधारं सम्पूज्य, तत्र स्वर्णरौप्यकाचमृण्मयान्यतमं पात्रं संस्थाप्य, सूर्यकलां सम्पूज्य, प्राणं संस्थाप्य, पूर्ववत्सम्पूज्य, ततस्तीर्थभरितकलशं शक्तिहस्तगतं सम्पूज्य, मधुवातेति त्रयेण, हिरण्यपात्रमिति मन्त्रद्वयेन, स्वाद्वी त्वेत्यनुवाकेन, आर्द्रं ज्वलतीति मन्त्रेण चाभिमन्त्र्य यजमानः तद्गृहीत्वा मस्तके वहेत्। शक्तिं दक्षिणावस्त्रा-भरणाद्यैः सम्पूज्य विसृजेत्। ततो यजमानः मस्तकधृततीर्थपात्रः मध्यवेदिकां त्रिः परिक्रम्य आचार्याय पात्रमर्पयेत्। तत आचार्यस्तेन तीर्थेन स्थापितं पात्रमापूर्य, तत्र सोमकलां सम्पूज्य, प्राणं संस्थाप्य, पूर्ववत्सम्पूज्य। अथ तच्चतुर्दिक्षुस्थितऋत्विक्सहित आचार्यः स्वादिष्टयेत्यादिशोधनमन्त्रान्, शन्नो मित्रः, सहनाववतु, भद्रं कर्णेभिः, पूर्णमदः, आप्यायन्तु इति शान्तिपञ्चकं च पठित्वा। अथाचार्यः शुद्धमालामन्त्रं च जपित्वा, तन्मुखमाच्छाद्य, वस्त्रेण संवेष्ट्य, तन्महाकलशं षोडशभिः सम्पूज्य। अथाचार्यादयः स्वस्वदेवतां पूजयेयुः। स्वस्वपूजासमये महाकलशगतं तीर्थमुपकलशे अन्ते यथानिरवशेषं भवेत्तथा आनीय पूजनं होमं च कुर्यात्।

अथ रात्रौ सामयिकब्रह्मादिऋत्विक्सामयिकसहितो यजमानः सुवासिन्यादिपूजानन्तरं मूलदेवीं सम्पूज्य, प्रसादतीर्थस्वीकारादि कृत्वा क्रमेण गणपत्यादीन् सम्पूज्य, तत्तत्तीर्थादिकं स्वीकारं कुर्यात्। अन्ते वाराहीप्रसादग्रहणोत्तरं समापयेत्। न प्रसादान्तरं पुनर्गृह्णीयुः। ततः यजमानं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सपत्नीकमेकं वा पूर्वद्वारवेदिकामध्ये पीठोपरि संनिवेश्य, मध्यकलशाद्देवतामुद्वास्य मूलं मातृकां च जपन्, ब्रह्मादिऋत्विग्भिः सहितः तदुदकैरभिषिच्य, सशेषजलं घटं वेदिकोपरि संस्थाप्य, अग्निमुद्वास्य, तत्तद्देवतां उद्वास्य, उच्छिष्टभैरवबलिपूजान्तं कृत्वा, स्वस्वहेतुपात्रविशेषार्घ्यस्थतीर्थशेषं महाकारणकुम्भे निक्षिप्य, आधारादवतार्य, वेदिमध्ये संस्थाप्य, आचार्यादयः सर्वे सामयिकाश्च कुम्भपरितो वृत्ताकारतया उपविष्टाः, तस्मात्सर्वे पात्राणि संगृह्य, मस्तके गुरुत्रयम्, हृदि देवतां च सन्तर्प्य, यावत्तरुणबोधास्तावत्पानं सर्वैः कर्त्तव्यम्। अवशिष्टं तीर्थं मध्यकुम्भे निक्षिप्य, तेनाचार्यो ऋत्विजश्च परस्परं सामयिकांश्चाभिषिञ्चतः शान्तिस्तवं पठित्वा, सर्वैः स्वस्वपूजासमाप्तिः कर्त्तव्याः। ततो यजमानः देवतायै पूजां समर्प्य, ब्रह्मादीन् दक्षिणावस्त्राभरणाद्यैः सन्तोष्य, भोजनादिकं कृत्वा, यथासुखं विहरेदिति शिवम्।

एतत्फलम्—

एवं देवि महापूजा ख्याता तन्त्रेषु दुर्लभा।
जन्ममध्ये सकृद्वापि कृत्वा पापैः प्रमुच्यते॥
शताश्वमेधसदृशं कोटिचक्रार्चनोपमम्।
शतधा सोमपानस्य यत्फलं तत्फलं लभेत्॥
महायागफलं वक्तुं मम शक्तिर्न विद्यते।
एतद्यागस्य कर्त्तारं पूजयन्ति सुराधिपाः॥
यत्र यत्र व्रजेदेष तत्र तत्र पराम्बिका।
स्थिता भवति सा भूमिः सर्वक्षेत्रोत्तमोत्तमा।
बहुनात्र किमुक्तेन भवेत् साक्षान्महेश्वरः॥

इति महायागविधिः॥

अथैतत्प्रसङ्गात्कौलश्राद्धविधिरालिख्यते। तच्चोपासकेन पित्रादीनां मृतदिने तत्परदिने वा कर्त्तव्यम्। यथा—कृतनित्यक्रियः ब्राह्मणान् चतुरो द्वौ वा निमन्त्र्य, "अमुकानन्दनाथनाम्नः अमुकाम्बानाम्ना वा प्रत्याब्दिकं कौलश्राद्धं यथाशक्त्या तन्त्रोक्तविधानेन करिष्ये" इति संकल्प्य, ततः

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

''कौलश्राद्धे महात्रिपुरसुन्दरीपूजनमहं करिष्ये'' इति संकल्प्य सपर्यां कुर्यात्। तत्रात्मपात्रदक्षिणतः विश्वेदेवपात्रं पितृपात्रं च श्रीपात्रवत् स्थापयेत्। असमर्थेनायोग्येन वा आचार्यादिद्वारा सपर्या कारयितव्या। ततः सुवासिनीपूजान्तं कृत्वा, चर्यानाथरूपान् विश्वान् देवान् मित्रीश-षष्ठीशोड्डीशरूपान् पितृपितामहप्रपितामहांश्च पूजयेत्। कृतपुष्पाञ्जलीन् पूर्वाभिमुखान् विश्वान् देवानुदङ्मुखान् पितॄंश्चोपवेश्य, चर्यानाथरूपानां विश्वेषां देवानामिदमासनं चर्यानाथरूपान् विश्वान् देवान् भवत्सु आवाहयामि इत्यक्षतैरावाह्य कृताञ्जलिः—

विश्वेदेवा स्वागतं वो यज्ञेऽस्मिन् स्थीयतां क्षणम्।
सावधानेन मनसा स्वीकुर्वन्तु सभाजनम्॥

इति प्रार्थ्य अग्रतश्चतुरस्रमण्डलं मत्स्यमुद्रया कृत्वा, विश्वेदेवानां पाद्यमण्डलाय नम इति सम्पूज्य, सामान्यकलशतोयेन ''चर्यानाथरूपाः विश्वेदेवाः इदं वः पाद्यं'' इति पादौ प्रक्षाल्य, सामान्यार्घ्योदकेन पुष्पाक्षतफलयुक्तेन ''चर्यानाथरूपाः विश्वेदेवाः इदं वो अर्घ्यः''। ततः सामान्यकलशोदकेन चर्यानाथरूपाः विश्वेदेवाः इदं वः आचमनं त्रिः। एवं वस्त्राभरणगन्धपुष्पधूपदीपैः सम्पूज्य। ब्राह्मणचतुष्टयपक्षे मित्रीशरूपं पितरं, षष्ठीशरूपं पितामहं, ओड्डीशरूपं प्रपितामहम्, द्वयपक्षे मित्रीशषष्ठीशोड्डीशरूपान् पितृपितामहप्रपितामहानिति पूजयेत्।

पितृदेवा स्वागतं वो यज्ञेऽस्मिन् स्थीयतां क्षणम्।
सावधानेन मनसा स्वीकुर्वन्तु सभाजनम्॥

इति समष्ट्या प्रार्थनम्। पाद्यमण्डलं वृत्ताकारं, अवशिष्टं समानम्। एवं दीपान्तपूजनं कृत्वा, विश्वेदेवपात्रतीर्थं पात्रान्तरे गृहीत्वा, विश्वेदेवहस्तयोः ''चर्यानाथरूपेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा'' इति पात्रं द्वितीयखण्डं चार्पयेत्। एवं पितृपात्रात् ''मित्रीशरूपाय पित्रे अमुकशर्मणे स्वाहा, षष्ठीशरूपाय पितामहायामुकशर्मणे स्वाहा, ओड्डीशरूपाय प्रपितामहा-यामुकशर्मणे स्वाहा'' इति प्रत्येकं समर्पयेत्। ब्राह्मणद्वयपक्षे तद्धस्ते प्रथमपात्रं दत्वा, तत्रैव पुनर्द्विधा हुनेत्। अथ तैर्यथाविधि पात्राणि स्वीकर्त्तव्यानि। ततो भोजनपात्राधः क्रमाच्चतुरस्रं वृत्तं च मण्डलं कृत्वा,

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

तत्तन्नाम्ना मण्डलाय नम इति सम्पूज्य, शाकभक्ष्यान्नादि सर्वं परिवेष्य मूलेन प्रोक्ष्य हस्तोदकं दत्वा,

संविन्मये महापात्रे आनन्दमयभोज्यकम्।
भोक्ता त्वं पुरुषः साक्षी महाशक्तिर्महेश्वरः॥
सर्वमन्नं शक्तिमयं भोक्ता साक्षात्परः स्वयम्।
तस्मात्सर्वं शिवः साक्षाद्भोक्ता दाता च भोज्यकम्॥
विश्वेदेवा देवता नो भुञ्जन्त्वत्र मखे मम।
यावच्छक्यं तावदिह भोक्तव्यं स्वस्थमानसैः॥
पेयं खाद्यं भक्ष्यभोज्यं सर्वं वः सुसमर्पितम्।
पितॄणां परमानन्दहेतवे तद् भवेच्छिवम्।

इति जलमुत्सृजेत्। पितृस्थले पितृदेवा देवता नो इति पठेत्। तत आपोशनं दत्वा, यावदिष्टं तत्तत्पात्रात् पात्राणि दद्यात्।

यथा सम्भवपाकाद्यैस्तृप्ता यूयं भविष्यथ।
कुलद्रव्यैश्च वर्णैश्च पितॄणां शान्तिहेतवे॥

इति प्रार्थयेत्। ततः भोजनान्ते—

विश्वेदेवाश्च पितरस्तृप्ताः स्थास्मिन् महामखे।
सर्वं सुमिष्टं सम्पन्नं भवत्वत्र यथेप्सितम्॥

इति प्रार्थ्य, उत्तरापोशनं दत्वा, कृताचमनेभ्यो ब्राह्मणेभ्यस्ताम्बूलं दक्षिणां च दत्वा,

विश्वान् देवान् तथा पितॄन् देवतारूपमास्थितान्।
नमः पुरस्तात् पश्चाच्च पार्श्वयोरपि वो नमः॥
अनेन कौलश्राद्धेन विधिना पितृमुख्यकाः।
परमं पदमास्थाय भवन्त्वेते सुनिर्वृताः।

इति प्रदक्षिणानमस्कारौ कृत्वा,

यथागतं तु पितरो गच्छन्त्वस्मान्महामखात्।
विश्वेदेवैश्च सहिताः प्रसन्नाः सन्तु मे चिरम्॥

इत्यक्षताद्यैः सम्पूज्योद्वास्य, सामयिकपूजां कृत्वा, पितृदेवशेषं स्वजनैः सह स्वीकृत्य, पूजां देवतायै समर्प्य, भुक्त्वा यथासुखं विहरेदिति कौलश्राद्धविधिः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथान्त्येष्टिविधिरालिख्यते। यस्मिन्दिने सूतकनिवृत्तिस्तद्दिनमारभ्य कर्त्तव्यम्। अथवा, प्रथममासे प्रथमवर्षे वा कस्मिंश्चिद्दिने आरभ्य कर्त्तव्यम्। यथा—एकान्ते शुचौ देशे उदङ्मुखः पवित्रपाणिः "अमुकतिथौ अमुकशर्मणः वीरत्वं प्राप्तस्य मण्डलप्रवेशप्राप्त्यर्थं अन्त्येष्टिकर्म करिष्ये" इति संकल्प्य, आचार्यब्राह्मणवरणं कुर्यात्। तत आचार्यो नैवैद्यान्तपूजां कृत्वा, हस्तमितवेदिकायां सिन्दूररजसा श्रीयन्त्रं विरच्य, तत्र देवतामावाह्य, षोडशोपचारैरभ्यर्च्य, तदुपरि वितस्तिमितं कुशमयं पुरुषं उदङ्मुखमस्तकं संस्थाप्य, अमुकशर्माणं वीरं अस्मिन् कुशपुरुषे आवाहयामीति आवाह्य,

आगच्छ वीरपुरुष तिष्ठ चात्र कृतक्षणः।
विनियुक्तो मया पश्चात् परंधाम प्रपत्स्यति॥
मण्डलेषु निविष्टः सन् भुवनेषु चिरं स्थितः।
निवृत्तिं परमां प्राप्य याहि तत्परमं पदम्॥

इति मन्त्रं तत्कर्णे पठित्वा, तदङ्गे षडङ्गं न्यासं विधाय,

श्रोत्रे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शब्दाकर्षिण्यै नमः।
त्वचि—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्पर्शाकर्षिण्यै नमः।
नेत्रयोः-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रूपाकर्षिण्यै नमः।
जिह्वायाम्-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रसाकर्षिण्यै नमः।
घ्राणयोः-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गन्धाकर्षिण्यै नमः।
हृदि-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चित्ताकर्षिण्यै नमः।
मूर्ध्नि-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं काल्यै नमः।
कण्ठे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों मर्मकृन्तन्यै नमः।
ब्रह्मरन्ध्रे-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं प्राणाकर्षिण्यै नमः।

इति विन्यस्य—

कालधर्मे तु सम्प्राप्य न क्लेशं प्राप्तुमर्हसि।
न ते मृत्युः शिवो यस्मात् साक्षात्त्वं बहुशक्तिमान्॥
स्वशक्त्या स्वस्वरूपस्य गोपनारूपया ननु।
स्वातन्त्र्याख्यमहाशक्त्या पशुत्वं प्राप्तवानसि॥
गुरोर्वाक्यं स्मर क्षिप्रं भव श्रीशिवरूपकः।
देहान्मितात्समुत्क्रम्य सर्वकर्तृत्वमाप्नुहि॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

इति च श्रावयित्वा, निर्गतप्राणं विभाव्य, "अमुकवीरस्येमं देहं शिवाग्नौ संस्करिष्ये" इति संकल्प्य, तस्य—

पादयोः— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः नमः।

जान्वोः— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं नमः।

ऊर्वो— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः नमः।

नाभौ— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः नमः।

हृदि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः नमः।

कण्ठे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें नमः।

मुखे— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः नमः।

नेत्रयोः— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रौं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः नमः।

मूर्ध्नि— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः।

इति विन्यस्य तद्देहं श्रीचक्रमयं विभाव्य, वीरदेहाय नम इति तद्देहं षोडशोपचारैः सम्पूज्य, श्रीपात्रतीर्थेन तत्तन्नाम्ना त्रिधा सन्तर्प्य, तत्पार्श्वे दीक्षोक्तरीत्या वह्निं संस्थाप्य, तस्य विवाहसंस्कारोत्तरं मरणसंस्कारं च सम्पाद्य, सिन्दूरयन्त्रगतां देवतां अग्नौ गतां ध्यात्वा, तां पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, विशेषार्घ्यतीर्थैस्त्रिधा सन्तर्प्य, मूलेनाष्टोत्तरशतपलाशसमिद्भिर्हुत्वा, घृतेन स्रुचमापूर्य तत्र कुशपुरुषं दक्षिणपादमुत्तानं संस्थाप्य, वस्त्रेणाच्छाद्य, उत्थाय,

पराशक्तिस्वरूपस्य मृतवह्नेर्महामुखे।
पूर्णाहुतिं प्रदास्यामि [अमुकनाम्नो वीरस्य] पूर्णताप्राप्तिहेतवे॥
त्वं वीराग्नौ हुतोऽस्मिन् वै मलं भौतिकरूपकम्।
कार्मं मानसमप्येवं मायिकं चान्तरं तथा॥
आणवं च विसृज्याग्नौ धूममार्गेण चाथवा।
तेजोमार्गेणोर्ध्वलोकं प्राप्यान्ते परमं पदम्।
पुनरावृत्तिरहितं व्रज मन्त्रप्रभावतः॥

इत्यन्ते मूलं पादुकां वौषट् इत्यग्नौ निक्षिपेत्। पुनरष्टोत्तरशतं घृताहुतीर्हुत्वा,

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

होमं समाप्य, सुवासिनीपूजादिसामयिकपूजान्तं कृत्वा, आचार्यादीन् दक्षिणादिभिः सन्तोष्य, पूजां समाप्य समर्पयेत्।

ततः दिनद्वयं पूजां कृत्वा, चतुर्थे मण्डलमेलनं कुर्यात्। यथा— कौलश्राद्धवत्सर्वम्। "मण्डलमेलनश्राद्धं करिष्ये" इति संकल्प्य, पञ्च त्रीन् वा ब्राह्मणान्निमन्त्रयेत्। आत्मपात्रदक्षिणतः विश्वेदेवपितृवीराणां पात्रत्रयं स्थापयेत्। विश्वान् देवान् पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहान् वीरं च प्रागुदक्पश्चिममुखानुपवेश्य, पित्रन्ते वीरं क्रमेण आसनादिभिः सम्पूजयेत्। "विश्वेदेवा स्वागतं वो" इत्यादौ "वीरश्रेष्ठ स्वागतं ते स्वीकुरुष्व सभाजनम्" इति ज्ञेयम्। पाद्यमण्डलं प्रागग्रं त्रिकोणं वीरपात्रतीर्थं वीराय स्वाहेति समर्पयेत्। वीरभोजपात्राधस्त्रिकोणमण्डलं तद्भवेच्छिवमित्यन्तं कृत्वा, ततः पात्रयोर्मेलनादत्र मण्डलं मिलितं भवेत्।

अद्य प्रभृत्ययं वीरो भवेन्मण्डलमध्यगः।
तेन मित्रीशतां प्राप्तो विहरेत्तु यथासुखम्॥

इति वीरपात्रमुद्धृत्य, तत्तीर्थं पितृपात्रे निक्षिपेत्। ततः चर्यानाथरूपेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यः मित्रीशरूपाय पित्रे, षष्ठीशरूपाय पितामहाय, ओड्डीशरूपाय प्रपितामहाय, मित्रीशषष्ठीशोड्डीशरूपाय वृद्धप्रपितामहाय स्वाहान्तेन पूर्ववत्पात्राणि दद्यात्। ततः पित्रादिचतुर्णां सहैवोपचारादिकं कुर्यात्। न वीरशब्देन पृथक्तया। एवमेवावशिष्टं समापयेदित्यन्त्येष्टिविधिः॥

अत्र गुरोः श्राद्धे कर्त्तव्ये गुरुतत्पितृपितामहेत्यादिकमूहनीयम्। एवं भ्रातृपितृव्यादिष्वपि। तत्र पितॄणां नाम तु दीक्षानामैव ग्राह्यम्। नामाज्ञाने तु गगनानन्दनाथेति। स्त्रीणां तु गगनशक्त्यम्बेति। अदीक्षितानामपि पितॄणामप्येवम्। येषामन्त्येष्टिविधिर्न जातः, तन्नाम्ना अयुतमूलविद्यां प्रजप्य, पश्चात्कौलश्राद्धं कुर्यात्।

अथैतत्फलम्—

कौलश्राद्धमिदं देवि सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
कर्तुः पितॄणां च देवि भवेत् फलमनन्तकम्॥
पशोरपि कृते श्राद्धे तस्य दीक्षाफलं भवेत्।
अन्त्येष्टिविधिना हीनो मण्डलस्थो न जायते॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तस्मात् कुर्यात् प्रयत्नेन अन्त्येष्टिविधिमुत्तमम्।
यस्य न क्रियते देवि न दीक्षाफलमश्नुते।
मृतेऽह्नि पर्वसु तथा तीर्थे श्राद्धं समाचरेत्॥ इति।

अथात्र **मुद्राविवरणं** क्रमेण लिख्यते—

अधोमुखाङ्गुलाग्राणि हस्तद्वयगतानि वै।
एकीकृतान्यूर्ध्वमुखे कनिष्ठाग्रे तु योजिते।
ब्रह्मरन्ध्रे तु विन्यस्ता मुद्रा **संघट्टसंज्ञिता**॥
अनामान्तकनिष्ठादिकरन्यासवदेव वै।
पञ्चपूजाविधौ **मुद्रा पञ्चधा** विदिता बुधैः॥

अङ्गुष्ठपार्श्वद्वितयं संयोज्योर्ध्वाङ्गुलाग्रकम्।
ऋजुरूपाण्यङ्गुलानि मुद्रैषा **स्तम्भनामिधा**॥
प्रागङ्गुलाग्रेयमेव **चतुरस्त्रेति** शब्दिता॥
दक्षपाणितलं वामपाणिपृष्ठोपरि न्यसेत्।
विश्लिष्टाङ्गुष्ठयुगलं पार्श्वयो**र्मत्स्यसंज्ञिता**॥
अस्याः कनिष्ठातर्जन्यौ यदाधोमुखतः कृतौ।
अन्यत्पूर्ववदेव **स्यात्कूर्ममुद्रा** भवेदियम्॥
व्यत्यस्य वामोर्ध्वरीत्या चानामाद्वयमेव च।
मध्यमा पृष्ठतः कृत्वा तर्जन्यग्रं धृतं भवेत्॥
उन्नम्राग्रं मध्यमयोः पार्श्वमध्यमयोस्ततः।
युक्ते चाग्रे तदुपरि कनिष्ठे ऋजुयोजिते॥
अङ्गुष्ठाग्रे तु संयोज्य कनिष्ठोपरि वै न्यसेत्।
एषा **महायोनिमुद्रा** एताः स्युः पञ्च वै गुरोः।
स्तम्भनं चतुरस्त्रं च मत्स्यकूर्मौ च योनिकम्॥
ऊर्ध्वाग्रदक्षमुष्टिस्तु तर्जनी निर्गता तथा।
वक्रा **चाङ्कुशमुद्रेति** विख्याता विबुधोत्तमैः॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

तर्जन्यादिचतुष्कं वै प्रोतं हस्तद्वयस्थितम्।
दक्षतर्जन्यनामाभ्यां वाममध्यकनिष्ठयोः॥
वामतर्जन्यनामाभ्यां दक्षमध्यकनिष्ठयोः।
अधोऽङ्गुलाग्रसंयोगाद् धेनुमुद्रेयमीरिता॥
दक्षाऽङ्गुष्ठस्य सन्ध्यन्तर्वामाङ्गुष्ठं तु योजितम्।
युक्तसर्वाङ्गुलाग्रं तु कुम्भमुद्रेयमीरिता॥
तर्जन्यौ च कनिष्ठे च वेष्टिते तु परस्परम्।
करपृष्ठस्य योगेन वक्रा मध्याप्यनामिका।
ऊर्ध्वयुक्ते तथाङ्गुष्ठे मुद्रा तार्क्ष्याभिधा भवेत्॥

हस्तद्वयं मुष्टिरूपं ऋजुरूपा तु तर्जनी।
भ्रामयेद् दक्षवामाभ्यां मुद्रेयमवगुण्ठनी॥
वामाङ्गुष्ठं दक्षमुष्टिगतं वामाङ्गुलानि वै।
ऋजुरूपाण्यग्रदेशे दक्षाङ्गुष्ठाग्रयोगतः।
शङ्खमुद्रेयमाख्याता विद्वद्भिस्तन्त्रवेदिभिः॥
उत्तानं पाणियुगलं कनिष्ठापार्श्वयोर्युतम्।
अङ्गुल्यग्राणि वक्राणि कनिष्ठामूलदेशयोः।
अङ्गुष्ठाग्रसमायोगान्मुद्रैषावाहनी मता॥
स्थापनीयं तु तर्जन्योः पार्श्वयोगादधोमुखी।
मुष्टिद्वयोदरयुता मुद्रा स्यात्सन्निधापनी॥
इयमङ्गुष्ठगर्भे तु सन्निरोधनरूपिणी॥
इयमेवोत्तानरूपां सन्मुखी पार्श्वयोजिता।
उक्तावगुण्ठनी मुद्रा चावाहान्यादिकास्तु षट्॥

कनिष्ठायुगलं युक्तं पृष्ठेऽग्रेऽङ्गुष्ठयुग्मकम्।
पूर्वोक्तयोनिमुद्रायास्त्रिखण्डेत्यभिधीयते ॥

सव्येतरकरस्थस्य मध्यादित्रितयस्य तु।
उर्ध्वाग्रपृष्ठं संयोज्य तर्जन्यो ऋजुरूपयोः॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अग्रे संयोजितेऽङ्गुष्ठद्वयाग्रं योजितं क्षिपेत्।
मध्यमाग्रोपरि भवेन्मुद्रा **संक्षोभिणाभिधा**॥
अत्रैवाङ्गुष्ठयुगलमनामोपरि निक्षिपेत्।
ऋजुमध्यद्वयाग्रं तु योजितं तर्जनी उभे।
पार्श्वगे तु भवेन्मुद्रा ख्याता **विद्राविणी** बुधैः॥
मध्याग्रपार्श्वयुगलं संयुक्तं तत्र पार्श्वयोः।
तर्जन्यौ मध्यमाग्रस्थाङ्गुष्ठौ ऋज्वग्रयोजिते।
कनिष्ठे च तथानामे मुद्रा **चाकर्षिणी** स्मृता॥
दक्षाङ्गुष्ठादिकं क्षिप्त्वा वामाङ्गुष्ठादिसन्धिषु।
वामतर्जन्यादिकं तु दक्षाङ्गुष्ठादिसन्धिषु।
दृढसंयोजिततला मुद्रैषा तु **वशङ्करी**॥
कृत्वाञ्जलिं वक्ररूपे मध्यमेऽथ कनिष्ठिके।
व्यत्यस्य वामोर्ध्वरीत्या मध्यमोदरगे कृते॥
तर्जन्यनामाः सरलाश्चाग्रदेशे युतास्ततः।
मध्यमानखसंलग्नाङ्गुष्ठा **चोन्मादिनी**स्मृता॥
अस्या वक्रे तर्जनिके तदा स्या**दङ्कुशा**भिधा॥
दक्षोर्ध्वरीत्या करयोः परिवर्तनयोगतः।
व्यत्यस्य दक्षोर्ध्वरीत्या कनिष्ठानामिके उभे॥
अवष्टभ्य तर्जनीभ्यामनामे मध्यपृष्ठतः।
संयोज्य मध्यमाग्रे च तन्मध्येऽङ्गुष्ठयोगतः।
ऊर्ध्वाग्रा स्यादियं मुद्रा **खेचरी**ति प्रकीर्तिता॥
व्यत्यस्य वामोर्ध्वरीत्या कनिष्ठेऽनामिकाधृते।
मध्यमाग्रे च संयोज्य तर्जन्यावङ्कुशोपमे।
अनामाग्रयुताङ्गुष्ठौ **बीजमुद्रा** समीरिता॥
योनिमुद्रा तु सैव स्याद्या पुरोक्ता विधानतः॥
दक्षाङ्गुष्ठान्तरेणैव तर्जन्यां वेष्ट्य तर्जनीम्।
व्यत्यस्य वामोर्ध्वरीत्या मुष्टिपृष्ठमयोजितम्।
वामस्कन्धे सन्निविष्टा मुद्रा **पाशा**भिधा भवेत्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षस्कन्धे चाङ्कुशा स्यादुक्तरीत्या विनिर्मिता॥
यथा मुष्टिगतश्चापो वामहस्तस्य मुष्टिका।
अग्रे धृत्वा समादिष्टा **धनुर्मुद्रे**ति साधकैः॥
यथा मुष्टिगतो बाणस्तथा हस्तस्य मुष्टिका।
दक्षिणा हृत्समीपस्था **बाणमुद्रा** प्रकीर्तिता।
एतास्त्रयोदशाख्याता मुद्रा देवीप्रसादकाः॥

शङ्खं चक्रं गदां खड्गं पद्मं योनिं त्रिशूलकम्॥
तार्क्ष्यं धेनुं च डमरुं शार्ङ्गं नाराचकौस्तुभौ।
श्रीवत्सं मुसलं चेति पञ्चदश्याः प्रदर्शयेत्॥
त्रिखण्डेन युताश्चेमाः षोडश्यास्तु प्रदर्शयेत्।
शङ्खं योनिं धेनुतार्क्ष्यंत्रिखण्डाः पूर्वमीरिताः॥
दक्षोर्ध्वक्रमयोगेन तलोपरि तलं न्यसेत्।
पृथक्कृतान्यङ्गुलानि कनिष्ठामूलदेशके।
अङ्गुष्टमूलयोगेन **चक्रमुद्रा** समीरिता॥
दक्षाङ्गुष्ठादिकं वामाङ्गुष्ठसन्ध्यादिषु क्षिपेत्।
अङ्गुलाग्राणि संयोज्य करपृष्ठे तु मध्यमे॥
ऋजूर्ध्वाग्रे योजिते च कूर्परान्तं करद्वयम्।
संयोजितं समाख्याता **गदामुद्रे**ति साधकैः॥
दक्षे कनिष्ठामूले तु अङ्गुष्ठाग्रं विनिक्षिपेत्।
ऋजुयुक्तोर्ध्वाङ्गुलानि **खड्गमुद्रा** भवेदियम्॥
करयोस्तलमूलं च कनिष्ठाङ्गुष्ठमस्तकम्।
संयोज्य चेषद्वक्राणि पृथगूर्ध्वाङ्गुलानि च।
परस्परं संमुखाग्राण्येषा **पद्माभिधा** भवेत्॥
दक्षमुष्टिविनिर्गच्छत् तर्जन्याद्यङ्गुलित्रयम्।
पृथगृजूर्ध्वाग्रकं तु **त्रिशूलाख्या** भवेदियम्॥
दक्षमुष्टिविनिर्गच्छत् तर्जन्याद्यङ्गुलिद्वयम्।
तर्जनीपृष्ठदेशे तु मध्यमोदरयोजनात्।
ऊर्ध्वाङ्गुलाग्रा सम्प्रोक्ता मुद्रा **डमरुसंज्ञिका**॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

मुष्टिद्वयं कनिष्ठायां करभान्तं तु योजितम्।
उत्तानं तु तलं कृत्वा चाङ्गुष्ठद्वितयं ऋजुः।
दक्षोत्तराग्रकं कुर्यान्मुद्रा **शार्ङ्गाह्वया** भवेत्॥
मुष्टिद्वयं विनिर्गच्छदङ्गुष्ठं चोर्ध्वमस्तकम्।
प्रागग्रां तर्जनीं कुर्यादियं **नाराच**संज्ञिता॥
दक्षहस्तोर्ध्वयोगेन वेष्टयित्वा कनिष्ठिके।
वाममध्यानामिकयोरग्रभागे तु वेष्टयेत्॥
तर्जन्या दक्षया वामतर्जन्यग्रेण योजयेत्।
दक्षाङ्गुष्ठामध्यमाग्रमनामाग्रं नभोमुखम्।
वामाङ्गुष्ठं दक्षपृष्ठे मुद्रा **कौस्तुभ**संज्ञिता॥
अधोमुखं दक्षहस्तमुत्तानं वामहस्तकम्।
दक्षतर्जनिकां वामकनिष्ठोपरि निक्षिपेत्॥
वामतर्जनिकायां च कनिष्ठां दक्षिणां क्षिपेत्।
वामतर्जनिकापृष्ठाद् वामाङ्गुष्ठोदरे क्षिपेत्।
वाममध्यानामिकाग्रे मुद्रा **श्रीवत्स**संज्ञिता॥
दक्षमुष्टिर्दक्षिणाग्रे मुद्रा **मुसल**संज्ञिता॥
दक्षोर्ध्वक्रमयोगेन पाणिपृष्ठद्वयं मिथः।
संयोज्य दक्षतर्जन्याद्यङ्गुलीनां च सन्धिषु॥
क्षिप्त्वा तर्जन्यादिवामं परावृत्य करद्वयम्।
मध्यादित्रितयं प्रोक्तं तलयोरुदरे गतम्॥
ऋजुतर्जनिकायुग्मं योजिताङ्गुष्ठयुग्मकम्।
संहारनाम्ना विख्याता मुद्रेयं साधकोत्तमैः॥

इति मुद्राविवरणम्॥

अथात्रोपयुक्तमन्त्रोद्धारः प्रदर्श्यते—

चतुस्तारं बीजषट्कं श्रीपरापावकेति च।
सर्वराध्यसर्वमूर्धपुरनाथ च सर्वगु॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

रु स्वयंगुरु श्रीपश्चाद् गुरुनाथ सषष्ठकम्।
पञ्चमादिद्वितीयान्तं विलोमेन चतुष्टयम्॥
श्रीशम्भुगुर्वाद्यबीजं स्याद् द्विपञ्चाशदक्षरः।
अन्ते नाम लिखित्वा श्रीपादुकां पूजयामि हृत्॥
अग्निवायू स्पर्शरत्यावाद्यबीजं सबिन्दुकम्।
अग्निवायुधरोपस्थरूपतत्परशब्दगः ॥
भगमाला महाविद्या भेरुण्डास्थाः सबिन्दुकाः।
पुनश्चाद्यं तृतीयं चेत्येवं षड्बीजकं शिवे॥

इति। मन्त्रोद्धारप्रकारस्तु मूलतन्त्र एवोक्तः। यथा—नित्यातत्त्वकलान्यासैर्ज्ञेया इति। अस्यार्थः—नित्यातत्त्वकलानामभिः न्यासैः मातृकान्यासस्थाननामभिः मन्त्रवर्णा ज्ञेया इति। अथोद्धारार्थः। चतुस्तारं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं। बीजषट्कं त्वग्रे निरूप्यते। श्रीपरेत्यादिस्वरूपम्। तत्राष्टमवर्णश्चकारो हेयः। द्वितीयार्धे त्रयोदशश्च। तृतीयार्धे सप्तमाष्टमौ पश्चात् इति परित्यज्यावशिष्टं स्वरूपम्। सषष्टकं। सकारसहितं षष्ठं बीजम्। श्रीशम्भुगुरु इति स्वरूपम्।

अथ षड्बीजोद्धारः। अग्निः ह, वायुः स, स्पर्शः र, रत्यौ ऊं। बिन्दुयुक्तं प्रथमं बीजं ह्स्रूं इति। अग्निः ह, वायुः स, धरा क्ष, उपस्थ म, रूपं ल, तत्परः लकारपरः व, शब्दः य, र स्वरूपम्। भगमाला आ, महाविद्या ऊ, भेरुण्डा ई। क्रमेण त्रिषु स्थिताः। तेन ह् स् क्ष् म् ल् व् र् यां, ह् स् क्ष् म् ल् व् र् यूं, ह् स् क्ष् म् ल् व् र् यीं इति बीजत्रयम्। पुनराद्यतृतीययोर्योगे षड्बीजानि। सषट्कं तु—स् ह् क्ष् म् ल् व् र् यूं इति।

परब्रह्मऋषिश्छन्दो गायत्री जातिभेदतः।
हंसेन विन्यसेद् देवि ध्यानं शृणु मयेरितम्॥
वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम्।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः॥

जातिभेदतः। हंसां हंसीमित्यादि। इति पादुकोद्धारः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ कामेश्वरमन्त्रः—

बाला तारो रमा माया वह्निवायुधरास्ततः।
उपस्थरूपं शब्दास्तु रतिबिन्दुस्थमाद्यकम्॥
वाय्वग्निक्ष्मोपस्थरूपरसस्पर्शयदीपिकाः।
सबिन्दवो द्वितीयं वै शब्दादित्रयभूमिमाः॥
रतिस्थाबिन्दुसहितास्तृतीयं तार एव च।
विलोमषड्बीजयुतः षोडशार्णो मनुर्मतः॥

इति। तारः ॐ, रमा श्रीं, माया ह्रीं, वह्निः ह, वायुः स, धरा क्ष, उपस्थः म, रूपं ल, शब्द य, रति ऊ, तेन ह् स् क्ष् म् ल् यूं इति आद्यकं प्रथमं कूटम्। वायुः स, अग्निः ह, क्ष्मा क्ष, उपस्थः म, रूपं ल, रसः व, स्पर्शः र, य स्वरूपम्, दीपिका ऊ, तेन स् ह् क्ष् म् ल् र् यूं इति द्वितीयं कूटम्। शब्दादित्रयं य र ल, भूमिः क्ष, म स्वरूपम्, रतिः ऊ, तेन स् ह् क्ष् म् ल् व् र् यूं इति तृतीयं कूटम्। विलोमषड्बीजं मायादिवाग्भवान्तमिति।

आनन्दभैरवऋषिः पंक्तिश्छन्दः प्रकीर्तितः।
बालाबीजत्रयेणैव न्यासः प्रोक्तो महेश्वरि॥
जपाकुसुमसङ्काशं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
सृणिपाशेक्षुकोदण्डप्रसूनेषुधरं स्मरेत्॥

अथ अमृतमालिनीमन्त्रः—

अमृतेति समुच्चार्य मालिनी वह्निवल्लभा।
अष्टाक्षरी समुद्दिष्टा॥

इति। अमृतमालिनी इति स्वरूपम्। वह्निवल्लभा स्वाहा।

अथ पाशुपतास्त्रमन्त्रः—

तारान्ते पशुबीजं च पशुवर्मास्त्रयोगतः।
षडक्षरः पाशुपतास्त्राख्यो देवि समीरितः॥ इति।
पशुबीजं गन्धरूपतुष्टयो बिन्दुसंयुताः। इति।

तारः ॐ, गन्धः शं, रूपं लं, तुष्टिः ई, तेन पशुबीजं श्लीं, पशुस्वरूपम्, वर्म हुं, अस्त्रं फट्।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ मूलगायत्री—

वागीश्वरीति संलिख्य विद्महेति ततो लिखेत्।
कामेश्वरी धीमहि च तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।
बीजत्रयं त्रिषण्डादौ पञ्चविंशार्णरूपिणी॥ इति।

अथ सूर्यमन्त्रः—

अग्निस्पर्शौ प्रतिष्ठास्थौ बिन्दुना च सुशोभितम्।
माया हंसश्च सूर्यस्य मन्त्रो वेदाक्षरो मतः॥ इति।

अथ वाग्भवगायत्री—

वाग्भवं त्रिपुरादेवी विद्महे विलिखेच्छिवे।
वागीश्वरी धीमहि च तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्।
चतुर्विंशत्यक्षरेयं गायत्री वाग्भवाभिधा॥ इति।

अथ कामराजगायत्री—

द्वितीयबीजं त्रिपुरादेवी विद्महं एव च।
कामेश्वरी धीमहि च तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्॥
कामराजस्य गायत्री चतुर्विंशतिवर्णका।

द्वितीयबीजं बालाया इत्यर्थः।

अथ शक्तिगायत्री—

तृतीयबीजं त्रिपुरादेवी विद्मह एव च।
शक्तीश्वरी धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्।
चतुर्विंशत्यक्षरेयं शक्तिगायत्रिका मता॥

अथ नित्यामन्त्राः—

बाला तारश्च हृदयं कामेश्वरि ततः परम्।
इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्त्ववशङ्करि।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

सर्वजगत्क्षोभण वै करि वर्मत्रयं शराः॥
विलोमबालातर्काब्धिवर्णः कामेश्वरीमनुः।

शराः पञ्चबाणाः—द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः इति॥ १॥

वाग्भवं भगशब्दान्ते भुगे भगिनि वै भगात्।
उदर्यङ्गे च माले चावहे गुह्ये च योनि च॥
निपातिनि क्रमाद्देवि सर्वाद्यात् तु वशङ्करि।
रूपे नित्या तु क्लिन्ने वै स्वरूपे च ततः परम्॥
सर्वपश्चाद् भगानीति मे ह्यानय वरात्तु दे।
रेते सुरेते च भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे ततः॥
क्लेदय द्रावयात्सर्वसत्त्वानथ भगेश्वरि।
अमोघे भगविच्चे च क्षुभ क्षोभय सर्व वै॥
सत्त्वान् भगेश्वरी प्रोच्य वाग्भवं तुर्यबाणतः।
रागपायूपस्थवह्निवह्नयस्तु पताकगाः॥
सेन्दवः शिवयुग्राङ्गः क्लिन्ने सर्वाणि वै ततः।
भगानि मे वशाद्देवि मानयात् कामपञ्चमः॥
वह्निस्पर्शौ भयाद्रूपज्योत्स्ना बिन्दुस्तथेश्वरि।
माया च भगमालाया मन्त्रो बाणाब्धिभूमितः॥

वाग्भवं बीजं, प्रथमेऽर्द्धे शब्दान्ते वै आत् इति त्यक्तान्यत्स्वरूपं, द्वितीयेऽर्द्धे चकारचतुष्टयं त्यक्त्वा उदरि इत्यादिषट्पदं, अग्निमार्धे निपातिनि इति च भगशब्दान्ते ज्ञेयम्। तेन भगोदरि भगाङ्गे इत्यादि। भगनिपातिनि इत्यन्तं सिद्धम्। सर्वाद्यादिति। सर्वभगवशङ्करि इत्यर्थः। रूपे स्वरूपे इति द्वयमपि। भगशब्दान्ते ज्ञेयम्। चतुर्थेऽर्द्धे आत्तु वै च ततः परं, पञ्चमेऽर्द्धे पश्चात् इति आत्तु, षष्ठेऽर्द्धे च ततः, सप्तमेऽर्द्धे आत् अथ, अष्टमेऽर्द्धे च वै, नवमेऽर्द्धे प्रोच्य इति हित्वावशिष्टं स्वरूपम्। तुर्यबाणः ब्लूं, रागादयः पञ्चवर्णाः। पताकगाः एकारयुताः, सेन्दवः बिन्दुसहिताः। रागः जकारः, तेष्वाद्यः शिवयुक् अकारयुतः। तेन ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं में इत्यादिसिद्धम्। क्लिन्ने सर्वाणीति स्वरूपम्। अन्तिमेऽर्द्धे आद्देवि आत् इति त्यक्त्वावशिष्टं स्वरूपम्। कामपञ्चमः स्त्रीं, वह्निः ह, स्पर्शः रं, भयं व, रूपं ल, ज्योत्स्ना ए। तेन ह्र्व्लें इति॥ २॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नित्यक्लिन्ने मदद्रवे शिरो मायापुरःस्थिता।
एकादशाक्षरी चेयं नित्यक्लिन्नाऽभिधा भवेत्॥

मायापुरः मन्त्रादौ इत्यर्थः॥ ३॥

ताराङ्कुशौ ततः पायुः स्पर्शः प्रीतिः सबिन्दुका।
अङ्कुशश्चाङ्गदा बिन्द्वारूढः स्पर्शश्चतुर्विधः॥
आदौ क्रमात्कलाविद्यारागकालांस्तु योजयेत्।
अन्ते शिरो दशार्णेयं भेरुण्डाख्या प्रकीर्तिता॥

तारः ॐ, अङ्कुशः क्रों। पायुः भ, स्पर्शः र, प्रीतिः ओ, तेन भ्रों इति। अङ्गदाबिन्दुः औं, स्पर्शः र, चतुर्विधः चतुर्धा लिखितः, तेन रौं इति चतुष्टयम्। आदौ चतुष्टयादौ। कलाविद्येत्यादि चकारादिझकारान्तं चतुष्टयं योजयेत्। तेन च्रौं, छ्रौं इत्यादि सिद्धम्॥ ४॥

वह्निवासिन्यै हृदयं मायाद्याष्टाक्षरी मता।

मायाद्या सर्वादौ माया॥ ५॥

तारमायाशङ्कवः सः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे।
शिरश्चतुर्दशार्णेयं महाविद्येश्वरी स्मृता॥

तारेत्यादि बीजत्रयं सः इत्यादिस्वरूपं, शङ्कुबीजं फ्रें इति॥ ६॥

शिवदूत्यै ह्रन्मुखे तु मायासप्ताक्षरी त्वियम्।

मुखे सर्वादौ मायेत्यर्थः॥ ७॥

तारो माया वर्म खे च छे क्षः कामस्य पञ्चमः।
दीर्घवर्म क्षें च माया लिखेदस्त्रं ततः परम्।
पक्षचन्द्राक्षरी चैषा त्वरितेति प्रकीर्तिता॥

तारादिबीजत्रयं, वर्म हुं, खेत्यादि क्षः, एतदन्तं स्वरूपम्। कामस्य पञ्चमः स्त्रीं, दीर्घवर्म हूं, क्षें स्वरूपम्॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

बालायास्त्र्यक्षरैर्देवि कथिता कुलसुन्दरी ॥ ९ ॥
बाला च द्वादशार्धा च बाणा बालाविलोमतः।
चतुर्दशाक्षरी चेयं नित्या ख्याता महेश्वरि ॥

द्वादशार्द्धा वक्ष्यमाणा वह्निवायुशक्तिस्पर्शाहङ्काराः बालास्वरारूढाः। बाणाः द्रां इत्यादयः ॥ १० ॥

तारमायाशङ्कवश्च वायुस्पर्शरतीन्दुकाः।
पाशमायाङ्कुशा नित्यमदद्राद्वे च वर्मतः।
अङ्कुशस्तिथिवर्णेयं ख्याता नीलपताकिका ॥

तारादि बीजसप्तकम्। शङ्कुः फ्रें, वायुस्पर्शरतीन्दुकाः स्लूं। आत् इति हित्वावशिष्टं स्वरूपम्। वर्म अङ्कुशेत्यन्ते बीजद्वयम् ॥ ११ ॥

पायूपस्थस्पर्शशब्दाङ्गदा बिन्दुसमन्विता।
इयमेकाक्षरी विद्या विजयाख्या समीरिता ॥

पायुः भ, उपस्थः म, स्पर्शः र, शब्दः य, अङ्गदा औ, तेन भ्म्र्यौं ॥ १२ ॥

वायूद्गारियुतस्तारः सर्वाद्वै मङ्गला च यै।
हृदयं नववर्णैषा सर्वमङ्गलशब्दिता ॥

वायुः स, उद्गारि व, तद्युतस्तारः स्वों। आत् वै च इति त्यक्त्वा सर्वेत्यादि स्वरूपम् ॥ १३ ॥

सप्ताक्षरी ततो ज्वालामालिनि द्विस्तु देवि च।
सर्वभूताच्च संहारकारिके जातवेदसि ॥
ज्वलन्ति ज्वलयुग्मं च प्रज्वलद्वितयं तथा।
वर्मद्वयं त्रिधा भूततृतीयं कवचं पुनः ॥
अस्त्रं शिरोरामभूतवर्णा ज्वालाद्यमालिनि।

सप्ताक्षरी ॐ नमो भगवति। ज्वालेत्यादिस्वरूपम्। देवि इति द्विधोच्चरेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तु च इति त्याज्यम्। द्वितीयेऽर्धे आत् च, तृतीयेऽर्द्धे च तथा इति त्याज्यम्। ज्वल इति प्रज्वल इति द्विवारम्, भूततृतीयं रं॥ १४॥

कलाशक्त्यङ्गदा बिन्दुश्चित्रायै हृदयं शिवे।
षडक्षरीयमाख्याता चित्रेति परमेश्वरि॥

कला च, शक्तिः क, अङ्गदा औ, तेन क्लौं इति॥ १५॥

अथ आसनमन्त्रः—

मायामाधारशक्तीति विलिख्य कमलासना।
यकाराद्धृदयं चेति॥ इति।

अथ प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः—

ज्ञानार्णवे—मुखवृत्तं समुच्चार्य हंसस्तु विपरीततः।
प्राणप्रतिष्ठामन्त्रोऽयम्॥

इति। मुखवृत्तं आं, हंसः विपरीतः सोहं इति त्र्यक्षरो मन्त्रः।

अथ चक्रेश्वरीमन्त्राः—

ते तु पारायणप्रकरणवशाद्विलोमेनोक्ताः—

सौभाग्यविद्या तत्राद्या वह्निवायूष्मपूर्वकम्।
वाग्भवं सान्तनिहितकलं वै कामबीजकम्॥
वह्निस्पर्शान्तरगतं सकारं शक्तिबीजकम्।
द्वितीयेयमथो माया रमा शक्तिस्तृतीयकम्॥
मायाकामौ ककुद्रुपज्योत्स्ना बिन्दुश्चतुर्थकम्।
ह्साद्ये च वाक्कामबीजे हाद्या शक्तिस्तु पञ्चमः॥
हाद्यवागादिकं षष्ठं मायाकामौ च शक्तिकम्।
सप्तमं त्वष्टमं बाला अंआंशक्तिस्तु तत्परा॥

इति चक्रेश्वरीमन्त्रा इति। सौभाग्यविद्या कादिविद्या। आद्या विलोमत उक्तत्वात्॥ ९॥ वह्निः ह, वायुः स, उष्म र, एतत्पूर्वकं वाग्भवं ह्स्रैं। हकारादिषु त्रिषु वर्णेषु मध्ये सकारान्ते ककारलकारौ संस्थाप्य कामबीजं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तेन ह्स्क्लीं। वह्निस्पर्शयोर्मध्ये सकारं संस्थाप्य, शक्तिबीजं ह्स्रौः इति॥ ८॥ माया रमा शक्तिः स्पष्टम्॥ ७॥ मायाकामौ स्पष्टम्। ककुत् व, रूप ल, ज्योत्स्ना ए, व्लें इति॥ ६॥ ह्साद्यं बीजद्वयं, हकाराद्याशक्तिः॥ ५॥ शेषं स्पष्टम्।

अथ **वाग्देवतामन्त्राः**—

स्पर्शपादयुतं रूपं सबिन्दुरतिसंस्थितम्।
सृष्टिरूपयुता माया द्वितीयं परिकीर्तितम्॥
घ्राणयुक्तं ककुद्रूपं बिन्दुतुष्टिगतं परम्।
शब्दरूपयुता बिन्दुरतिस्तुर्यं भवेच्छिवे॥
रागोपस्थस्पर्शयुता बिन्दुतुष्टिस्तु पञ्चमम्।
अग्निवायुक्रियोद्गारि शब्दयुग्रतिबिन्दुकम्॥
कालोपस्थस्पर्शशब्दयुक्तबिन्दुरतिः परम्।
पृथिव्युपस्थस्पर्शाढ्यबिन्दुतुष्टिस्तथाष्टमम्॥

इति। सृष्टिः क, ककुत् व, क्रिया ल, उद्गारी व।

अथ **कामेश्वर्यादिन्यासमन्त्राः**—

वाग्भवं चाद्यकूटं चाग्निचक्रे कामशब्दतः।
गिरिपीठे च मित्रीश ततो नाथात्मकेति च॥
जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मकेति च।
रुद्रात्मशक्तिश्रीमहाकामेश्वर्यै नमो वदेत्॥
कामराजं द्वितीयं च सूर्यचक्रे ततः परम्।
जालन्धरात्तु पीठे च षष्ठीशादिकमुच्चरेत्॥
स्वप्नादिकं ज्ञानशक्त्यात्मकविष्ण्वात्मशक्तितः।
वज्रेश्वर्यै पूर्ववच्च शक्तिबीजं तृतीयकम्॥
सोमचक्रे पूर्णगिरि ओड्डीशाच्च सुषुप्तितः।
क्रिया ब्रह्मा पूर्ववच्च भगमालिनी ह्त्ततः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बालामूलं परब्रह्म महौड्याणं ततः परम्।
परब्रह्मात्मशक्तिश्च महात्रिपुरसुन्दरी॥

इति। वाग्भवं बीजम्। आद्यकूटं सौभाग्यविद्यायाः। अग्निचक्रेत्यादि-स्वरूपम्। आद्येऽर्द्धे शब्दतः इति, द्वितीये च ततः इति च, तृतीये इति च, चतुर्थे वदेदिति च परित्यजेत्। कामराजबीजं द्वितीयकूटम्। सूर्यचक्रेत्यादिस्वरूपम्। प्रथमेऽर्द्धे ततः परं, द्वितीये आत्तु। षष्ठीशादि-कमुच्चरेदित्यनेन षष्ठीशनाथात्मके इति ज्ञेयम्। अग्रेप्येवमादिशब्दैर्ज्ञेयम्।

॥ इति प्रथमस्कन्धमन्त्राः॥

अथ **महागणपतिमन्त्रः—**

तारो लक्ष्मीस्तथा माया कामश्चन्द्रस्तथेश्वरः।
सबिन्दुर्गणपान्ते तु तये वरवरात्तु द॥
सर्वपश्चाज्जनं मे वशमानय शिरस्ततः।
अष्टाविंशाक्षरो ह्येष महागणपतेर्मनुः॥

तारादि ईश्वरान्तं बीजषट्कम्। चन्द्रः ग्लौं। सबिन्दुरीश्वरः गं। गणपतयेत्यादिस्वरूपम्। तत्र प्रथमेऽर्द्धे अन्ते तु आत्तु, द्वितीयेऽर्द्धे पश्चात् ततः इति च त्यक्त्वा।

अथ **तिरस्करिणीमन्त्रः—**

त्रितारिबाला ससार्णा तिरस्करिणिके ततः।
त्रैलोक्यमोहिनि महामाये पशुजनान्मनः॥
चक्षुःश्रोत्रतिरस्काराच्चरणं कुरुयुगं शिरः।
विलोमषट्कं मन्त्रोऽयं तर्कभूताक्षरो मतः॥

त्रितारि चतुस्तारे प्रणवं त्यक्त्वाऽवशिष्टम्। ससार्णा ॐ नमो भगवति। तिरस्करेत्यादिस्वरूपम्। तत्र प्रथमेऽर्धे ततः, द्वितीयेऽर्द्धे आत्, तृतीयेऽर्धे आच्च। कुरुयुगं कुरु कुरु। विलोमषट्कं आदावुक्तबीजानि विलोमत इति॥

अथ **सौभाग्यविद्या—**

तत्रादौ प्रकृतिभूता लोपामुद्राविद्या।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

शक्तिरूपं तथा माया मूलबीजत्रयं शिवे।
त्रिधा संस्थापयेद्देवि त्रिविधं कूटमुच्यते॥
शक्त्याद्यौ वह्निवायू च वाग्भवं समुदाहृतम्।
शक्तेः परत्र वह्निश्च कामराजं प्रकीर्तितम्॥
आदौ वायुः शक्तिकूटं लोपामुद्राप्रसादिता।
ज्योत्स्ना तुष्टिः शक्तिपरे वाग्भवं पूर्ववत्परम्॥
कामराजोपासितेयम्।

इति। शक्तिः क, रूपं ल, माया ह्रीं, एतदक्षरत्रयं त्रिधा संस्थाप्य त्रिकूटत्वं सम्पादयेत्। तत्र प्रथमकूटे शक्त्याद्यौ ककाराद्यौ वह्निवायू ह स इति द्वयम्। अथ द्वितीयकूटे शक्तेः परत्र ककारपरतः, वह्निः हकारः। ककारादादौ वह्निवायू। अथ तृतीयकूटे आदौ शक्तेरादौ, वायुः स इति लोपामुद्राविद्या॥

अस्यामेव प्रथमकूटे ज्योत्स्ना ए, तुष्टिः इ, शक्तिपरे ककारात्परत्र। अवशिष्टं पूर्ववदिति सौभाग्यविद्या॥

अथ गङ्गामन्त्रः—

अशेषतीर्थालवाले शिवपश्चाज्जटाधिरू।
ढे गङ्गे गङ्गाम्बिके च मूर्द्धा सप्ताक्षरीमुखे॥

प्रथमेऽर्द्धे पश्चात्, द्वितीयेऽर्द्धे च इति त्यक्त्वावशिष्टं स्वरूपम्। मूर्धा स्वाहा, सप्ताक्षरी ॐ नमो भगवति। त्रिंशदक्षरः॥

अथ अस्त्रमन्त्राः—

नमः सुदर्शनायोक्त्वाऽस्त्राय फट् प्रणवो मुखे।
रुद्राक्षरोऽयमिति॥

उक्त्वेति त्यक्त्वावशिष्टं स्वरूपम्। मुखे आदौ प्रणव इति॥

अथ वासुदेवमन्त्रः—

प्रणवं हृदयं चोक्त्वा भगान्ते तु वते वदेत्।
वासुदेवाय च वदेद् विद्यैषा द्वादशाक्षरी॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

भगेत्यादिस्वरूपम्। अन्ते तु वदेदिति त्यजेत्। अन्ते वर्मास्त्रहृदययुतं कृत्वा वरानने इति च ज्ञेयम्।

अथ **पथिकदेवतामन्त्राः**—

खेचरीबीजतः पश्चात् पथिकान्ते तु देवता।
भ्यो वर्मास्त्रं शिरः प्रोच्य चैवमन्यच्चतुष्टयम्॥
ग्रामान्ते तपिनीप्रान्ते निन्दान्ते प्रोच्चरेत् पृथक्।
चण्डालिनीति पश्चात्तु सर्वाग्रे पशुप्रान्ततः॥
जनदृष्टि ततो दोषायान्ते सर्वत्र वै क्रमात्।
वर्मादित्रयमालिख्य चादौ बिन्दुयुतो रसः॥
अर्केशेनेशनृपतिवर्णाः स्युः पथिकाभिधाः।

खेचरी ह्स्ख्फ्रें। पथिकदेवताभ्यो ॐ फट् स्वाहेति। शेषं स्पष्टम्।

अथ **शुक्रशापमोचनमन्त्रः**—

तारं नमो भगवति वारुणीजलमूर्त्तये।
ग्रामेश्वरि पथि प्रोक्त्वा ककाराद् देवते ततः॥
गृह्णद्वयं सर्वदोषान् मोचयद्वयमेव च।
लक्ष्मीमायाकामराजवाग्भवानि ततो लिखेत्॥
गन्धं षड्जातिसंयुक्तं प्रत्येकं बिन्दुशोभितम्।
शुक्रशापविमोचीति कायै पश्चाच्छिरो वदेत्॥

षष्ट्यक्षर इति। गन्धः श। षड्जातिसंयुक्तं शां शीं इत्यादि॥

अथ **पशुगायत्री**—

पशुपाशाय वै विद्महे शिरश्छेऽथ दाय धी।
महि तन्नस्ततो छागो लिखित्वा तु प्रचोदयात्।
चतुर्विंशत्यक्षरा॥

इति। वै अथ ततः लिखित्वा इति त्यक्त्वा, शेषं स्वरूपम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ पञ्चरत्नमन्त्राः—

गगनस्वर्गमर्त्यानि पातालं नागमेव च।
रत्नायान्ते मुखे बीजयुतानि क्रमतोऽर्चयेत्॥
महाविद्यासमारूढे रूपे बिन्दुयुते क्रमात्।
आदिव्यञ्जनयोगेन सर्वान्ते हृदयं वदेत्॥

गगनादीनि नामानि। अन्ते गगनेत्यादेरन्ते। तेन गगनरत्नायेत्यादि सिद्धम्। बीजान्येवाह—महाविद्येति। महाविद्या ऊ, रूपं ल, तेन लूं इति सिद्धम्। आदिव्यञ्जनं नाम्न आदिव्यञ्जनं, तेन ग्लूं स्लूं इत्यादिसिद्धम्। सर्वान्ते सम्पूर्णविद्यान्ते॥

अथ आनन्दभैरवमन्त्राः—

खेचर्याद्ये धरोपस्थे रूपतत्परपूर्वयाः।
विद्यारूढा बिन्दुयुता ततस्त्वानन्दभैरवा॥
यान्ते शिखाद्ययोरस्य व्यत्यासात् तुष्टिरेव च।
विद्यास्थाने तु बीजं स्यात् सुधादेव्यै च नेत्रकम्॥
तर्पयेत् पङ्क्तिवर्णेन मुनिवर्णेन वै क्रमात्।

खेचर्याद्ये हकारसकारौ, धरा क्ष, उपस्थः म, रूपं ल, तत्पर व, पूर्वं र, यस्वरूपम्, विद्या ऊ। द्वितीयमन्त्रमाह—आद्ययोरिति। हकारसकारयोरित्यर्थः। तुष्टिः ई।

अथ प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः—

पाशं मायामङ्कुशं च शब्दाद् वाय्वन्तसप्तकम्।
अग्निः प्रीतिगतः प्रीतिः पृथ्वी वायुस्तथाऽजपा॥
माया प्रीतिः सप्तदश सर्वे बिन्दुयुताः प्रिये।
तत्तन्नाम विलिख्याथ प्राणा इह तथा पुनः॥
प्राणाः पुनः सप्तदश नाम जीव इह स्थितः।
पुनः सप्तदशाख्या च सर्वं लिख्येन्द्रियाणि च॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इह स्थितानि तान्येव नाम वाङ्मन आलिखेत्।
श्रोत्रत्वक्चक्षुरथ वै जिह्वा घ्राणं च पाद वै।
प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु वै शिरः॥
षट्कं चान्त्यगतं चेति प्राणस्य स्थापने मनुः।
एकोनत्रिंशदधिकशतवर्णो भवेत् प्रिये॥

पाशं आं, अङ्कुशं क्रों, शब्दाद् यकारात्, वाय्वन्तं सकारान्तम्, अग्निः प्रीतिगतः हों, प्रीतिः ॐ, पृथ्वी क्ष, वायुः स। तत्तन्नाम त्रिपुरसुन्दरी प्राणा इत्यादि। आख्या नाम, तानि सप्तदश। षट्कं अन्त्यगतं क्षं सं इत्यादि॥

अथ **अमृतेश्वरीमन्त्रः—**

वाग्भवं चापि पातालं कालाग्निममृतं पुनः।
अन्त्यबाणस्ततः पश्चादमृते चामृतोद्भवे॥
अमृतेश्वरि वै चामृतवर्षिणि तथामृतं।
स्रावयद्वितयं मूर्धा पञ्चत्रिंशाक्षरो मनुः॥

वाग्भवं ऐं, पातालं प्लूं, कालाग्निं झ्रौं, अमृतं जूं, अन्त्यबाणः सः, अमृतेत्यादि स्रावयेत्यन्तं स्वरूपम्। प्रथमेऽर्धे च, द्वितीये वै च तथा इति त्यजेत्। मूर्धा स्वाहा।

अथ **दीपिनीमन्त्रः—**

दीपिनीमधुना वक्ष्ये वाग्भवं वदयुग्मकम्।
वाग्वादिन्यथ वाक्कामौ क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय॥
महाक्षोभं कुरुद्वन्द्वं कामशक्ती ततः परम्।
मोक्षं कुरुद्वयं देवि प्रासादश्च पराद्यकः॥
सप्तत्रिंशद्वर्णमयः।

इति। कामशक्ती बाला द्वितीयतृतीये। प्रासादश्च पराद्यकः ह्सौः स्हौः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

अथ गोपालमन्त्राः—

कामः कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभा।
य मूर्धाष्टादशार्णोऽयं गोपालस्य मनुः स्मृतः॥

अथ बटुकमन्त्रः—

तारो माया बटुकाय आपदुद्धारणाय च।
कुरुद्वयं ततः पश्चाद् बटुकाय द्वितीयकम्।
बटुकाद् भैरवाख्यस्य मन्त्रो द्वाविंशदक्षरः॥

द्वितीयकं माया।

अथ अन्नपूर्णामन्त्रः—

तारो लक्ष्मीस्तथा माया कामः सप्ताक्षरी ततः।
माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितात् ततः।
मन्नं देहि शिरश्चायं भूगुणार्णः समीरितः॥

तारादिबीजानि चत्वारि। सप्ताक्षरी ॐ नमो भगवति। माहेश्वरीत्यादिस्वरूपम्। आत् तः इति त्यजेत्।

अथ गुरुत्रयमन्त्रः—

चतुस्तारं मूलविद्या चाजपा सोऽहमेव च।
मध्ये शिवः स्वरूपान्ते निरू च पणहेतवे।
गुरवे हृदयं चाष्टाविंशत्यर्णो मनुर्भवेत्॥

मूलविद्या बाला। मध्ये हंसः सोऽहमित्यनयोः, तेन हंसः शिवः सोऽहमिति।

सप्तार्णा सोऽहमजपा शिवः स्वच्छप्रकाशतः।
विमर्शहेतवे देवि परमाद् गुरवे नमः॥
रदनार्णो मनुरयम्।

इति। सप्तार्णा चतुस्तारबाले। सोऽहमित्यादिस्वरूपम्। तः देवि आत् इति त्यजेत्। रदनार्णो द्वात्रिंशदर्णः। गुरोराद्यास्त्रयोदश॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अजपान्ते, स्वात्मारामपरमानन्दे पञ्जरात्।
विलीनतेजसे वै परमेष्ठिगुरवे नमः॥
द्विचत्वारिंशदर्णोयम्।

इति। गुरोराद्यास्त्रयोदश गुरुमन्त्रस्य सोऽहमित्यन्तम्। शेषं स्पष्टम्।

अथ आत्मपादुका—

तारो मायाऽजपा सोऽहं शिरश्चाष्टाक्षरी मता।

अथ सञ्जीवनी—

लक्ष्मी माया कामराजो नभो गणपकालिके।
शक्तिः सकलमाया च कामराजो भयस्ततः।
माया लक्ष्मीरूनविंशवर्णः सञ्जीवनीमनुः॥

नभः हं। गणेत्यादिस्वरूपम्। शक्तिः बालान्त्यम्। भयः ब्लीं।

अथ मुद्रामन्त्राः—

पञ्च बाणाश्चाङ्कुशो वै खेचरी च महेश्वरि।
प्रासादपरा वाग्बीजं पाशमायेऽङ्कुशद्वयम्॥
जिह्वात्वचौ बिन्दुयुते पञ्च बाणाश्च यादयः।
चत्वारो वायुचरमा मुखवृत्तगतास्तथा।
बिन्दुनापि तथा युक्तास्त्रयोदश समीरिताः॥

पञ्चबाणाः द्रां (१), द्रीं (२), क्लीं (३), ब्लूं (४), सः (५)। अङ्कुशः क्रों (६), खेचरी ह्स्ख्फ्रें (७), प्रासादपरः ह्सौः (८), वाग्बीजं ऐं (९), पाशमाये आं ह्रीं (१०), अङ्कुशद्वयं क्रों क्रों (११), जिह्वात्वचौ धं थं (१२), पञ्चबाणाश्च यादयः द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः यां रां लां वां सां (१३) इति।

अथ धूपमन्त्रः—

कामराजसुरभ्यन्ते तेजसे वह्निवल्लभा।
नवार्ण इति॥

सुरभीत्यादिस्वरूपम्। अन्ते इति त्यजेत्। वह्निवल्लभा स्वाहा।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

अथ कामधेनुमन्त्रः—

तृतीयकूटं लक्ष्मीश्च काम वै दु च घे अमो।
घे वै वरात्तु दे विच्चे स्फुरयुग्मं रमात्रयम्॥
मूर्धा मायाऽथ तारश्च लोपामुद्राद्य एव च।
त्रयस्त्रिंशद्वर्णमयः कामधेनुमनुः शिवे॥

तृतीयकूटं पञ्चदश्याः। कामेत्यादिस्वरूपम्। प्रथमेऽर्द्धे वै च, द्वितीये आत्तु इति त्यज्येत्। रमा श्रीं। लोपामुद्राद्यः हादिविद्याद्यकूटम्।

अथ योगिनीसमष्टिविद्या—

समस्तात् प्रकटाद् गुप्त तथा गुप्ततरादपि।
सम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भाच्च रहस्यतः॥
अतिपूर्वरहस्याच्च परापररहस्यतः।
योगिनीश्रीचक्रपादुकाभ्यो नम उदीरयेत्।
नन्दसागरवर्णेयं पुष्पाञ्जलिविधौ शिवे॥

अथ अखण्डमन्त्रः—

तुरीया च महौड्याणपीठे चर्या ततः परम्।
नाथात्मके तुरीयातीतदशा परमेश्वरि॥
धिष्ठायके शान्त्यतीता शक्त्यात्मकपरादथ।
ब्रह्मात्मकप्रकाशाच्च विमर्शात् सामरस्यतः॥
आत्मशक्तिश्रीमहात्रिपुराद्वै सुन्दरीति च।

तुरीया तुरीयाविद्या। महौड्याणेत्यादिस्वरूपम्। प्रथमेऽर्द्धे ततः परं, द्वितीये परमेश्वरि, तृतीये आदथ, चतुर्थे आच्च आत् तः, पञ्चमे आद्वै इति त्यज्येत्।

अथ पूर्त्तिविद्या—

सर्वानन्दमयाद् बैन्दवचक्रे च तथा पर।
ब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिश्च सर्वतः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मन्त्रपीठयोगिवीरवाग्विद्येति षडीरयेत्।
अन्ते सर्वत्रेश्वरीति सकलाज्जगदेव च॥
उत्पत्तिमातृका पश्चात् सचक्रा च सदेवता।
सासना च समुद्रा च ससिद्धिः सायुधास्तथा॥
सवाहना सालङ्काराथ सचक्रेशिका ततः।
परया चाथापरया परा च परया तथा।
सपर्यया च सर्वोपचारैः सम्पूजिता ततः॥
सन्तर्पितास्तु सर्वादौ स्यात् तुरीया महेश्वरि।
ऋषिसागरचन्द्रार्णा सम्प्रोक्तेयं महेश्वरि॥

प्रथमेऽर्द्धे आत् च तथा। द्वितीये च। सर्वतः सर्व इत्येतस्मान्मन्त्रपीठेत्यादिकं, तदन्ते ईश्वरीति, तेन सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरीत्यादि सर्वविद्येश्वरीत्यन्तम्। चतुर्थे आत् एव च। पञ्चमे पश्चात् च। षष्ठे च तथा। सप्तमे अथ ततः। अष्टमे चाथ च तथा। नवमे च ततः। सर्वादौ सम्पूर्णविद्यादौ। सप्तचत्वारिंशदुत्तरशताक्षरो मन्त्रः।

अथ पञ्चपञ्चिका:—

लक्ष्मीबीजेन चाद्या स्याल्लक्ष्म्यम्बा परमेश्वरि।

स्पष्टम्॥ १॥

तारो रमापुटा माया कमले कमलालये।
प्रसीदयुग्ममाद्यादि विलोमेन महेश्वरि॥
महालक्ष्म्यै च हृदयं वसुपक्षाक्षरो मनुः।
महालक्ष्मीति सम्प्रोक्ता॥

इति। रमापुटा माया श्रीबीजपुटिता हृल्लेखा। आद्यादि प्रणवादिचतुष्टयं विलोमेन॥ २॥

लक्ष्मी माया कामराजस्त्रिशक्तिस्त्र्यक्षरी स्मृता।

त्रिशक्तिरिति विद्यानाम॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

रमा सहकलान्ते तु माया लक्ष्मीस्ततः परम्।
सप्ताक्षरी समाख्याता साम्राज्येति महेश्वरि॥

स ह क ल इति स्वरूपम्॥ ४॥

आत्माष्टाक्षरविद्यैव परं ज्योतिः प्रकीर्तिता।
कोशाम्बेति महादेवि शृणुष्वान्यत् समाहिता॥ ५॥

तारः परा निष्कलाच्च शाम्भवीति प्रकीर्तिता॥ ६॥

अजपा तु पुरा प्रोक्ता मातृकापि महेश्वरि॥ ७॥

पञ्चकामास्तु संप्रोक्ताः .... ॥ ८॥

.... माया मूलद्वितीयकम्।
वाग्भवं तुर्यबाणश्च मरुच्छ्रोत्रमरुद्गुणाः॥
बिन्द्वाढ्यवामनेत्रस्था पञ्चकामाः प्रकीर्तिताः।
एषा कल्पलता प्रोक्ता पञ्च कामेश्वरी शिवे॥

मूलद्वितीयकं क्लीं, तूर्यबाणः ब्लूं। मरुत् स, श्रोत्र त, मरुद्गुणः र, तेन स्त्रीं॥ ९॥

तारमायापुटं देवि त्रिपुराम्बाद्यबीजकम्।
सरस्वत्यै च हृदयं रुद्रार्णा परमेश्वरि।
पारिजातेश्वरी॥

इति। त्रिपुराम्बाद्यं ह्स्रैं॥ १०॥

कामवाक्शक्तियोगेन कुमारी त्र्यक्षरी मता॥ ११॥

पञ्चबाणैः पुरा प्रोक्तैः पञ्चबाणेश्वरी भवेत्॥ १२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तारो मायाऽजपा सञ्जीवनि चामृतबीजकम्।
जीवं प्राणग्रन्थि वै स्थं कुरुयुग्मान्त्यबाणकम्।
मूर्धा चामृतपीठेयं त्रयोविंशाक्षरी भवेत्॥

अमृतबीजं जूं। सञ्जीवनीत्यादिस्वरूपम्। वै इति त्यजेत्। अन्त्यबाणः सः॥ १३॥

वदयुग्मं वाग्वादिनि त्रिपुराम्बाद्यमेव च।
क्लिन्ने क्लेदिनि पश्चात्तु महाक्षोभं कुरुद्वयम्॥
द्वितीयं प्रणवो मोक्षं कुरुयुग्मं तृतीयकम्।
बिन्द्वाढ्यं सर्गरहितं भूगुणार्णा समीरिता॥
सुधासूरिति विख्याता।

त्रिपुराम्बाद्यं ह्स्त्रैं, द्वितीयं त्रिपुराम्बाद्वितीयं ह्स्क्लीं, तृतीयं तस्या एव, सर्गरहितं बिन्दुयुक्तं ह्स्त्रौं॥ १४॥

अमृतेश्वरी तृतीया चात्र प्रोक्ता महेश्वरि॥ १५॥

अन्नपूर्णाऽपि देवेशि पुरा प्रोक्तैव सा भवेत्॥ १६॥

रागकालोपस्थयुतः स्पर्शो बिन्द्वाढ्यतुष्टिगः।
महाचण्ड तथा तेजः सङ्कर्षण च कालि च॥
मन्थाने सर्गयुक्तेजः सिद्धलक्ष्मीमनुः स्मृतः।
ऋषिचन्द्राक्षरी त्वेषा॥

रागः ज, कालः झ, उपस्थः म, स्पर्शः र, बिन्द्वाढ्यतुष्टिगः ईंकारगतः, स्तेन ज्झ्म्रीं। महेत्यादिस्वरूपम्। द्वितीयेऽर्द्धे तथा च त्यजेत्। सर्गयुक्तेजः हः॥ १७॥

चतुस्तारं ततो बाला तारो हृदयमेव च।
भगाद् वतीति सप्तार्णा राजमातं च गीश्वरि॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वाष्टकान्ते जनमनोहरीति मुखाच्च रञ्।
जिनि कामात् तथा माया लक्ष्मीस्तद्वत्तु राजतः॥
तथा स्त्रीपुरुषादेवं दुष्टपूर्वं मृगादथ।
सत्त्वाल्लोकाद् वशङ्करि जनं मे वशमानय॥
शिरो विलोमबाला च त्रितारी च लिखेच्छिवे।
मनुस्तु राजमातङ्ग्या रूपाम्बरधरार्णकः।

भगेत्यादिस्वरूपम्। तत आत् इति त्यजेत्। तेन ॐ नमो भगवति इति सप्तार्णा। अस्मिन्नेवार्द्धे च इति त्यजेत्। सर्वेत्यष्टधा संस्थाप्य प्रथमस्यान्ते जनमनोहरि, द्वितीयस्यान्ते मुखरञ्जिनि, तत्पश्चात्काममाया-लक्ष्मीबीजत्रयम्, ततः राजत इत्यादि पञ्चकान्ते वशङ्करि इति। तेन सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करीत्यादि सर्वलोकवशङ्करीत्यन्तं ज्ञेयम्॥ १८॥

लक्ष्मी माया पुनर्लक्ष्मी भुवनेशी तु त्र्यक्षरी॥ १९॥

तारवाक्चन्द्रशक्तिश्च कामः सप्ताक्षरी ततः।
वार्तालि युग्मं वाराहिद्विर्वाराहमुखि द्वयम्॥
वाक्चन्द्रो वाङ्मनः पञ्च तदादौ तु क्रमाल्लिखेत्।
अन्धे अन्धिन्यै च रुन्धे रुन्धिन्यै तद्वदेव हि॥
जम्भे जम्भिन्यै च स्तम्भे स्तम्भिन्यै पुनरेव तु।
मोहे मोहिन्यै द्वितीयात् त्रयं सर्वात्तु दुष्टतः॥
प्रदुष्टानां च सर्वेषां वाक्चित्ताच्चक्षुरेव च।
मुखाद् गतिमतिक्रोधजिह्वास्तम्भं कुरुद्वयम्॥
शीघ्रं वश्यं कुरुद्वन्द्वं वाक्चन्द्रो वाग्भवस्तथा।
चतुर्धा लाङ्गली पश्चात् कवचास्त्रे शिरस्तथा॥
वाराह्या मनुरेषः स्यादृतुपक्षेन्दुवर्णकः।

तारेत्यादि बीजपञ्चकं, चन्द्रः ग्लौं, सप्ताक्षरी ॐ नमो भगवति, वाराहिद्वि द्वयमित्यर्थः। नमः पञ्च पञ्चधा नम इत्येतल्लिखेत्। तदादौ नम

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

इत्येतस्यादौ। क्रमात् अन्धे अन्धिन्यै इत्यादिकम्। द्वितीयात् त्रयं आदावुक्तं पञ्चबीजेषु द्वितीयात् वाग्भवमारभ्य त्रयं बीजत्रयं, सर्वेत्यादिस्वरूपम्। आत्तु तः च आत् एव च आत् इति त्यजेत्। लाङ्गली ठः॥ २०॥

॥ इति पञ्चपञ्चिका:॥

अथ **वज्रेश्वरीमन्त्रः**—

वाङ्माया सर्वकार्यार्थ ततः साधिनि वै ततः।
वज्रेश्वरि वज्रपदे वज्रपञ्जरमध्यगे॥
मायाक्लिन्ने वाग्भवं चाङ्कुशो नित्यमदद्रवे।
वर्मशङ्कुस्तथा माया वज्रनित्या च यै नमः॥
अश्वाब्धिवर्णः।

इति। सर्वकार्येत्यादिस्वरूपम्। प्रथमेऽर्द्धे ततः वै ततः। तृतीये मायेति बीजं, च इति त्यजेत्। अङ्कुशः क्रों, शङ्कुः फ्रें, अन्त्येऽर्द्धे च त्यजेत्।

अथ **त्रिपुरसुन्दरीसमयविद्या**—

कामो भगवति प्रान्ते तुर्यबाणस्तदन्ततः।
कामेश्वरि ततो माया सर्वसत्त्ववशङ्करि॥
अन्त्यबाणस्त्रिपुरभैरवि वाग्भवमेव च।
विच्चे कामो महात्रिपुरसुन्दर्यै च हृत्ततः॥
गगनाम्बुधिवर्णोऽयम्।

तुर्यबाणः ब्लूं, अन्त्यबाणः सः।

अथ **आम्नायसमयदेवताः**—

वह्निवायुस्पर्शयुता शुद्धविद्येति त्र्यक्षरी।
आदौ चतुस्तारयुता सप्तार्णेयं समीरिता॥

वह्निः ह, वायुः स, स्पर्शः र, तद्युता शुद्धविद्या ह्स्रैं ह्स्रीं ह्स्रौः इति। इति **पूर्वाम्नायसमयविद्या**॥ १॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुस्तारं तार वाक् च क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे।
कुले शक्तिस्तु मन्त्रोऽयं मुनिचन्द्राक्षरः स्मृतः॥
क्लिन्नेत्यादिस्वरूपमिति **दक्षिणाम्नायसमयविद्या॥ २॥**

चतुस्तारं रप्रसादपरा त्रिः खेचरी च सौः।
भगशब्दाच्च वत्यम्बे द्वन्द्वमानन्दभैरवम्॥
अघोरेद्वितीयं चाघोरमुखीति ततः परम्।
छ्रां छ्री किणिद्वयं विच्चे षण्ड पञ्चमखेचरी॥
आनन्दभैरवद्वन्द्वं लक्ष्मी पञ्चमषण्डकः।
प्रासादास्तु पराख्यश्च तादृशः परमेश्वरि।
मन्त्रोऽयं परमेशानि पक्षवेदाक्षरो मतः॥

र[युतः]प्रसादपरा ह्स्रौः, खेचरी ह्स्ख्फ्रें, आनन्दभैरवद्वन्द्वं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं स्ह्क्ष्म्ल्व्र्यीं। षण्डपञ्चमः ह्स्रौं, तादृशः पराख्यः प्रासादः पराप्रासादः रयुतः षण्ड इति **पश्चिमाम्नायसमयविद्या॥ ३॥**

चतुस्तारं तारशङ्कू महाचण्डयोगेश्वरी।
चतुर्दशार्णा॥

इति। शङ्कु फ्रें। **इत्युत्तराम्नायसमयविद्या॥ ४॥**

उपस्थमृद्धिपायू च स्पर्शो ज्योत्स्ना महा ततः।
चाणाऽहङ्कारशब्दौ च प्रीतिस्मृतिपताकिका॥
गन्धो वरु लिखेदेष मुनिचन्द्राक्षरः स्मृतः।

उपस्थम् म, ऋद्धिः ख, पायुः भ, स्पर्शः र, ज्योत्स्ना ए, महाचाणस्वरूपम्। अहङ्कारः ड, शब्दः य, प्रीतिः ओ, स्मृतिः ग, पताकिका ए, गन्धः श, वरुस्वरूपम्। **इत्यूर्ध्वाम्नाय समयविद्या॥ ५॥**

सेन्दुक्लिन्नास्थितो वह्निर्वायुर्व्यञ्जनरूपवान्।
सेन्दुज्वाला सुन्दरी च शिवोऽहं सर्वबीजकः॥
शिवसम्पुटबालान्त्यमहं सूर्याक्षरी त्वियम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बिन्दुयुतनित्यक्लिन्नास्थो वह्निः हिं, वायुर्व्यञ्जनं स्, सेन्दुज्वाला औं, सुन्दरी अः शरीरः, शिवः अं, अहं स्वरूपं, सर्वबीजकः ह्सौः, शिवसम्पुटं बालान्त्यं अं सौः अं, अहस्वरूपम् इत्यनुत्तराम्नायसमयविद्या ॥ ६ ॥

अथ बलिमन्त्राः—

तत्रादौ मण्डलपूजनमन्त्रः—

वाग्भवं च ततो मायां व्यापकान्मण्डलाय हृत्।
व्यापकेत्यादिस्वरूपम्। आत् इति त्यजेत्। हृत् नमः।
एह्येहि देवीपुत्रान्ते बटुकान्नाथतः शिवे।
कपिलान्ते जटाभारभासुरान्ते त्रिनेत्रतः॥
ज्वालामुखात् सर्वविघ्नान् नाशय द्वितीयं पठेत्।
सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्णद्वयं शिरः॥
बटुकस्य बलेर्मन्त्रः पञ्चपञ्चाशदक्षरः।

प्रथमेऽर्द्धे अन्ते आत् तः शिवे, द्वितीये अन्ते अन्ते तः, तृतीये आत् पठेदिति त्यक्त्वा शेषं स्वरूपम्। नाशय गृह्ण इति च द्विवारम्॥ १ ॥

योगिनीभ्यः शिरः सर्वयोगिनीभ्योऽथ वर्म वै।
अस्त्रं शिरश्च यामादौ मन्त्रः सप्तदक्षाक्षरः॥

शिरः स्वाहा। अथ वर्म वै इति त्यक्त्वा शेषं स्वरूपम्। यामिति सर्वत्र मन्त्रादौ॥ २ ॥

आद्यर्णजातयोर्वर्मस्थानक्षेत्रात्तु पाल वै।
धूपदीपाच्च सहितं बलिं गृह्णद्वयं ततः॥
सर्वान् कामान् पूरयकं स्यात्पञ्चत्रिंशदक्षरः।

आद्यर्णः क्षेत्रपाल इत्यस्य क्षकारः, तस्य जातयः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः इति। वर्म हुं, स्थानेत्यादिस्वरूपम्। आत्तु वै आच्च ततः इति परित्यजेत्। कं शिरः स्वाहा इति॥ ३ ॥

 Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

गां गीं गूं गणपान्ते वै तये वरवराच्च द।
सर्वजनं मे वशमात् ततो नय बलिं वदेत्।
गृह्णद्वयं शिरश्चायं स्यादेकत्रिंशदक्षरः॥

प्रथमेऽर्द्धे अन्ते वै आच्च, द्वितीये ततो वदेत् इति त्यक्त्वा, शेषं स्वरूपम्॥ ४॥

तारो माया सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व च भू च ते।
भ्यो हुं मूर्धा सर्वभूतेभ्य एष बलिर्न मम।
अष्टाविंशाक्षरो ह्येषः॥

इति। सर्वविघ्नेत्यादिस्वरूपम्। च च आत् इति त्यजेत्। मूर्धा स्वाहा॥ ५॥

क्षेत्रनाम क्षेत्रपाल राजराजेश्वरात्ततः।
इमां पूजां बलिं गृह्णद्वयमग्निप्रिया तथा।
द्वाविंशार्णः समुद्दिष्टः॥

इति। क्षेत्रनाम तत्तत् क्षेत्रनाम काशीत्यादि। क्षेत्रपालेत्यादिस्वरूपम्। आत्ततः इति त्यजेत्। अग्निप्रिया स्वाहा॥ ६॥ इति बलिमन्त्राः॥

अथ नवरत्नमन्त्रः—

पञ्चरत्नं सम्पुटितं लक्ष्मीमायाद्वयेन तु।
नवरत्नाख्यबीजानि।

इति। लक्ष्मीमायाद्वयेन ह्रीं श्रीं इत्यनेन।

अथ समर्पणमन्त्रः—

इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याद्यैवस्थासु मनसा ततः॥
वाचा च कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण च।
शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं चाथ तद्वदेत्॥
सर्वं श्रीगुरुदेवतासमर्पितमथाऽस्तुतः।
शिरःसमर्पणे मन्त्र एकसप्ततिवर्णकः॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

इति। सुषुप्त्य आत् इति छेदः। द्वितीये आद्वै ततः, तृतीये च च, चतुर्थे चाथ वदेत्, पञ्चमे अथ तः इति त्यक्त्वा, शेषं स्वरूपम्। शिरः स्वाहा।

अथ उच्छिष्टश्यामलामन्त्रः—

उच्छिष्टचाण्डाली मातङ्गी सर्वाज्जनतो वशं।
करी शिरोमुखे देवि वाग्भवं हृदयं शिवे।
द्वाविंशत्यक्षरी॥

इति। आत् तो इति त्यजेत्। शिरः स्वाहा। मुखे सर्वादौ। हृदयं नमः।

अथ उच्छिष्टभैरवमन्त्रः—

त्रितारं तत उच्छिष्टभैरवादेहि युग्मकम्।
बलिं गृह्ण युगं वर्मास्त्रं शिरोमनुरीरितः॥
द्वाविंशत्यक्षर।

इति। उच्छिष्टेत्यादि स्वरूपम्। आत् इति त्यजेत्। एहि गृह्ण इति द्विः। भैरव एहीत्यसन्धिः।

॥ इति द्वितीयस्कन्धमन्त्राः ॥

अथ निम्बपुष्पमन्त्रः—

तारोऽस्त्रं निम्बपश्चात्तु निवासिनि च निम्ब वै।
प्रिये सर्वामयाद्धारिणि वै पर च देवता॥
प्रियकारिणि वर्मान्ते मूर्धा द्वात्रिंशदक्षरः।

इति। निम्बेत्यादिस्वरूपम्। प्रथमेऽर्द्धे पश्चात्तु च वै, द्वितीये आत् वै च त्यजेत्।

अथ दमनप्रोक्षणमन्त्रः—

अघोरे वाग्भवं घोरे माया सर्व च तस्तथा।
सर्वशर्वेभ्यो च घोरतरे लक्ष्मी नमस्तु ते॥
अस्तु रुद्राच्च रूपेभ्यो माया लक्ष्मीर्मुखे ध्रुवः।
रामाग्निवर्णः॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति। वाग्भवं, माया, लक्ष्मीः, माया लक्ष्मीः, ध्रुव इति बीजानि। ध्रुवः प्रणवः। प्रथमेऽर्द्धे च तथा, द्वितीये च तु, तृतीये आच्च इति त्यजेत्। शेषं स्वरूपम्। मुखे सर्वादौ।

अथ अग्न्युत्तारणमन्त्रः—

रुद्रयामले कालीरहस्ये—

भुवनेशीं रमां चोक्त्वा अग्ने वै अमृतान्मयम्।
कुरु मृत्युञ्जयान्त्यस्थयुगलं वै शिरोन्त्यगम्॥
अग्न्युत्तारणमन्त्रोऽयं तिथ्यर्णः संप्रकीर्तितः।
जपेत् षोडशवारं च पुनः षोडशधा जपेत्॥
अग्ने पदस्य स्थाने तु कृत्वा यन्त्रादिनाम वै।

इति। अग्ने इत्यादिस्वरूपम्। वै आत् इति त्यजेत्। मृत्युञ्जयान्त्ययुगलं जूं सः इति। शिरोन्त्यगं स्वाहा इत्यस्यान्ते अग्ने अमृतेत्यसन्धिः।

अथ यन्त्रगायत्री—

यन्त्रराजाय विद्माद्धे वर प्राद्याय धीमहि।
तन्नो यन्त्रः प्रचो वै दयाच्चतुर्विंशदक्षरी॥
आत् आत् वै इति त्यजेत्। शेषं स्वरूपम्।

॥ इति तृतीयस्कन्धमन्त्राः ॥

अथ आम्नायमन्त्राः—

सबिन्दुविजयातुष्ट्यौ ज्वालासर्गयुतात्ततः।
त्र्यक्षरी शुद्धविद्येयम्॥ १ ॥

चित्रास्थो विजयावर्णो वाग्भवं संप्रकीर्तितम्।
शक्तिरूपयुता तुष्टिः कामराजं सबिन्दुकम्॥
ज्वालान्ते सुन्दरी तस्मिन् वायुः शक्त्याख्यमीरितम्।
इयं बाला त्र्यक्षरी॥ इति॥ २ ॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वह्निवायू सृष्टिरूपस्पर्शाऽहङ्कारकाः शिवे।
शुद्धविद्या त्रिबीजस्था द्वादशार्धा भवेदियम्॥ ३॥

उक्ता राजमातङ्गी॥ ४॥

ङेसप्तार्णो महापश्चाच्छुकाय त्रिभुतो वना।
लङ्काराय राजमदमर्दनाय ततो वदेत्।
शीघ्रं राजा च नं मे वशमानय शिरस्तथा।
मनुः शुकश्यामलायाश्चन्द्रवेदाक्षरः स्मृतः॥

इति। ङेसप्तार्णा ॐ नमो भगवते इति। महेत्यादि मानयेत्यन्तं स्वरूपम्। पश्चात् तो ततो वदेत् च इति त्यजेत्॥ ५॥

सप्तार्णा शां शारिके च सकलान्ते कला तथा।
कोविदे मम देवीं च बोधयेति द्विधा शिरः॥
शारिकाश्यामलामन्त्रश्चन्द्ररामाक्षरः स्मृतः।

इति। शां शारीत्यादि बोधयेत्यन्तं स्वरूपम्। च अन्ते तथा च इति त्यजेत्॥ ६॥

सप्तार्णा वीं च वीणायै मम सङ्गीतशब्दतः।
विद्यां प्रयच्छ तत्पश्चाच्छिरः स्यात् परमेश्वरि॥
सङ्गीतश्यामलामन्त्रो रामपक्षार्णकः स्मृतः।

वीमित्यादि प्रयच्छेत्यन्तं स्वरूपम्। च शब्दतः इति त्यजेत्॥ ७॥

सप्तार्णा वें वेणवे च साहित्यात् पूर्ववत्परम्।
साहित्यश्यामलामन्त्रः॥

इति। वें इत्यादिस्वरूपम्। साहित्यशब्दात्परं उर्वरितं पूर्ववत् सङ्गीतश्यामलावत्॥ ८॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

हसन्ती हसितालापे मातङ्गि परिचारिके ॥
भयविघ्नापदां नाशं कुरुयुग्मं त्रिलाङ्गली ।
वर्मास्त्रं च शिरश्चान्ते तारो माया मुखे भवेत् ॥
हसन्तीश्यामलामन्त्रो मुनिरामाक्षरो मतः ।

इति। हसन्तीत्यादि कुरुद्वयमित्यन्तं स्वरूपम्। लाङ्गली ठः। मुखे सर्वादौ तारो माया च। लघुश्यामलागुरुत्रयमहागणपतिमन्त्रा उद्धृताः ॥ १४ ॥

अथ **पीठत्रयमन्त्राः**—

अनुत्तरस्तत्परश्च बिन्दुयुक्तस्ततः परम् ।
शक्तिबीजं कामगिरिपीठाय ब्रह्म तत्परम् ॥
आत्मशक्त च ये पश्चान्नमोऽष्टादशवर्णकः ।
भुवनेशी रमा शक्तिः पश्चात् पूर्णगिरीति च ॥
विष्ण्वात्मान्ते पूर्ववत् स्याद् वर्णसंख्यापि पूर्ववत् ।
शक्तिर्माया रमा जालन्धरपीठाय तत्परम् ।
रुद्रात्म पूर्ववत् पश्चान्मुखे स्यात्सप्तबीजकम् ॥

इति। अनुत्तरः अ, तत्परः आ। कामगिरीत्यादिस्वरूपम्। तत्परं च पश्चात् इति त्यजेत्। अग्रेप्येवं ज्ञेयम्। सप्तबीजकं चतुस्तारो बाला च ॥ १७ ॥

समयविद्योद्धृता ॥ १८ ॥ इति **पूर्वाम्नायः** ।

सौभाग्यविद्योद्धृता ॥ १ ॥

तारोऽग्निरूपस्पर्शास्तु तुष्टिबिन्दुयुताः शिवे ।
बगलामुखि सर्वात्तु दुष्टात्तु प्रदु वै ततः ॥
ष्टानां वाचं मुखं देवि पदं स्तम्भय वै ततः ।
जिह्वां कीलय बुद्धिं च विनाशय द्वितीयकम् ॥
तारः शिरोऽयं बगलामन्त्रो नन्दाग्निवर्णकः ।

अग्निः ह, रूपः ल, स्पर्शः र, तुष्टिबिन्दुयुताः ह्लरीं। बगलेत्यादि

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाशयेत्यन्तं स्वरूपम्। आत्तु आत्तु वै ततः देवि वै ततः च इति त्यजेत्। द्वितीयकं ह्ल्रीं॥ २॥

वाराहीबटुकभैरवतिरस्करिणीमन्त्रा उद्धृताः॥ ५॥

शङ्खवस्त्रं फद्वितुर्यस्थं बिन्दुयुक्तं ततः परम्।
भुवनेशी रमा चैषः षडर्णो ह्यष्टभैरवः॥

इति। शङ्खु फ्रें, फस्वरूपम्। द्वितीयतुर्यस्वरस्थितम्॥ ६॥

भैरवनामानि—

मन्थानश्चाथ फट्कारः खचक्रो रविभक्षकः।
एकात्मानन्दचण्डौ च नभो निर्मल एव च॥
डमर्वाद्यो भास्करश्च प्रोक्ता देव्यष्टभैरवाः। इति।
त्रितारः पूर्णगिर्याख्यः सिद्धामन्त्रः षडक्षरः।

इति। पूर्णगिर्याख्यः द्वितीयपीठमन्त्रगतबीजत्रयं ह्रीं श्रीं सौः इति॥ १४॥

तासां नामानि—

महापूर्वा दुर्मना च सुन्दरी विश्वपूर्विका।
दला करालिका तद्वच्चिबिडा च ततः परम्॥
भीमा कराली च खराननेति परिकीर्तिता।
विशालनयना चेति नवाम्बान्ताः प्रकीर्तिताः।
भुवनेशी रमा हुं फट् बटुको वेदवर्णकः॥

महादुर्मना विश्वदला। इति॥ २३॥

नामानि—

स्कन्दश्चित्रो विरिञ्चिश्च बटुकत्रयमुच्यते। इति॥ २६॥
लोपामुद्राकूटयुग्मं तुरीया तदनन्तरम्।
चतुर्विंशत्यक्षरो वै पदद्वयमनुः स्मृतः।
प्रकाशश्च विमर्शश्च पदयुग्मं प्रकीर्तितम्॥

इति॥ २७॥

समयविद्या उद्धृता॥ २८॥ इति दक्षिणाम्नायः॥ ४६॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

लोपामुद्रा भुवनेशी अन्नपूर्णा चोद्धृता ॥ ३ ॥

सबिन्दुतुष्टिर्माया च कामराजस्ततः परम्।
कूटद्वयं तु सौभाग्यविद्यायास्तदनन्तरम्।
मन्त्रः कामकलायास्तु वेदरूपाक्षरो मतः ॥ ४ ॥
आद्यद्वितीयपीठं तु दूतीमन्त्रः षडक्षरः।

कामगिरिपीठ–पूर्णगिरिपीठयोर्बीजानि।

अथ नामानि—

योनिस्तदादिसिद्धादिनाथा चैवं महादिका।
दिव्ययोनिः शङ्खयोनिस्तदाद्या सिद्धनाथका ॥
पद्मयोनिस्तथा सापि चाम्बान्ता नवदूतिकाः।

तदादिसिद्धादिनाथा योनिसिद्धनाथा इति महापूर्विका। एतयोरेव नाम्नोर्महापदमादौ। तदाद्या शङ्खयोनिसिद्धनाथेति। तथा सापि पद्मयोनिसिद्धनाथेत्यपि ॥ १३ ॥

तारो माया रमा शक्तिर्माया पञ्चाक्षरो मनुः।
शक्तिस्थाने कामबीजं वाग्भवं च क्रमात् पठेत्।
अग्निसूर्यसोमपूर्वमण्डलानां मनुः स्मृतः ॥ १६ ॥

पञ्चषट्द्वित्रितुर्यं वै भैरवार्णान् क्रमान्न्यसेत्।
वीराणां मन्त्र एषः स्यात् पञ्चवर्णो महेश्वरि।

पञ्च ह्रीं, षट् श्रीं, द्वि फट्, त्रि फां, तुर्यं फीं इति।

नामानि—

सृष्टिः स्थितिश्च संहारो रक्तो वै यम एव च।
मृत्युर्भद्रोऽथ च पराक्रमो मार्तण्ड एव च।
कालाग्निरुद्रश्च दश वीराः स्युर्भैरवान्तकाः ॥

भैरवान्तकाः सृष्टिवीरभैरवेत्यादिरूपाः ॥ २६ ॥

चतुस्तारं कामबीजं रमा माया च शक्तिकम्।
रमा मायेति नाथानां मन्त्रः स्याद् दशवर्णकः ॥

शक्तिकं शक्तिबीजम्।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ नामानि—

मङ्गला चण्डिका ज्येष्ठा कन्तुकी पटहा ततः।
श्रेष्ठा कूर्माथ धनदा गन्धा स्यात्तु ततः परम्।
मतङ्गा चम्पका पूज्या तथा कैवर्त्तका पुनः।
मतङ्गगमना सूर्यनभोभक्षे च स्तोतिका॥
रूपका दंष्ट्रका धूम्राक्षा ज्वाला तत्परत्र तु।
गान्धारा चाथ गगनेश्वरा माया महादिका॥
नित्या शान्ता तथा विश्वा कामुकोमा ततः परम्।
सुभगा च महालक्ष्मीः विद्या मीनाऽमृता ततः॥
चण्डान्तरिक्षा सिद्धा च श्रद्धानन्ता च शम्बरा।
उल्का ततस्तु त्रैलोक्या भीमा वै राक्षसी ततः॥
मलिना च प्रचण्डा चानङ्गा विधिचरा ततः।
अथानभिहिता चाभिमहा वै सुन्दरी ततः॥
विश्वेश्वरा च कौला च तत्पश्चात्तु महेश्वरा।
महाकाला महादेवी तत्पश्चादभया स्मृता॥
विकारा च महापूर्वा सृकालास्या ततः परम्।
पूता च शर्वरी व्योमा नाथाश्चाष्टगुणाष्टकाः॥
नाथान्ताः स्युर्महादेवीनाम्ना सिद्धाः प्रकीर्तिताः।

सूर्यभक्षा नभोभक्षा इति द्वयम्। महादिका महामाया, महापूर्वा महाविकारा॥ ८०॥ समयविद्योद्धृता। इति **पश्चिमाम्नायः॥ १३७॥**

लोपामुद्राख्यविद्यायां मायाद्वयविहीनतः।
तुरीयाया भवेन्मन्त्रो गुणभूमिमितार्णकः॥

प्रथमद्वितीय मायाविहीनतः॥ १॥

वाक्तुष्टिबिन्दुशक्तिश्च सौभाग्ये कूटयुग्मकम्।
संसृष्टि नित्ये स्वाहेति सबिन्द्वग्निः स्थितीति च॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

पूर्णे हृत्तुष्टिबिन्दुश्च महासंहारिणीति च।
कृशे चण्डात्तु कालि फट् एहि स्फें च महानघे॥
अनन्तभास्करि चण्डकाल्यस्त्रं तुष्टिबिन्दुकम्।
महासंहारिणीत्यादि फडन्तं पूर्ववत्पुनः॥
हमित्यादि हृदन्तं च समित्यादि शिरोन्तकम्।
तृतीयकूटं तस्यास्तु विलोमाच्च त्रिबीजकम्।
महार्धायास्तु मन्त्रोऽयं भूतनन्दाक्षरो मतः।

वाक् वाग्भवम्, तुष्टिबिन्दुः ईं, शक्तिः बीजम्, समित्यादिस्वरूपमिति। सबिन्द्वग्निः हं। इति च हृत् तुष्टिबिन्दुश्च इति च आत्तु च अस्त्रं इति त्यजेत्॥ २॥

पाशमायाङ्कुशा एहि परमे वै श्वरी शिरः।
अश्वारूढेयमाख्याता द्वादशाक्षररूपिणी॥

पाशं आं, अङ्कुशं क्रों, एहीत्यादिस्वरूपम्। वै इति त्यजेत्॥ ३॥

वाग्भवं चाथ मिश्राम्बायै ततो हृदयं वदेत्।
मिश्राम्बाया मनुः प्रोक्तः सप्तवर्णसमन्वितः॥ ४॥
वाङ्मायाशक्तिवदयुग्वाग्वादिनि शिरस्तथा।
वाग्वादिनीमनुः प्रोक्तो रामरूपार्णकः शिवे॥

वाग्भवं, शक्तिः बीजम्, वदयुक् वदद्वयम्॥ ५॥ नवमुद्रामन्त्रा उद्धृताः॥ १४॥

वाग्भवं भुवनेशानी रमा बाला षडक्षरी।
वीरावलीमनुः प्रोक्तः पञ्चधा परमेश्वरि॥

तन्नामानि—

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
वीरावलीति संयुक्ता नामान्ते परमेश्वरि॥ १९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समयविद्या उद्धृता॥ २०॥ इत्युत्तराम्नायः॥ १५७॥

प्रासादविद्या चैकार्णा पराद्या सह रूपिणी।

प्रासादविद्या प्रासादपरा ह्सौः, पराद्या पराप्रसादा, तस्य स्वरूपमाह—सहरूपिणीति स्हौः।

अत्र यद्यपि पारायणोपयोगित्वेन विद्याद्वयरूपेणोद्धारोऽस्ति, तथापि तन्त्रान्तरानुरोधेन मूलतन्त्रोक्तसंख्यानुरोधेन चाम्नाये इयमेकैव विद्या द्वयक्षरी॥ १॥

परा च शक्तिरूपा वै।

शक्तिबीजरूपा॥ २॥

चतुस्तारं खेचरी च शक्तिरन्त्यात् त्रितारिका।
पराशाम्भवमन्त्रोऽयं नवार्णस्तु समीरितः॥

खेचरी ह्स्ख्फ्रें, शक्तिबीजं, अन्त्यात् विपरीता॥ ३॥

अकारादिक्षकारान्तं मालिनी मातृकामयी॥ ४॥

उग्रं वीरं चाथ महाविष्णुं चाथ ज्वलं च तं।
सर्वतो च मुखं पश्चान्नृसिंह भीषणं तथा॥
भद्रं वै मृत्युमृत्युं नमाम्यहं रदनाक्षरः।
मन्त्रराज इति॥

उग्रमित्यादि स्वरूपम्। चाथ चाथ च च पश्चात् तथा वै इति त्यजेत्॥ ५॥

बालाबीजत्रयं कादिविद्याकूटत्रयादिगम्।
अन्तेऽजपाक्रमाद्विंशदर्णः स्याद् गुरुमण्डले॥

प्रथमबीजं प्रथमकूटमित्यादि। सर्वान्ते अजपा।

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

तन्नामानि—

आत्मा चाथ परात्मा च शाम्भवश्चापि तत्परः।
चिन्मुद्रो वाग्भवो नीलकण्ठः सम्भ्रम एव च॥
चित्प्रसन्नश्च विश्वश्चाप्रकाशः स्वप्रकाशकः।
गुरुमण्डलकं देवि प्रोक्तं द्वादशसंख्यकम्॥ १७॥

समयविद्योद्धृता॥ १८॥ इत्यूर्ध्वाम्नायः॥ १७५॥

अनुत्तराम्नायसमयविद्योद्धृता॥ १॥

लक्ष्मीं मायां कामराजं वाग्भवं शक्तिबीजकम्।
वेदाद्यं च द्वितीयाद्ये विद्या सौभाग्यसंज्ञिता॥
विलोमपञ्चबीजानि विद्यैषा षोडशाक्षरी।

वेदाद्यं प्रणवः। द्वितीयं माया। आद्यां श्री। पञ्चबीजानि आद्यानि॥ २॥

कामबीजं कालसङ्कर्षिणी स्वाहा नवाक्षरी।
चतुस्तारयुता वक्त्रे कालसङ्कर्षिणी त्वियम्।

कालेत्यादिस्वरूपम्॥ ३॥

यद्यपि समयविद्या अन्ते अपेक्षिता, तथैवान्यत्र दर्शनात्। तथाप्यनुत्तराम्नायविद्यानां अत्युत्तमत्वाविष्करणायादावेवाभिहिता। अत्र श्रीविद्याप्रतिपादकेषु तन्त्रेषु विद्याचतुष्टयस्य प्राधान्यमुक्तम्। ताः विद्यास्तु पराप्रासाद कामराजविद्या लोपामुद्रा परा चेति। देवसिद्धमानवेषु तद्विद्याप्रवर्त्तका गुरवः दिव्यौघाः सिद्धौघा मानवौघा इति। उपासकेन तेषां मूलगुरूणां नाम स्मर्तव्यमिति। तन्नामानि तन्त्रेषूपदिष्टानि। अतस्तेषामुद्धारो लिख्यते—

परमाच्छिव आद्यः स्यात्ततः कामेश्वरी स्मृता।
दिव्यौघश्च महौघश्च सर्वः प्रज्ञादिदेविका॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकाशश्चेति दिव्यौघो दिव्यश्चित्रस्ततः परम्।
कैवल्यश्चाथ तत्पश्चान्महोदय इति स्मृतः॥
सिद्धौघश्चाथ चिद्विश्वशक्तिश्चाथ रमस्ततः।
कमलश्च परस्तद्वन्मनोहर इति स्मृतः॥
स्वात्मः प्रतिभ इत्येवं मानवौघः समीरिताः।
आनन्दनाथशब्दान्ताश्चाम्बान्तास्तु स्त्रियः स्मृताः॥
मुनिवेदेभसंख्याताश्चतुस्तारं तथादितः।
पराप्रासादविद्यौघ एवं सम्यङ् निरूपितः॥

परमशिव आद्यः, प्रज्ञादेवी, चिदानन्दनाथः इति पराप्रासादौघः। एतस्यैवोर्ध्वौघ इत्यपि संज्ञा। तन्त्रान्तरे त्वस्यैव लोपामुद्रौघत्वमुक्तम्॥ १॥

पराभट्टारिका चाघोरः श्रीकण्ठस्ततः परम्।
अथ शक्तिधरः क्रोधीशश्च त्र्यम्बक एव च॥
पराभट्टारकश्चेति दिव्यौघः संप्रकीर्तितः।
प्रतिभश्चाथ वीरो वै संविदः संविदेव च॥
सिद्धौघ इति विख्यातः सदाशिवमहेश्वरौ।
संविच्छ्रीविद्यकः संवित् ततः श्रीमदनुत्तरः॥
योगश्च संविदित्येवं मानवौघः समीरितः।
परौघश्चेति संप्रोक्तो मूलमादौ तु सर्वतः॥

सविद् इति संविदम्बा, श्रीविद्यकः श्रीविद्यानन्दनाथः। इति परौघः॥ २॥

परप्रकाशश्च परशिवः शक्तिः परादिकाः।
कौलेश्वरश्च शुक्लाद्या देवी चाथ कुलेश्वरः॥
कामेश्वरी चेति देवि दिव्यौघः संप्रकीर्तितः।
भोगः क्लिन्नश्च समयः सहजश्च ततः परम्॥
सिद्धौघो गगनो विश्वो विमलो मदनस्तथा।
भुवनश्च तथा लीलः स्वात्मा च प्रिय एव च॥
मानवौघ इति प्रोक्तः कामराजौघ ईरितः।

शक्तिः परादिका पराशक्तिः। शुक्लादेवी। इति कामराजौघः॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तन्नामानि—

आत्मा चाथ परात्मा च शाम्भवश्चापि तत्परः।
चिन्मुद्रो वाग्भवो नीलकण्ठः सम्भ्रम एव च॥
चित्प्रसन्नश्च विश्वश्चाप्रकाशः स्वप्रकाशकः।
गुरुमण्डलकं देवि प्रोक्तं द्वादशसंख्यकम्॥ १७॥

समयविद्योद्धृता॥ १८॥ इत्यूर्ध्वाम्नायः॥ १७५॥

अनुत्तराम्नायसमयविद्योद्धृता॥ १॥

लक्ष्मीं मायां कामराजं वाग्भवं शक्तिबीजकम्।
वेदाद्यं च द्वितीयाद्ये विद्या सौभाग्यसंज्ञिता॥
विलोमपञ्चबीजानि विद्यैषा षोडशाक्षरी।

वेदाद्यं प्रणवः। द्वितीयं माया। आद्यां श्री। पञ्चबीजानि आद्यानि॥ २॥

कामबीजं कालसङ्कर्षिणी स्वाहा नवाक्षरी।
चतुस्तारयुता वक्त्रे कालसङ्कर्षिणी त्वियम्।

कालेत्यादिस्वरूपम्॥ ३॥

यद्यपि समयविद्या अन्ते अपेक्षिता, तथैवान्यत्र दर्शनात्। तथाप्यनुत्तराम्नायविद्यानां अत्युत्तमत्वाविष्करणायादावेवाभिहिता। अत्र श्रीविद्याप्रतिपादकेषु तन्त्रेषु विद्याचतुष्टयस्य प्राधान्यमुक्तम्। ताः विद्यास्तु पराप्रासाद कामराजविद्या लोपामुद्रा परा चेति। देवसिद्धमानवेषु तद्विद्याप्रवर्त्तका गुरवः दिव्यौघाः सिद्धौघा मानवौघा इति। उपासकेन तेषां मूलगुरूणां नाम स्मर्तव्यमिति। तन्नामानि तन्त्रेषूपदिष्टानि। अतस्तेषामुद्धारो लिख्यते—

परमाच्छिव आद्यः स्यात्ततः कामेश्वरी स्मृता।
दिव्यौघश्च महौघश्च सर्वः प्रज्ञादिदेविका॥

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकाशश्चेति दिव्यौघो दिव्यश्चित्रस्ततः परम्।
कैवल्यश्चाथ तत्पश्चान्महोदय इति स्मृतः॥
सिद्धौघश्चाथ चिद्विश्वशक्तिश्चाथ रमस्ततः।
कमलश्च परस्तद्वन्मनोहर इति स्मृतः॥
स्वात्मः प्रतिभ इत्येवं मानवौघः समीरिताः।
आनन्दनाथशब्दान्ताश्चाम्बान्तास्तु स्त्रियः स्मृताः॥
मुनिवेदेभसंख्याताश्चतुस्तारं तथादितः।
पराप्रासादविद्यौघ एवं सम्यङ् निरूपितः॥

परमशिव आद्यः, प्रज्ञादेवी, चिदानन्दनाथः इति पराप्रासादौघः। एतस्यैवोर्ध्वौघ इत्यपि संज्ञा। तन्त्रान्तरे त्वस्यैव लोपामुद्रौघत्वमुक्तम्॥ १॥

पराभट्टारिका चाघोरः श्रीकण्ठस्ततः परम्।
अथ शक्तिधरः क्रोधीशश्च त्र्यम्बक एव च॥
पराभट्टारकश्चेति दिव्यौघः संप्रकीर्तितः।
प्रतिभश्चाथ वीरो वै संविदः संविदेव च॥
सिद्धौघ इति विख्यातः सदाशिवमहेश्वरौ।
संविच्छ्रीविद्यकः संवित् ततः श्रीमदनुत्तरः॥
योगश्च संविदित्येवं मानवौघः समीरितः।
परौघश्चेति संप्रोक्तो मूलमादौ तु सर्वतः॥

सविद् इति संविदम्बा, श्रीविद्यकः श्रीविद्यानन्दनाथः। इति परौघः॥ २॥

परप्रकाशश्च परशिवः शक्तिः परादिकाः।
कौलेश्वरश्च शुक्लाद्या देवी चाथ कुलेश्वरः॥
कामेश्वरी चेति देवि दिव्यौघः संप्रकीर्तितः।
भोगः क्लिन्नश्च समयः सहजश्च ततः परम्॥
सिद्धौघो गगनो विश्वो विमलो मदनस्तथा।
भुवनश्च तथा लीलः स्वात्मा च प्रिय एव च॥
मानवौघ इति प्रोक्तः कामराजौघ ईरितः।

शक्तिः परादिका पराशक्तिः। शुक्लादेवी। इति कामराजौघः॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परप्रकाशश्च परा शक्तिः कामेश्वरी ततः।
वज्रेश्वरी च भगमालिनी लोपादिमुद्रका॥
अगस्त्य इति दिव्यौघः कुलो धर्मादिचार्यकः।
मुक्तकेशीश्वरी दीपकलः सिद्धौघ ईरितः॥
विष्णुदेवो मातृगुप्तस्तेजोदेवस्ततः परः।
ओजोदेवो मनोजयः परमः स्वात्म एव च।
ज्ञानश्च मानवौघोऽयं लोपामुद्रौघ ईरितः।

लोपामुद्रा धर्माचार्यः। इति लोपामुद्रौघः॥ ४॥

अथ चरणवासना—

अत्र पूर्णदीक्षावता चरणचतुष्टयस्य मूर्ध्नि वर्णमयत्रिकोणकोणेषु मध्ये च न्यासः कर्त्तव्यः। स च न्यासः पराप्रसादादिविद्याचतुष्टयस्यापि पृथग्विधः। तत्रोपयुक्तमन्त्राश्चरणवासनामन्त्राः।

अन्त्यबाणो वह्निरेफसर्गः शक्तिस्तथाजपा।
विसर्गाद्यौ च तौ सोऽहं शक्तिः सर्गो द्वितीयकः॥
हंसः सोऽहं शक्तिसर्गौ द्वितीयो हंस एव च।
शिवः सोऽहं क्रमादेतच्चतुष्टयमुदीरितम्॥
बाणबाणाश्वनन्दार्णाश्चतुस्तारं मुखे भवेत्।
प्रकाशचरणाभ्यां हृदेवमन्यत्र सर्वतः॥
विमर्शश्चाथ आनन्दो ज्योतिष्पादस्ततः परम्।

अन्त्यबाणः सः। वह्निरेफसर्गः ह्रः। शक्तिः बीजम्॥ १॥

विसर्गाद्यौ तौ अः ह्रः सौः इति। द्वितीयकः ह्रः। एवमन्यत्र विमर्शचरणाभ्यां नम इत्यादि। सर्वतः सर्वत्र। एवमग्रेऽपि ज्ञेयम्।

वह्निवायुस्पर्शयुतज्वालासर्गो मरुन्मुखः।
अङ्गदा बिन्दुसहिता द्वयं सर्गस्ततः परम्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शक्तिः सर्गस्ततो हंसः शिवः सोऽहमिति क्रमात्।
भूपक्षरामनागार्णाश्चतुस्तारं मुखे भवेत्।
प्रकाशश्च विमर्शश्च द्वयं तद्वत् तुरीयकम्॥

वह्निवायुस्पर्शयुतज्वालासर्गः ह्स्रौः। मरुन्मुखः स्हौः। अङ्गदा बिन्दुसहिता औं। द्वयं ह्स्रौः स्हौः। द्वयं प्रकाशविमर्शचरणाभ्यां नम इति। तुरीयं ज्योतिष्पाद।

शक्तिः शक्तिः शक्तिस्तारमायावर्मास्त्रमेव च।
शक्तितारावघोरे च माया बाणान्त्य एव च॥
परमादथ घोरे च वह्निस्पर्शरतीन्दवः।
घोररूपेऽथ माया च घोरान्मुखि च भीमभी॥
षणि पश्चाद् वमद्वन्द्वं पिबद्द्वन्द्वं नभोऽङ्गदां।
रर वै रुरु तारश्च मायास्त्रं चेति वै क्रमात्॥
भूचन्द्रभूतरामाब्धिवर्णाः स्यात्क्रमशः शिवे।
आनन्दचरणं देवि पराम्बात्रितयं तथा।
मध्यमारभ्याग्रकोणपर्यन्तं तु क्रमान्न्यसेत्।

शक्तिः बीजम्। अघोरे इत्यादि रुरु इत्यन्तं स्वरूपम्। च माया, बाणान्त्यः सः, एव च, आदथ, च, वह्निस्पर्शरतीन्दवः ह्रूं, अथ माया च, आत् च, पश्चात्, द्वन्द्वं, नभोऽङ्गदा हौं, वै इति त्यजेत्। आनन्दचरणाभ्यां नमः। पराम्बाश्रीपादुकां पूजयामि इति त्रयं मध्यदक्षवामाग्रकोणेषु न्यसेत्।

शक्तितारौ तथा माया बिन्द्वाढ्यश्च प्रसादयुक्।
मध्ये नमः शिवायेति पराप्रासाद एव च॥
शक्तितारौ ततो माया वर्मास्त्रं षोडशाक्षरी।
महाद्यो मातृकानन्दनाथश्चानेन व्यापकम्॥
पराप्रासादविद्यायाश्चरणस्य तु वासना।

बिन्द्वाढ्यः प्रसादः प्रासादपरायुक् द्वयम्। तयोमर्ध्ये नमः शिवाय इति। पराप्रासादः स्हौः, महामातृकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामीति व्यापकं कुर्यात्। नामैकदेशे नामग्रहणमिति पराचरणवासनेति पाठः। इति **पराप्रासादविद्याचरणवासना॥**

रक्तं शुक्लं मिश्रमपि निर्वाणं कूटयोजितम्।
व्यष्ट्या समष्ट्या हंसश्च सोऽहं चोभयमेव च॥
हंसः शिवश्चोभयं च विपरीतं महेश्वरि।
मुनिनागेभरामाश्विवर्णाः स्युः क्रमतः शिवे॥
रक्तं शुक्लं मिश्रमपि निर्वाणं चरणं न्यसेत्।
कामराजाख्यविद्याया भवेच्चरणवासना॥

उभयं च विपरीतं सोऽहं हंस इति। तेन क ए ई ल ह्रीं हंसः रक्तचरणाभ्यां नम इत्यादि। इति **कामराजविद्याचरणवासना**।

लोपामुद्राख्यविद्याया एवमेव महेश्वरि।
प्रकाशं च विमर्शं च द्वयं निर्वाणमेव च।
लोपामुद्राख्यविद्याया भवेच्चरणवासना॥

द्वयं प्रकाशविमर्शेति। इति **लोपामुद्राविद्याचरणवासना**।

पराविद्यां विसर्गं च मुखे निक्षिप्य विन्यसेत्।
वेदवेदर्त्तुदिग्वर्णा लोपामुद्रावदीश्वरि।
इयं पराख्यविद्याया भवेच्चरणवासना॥

लोपामुद्रावत्। प्रकाशविमर्शेत्यादिकम्। इति **पराचरणवासना**।

चित्प्रकाशानन्दनाथ सहजाच्च पराम्बिका।
आदौ खेचरिबीजं च प्रासादपरमेव च॥
प्रासादपरखेचर्यौ लक्ष्मी माया च वाग्भवम्।
लक्ष्मीकामाख्यकूटं च शान्तानन्दाच्च नाथ वै॥
सहजाच्च पराम्बा स्यादथ मन्त्रत्रयं शृणु।
त्रिपुराम्बान्त्ययुगलं शुक्लविद्या महा ततः॥
पीठशुक्लात् पुष्प ततः शुक्लमण्डल वै महा।
पीठशुक्लाद् रूपशुक्लमन्त्रादथ महा ततः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पीठशुक्ल द्वीपशुक्ल मुद्रा पश्चान्महा ततः।
पीठशुक्ल नति महा प्रकाशानन्दनाथ च॥
आद्यद्वयं हादिविद्या वाक्कूटमिति शङ्करि।
साद्यमाद्ययुगं देवि शुक्ले रक्तपदं क्षिपेत्॥
प्रकाशिनि पराम्बेति प्रकाशानन्दनाथके।
आद्यद्वयं कामकूटं रक्तविद्येयमीरिता॥
हाद्यं साद्यं चेति युग्मं शुक्ले मिश्रपदं क्षिपेत्।
आद्ययुग्मं तथैवान्त्ये शक्तिकूटं ततः परम्।
मिश्रविद्येयमाख्याता चाद्या शुक्लाख्यका भवेत्॥

चित्प्रकाशेत्यादि अम्बिकेत्यन्तं स्वरूपम्। आच्च इति त्यजेत्। अम्बिका अम्बा। शान्त्येत्याद्यम्बेत्यन्तं स्वरूपम्। आच्च वै, आच्च इति त्यजेत्। त्रिपुराम्बान्त्यं ह्स्रौः इति द्वयम्। शुक्लेत्यादि नन्दनाथेत्यन्तं स्वरूपम्। ततः आत् ततः वै आत् आदथ ततः पश्चात् तत इति त्यजेत्। आद्य ह्स्रौः। द्वयं द्विधां। आद्ययुगं ह्स्रौः इति, साद्यं स्ह्रौः इति। सर्वत्र शुक्लपदस्थाने रक्तपदं देयम्। रक्तविद्येत्यादि। प्रकाशानन्दनाथेत्यत्र प्रकाशिनि पराम्बेति योजनीयम्। आद्यद्वयं स्ह्रौः इति। हाद्यं साद्यं च ह्स्रौः स्ह्रौः इति। सर्वत्र शुक्लपदस्थाने मिश्रपदं देयम्। आद्ययुग्मं ह्स्रौः स्ह्रौः इति। आद्याशुक्लाख्यका शुक्लविद्या।

वागानन्दभैरवं श्रीनवात्मानन्दनाथ च।
वाग्भवं छ्रां छ्रीं च किणिद्वयं विच्चे च खेचरी॥
निष्कलात् समयादेषा पराम्बेति प्रकीर्तिता।
श्रीपरापावकात् सर्वाराध्यात् सर्व च मूर्धतः।
श्रीपुरान्नाथ सर्वद्वै ततो गुरु स्वयं गुरु।
तथा शम्भुगुरुप्रान्ते मुखे चानन्दभैरवः॥
श्रीपरापावको ह्येषः कामधेनुं कुलाच्छृणु।
लक्ष्मीकामदुघे शक्तिकूटमादौ समीरयेत्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अमोघे वरदे विच्चे स्फुरयुक् कमलात्रयम्।
स्वाहा माया तथा तारो वाक्कूटं हादिसंस्थितम्॥
अहमस्मि च निर्वाणानन्दनाथ ततः परम्।
हादिविद्या तथानन्ता हंसः सोऽहं ध्रुवस्तथा॥
बिन्दुप्रतिष्ठासंस्थाग्निर्ज्वालाबिन्दुगतस्तथा ।
कामकूटं मुखे स्वात्मप्रकाशानन्दनाथकः॥
पक्षोऽर्कऋषितर्कौ च वसुतर्कौ च षड्रसौ।
नखोदेवाः सुराभ्राब्धिः क्रमात् संख्या समीरिता॥

वाक् वाग्भवबीजम्। आनन्दभैरवं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं। श्रीनवेत्यादिस्वरूपम्। च वाग्भवं च द्वयं च इति त्यजेत्। निष्कलसमयपराम्बा इयम्। श्रीपरेत्यादिस्वरूपम्। आत् आत् च तः आत् आद्वै ततो तथा। प्रान्ते मुखे अन्त्याद्ययोः। कुलकामधेनुं शृणु। आदौ शक्तिकूटं लक्ष्मीबीजम्। कामदुधे स्वरूपं अमोघेत्यादिस्वरूपम्। स्फुरयुक् द्विधा। हादिविद्यावाक्कूटं अहमस्मीत्यादिस्वरूपम्। च इति त्यजेत्। अनन्ता अः। हंसः सोऽहं स्वरूपम्। बिन्दुप्रतिष्ठासंस्थाग्निः हां। ज्वालाबिन्दुगतः हौं। स्वात्मप्रकाशानन्दनाथः। द्विर्द्वादश-सप्तषष्टि-अष्टषष्टि-षट्षष्टि-विंशति-त्रयस्त्रिंशत्त्रयस्त्रिंशच्चत्वारिंशदर्णाः क्रमादेता नवविद्याः॥ इति **शाम्भवचरणविद्याः॥**

कादिहाद्योर्व्यष्टिभेदात् समष्ट्या च महेश्वरि।
अन्ते सबिन्दुतुष्टिश्च हंसः सोऽहं तथा द्वयम्।
हंसः शिवः सोऽहमपि स्वरान्त्यौ चापि योजयेत्।
प्रकाशं च विमर्शं च द्वयं निर्वाण एव च॥

सबिन्दुतुष्टिः ईं। स्वरान्त्यौ अं अः। इति **शाम्भवचरणवासना॥**

अथ मध्ये च संकलात् सच्चिदानन्दनाथकम्।
निष्कलानन्दनाथं च सर्वानन्दाच्च नाथकम्॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सबिन्दुतुष्ट्याद्ययुक्तं विन्यस्याथ महेश्वरि।
सच्चिदानन्दपरमसंविदि तुष्टियुग्मकम्।
बिन्द्वाढ्यं सपरार्धात्तु कलानाथाच्च वक्त्रतः।
श्रीपादुकायै हृदयमेवमन्यद् द्वयं भवेत्।
वक्त्रस्थाने पठेद् देवि बिन्दुस्तनयु वै गलम्।
व्यञ्जकादपि रेखातो योनिमेवं क्रमान्न्यसेत्॥
सबिन्दुतुष्टिगाश्चाग्निवायुशक्तिक्रियास्ततः ।
मायाहीनं तथा लोपामुद्रावाक्कूटकं शिवे॥
अन्ते सबिन्दुशान्त्याढ्यं पुनः सादिचतुष्टयम्।
कादित्रयं लादियुग्ममेकमन्त्यं समीरयेत्॥
इयं कामकलाविद्या षोडशार्णा समीरिता।
प्रकाशानन्दनाथं च विमर्शाम्बा क्रमाच्छिवे॥
बिन्द्वाढ्यशिववह्न्यन्ते बालातार्तीयमुच्चरेत्।
क्रमादेतन्मुखे क्षिप्त्वा तार्तीयं तु द्वयान्ततः॥
प्रकाशविमर्शात्मकं परमाच्छ्रियमेव च।
श्रीगुरुं तन्नामयुतमथ हंसः शिवस्ततः॥
सोऽहं निर्वाणतः पादुकां पूज च ततः परम्।
यामि हन्मन्त्रमिति वै न्यासः कामकलाख्यकः॥

मध्ये चेत्यादिन्यासस्थानम्। सकलसच्चिदेत्यादि नामत्रयम्। ईकारयुक्तम्। सच्चिदेत्यादिपादुकायै इत्यन्तं स्वरूपम्। बिन्द्वाढ्यं तुष्टियुग्मकं ईं ईं। आत्तु, आच्च, तः इति त्यजेत्। वक्त्रपदस्थाने बिन्दुस्तनयुगलम्। व्यञ्जकरेखा योनि इति च पठेत्। अग्निः ह, वायुः स, शक्तिः क, क्रिया ल, सबिन्दुतुष्टिगताः ह्स्क्लीं इति। प्रकाशेत्यादिनामद्वयं अं हं इत्यन्ते। बालातार्तीयं सौः। तार्तीयं द्वयान्ततः अं हं सौः। नामत्रयादौ क्रमेण त्रयं योजनीयम्। हंस इत्यादिस्वरूपम्। ततः तः च ततः परं इति त्यजेत्। हृन्मन्त्रं नमः। इति कामकलाविद्या। परापादुकेत्यपि नामान्तरम्।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ कादिहादिविद्ययोः पादुकाक्रमः—

कूटत्रयान्ते सर्वान्ते शक्तिबीजं निवेशयेत्।
हंसः सोऽहं चोभयं च हंसान्त्यं शिवमध्यकम्॥
तद्द्वयं चेति शक्त्यादौ चैकैकस्मिन्निवेश्य च।
रक्ताच्छुक्लान्मिश्रतश्च निर्वाणादपि पादुका॥
भ्यामन्ते हृदयं चेति हादिविद्याविधावपि।
प्रकाशाच्च विमर्शाच्चोभयादपि सुरेश्वरि।
चतुष्पादज्योतिष्मती शेषं पूर्ववदेव हि॥

इति। सर्वान्ते समष्ट्यन्ते। उभयं हंसः सोऽहं। हंसान्त्यं शिवमध्यकं। उभयं हंसः शिवः सोऽहं हंसः इति। शक्त्यादौ शक्तिबीजादौ। कादिविद्यायां रक्तपादुकाभ्यां नमः। हादिविद्यायां प्रकाशपादुकाभ्यां नम इत्यादि। महापादुका पूर्वमुद्धृता।

अथ सप्तविंशतिरहस्यानि—

स्वराः समस्ताः स्पर्शास्तु व्यस्ता याद्याः समस्ततः।
क्रियज्ञानेच्छानन्दचिच्छक्तयः पञ्चसंख्यकाः॥
रूपान्ताः पञ्च सद्याद्याः सद्योजातोऽथ शङ्करि।
वामदेवस्तथाऽघोरस्ततस्तत्पुरुषः शिवे॥
ईशान इत्यात्मकाच्छ्रीपरा भट्टारिका तथा।
अम्बाश्रीपादुकां पूजयामि हृत् कीर्तयेत् क्रमात्॥
शक्तिबीजं सर्वतत्त्वं स्वरान्ते विनिवेशयेत्।
चिदाद्याः शक्तयो देवि ईशानाद्यान् विलोमतः॥
काद्यन्तेषु क्रमाच्छक्तिं पृथिव्यादींश्च योजयेत्।
समस्तयाद्यं ततस्तु नियत्यादिशिवान्तकम्॥
समस्तशक्तिं सद्यादिपञ्चकं चापि योजयेत्।
सप्तविंशतिसंख्याता विद्याः स्युः परमेश्वरि।

इति। स्वराः समस्ताः अकारादिविसर्गान्ताः। एकविद्यादौ पठनीयाः। स्पर्शाः कादिमान्ताः। व्यस्ता एकैकशः। याद्याः समस्ताः स्वरवत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्रियेत्यादि शक्तिपञ्चकम्। रूपान्ताः क्रियशक्तिरूपेत्यादि। सद्योजातेत्यादि नामपञ्चकम्। आत्मकात् सद्योजातात्मकश्रीपराभट्टरिकेत्यादि। स्वरान्ते सर्वतत्त्वं चिदादिशक्तिः ईशानादिनामानि च विलोमेन योजयेत्। तथा हि—

अं अः सौः सर्वतत्त्वचिदानन्देच्छाज्ञानक्रियाशक्तिरूपेशानतत्पुरुषाघोरवामदेवसद्योजातात्मकश्रीपराभट्टारिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ १॥

कं सौः पृथिवीतत्त्वक्रियाशक्तिरूपसद्योजातात्मकश्रीपराभट्टारिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २॥

खं सौः अप्तत्त्वज्ञानशक्तिरूपवामदेवात्मकश्रीपराभट्टारिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३॥ इत्यादि—

मं सौः पुरुषतत्त्वचिच्छक्तिरूपेशानात्मकश्रीपराभट्टारिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ २६॥

यं—क्षं सौः नियतिकालरागविद्याकलामायाशुद्धविद्येश्वरसदाशिवशक्तिशिवतत्त्वक्रियाज्ञानेच्छानन्दचिच्छक्तिरूपसद्योजातवामदेवाघोरतत्पुरुषेशानात्मकश्रीपराभट्टारिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥ ३७॥

अथ पञ्चाम्बामन्त्राः—

आदिनाथ तथा व्योमातीताम्बाद्या प्रकीर्तिता।
अनादिनाथव्योमेश्वर्यम्बा स्यात्तु द्वितीयका॥
अनामय तथा नाथ व्योमगाम्बा तृतीयका।
अनन्तनाथव्योमात्तु चारिण्यम्बा तुरीयका॥
चिदाभासानन्दनाथ व्योमस्थाम्बा तु पञ्चमी।
अन्ते श्रीपादुकायै च हृदादौ तु द्वितारिका॥
नन्ददिक्पङ्क्तिरुद्रार्कवर्णा एते क्रमात् स्मृताः।

इति। द्वितारिका ह्रीं श्रीं। इदं सर्वत्रादौ। अम्बान्ताः सर्वे मन्त्राः। आद्ये तथा, तृतीये तथा, चतुर्थे आत्तु इति त्यजेत्। श्रीपादुकेत्यादिन्यासोपयोगित्वेनोक्तम्।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अथ नवनाथमन्त्राः—

उन्मनी समना तद्वद् व्यापिका शक्तिरेव च।
ध्वनिश्च ध्वनिमात्रा चानाहतेन्दुस्ततः परम्॥
बिन्दुश्चेति नव प्रोक्ता आकाशान्ता महेश्वरि।
आनन्दभैरवस्थास्तु वर्णा एकैकशः क्रमात्॥
योज्याः सबिन्दवश्चादौ द्वितार्यादि च पूर्ववत्।

इति। आकाशान्ता उन्मन्याकाशः समनाकाश इत्यादि। आनन्दभैरवस्था वर्णाः सबिन्दवः। हं सं क्षं मं लं वं रं यं ऊं इत्यैकैकमादौ योजयेत्। तदादौ द्वितारी।

अथ षोडशमूलविद्यामन्त्राः—

स्वच्छप्रकाशाच्च परिपूर्णाच्चापि परापर।
सिद्धविद्याकुलाद्योगिनीमायाग्न्यशिववर्णिका ॥

स्वच्छेत्यादिस्वरूपम्। आच्च आच्चापि आत् इति त्यजेत्। माया बीजं। इति कुलयोगिन्यम्बा॥ १॥

स्वात्मानं बोधयद्वन्द्वं प्रासादद्वयसंपुटम्।
रुद्राक्षरी त्वियं प्रासादात् पराम्बा प्रकीर्तिता॥

बोधयेत्यस्य द्वन्द्वं द्विधोच्चारणम्। प्रासादद्वयं प्रासादपरा पराप्रासादश्च॥ २॥

वाग्भवं कामबीजं च तुर्यबाणस्ततः परम्।
क्लिन्ने क्लेदिनि वै पश्चान्महामद तथा द्रवे॥
कामः क्लेदययुग्मं च क्लां कामो मोदयद्वयम्।
माया लक्ष्मीः काम हृच्च शिरः षड्रामसंमिता॥

क्लिन्नेत्यादिस्वरूपम्। वै पश्चात् तथा, कामः बीजं, युग्मं च, कामः बीजं, द्वयं इति त्यजेत्। मायेत्यादि बीजम्। इत्यतिरहस्ययोगिन्यम्बा॥ ३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वच्छानन्दाच्च परमहंसाच्च परमात्मने।
शिरः सह क्षौं हंसाद्या भूपक्षार्णा समीरिता।
शाम्भव्यम्बा॥

इति। स्वच्छेत्यादिस्वरूपम्। आच्च आच्च इति त्यजेत्॥ ४॥

मायानित्यस्फुरच्चैतन्यानन्द च मये महा।
बिन्दुव्यापक वै मातृकास्वरूपिणि वाग्भवम्।
तुर्या माया रमा तुर्या चन्द्राग्न्यर्णा प्रकीर्तिता।

नित्येत्यादिस्वरूपम्। च वै इति त्यजेत्। तुर्या ईं। इति चिल्लेखाम्बा॥ ५॥

वाङ्माया च रमा स्वच्छ वै प्रकाशात्मिके ततः।
माया कुलमहामालिनि वाक्कुल च गर्भ वै॥
मातृके चाथ माया वाक् समयाद्विमले रमा।
समयाम्बेयमाख्याता भूतरामाक्षरी शिवे॥

वाक् वाग्भवं। स्वच्छेत्यादिस्वरूपम्। वै ततः, माया बीजं, वाक् वाग्भवं, च वै चाथ माया, वाक् वाग्भवम्, आत्, रमा बीजं इति त्यजेत्॥ ६॥

नित्यप्रकाशात्मिके च कुलकुण्डादथो लिनि।
आज्ञासिद्धिमहाभैरवि आत्मानं द्विबोधय॥
अम्बे भग ततो वति माया वर्ममुखे जपा।
भूवेदार्णा परापरबोधिन्यम्बा समीरिता॥

नित्येत्यादिस्वरूपम्। च आदथो, द्विबोधय बोधयद्वयं, ततो आत्, माया बीजं इति त्यजेत्। सर्वादौ अजपा हंसः॥ ७॥

तारो मोक्षं कुरु इति कुलपञ्चाक्षरीमता॥ ८॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

लोपामुद्रान्त्यके शक्तिः षोडशार्णा महेश्वरि।
अनुत्तरा पञ्चदशाक्षर्यम्बाख्या समीरिता॥

लोपामुद्राविद्यान्ते शक्तिबीजम्॥ ९॥

शुद्धसूक्ष्मनिराकारनिर्विकल्पपरादथ ।
ब्रह्मस्वरूपिणी ततः कामबीजं परा तथा॥
नन्दशक्तिः शक्तिबीजं शम्भवानन्दनाथ च।
श्री चादौ वाग्भवं चेयं मुनिरामाक्षरी भवेत्।
अनुत्तरकौलविद्याम्बा॥

इति। शुद्धेत्यादि श्रीत्यन्तं स्वरूपम्। आदथ ततः कामबीजं तथा शक्तिबीजं च इति त्यजेत्॥ १०॥

सोऽहं स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने।
शिरश्चादौ हंस इति नखार्णेयं महेश्वरि॥
गुरूत्तरविमर्शिन्यम्बा इति॥ ११॥

अनामाख्याथ व्योमातीतनाथ च परापर।
व्योमातीत तथा व्योमेश्वर्यम्बा च द्वितारिका।
भूताक्षिवर्णा चानामाख्याम्बेति परिकीर्तिता॥

अथ च तथा च इति त्यक्त्वा शेषं स्वरूपम्। द्वितारिका ह्रीं श्रीं॥ १२॥

वाग्भवं तुष्टिबीजं च रतिबीजं महेश्वरि।
त्र्यक्षरी सङ्केतविद्याम्बा च॥

इति। तुष्टिबीजं ईं। रतिबीजं ऊं॥ १३॥

माया पश्चाद् भगवति विच्चे वाग्वा तथा दिनि।
कामो महा च हृदय महा चैव मतङ्गिनि॥
वाक् क्लिन्ने तुर्यबाणश्च मायाष्टाविंशदक्षरी।
प्रोक्ताऽनुत्तरवाग्वादिन्यम्बा॥

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति। भगवतीत्यादि क्लिन्ने इत्यन्तं स्वरूपम्। तथा कामः बीजं, च चैव वाक् बीजं इति त्यजेत्। तुर्यबाणः ब्लूं॥ १४॥

त्रिपुराम्बैवानुत्तरशाङ्कर्यम्बा समीरिता।
त्रिपुराम्बा चक्रेश्वरी॥ १५॥
पूर्त्तिविद्याम्बा उद्धृता॥ १६॥

पूर्ववत्तु महेशानि द्वितार्यादीनि योजयेत्।
अत्र षोडशविद्यासु प्रत्येकमादौ द्वितारयोगः कर्त्तव्यः।

अथ षडाधारविद्याः—

स्वात्मानन्दविभूत्यै च मूर्धादौ हंस एव च॥ १॥
परमहंसाद्विभूत्यै मूर्धादौ सोऽहमेव च॥ २॥
सोऽहं स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने।
मूर्धादौ चापि देवेशि अजपा परिकीर्तिता॥ ३॥
स्वात्मानं बोधयद्वन्द्वं मूर्धा स्वात्मा ततः परम्।
नन्दनाथ तदादौ तु अजपा परिकीर्तिता॥ ४॥
स्वस्थाने परमेत्युक्त्वा सोऽहमाद्यस्ततः परम्।
स्वात्मानमित्यत्र परमात्मानमिति॥ ५॥
सोऽहं स्वच्छानन्दनाथचित्प्रकाशामृतेति च।
हेतवे च शिरस्त्वादौ हंसयुक्तो महेश्वरि॥ ६॥
रुद्रादित्यनखर्षीन्दुचन्द्राश्वीन्द्वशिववर्णकाः।
आधाराद्यास्तथाऽऽज्ञान्ता द्वितार्यादि तु पूर्ववत्॥

रुद्रेत्यादि विद्यावर्णसंख्या। आधारविद्या स्वाधिष्ठानविद्येत्यादि नाम। आदौ द्वितारयोगः सर्वत्रः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ षडध्वविद्या—

कामवाग्भवमायाख्या शक्तिश्रीर्मूलमेव च।
नभो बीजमुखं देवि क्रमान्नामानि संशृणु॥
वर्णः पदं तथा मन्त्रः कला तत्त्वं च शङ्करि।
भुवनं चेति सम्प्रोक्ता अध्वान्तास्तु महेश्वरि॥

कामादिशक्त्यन्तं बीजपञ्चकम्। मूलं सौभाग्यविद्या। नभोबीजं हं। तेन ह्क्लीं हं ऐं इत्यादि। वर्णाध्वेत्यादि नाम। अत्राप्यादौ द्वितारयोगः।

अथ षड्दर्शनविद्या—

तारे च तुत्तारे मूर्धा ससार्णेयं समीरिता॥ १॥
गायत्री तु चतुष्पादा ....॥ २॥
.... तारोऽग्निस्त्वङ्गदागतः॥ ३॥
सबिन्दुरथ सूर्यस्य मनुः प्रोक्तो महेश्वरि॥ ४॥
तारो नमोऽथ नारायणायेत्यष्टाक्षरो मनुः॥ ५॥
माया स्याद् भुवनेशानी चैवं षड्दर्शनं भवेत्।
तारा ब्रह्मा च रुद्रश्च सूर्यो विष्णुस्तथैव च॥
भुवनेशी देवताऽत्र अधिष्ठात्री क्रमाद् भवेत्।
बौद्धवैदिकशैवानि सौरवैष्णवशाक्तकाः।
दर्शनानि तु देवेशि ....॥

इति। वाग्देवतामन्त्रा उद्धृताः।

अथ षड्योगिनीविद्या—

अहङ्कारस्पर्शरूपशक्तिवाय्वग्निवर्णकाः।
षड्जातिभेदिता देवि॥

इति। अहङ्कारेत्यादिवर्णषट्कं ड र ल क स ह। प्रत्येकं षड्जातिभेदितं डां डीं डूं डैं डौं डः इत्यादि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नामानि तु—

डाकिनी राकिनी तद्वल्लाकिनी काकिनी तथा।
साकिनी हाकिनीति॥

आत्मपादुका उद्धृता। महावाक्यानि तु प्रसिद्धानि। इत्यनुत्तराम्नायः॥

वह्निचैतन्यमन्त्रः—

.... पाशाच्च सोऽहकं।
वह्निचैतन्याय हृच्च॥ इति।

अग्निज्वालनमन्त्रः—

चित्पिङ्गल हनद्वन्द्वं दहद्वन्द्वं पचद्वयम्।
सर्वज्ञा ज्ञापय शिरश्चतुस्तारमुखः शिवे॥

इति। हन दह पच इति त्रयमपि प्रत्येकं द्विधा। अष्टाविंशत्यक्षरः।

अथ **अग्निमन्त्रः—**

वैश्वानर जातवेद इहावह च लोहिता।
क्ष सर्वकर्माणि साधय मूर्धाऽयं मनुर्भवेत्।
षड्विंशत्यक्षरः॥

इति। वैश्वानरेत्यादिस्वरूपम्। च इति त्यजेत्।

अथ **सप्तजिह्वाबीजानि—**

सबिन्दुरतिसंस्थौ तु शब्दस्पर्शौ महेश्वरि।
विलोमेन तु वाय्वादिशब्दान्ताद्यौ यथाक्रमात्॥

इति। सबिन्दुरतिसंस्थः शब्दस्पर्शौ य्रूं इति। एतदादौ सकारादि यकारान्ताक्षरसप्तकयोगः क्रमेण कर्त्तव्यः। तेन स्य्रूं ष्य्रूं इत्यादि य्य्रूं इत्यन्तं सिद्धम्।

॥ इति चतुर्थस्कन्धमन्त्राः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

अथ इन्द्रादिबलिदानमन्त्राः—

एहीन्द्र पूर्वदिग्भागे पूजितो वस कीलके।
मां रक्ष च ततो निर्विघ्नेन कार्यं च साधय॥
पुनः साधय वै माष ततो भक्तबलिं तथा।
गृह्णद्वयं ततो मूर्धा रामवेदाक्षरो मनुः॥
तत्तद्दिशा देवतानामसंयोगादन्यमन्त्रकाः।

च ततो च पुनः वै ततो तथा ततो इति त्यक्त्वा शेषं स्वरूपम्। मूर्धा स्वाहा।

अथ मालापूजनमन्त्रः—

माया सिद्ध्यै च हृदयं पञ्चार्णः पूजने मनुः।

अथ मालाग्रहणमन्त्रः—

अविघ्नं कुरु पश्चाद्वै मे माले च शिरस्तथा।
गमाद्यं ग्रहणे चैष रुद्रवर्णः स्मृतो मनुः॥

अथ रुद्रमन्त्रः—

तारश्च हृदयं स्वप्नाधि वै पत च ये तत ।
रुद्राय हृदयं मूर्द्धा नृपवर्णः॥

इति। स्वप्नेत्यादिस्वरूपम्। वै च ततः इति त्यजेत्।

अथ नृसिंहबीजम्—

पृथ्वीस्पर्शयुता ज्वाला बिन्द्वाढ्येति समीरयेत्।

क्ष्रौं।

॥ इति पञ्चमस्कन्धमन्त्राः ॥

अथ पारायणमन्त्रः—

चतुस्तारं मूलविद्यां विद्यामष्टाङ्गसंज्ञिताम्।
भगमालां तुष्टिमपि अजपां चेति वै शिवे॥
एकत्रिंशद्वर्णमयी सर्वपारायणे भवेत्।

इति। अष्टाङ्गविद्यापारायणस्कन्धोक्ता॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ हैमवतीमन्त्रः—

.... तुष्टिस्था वह्निवायुराः।
बिन्दुयुक्ताऽथ तुष्टिस्थो वायुवह्नियुतश्च रः॥
बिन्दुयुक्तो हैमवती। इति॥

॥ इति षष्ठस्कन्धमन्त्राः॥ सप्तमस्कन्धमन्त्राः केचन उद्धृताः॥ अवशिष्टाः ग्रन्थविस्तरभयान्नोद्ध्रियन्ते॥ मूलतन्त्रादेवावगन्तव्याः॥ इति॥

अथानुक्रमणिका लिख्यते—

मङ्गलाचरणं प्रातःस्मृतिः स्नानं त्रिपुण्ड्रकम्।
प्रातःसन्ध्या तथा शौचापत्योरपि च तद्विधिः॥ १॥
नाथादिविद्याप्रजपः सन्ध्या माध्याह्निकी तथा।
तत्त्वविद्याजपश्चैव सन्ध्या सायाह्निकी तथा॥ २॥
नित्याविद्याजपस्तद्वत् त्रिंशत्षोडशपक्षके।
प्रायश्चित्तं तु सन्ध्यासु तद्दिशाकालनिर्णयः॥ ३॥
भूशुद्धिर्भूतशुद्धिश्च प्राणसंस्थापनं ततः।
प्राणायामो मातृकायाः कराङ्गन्यासयोर्विधिः॥ ४॥
अन्तर्बहिर्मातृका च चक्रन्यासस्तथा द्विधः।
वाग्देवतामूलविद्यातत्त्वानां न्यास एव च॥ ५॥
कामेश्वर्यादिकस्तद्वत् करशुद्धिः षडङ्गकः।
एवं दशविधो न्यासो शक्त्यापत्सु च निर्णयः॥ ६।
आद्यस्कन्धस्य वृत्तान्तस्त्वेवं सम्यङ् निरूपितः।
त्रैविध्यं पूजनस्यादौ द्वारपूजाव्यवस्थितिः॥ ७॥
पूजा तर्पण मुद्रा च भूशुद्ध्यादिविनिर्णयः।
संकल्पो नित्यपूजायाः पात्रादिस्थाननिर्णयः॥ ८॥

दिग्व्यवस्था गणेशस्य प्रार्थनं च तिरस्कृतेः।
सूर्यार्घ्यं पात्रसंस्कारस्तीर्थसंस्कार एव च॥ ९॥
पुष्पखण्डादिसंस्कारः पीठार्चा चात्मपूजनम्।
आवाहनादिकं चैव चतुःषष्ट्युपचारकी॥ १०॥
आवृतिर्बलिहोमादिरारार्तिकमतः परम्।
गुर्वादिपूजनं देव्या उद्वासः शान्तिसंस्तवः॥ ११॥
विशेषार्घ्योद्वासनं च सूर्यार्घ्यादिकमेव च।
अशक्तानां तु संक्षेपपूजार्घ्यादिसंस्थितिः॥ १२॥
षोडशाद्युपचाराश्च तर्पणस्य च निर्णयः।
अत्यशक्तस्य पूजा च तद्वदापत्तिकालिकी॥ १३॥
पूजा विघ्नस्य शान्तिश्च विघ्नेऽन्येन समापनम्।
अनुकल्पस्तु तीर्थादेः तत्पूजाविधिरेव च॥ १४॥
अथातिसंक्षेपपूजा चाशौचनियमस्तथा।
विधिः सामयिकानां च शक्तिसंस्कार एव च॥ १५॥
प्रायश्चित्तं तु पूजायामुपघातादिके तथा।
इति **द्वितीयस्कन्धस्य** वृत्तान्तस्तु निरूपितः॥ १६॥
नैमित्तिकार्चादिवसाः क्षयाहस्य विधिर्गुरोः।
चैत्रशुक्लप्रतिपदि निम्बपुष्पेण पूजनम्॥ १७॥
तत्पूर्णिमायां दमनारोपणं चान्यपुष्पकैः।
वसन्तपूजा वैशाखे फलपुष्पैश्च पूजनम्॥ १८॥
ज्येष्ठे कदल्यादिफलैराषाढे चन्दनादिभिः।
श्रावणेऽर्चा पवित्रेण केतक्या भाद्रमासके॥ १९॥
नित्यानामाश्विने पूजा नवरात्रस्य पूजनम्।
तत्पौर्णिमायां पूजा स्यान्नारिकेलजलेन च॥ २०॥
कार्तिके दीपपूजा च मार्गशीर्षादिपूजनम्।
निमित्तपूजाकरणे जपः पूजा च काम्यका॥ २१॥
पूजा पीठविचारश्च श्रीचक्रस्य च निर्णयः।
तल्लेखनविधिस्तस्य चरादिस्थापनाविधिः॥ २२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टबन्धनयोगश्च पुष्पपत्रादिनिर्णयः।
इति तृतीयस्कन्धस्य वृत्तान्तः सम्यगीरितः॥ २३॥
लक्षणं गुरुशिष्याणां दीक्षाकालस्य निर्णयः।
दीक्षाभेदाः पूर्णदीक्षा वेदिकाविधिरेव च॥ २४॥
सर्वतोभद्ररचना नवयोनिविधिस्तथा।
सामग्री दीक्षणारम्भः संकल्पो गणपार्चनम्॥ २५॥
पुण्याहवाचनं नान्दी आचार्यादिवृत्तिस्ततः।
द्वारपूजादिविधयो होमपूजाविधिस्तथा॥ २६॥
दीक्षाभेदास्तत्समाप्तिर्मन्त्रदीक्षाविधिस्ततः ।
मन्त्रग्रहणरीतिश्च दीक्षाग्रहणनिर्णयः॥ २७॥
दीक्षाभेदस्वरूपं च विघ्नोत्पत्तौ तु निर्णयः।
प्रायश्चित्तं स्त्रीनृपादिदीक्षानिर्णय एव च॥ २८॥
गुरुभक्तिस्तथाचारो मण्डलाचार एव च।
प्रोक्तश्चतुर्थस्कन्धस्य वृत्तान्तस्त्विविति सर्वशः॥ २९॥
पुरश्चर्याकालविधिः देशश्चाङ्गस्य निर्णयः।
जपसंख्या भूग्रहणं गायत्रीजप एव च॥ ३०॥
कीलसंस्थापनं कूर्मचक्रं तदपवादकम्।
स्थानमैत्र्यादिकं चाधिवासो नियमधारणम्॥ ३१॥
जपश्चासनभेदश्च जपमाला च तद्विधिः।
संकल्पस्तद्दिनविधिर्मन्त्रोच्चारविधिस्तथा ॥ ३२॥
जपोपघातस्तद्भाग होमस्तन्निर्णयोऽपि च।
अङ्गप्रतिनिधिश्चैव तर्पणं मार्जनं तथा॥ ३३॥
ब्राह्मणानां भोजनं च भोज्यवस्तुविनिर्णयः।
रात्रिकर्त्तव्यता चैव शुभः स्वप्नस्तथेतरः॥ ३४॥
तद्विधिः शान्तिरपि च सिद्धिचिह्नानि चैव हि।
मन्त्रशोधनचक्राणि सिद्धारिराशिचक्रके॥ ३५॥
भूतचक्रं भचक्रञ्च धनर्णं वश्यकं तथा।
मन्त्राणां संस्कारविधिरनुकल्पः पुरस्कृते॥ ३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इत्येवं **पञ्चमस्कन्धवृत्तान्तस्त्वत्र** वर्णितः।
अजपापारायणानि त्वाद्यमङ्गाख्यकं ततः॥ ३७॥
नाथपारायणं पश्चाद् घटिकाख्यं ततः परम्।
तत्त्वपारायणं नित्यानामपरायणे ततः॥ ३८॥
अष्टाङ्गनिर्णयो मन्त्र श्रीचक्राख्ये ततः परम्।
कालाचक्राह्वयं पश्चात् तद्विधेर्विस्तरस्तथा॥ ३९॥
षष्ठस्कन्धस्य वृत्तान्तस्त्वेवं रीत्या निरूपितः।
अथ न्यासस्तु पञ्चाम्बासंज्ञोऽथ नवनाथकः॥ ४०॥
मूलविद्याषोडशकः षडाधारः षडध्वकः।
षड्दर्शनो योगिनीनां न्यासश्चरणसंज्ञकः॥ ४१॥
शाम्भवाख्यः कामकलासंज्ञश्चैव कलाह्वयः।
पूर्णमण्डलसंज्ञश्च लघुषोढाह्वयस्तथा॥ ४२॥
महाषोढाह्वयः पश्चाच्छ्रीचक्रन्यास एव च।
तत्त्रैविध्यं महाशक्तिन्यासः सौभाग्यवर्द्धनः॥ ४३॥
सम्मोहनाख्यो न्यासश्च मूलविद्योद्भवाविमौ।
सप्तमस्कन्धवृत्तान्तस्त्वेवं रीत्या निरूपितः॥ ४४॥
प्रायश्चित्तं सान्तपनं चान्द्रायणसमाह्वयम्।
कृच्छ्राख्यं तद् व्यवस्था च महायागविधिस्तथा॥ ४५॥
कौलश्राद्धं तथान्त्येष्टिविधिर्मुद्रानिरूपणम्।
क्रमादत्रोक्तमन्त्राणामुद्धारः स्कन्धभेदतः॥ ४६॥
अनुक्रमणिका चैकक्रमेण प्रतिपादितः।
अष्टमस्कन्धवृत्तान्तस्त्वेवं प्रोक्तो ह्यशेषतः॥ ४७॥

॥ इत्यनुक्रमणिकानिरूपणमिति शिवम्॥

✤ ✤ ✤

कुलज्ञानार्णवोद्भूतपरमानन्दमूलकः।
सौभाग्यरत्नानुजातो दक्षिणामूर्तिसेवितः॥ १॥
गुरूक्तिकाण्डः सौभाग्यप्रपञ्चोद्योतपल्लवः।
रामपक्षाङ्कजलधिमितातीताब्दके कलौ॥ २॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माधवे सितपञ्चम्यां श्रीकाशीनगरे शुभे।
श्रीयादवानन्दनाथपदपद्मानुजीविना ॥ ३ ॥
माधवानन्दनाथेन रामेश्वरनिवासिना।
उद्भावितोऽयं सौभाग्यकल्पद्रुम इहेष्टदः।
ललितायाः प्रीतये स्यात् स्कन्धाष्टकविराजितः॥ ४ ॥
अत्युक्तं वाप्यनुक्तं यदिह मम भवेदेव मान्द्यात् स्वबुद्धे-
स्तद्वच्चापि द्विरुक्तं तदखिलमपि निर्दोषभावं प्रयाति।
श्रीविद्यापादपङ्केरुहमधुरससंस्वादनात्युत्सुकानां ।
वीक्षामात्रेण पद्माजलमिव मलिनं जाह्नवीसङ्गतेन॥ ५ ॥
शिवगुरुवचनसुधाम्बुधिसेवामन्थानमथनयोगेन ।
कल्पद्रुमो मयायं प्राप्तः श्रीसेवकालिविश्रान्त्यै॥ ६ ॥
संरच्याञ्जलिबन्धं युष्मान् संप्रार्थयामि सद्विदुषः।
अर्हथ तद् रक्षितमिदं साहसमीदृग्विधं मया चरितम्॥ ७ ॥
क्वाहं मन्दमनीषः क्व श्रीदेव्याः सभाजनादिविधिः।
हन्तसतामनुकम्पा मूकेऽप्यतिवाग्मितां समादिशति॥ ८ ॥

॥ इति श्रीसौभाग्यकल्पद्रुमे परिशेषविधिनिरूपणं नामाष्टमस्कन्धः॥

॥ श्रीदेव्यर्पितमस्तु॥

✤ ✤ ✤

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्पादक-परिचय

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय
आगमाचार्य (लब्ध स्वर्णपदक)
अध्यक्ष
सांख्ययोगतन्त्रागम विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी-221002

बी-7, नवीन अध्यापकावास
सं. सं. वि. वि., वाराणसी-221002
फोन नं. : 0542-2205607
मोबाईल : 09450012561

सम्पादित ग्रन्थ

1. कृष्णयामलं महातन्त्रम्
2. त्रिपुरार्णवतन्त्रम्
3. सेतुबन्धः(नित्याषोडशिकार्णवस्य टीका)
4. वैदिकतान्त्रिकाधिकारिनिर्णयः
5. त्रिपुरारहस्य- चर्याखण्डम्

सह सम्पादन

1. भास्करराय भारती :
   व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. उत्तरषट्कतन्त्रम्
3. ज्ञानदीपविमर्शिनी
4. सौभाग्यभास्करः
   (ललितासहस्रनामस्तोत्रभाष्यम्)

❋

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

Shri Vidya Gurumandala Parishad

ABOUT OURSELVES

We are an assembly of Sri Vidya Upasakas and those Interested in Sri Vidya Principles and way of life.

Our motto is VISHWAPREM

With the Grace of Sri Lalitha Maha Tripurasundari fifteen Gurumandalams merged together during the Sri Lalitha Ashtashtaka Mahayaga at Mumbai in the year 2005 and thus emerged **Shri Vidya Gurumandala Parishad**.

With the blessings, inspiration, and guidance of senior intellectual Upasakas our Parishad is able to fulfill its objectives and spiritual endeavors.

We pray that every Gurumandalam should flourish and prosper in sadhana, mantain the glory and divinity of its Guruparampara and at the same time get anchored to SVGP for the benefit of the SHRI VIDYA community on the whole.

Our head quarters is at Mumbai, and branches are at Ahmedabad, Hyderabad and Chennai.

For further Information contact

B. Jayaraman - Mumbai - 022-21021462
R. Gopalakrishnan - Mumbai - 022-25705318
Pramod Deval - Mumbai - 09833191664
Ravindra Bhat - Ahmedabad - 079 - 26742015
Keshav Dixit - Hyderabad - 040 - 27127559
Ramesh Namboodri - Chennai - 09600029550

SHARADA SANSKRIT SANSTHAN
Publishers & Bookseller
C. 27/59, JAGATGANJ, VARANASI-221002
Ph.: 0542-2204168
e-mail : sharadabhawan@yahoo.co.in
ISBN-978-81-910069-5-7

Rs. 500/-

डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय (Dr. Shitla Prasad Upadhyaya)